फिजी की समस्या !

बनारसीदास चतुर्वेदी

फिजी की समस्या

लेखक व प्रकाशक

बनारसीदास चतुर्वेदी

सत्याग्रह आश्रम साबरमती

मूल्य देशमें १) डाक व्यय अलग

विदेश में २ शिलिङ्ग डाकव्यय सहित
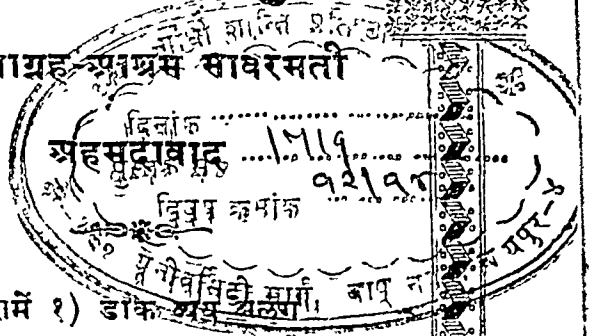
फिजी की समस्या ।

भूमिका ।

फिजी प्रवासी भारतीय किस प्रकार वहां आत्मसम्मान पूर्वक रह सकते हैं और किस तरह वे फिजी की उन्नति तथा भारत की गौरव वृद्धि के कारण बन सकते हैं, यही फिजी की वर्तमान समस्या है।

इस समस्या पर विचार करने के पहिले हमें फिजी प्रवासी भारतीयों के पिछले ४० वर्ष के संक्षिप्त इतिहास को जान लेना अत्यन्त आवश्यक है। इसके बाद हमें निम्न-लिखित प्रश्नों पर विचार करना पड़ेगा।

(१) फिजी में क्या हुआ था?

(२) फिजी में क्या हो रहा है?

(३) फिजी में क्या होना चाहिये?

हमारा अन्तिम प्रश्न होगा "फिजी की समस्या कैसे हल हो?"

फिजी का प्रश्न कोई मामूली प्रश्न नहीं है। यह बड़ा महत्वपूर्ण प्रश्न है। सितम्बर सन् १९२० में महात्मा गांधीजी ने इन पंक्तियों के लेखक से कहा था।

"प्रवासी भारतीयों के सम्पूर्ण प्रश्नोंमें मैं फिजी के प्रश्न को सब से अधिक आवश्यक और महत्व-पूर्ण समझता हूं, क्योंकि दक्षिण अफ्रिका और पूर्वी अफ्रिका के प्रवासी भाइयों को अनेक साधन प्राप्त हैं, वे अपने कष्टोंको शब्दों द्वारा प्रगट कर सकते हैं, लेकिन डाक्टर मणिलाल और श्रीमती मणिलाल के देश निकाले के बाद फिजी के शर्त बँधे और शर्त-बन्दी से छूटे हुये हिन्दुस्तानी गूंगे जानवरों की तरह होगये हैं, जिन्हें चाहे कोई चाहे जिधर खदेड़ दे।"

जब महात्मा जी ने ये शब्द कहे थे तब से इस बीच में फिजीके प्रश्नको महत्व और भी बढ़ गया है। सन् १९२१ में फर्वरीसे जुलाई तक वहां हिन्दुस्तानियों की एक बड़ी भारी हड़ताल रही। लगभग ६५०० आदमी फिजी से लौटे जिनमें एक हज़ार फिजी को फिर वापिस चले गये। इस समय भारत सरकार का कमीशन वहां जांच के लिए गया हुआ है। फिजी प्रवासी भारतीयों के भाग्य का अब निबटारा होने वाला है और यह बात भी तय होने वाली है कि भविष्य में फ़िजी को मजदूर भेजे जाने चाहिये या नहीं। उपनिवेशों में समान अधिकार की बात में कुछ सार भी है या यह केवल सस्ते मज़दूर पाने के लिये ढकोसला मात्र है

इस सवाल का फैसला भी अब होने वाला है। ऐसे अवसर पर "फिजी की समस्या" को सर्वसाधारण के सामने रखना आवश्यक है।

सम्भव है कि इस पुस्तक में कुछ भूलें रह गई हों, यह भी मुमकिन है कि जिन परिणामों पर मैं पहुंचा हूं वे भी ग़लत हों, लेकिन पाठकोंको मैं विश्वास दिलाता हूं कि जान बूझकर कोई निराधार बात यहां नहीं लिखी गई। जहां मैंने फिजी के गोरे अधिकारियों के अत्याचार पूर्ण नीति का वर्णन किया है वहां फिजी के हिन्दुस्तानियों की भी भूलें दिखलाई हैं। इस प्रकार बहुत कुछ सावधानी रखने पर भी यदि इस पुस्तक में किसी व्यक्ति अथवा समाज या संस्था के प्रति मेरे द्वारा अन्याय हुआ हो तो मैं उससे प्रारम्भ में ही क्षमा प्रार्थना करता हूं और उन्हें विश्वास दिलाता हूं कि अपनी भूलें मालूम होते ही मैं उन्हें फौरन ही स्वीकार कर लूंगा, और इस पुस्तक के द्वितीय संस्करण में उन भूलों को सुधार दूंगा।

सत्याग्रह-आश्रम
साबरमती

बनारसीदास चतुर्वेदी।

फिजी प्रवासी भारतीयों का संक्षिप्त इतिहास।

फिजी से हमारे एक संवाद दाता लिखते हैं "इस टापू को कुली भेजने की सलाह जिन्होंने पहले पहल दी थी वे बड़े भारी मूर्ख थे। अब उनके वंश में कोई है या नहीं? मालूम होता है कि उन्होंने घूस खाई थी। भारतीय मज़दूरों का सत्यानाश कर दिया। अब कौन खबर लेता है।"

यह तो हमें नहीं मालूम कि फिजी को कुली भेजने की सलाह किसने दी थी और उनके वंश में कोई है या नहीं लेकिन यह हम जानते हैं कि फिजी को कुली जाना सन् १८७८ ई० में प्रारम्भ हुआ था। आज इस बात को ४३ वर्ष हो गई। ४३ वर्ष के इतिहास पर ध्यान देते हुए हमारा

संवाददाता इसी निश्चित परिणाम पर पहुंचा है कि फिजी को भारतीय मज़दूर भेजना बड़ी मूर्खता का काम था। फिजी के हज़ारों हिन्दुस्तानियों की यही राय है। इसमें संदेह नहीं कि फिजी को भारतीय मज़दूर भेजे जाने से हमारी मातृभूमि का जितना अपमान हुआ है और स्वयं उन मज़दूरों की जितनी नैतिक हानि हुई है उसे ध्यान में रखते हुए हमें यही कहना पड़ता है कि सन् १८७८ ई० की साल भारत के लिये बड़ी अशुभ थी जब कि उसके इतिहास में यह दुर्घटना हुई। उस समय यह किसे मालूम था कि सात समुद्र पार बारह हज़ार मील पर दूर पर बसा हुआ फिजी द्वीप समूह हमारी मातृभूमि के लिये इतने अपमान का कारण होगा?

आरकाटी लोग भोले भाले हिन्दुस्तानी भाई बहिनों को किस प्रकार बहकाते थे, कुली डिपो में "कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा भानमती ने कुनबा जोड़ा" इस नियम के अनुसार स्त्री पुरुषों की जोड़ी किस प्रकार मिलाई जाती थी, जहाज़ पर उनका धर्म कर्म कैसे नष्ट हो जाता था और उपनिवेशों में पहुंच कर उन्हें कितना कठिन परिश्रम करना पड़ता था, इन बातों को भारतीय जनता खूब जान गई है, अतएव इनको दुहराने की आवश्यकता नहीं है।

फिजी प्रवासी भारतीयों के इतिहास पर दृष्टि डालते हुए हम विशेषतः निम्न लिखित बातों पर ही कुछ लिखेंगे।

(१) दुराचार पूर्ण स्थिति।
(२) हत्या और आत्म घात।
(३) शिक्षा और वोट का अभाव।
(४) अमानुषिक अत्याचार।
(५) भारत के राष्ट्रीय सम्मान पर भयंकर आघात।
(६) फिजी को कुली भेजा जाना किस प्रकार बन्द हुआ
(७) अन्तिम शर्त बंधे मज़दूर कैसे मुक्त हुए।

फिजी के शर्त बंधे मज़दूरों की मुक्ति २-जनवरी सन् १९२० को हुई थी, इसलिये हमारा यह संक्षिप्त इतिहास जनवरी सन् १९२० तक का ही होगा। तत्पश्चात् फर्वरी सन् १९२० की दुर्घटना का वृतान्त प्रारम्भ होता है।

दुराचारपूर्ण स्थिति:— जिन लोगों ने कुली प्रथा को जारी किया था, उन्होंने एक पल भी ठहर कर यह विचार नहीं किया कि हिन्दुस्तानियों के स्वभाव और आचरण कैसे हैं, और न उन्होंने हिन्दुस्तान की परिस्थित को ही समझा भारतीय स्त्रियों के मानुषिक जीवन और उनके वैवाहिक सम्बन्धों और नियमों को समझने की कोशिश कुली प्रथा चलाने वालों ने बिल्कुल नहीं की। उनका केवल एक ही उद्देश्य था, एक ही ध्येय था यानी "किसी न किसी तरह रुपया कमाना" बस इसी ध्येय को सामने रखकर उन्हों ने पराधीन भारतवर्ष की निर्बलता से खूब फायदा उठाया। इसी पौण्ड शिलिङ्ग पैंस के देवता की वेदी पर भारत के

राष्ट्रीय सम्मान की वलि हुई और प्रवासी भारतीयों का ऐसा नैतिक पतन हुआ कि अब उनका उद्धार असम्भव सा प्रतीत होता है।

१० आदमी पीछे तीन औरतें फिजी इत्यादि उपनिवेशों को भेजी जाती थीं और स्त्रियों की इस कमी के कारण बड़े भयंकर परिणाम होते थे। मिस्टर एण्ड्रूज़ ने एक स्थान में लिखा है "मैंने अपनी आंखों से सन् १८८३ ई० का सरकारी पत्र व्यवहार, जो छपा हुआ है, देखा है। इसमें फिजी के कालोनियल सेक्रेटरी ने इस बात पर ज़ोर दिया है कि भारतवर्ष से जो स्त्रियां फिजी को भेजी जावें उनका औसत सौ मर्द पीछे तेंतीस औरतों से ज्यादः न हो। इसी पत्र व्यवहार में फिजी सरकार के कलकत्ते वाले एजेन्ट ने कालोनियल सेक्रेटरी से इस बात की आज्ञा मांगी है कि औरतों का औसत सौ पुरुष पीछे चालीस स्त्री का, कर दिया जावे। साथ ही साथ कलकत्ते वाले एजेण्ट ने बड़ी सार्थकता के साथ यह भी लिख दिया था कि चालीस फ़ी सदी औरतें शायद न भी मिल सकें। इस पर सरकारी पत्र व्यवहार के अन्त में कालोनियल सेक्रेटरी का एक संक्षिप्त उत्तर है उसमें कलकत्ते वाले एजेण्ट को हुक्म दिया गया है कि भविष्य में औरतों की संख्या घटाकर सौ आदमी पीछे तेंतीस करदी जावे।"

इससे प्रगट होता है कि फिजी के प्लाण्टर लोग फिजी

प्रवासी भारतीयों के नैतिक पतन के लिये कहां तक जिम्मेवार हैं। प्लाण्टर लोग भारत से उतनी ही औरतें बुलाना चाहते थे जितनी कुलियों की कामेच्छा पूर्तिके लिये काफ़ी हों, अधिक नहीं, क्योंकि खेतों पर मर्द जितना काम कर सकता है, औरत उसका आधा ही कर सकती हैं। इसी कारण से फिजी के प्लाण्टरों ने फिजी गवर्मेण्ट पर दबाव डाला कि औरतोंका औसत ३३ फीसदी से ज्यादः न रक्खा जावे। अपने पौंड शिलिङ्ग पेंस के लाभ के सामने प्लाण्टरों ने यह नहीं सोचा कि सौ पुरुष पीछे तेंतीस औरतों को बुलाने से कितने दुराचार फैलेंगे और भारत सरकार ने फिजी के प्लाण्टरों की इस अर्थ पिशाचता का कुछ विरोध भी नहीं किया। सन् १८८३ के बाद किसी साल में भारत सरकार ने इस बात का अनुरोध किया था कि औरतों का औसत सौ पुरुष पीछे ४० कर दिया जावे। इसके बाद सरकार ने इस मामले को जहां का तहां पड़ा रहने दिया! प्लाण्टर लोग भला क्यों मानने लगे? उन्होंने सोचा "सैयां भये कोतवाल अब डर काहे का" प्रतिवर्ष दो तीन हज़ार कुली वे भारतवर्ष से मंगाते रहे और हमारी सरकार उन पर बराबर कृपा करती रही। इसका परिणाम क्या हुआ वह मिस्टर एण्ड्रूज़ के ही शब्दों में ही सुन लीजिये। "ये पाप-कर्म फिजी में इस प्रकार प्रचलित हैं मानों दुराचारों की कोई महामारी ही फैल गई हो, और कुछ

स्थान ऐसे हैं जहां से बदचलनी की यह प्लेग फैलती है और अपने संसर्ग से दूसरों को कलङ्कित करती है। अनेक बड़ी २ कुली लेनों में पापपूर्ण परिस्थिति अपनी पराकाष्ठा को पहुंच गई है। प्रत्येक नवीन कुटुम्ब जो भारतवर्ष से आता है और फिजी की कुली लेनों के वायु मण्डल में प्रवेश करता है, वह भी इसी रोग में फंस जाता है। पति से कहा जाता है कि तुझे अपनी पत्नी व्यभिचार के लिये दूसरे आदमियों को देनी पड़ेगी क्योंकि यहां फिजी में कितने ही आदमी पत्नी रहित हैं। यह फिजी का "दस्तूर" है अगर पहले पहल वह आदमी इस बात पर घोर आपत्ति करता है (जैसा कि प्रायः हुआ करता है) तो उससे कह दिया जाता है कि यह भारतवर्ष नहीं फिजी है-फिजी, और भाई फिजी में तो ऐसा ही "दस्तूर" है। अविवाहित पुरुषों का विवाहित स्त्रियों के साथ जो सम्बन्ध इस प्रकार होता है उसे "दोस्ती" कहते हैं और फिजी में "दोस्त" शब्द का प्रयोग प्रायः बुरे अर्थ में ही होता है। फिजी प्रवासी भारतीयों के यहां जो घोर अपराध और जुर्म होते हैं वे लगभग सभी इन्हीं दोस्ती के सम्बन्धों की वजह से होते हैं और बिचारी औरतें ही इसकी शिकार होती है।"

मिस गर्नहम ने जो आस्ट्रेलिया से फिजी प्रवासी भारतीय स्त्रियों की दशा देखने के लिये फिजी को गई थीं, अपनी रिपोर्ट में एक जगह लिखा है "जब मैं फिजीद्वीप में

थी मुझे बहुत से आदमियों से पता लगा कि कुली लेनोंका जीवन अत्यन्त दुराचार पूर्ण है। शब्दों द्वारा उस भ्रष्ट जीवन का वर्णन नहीं हो सकता। हिन्दुस्तानी उन स्थानों को, जहां शक्कर बनने के कारखाने हैं, व्यभिचार गृहके नाम से पुकारते हैं। वे लोग कहते हैं कि कुली लेनोंमें किसी भी भारतीय स्त्री के लिये अपने सतीत्व की रक्षा करना बिल्कुल असम्भव है"......मुझे यह भी पता लगा कि कितने ही आदमी कुली लेनों के नज़दीक इस लिये भी रहना चाहते थे कि इससे उन्हें दूसरों की स्त्रियोंके साथ रहने का अवसर मिले। कहीं २ तो अनुसन्धान करने पर मुझे यह मालूम हुआ कि रुपये पैसे के लोभ के लिये कुछ आदमी अपनी औरतों को दूसरे पुरुषों के पास जाने देते थे।"

इस प्रकार प्लाण्टरों के पौण्ड शिलिङ्ग पैन्स की वेदी पर भारतीय स्त्रियों के सतीत्व को बलिदान हो रहा था।

जिस समय मिस्टर ऐण्ड्रूज़ ने इन दुराचारों की कथा अपनी रिपोर्ट में प्रकाशित की थी, उस समय प्लाण्टर लोग बड़े नाराज़ होगये थे और उन्होंने अपनी ऐसोसियेशन द्वारा मिस्टर ऐण्ड्रूज़ की रिपोर्ट का ज़बरदस्त खण्डन किया था इस खण्डन में उन्होंने बतलाया था कि फिजी के हिन्दुस्तानियों के पास हज़ारों एकड़ जमीन हैं, और वे हजारों लाखों रुपये प्रतिवर्ष पैदा करते हैं। फिजी की आबहवा बहुत अच्छी है, ज़मीन ज़रखेज़ है इत्यादि २। इसके उत्तर में हम केवल यही कहेंगे कि व्यभिचार पूर्ण कुली प्रथा में अपनी

स्त्रियों का सतीत्व नष्ट कराने के बाद यदि भारतवासियों ने दस बीस हज़ार एकड़ भूमि फिजी में खरीद भी ली अथवा दस बीस लाख रुपये कमा भी लिये अथवा दो चार हज़ार गाय बैल रख भी लिये तो क्या हुआ। इस वैभव से लाख दर्जे बहतर होता यदि ये लोग भारत के ग्रामों में रूखा सूखा खाकर मानुषिक जीवन व्यतीत करते।

फिजी प्रवासी भारतीयों के दुराचार पूर्ण जीवन चित्र को पूर्ण करने के लिये फिजी सरकार के कौंसिल पेपर नं० ५४ से निम्नलिखित वाक्य उद्धृत करना पर्य्याप्त होगा।

"When one indentured Indian woman has to serve three indentured men, as well as various outsiders, the result as regards Syphilis and gonorrhoea cannot be in doubt." अर्थात् "जब कि एक शर्तबंधी हिन्दुस्तानी औरत को तीन शर्तबंधे पुरुषों तथा इनके सिवाय कितने ही बाहर वालों का काम चलाना पड़ता है, तो परिणाम स्वरूप गर्मी और सुज़ाक के होने में कभी सन्देह किया ही नहीं जा सकता।"

यह बात ध्यान देने योग्य है कि ये शब्द कोई मामूली ढङ्ग से यों ही नहीं कह दिये गये हैं, बल्कि ये फिजी गवर्मेण्ट की १९१६ में प्रकाशित मैडीकल रिपोर्ट से लिये गये हैं। यह रिपोर्ट फिजी सरकार की व्यवस्थापक समिति के सामने रक्खे गये थे और समस्त फिजी की नियम निर्धारिणी

सभा ने बिना किसी टीका टिप्पणी के इन को स्वीकृत कर लिया था।

हत्या और आत्मघात:—यह बतलाने की आवश्यकता नहीं है कि हमारी मातृभूमि भारत वर्ष में, जहां कि हमारे हिन्दू धर्म के अनुयायियों की प्रधानता है, आत्मघात बहुत कम होते हैं। यहां पर बीस सहस्र आदमियों पीछे एक आदमी आत्मघात करता है, अथवा यों कहिये दस लाख आदमियों में प्रति वर्ष ५० आदमी आत्मघात करते हैं। फिजी के शर्त बंधे हिन्दुस्तानियों में ९५० आदमियों में से एक आदमी आत्म हत्या करता था यानी दस लाख पीछे लग भग एक सहस्र का औसत हुआ। दूसरे शब्दों में यह बात यों कही जा सकती है कि फिजी में खुदकुशी करने वालों की तादाद का औसत हिन्दुस्तान की बनिस्बत बीस गुना था।

हत्या के अपराधों की संख्या और भी ज्यादः भयंकर थी। युक्तप्रान्त और मद्रास में प्रति वर्ष २ लाख ५० हज़ार आदमियों में एक आदमी पर खून का जुर्म साबित होता है यानी दस लाख आदमियों में चार आदमी हर साल खून करते हैं। फिजी के शर्त बंधे कुलियों में तीन हज़ार आदमियों में से एक आदमी हत्या का अपराधी प्रमाणित होता था, यानी दस लाख में ३३३ आदमी खून करते थे। इस प्रकार फिजी में हिन्दुस्तान की अपेक्षा ८० गुनी ज्यादः

हत्यायें होती थीं। यह बात नोट करने योग्य है कि ये अङ्क केवल एक वर्ष के ही नहीं हैं बल्कि बहुत सी वर्षों के औसत से निकले हैं।

सन् १९१४ की साल में फिजी के शर्तबंधे कुलियों की संख्या १५६०३ थी। इनमें ग्यारह ने आत्मघात किया, सात ने आत्मघात करने की कोशिश की, दस पर हत्या करने का अपराध प्रमाणित हुआ, सात आदमियों की हत्या हुई, सत्ताइस पर घायल करने का जुर्म सावित हुआ, तेरह घायल हुए, दो पुरुष हत्या के अपराधी सिद्ध हुए और तीन पुरुष मारे गये। जितने कुलियों पर कचहरी में इन भयंकर जुर्मों के लिये मुकद्दमा चलाया गया और जितने आदमी इन भयंकर जुर्मों के शिकार हुये उन सब की संख्या मिलाकर लगभग सौ हुई। इसका मतलब यह हुआ कि सन् १९१४ ई० में फिजी के शर्तबंधे हिन्दुस्तानियों में एक सौ चालीस आदमीं पीछे एक आदमी भयंकर जुर्म, हत्या, आत्मघात और फौजदारी इत्यादि में मुबतिला था।

कठिन परिश्रम करते २ फिजी के प्रवासी भारतीय मज़दूर किस प्रकार आत्मघात कर लेते थे इसका एक दृष्टान्त मिस्टर ऐण्ड्रूज के ही शब्दों में सुन लीजिये।

"पहिले फिजी में एक नियम प्रचलित था, वह यह कि ओवरसियरों में आपस में होड़ कराई जाती थी कि देखें कुलियोंसे अपने कामको कौन जल्दी ख़तम कराता है? इस

मुक़ाबले की वजह से कुलियों पर अक्षम्य अत्याचार होते थे। इन अत्याचारोंकी कथा मुझसे यूरोपियन ओवरसियरों ने कही थी। होता यह था, कि एक ओवरसियर दूसरे के मुक़ाबले में खड़ाकर दिया जाता था, और यह शर्त रक्खी जाती थी कि जो ओवरसियर कुलियों से कम खर्च में अधिक काम करा लेगा वही रक्खा जावेगा, :और जो ऐसा नहीं करा सकेगा वह बरख़ास्त कर दिया जावेगा। इस कारण से हिन्दुस्तानी मज़दूर ठोकरें खाते थे. धमकाये जाते थे; उनके कोड़े लगाये जाते थे, और उनकी सारी शक्ति काम लेते २ चूंस ली जाती थी........................इन्हीं दिनों में निराशा के कारण अनेक हिन्दुस्तानी आत्मघात कर लेते थे। मैंने बहुत से ओवरसियरों से, जिन्होंने इन आत्मघातों को देखा है, बात चीत की है। इन ओवरसियरों ने कहा कि ये आत्मघात हमेशा रात के तीन और चार बजे के बीच हुआ करते थे इसी समय घंटे की ज़ोर की आवाज से कुली की नींद खुल जाती थी। उसके थके हुये दिमाग़ में ये घृणोत्पादक आवाज़ घुस जाती थी, उस समय उसके जीवन की नाड़ी अत्यन्त मन्दगति से चलती होती थी। वह कुली दिल में ख्याल करता था कि इस खून का पसीना बना डालने वाली मज़दूरी का अन्त नहीं आवेगा; एक साल के बाद दूसरी साल, इस प्रकार हर बार यही काम करना पड़ेगा। इससे बचने का कुछ उपाय भी नहीं

है। बस, इसका परिणाम यह होता था एक दिन प्रातःकाल में कुली फांसी लगा कर मरा हुआ लटकता पाया जाता था। जिन्होंने मृत्यु के बाद इन कुलियों को देखा था उन्होंने मुझे एक बात बतलाई है—वह यह कि इन कुलियों के पैर ऊपर की ओर पेट की तरफ़ दृढ़ता पूर्वक सिकुड़े हुये पाये जाते थे। अगर कुली चाहता तो ये पैर आसानी से नीचे लटक कर ज़मीन को छू जाते। इससे प्रगट होता है कि कुली के दिल में "मरने की इच्छा" उसको "जीवित रहने की इच्छा" से कहीं अधिक प्रबल तर होती थी।"

इस प्रकार की घटनाएं फिज़ी में अनेक हुआ करती थीं। ब्रिटिश साम्राज्य के आधीन उपनिवेशों में न जानें कितनी ऐसी भयंकर दुर्घटनाएं प्रवासी भारतीयों में हुई है। जब हमारे भावी राष्ट्रीय लेखक स्वाधीन भारत का इतिहास लिखेंगे उस समय उन्हें इन दुर्घटनाओं का ज़िक्र करते हुये लिखना पड़ेगा कि पराधीन भारत को अपनी ग़ुलामी के दिनों में क्या २ दृश्य देखने पड़े।

शिक्षा का अभाव:—९वीं जुलाई सन् १९१५ को फिजी के कुछ हिन्दुस्तानियों ने भारत सचिव के नाम एक प्रार्थना पत्र भेजा था जिसमें उन्होंने लिखा था "सूवा के शहर में हमें स्कूल के लिये टैक्स देना पड़ता है-लेकिन हमारे लड़के पबलिक स्कूल में शिक्षा नहीं पा सकते। हमारे बच्चों की शिक्षा के लिये इस उपनिवेश में कोई प्रबन्ध नहीं है।"

सन् १९१४ ई० में फिजी सरकार की वार्षिक आय २७६८४४ पौण्ड थी। इसमें से कुल ३३१२ पौण्ड ही शिक्षा के लिये व्यय किये गये, यानी कुल आमदनीका १-२ फीसदी से भी कम तालीम के लिये खर्च किया गया; और इस पर भी तुर्रा यह कि हिन्दुस्तानियों की शिक्षा के लिये इसमें से कुछ भी व्यय नहीं किया गया! यह बात ध्यान देने योग्य है कि पिछली ४३ वर्षों में से ३७ वर्ष तक तो फिजी सरकार ने हिन्दुस्तानी बालकों की शिक्षा का कुछ भी प्रबन्ध नहीं किया! फिजी सरकार की इस करतूत का परिणाम क्या हुआ? फिजी सरकारके कागज़ पत्रही इसे बतला सक्ते हैं। सुनिये फिजीके यूरोपियनोंमें ८६-५ फीसदी शिक्षित हैं हाफ कास्ट में ५४ फ़ीसदी, फिजीके आदिम निवासियों में ५२-८ फीसदी और रोतुअन लोगों में ५८-फीसदी शिक्षित हैं; लेकिन फिजी के भारतवासियों में शिक्षा का औसत केवल ६-४ फीसदी है। और फिजी सरकार ने भारतीयों की शिक्षा का प्रबन्ध क्यों नहीं किया था? इसलिये कि शक्कर की कम्पनियां इस बात की घोर विरोधी थीं। कम्पनी वाले कहते थे कि अगर हिन्दुस्तानी पढ़ जावेंगे तो फिर मज़दूरी के काम के न रहेंगे!

सन् १९१३ में फिजी सरकार ने एक बिल उपस्थित करने का विचार किया था जिसका आशय यह था कि बिना किसी वर्ण भेद के सब जातियों के बच्चोंको सरकारी

स्कूलों में पढ़ने का अधिकार हो। उस समय गोरों ने इस बात का घोर विरोध किया था अतएव यह विचार जहां का तहां रह गया। एक गोरे ने इस बिल का विरोध करते हुए कहा था "I cannot tolerate the idea of my children sitting by the side of a coole's child in the public school. I would rather have a half caste or a quarter caste or even a one sixteenth of a caste, but not a coolie!",

अर्थात् "मैं इस बात का विचार भी सहन नहीं कर सकता कि मेरा लड़का पबलिक स्कूल में किसी कुली के लड़के के साथ पढ़ने के लिये बैठे। इस बात को चाहे में भले ही सहन करलूं कि मेरा लड़का किसी दोगला जाति के लड़के के साथ पढ़े अथवा ऐसे लड़के के साथ पढ़े जो चार खूनों के मिलने से पैदा हुआ हो या उस लड़के के साथ पढ़े जिसमें १६ खून का संमिश्रण हो। यह सब मैं भले ही सहन कर लूं लेकिन जनाब मैं इस बात को हर्गिज़ नहीं सह सकता कि मेरा लड़का किसी कुली के लड़के के साथ पबलिक स्कूल में बैठे।"

इस पर टीका टिप्पणी करने की आवश्यकता नहीं। फिजी के गोरों की दृष्टि में सब भारतवासी "कुली" ही हैं!

वोट का अभाव:—जब से फिजी की राजधानी सूवा में म्यूनिसिपैलिटी क़ायम हुई थी तब से सब टैक्स

देने वालों को वोट देने का अधिकार था। किसी प्रकार का वर्ण भेद इसमें नहीं होता था। यह हालत सन् १९१४ तक रही। सन् १९१४ में यह अधिकार हिन्दुस्तानियों से छीन लिया गया! यद्यपि गोरे लोगों का यह विचार तो बहुत दिन पहिले से ही चला आता था कि हिन्दुस्तानियोंसे वोट देने का अधिकार छीन लिया जावे लेकिन इस विचार को वे सन् १९१४ तक कार्य्य रूप में परिणत नहीं कर सके थे। सरहैनरी जैकसन ने सन् १९०३ में ही विलायत के कालोनियल सेक्रेटरी को लिखा था"मेरी समझ में हिन्दुस्तानियों और पालीनिशियनों को वोट का अधिकार रखने देना अनावश्यक है क्योंकि म्यूनिसिपैलिटी के चुनाव के समय ये लोग बेईमानी करजाते हैं" फिजी प्रवासी भारतीयों के शत्रु मिस्टर स्काट तथा मिस्टर टर्नरने ग़रीब हिन्दुस्तानियों का यह अधिकार छिनवा दिया। वोट देने के लिए एक English Education test अंग्रेज़ी शिक्षा की परीक्षा" रखदी गई। अंग्रेज़ी पढ़ाने के लिये सरकार ने कोई स्कूल भारतीयों के लिये नहीं खोले, और पबलिक स्कूल में उन के लड़के दाखिल हो नहीं सक्ते, परीक्षा होगी अंग्रेज़ी शिक्षा में इस न्याय की बलिहारी है। शायद फिजी के गोरे यह आशा करते हैं कि हिन्दुस्तानी लोग पेट से अंग्रेज़ी पढ़े हुए निकलेंगे।

अमानुषिक अत्याचार:—फिजी प्रवासी भारतीयों पर जो अमानुषिक अत्याचार गोरे प्लाण्टरों तथा उनके ओवरसियरों और मेनेजरों द्वारा हुए हैं उनका विस्तृत वर्णन इस स्थान पर करना न तो आवश्यक है और न उचित ही। यदि हम चाहें तो इन अमानुषिक अत्याचारों के अनेक दृष्टान्त यहां देसकते हैं, लेकिन ये अत्याचार इतने भयंकर हैं कि प्रत्येक स्वदेश प्रेमी पाठक का खून उन्हे पढ़कर खौलने लगेगा और उस दशा में पाठकों के लिये असम्भव हो जावेगा कि वे फिजी की वर्तमान समस्या पर शान्तिपूर्वक विचार कर सकें। फिजी का वर्तमान प्रश्न ऐसा प्रश्न है जिसपर विचार करते हुये हमें अपने दिमागको ठीक रखने चाहिये यह हमारे ५५ हज़ार ग़रीब भाइयों के जीवन मरण का प्रश्न है। अनुचित निराशा अथवा वेजा जोशमें आकर हमें फिजी प्रवासी भारतीयों को कोई ऐसी सलाह न देनी चाहिये जिससे उनको किसी प्रकार की हानि पहुंचे। यही कारण है कि हम प्रवासी भारतीयों पर किये हुए भयङ्कर अत्याचारोंके दृष्टान्तोंको यहां दुहराना नहीं चाहते। जो लोग उन्हें पढ़ना चाहें वे रैवरैण्ड जे.-डवल्यू-वर्टनकृत- फिजी आफ टुडे अथवा पं० तोताराम सनाढ्य की फिजीद्वीप में मेरे २१ वर्ष नामक पुस्तक पढ़ सकते हैं। हम यहां भारत सरकार के ख़रीते का केवल एक वाक्य उद्धृत कर देना चाहते हैं। लार्ड हार्डिंज ने जो ख़रीता भारत सचिव को

१५ अक्टूबर सन् १९१५ को भेजा था, उसमें लिखा था।

"It is firmly believed also in this country, and it would appear, not without grave reason, that the women emigrants are too often living a life of immorality in which their persons are by reason of pecuniary temptation or official pressure at the free disposition of their fellow recruits and even of the subordinate managing staff."

अर्थात् "इस देशमें लोगों का दृढ़ विश्वास है-और यह विश्वास गम्भीर कारणों से रहित नहीं ज्ञात होता-कि प्रवासी हिन्दुस्तानी स्त्रियां प्रायः दुराचार पूर्ण जीवन व्यतीत करती हैं जिसमें उनके शरीर; धन सम्बन्धी प्रलोभन की वजह से या अफ़सरोंके दवाव के कारण, साथ में भर्ती हुये मज़दूरों के-यही नहीं बलिक नीचे काम करने वाले मेनेजरों के-अधिकार में रहते हैं, यानी वे लोग उनका मनमाना उपयोग कर सकते हैं।"

अफ्सरों के दवाव के कारण भारतीय स्त्रियोंके शरीरों का मेनेजरों के अधिकार में होने का अर्थ पाठकों को वतलाने की आवश्यकता नहीं।

राष्ट्रीय सम्मान पर भयङ्कर आघातः—सब से बड़ी हानि जो फिजी प्रवासी भारतीयों के इस अधोपतन से हुई है वह यह है कि इससे हमारी मातृभूमि के सिर पर

कलङ्क का टीका लग गया है। आस्ट्रेलिया और न्यूजीलेण्ड के गोरे यही समझने लगे हैं कि भारतवासी कुलीगीरी के सिवाय और किसी कामके नहीं हैं। फिजी के पादरी मि० रिचार्ड पाइपर ने अपने एक लेख में लिखा था "शर्तबन्दी के कारण जिस अपकृष्ट दासता में हिन्दुस्तानियों को रहना पड़ता है, उसकी वजह से गोरे लोग उनको और भी घृणा की दृष्टि से देखने लगते हैं। गोरे लोग यह समझने लगते हैं कि भारतवासी मात्र कुलीगीरी के सिवाय और किसी कार्य्य के योग्य नहीं" फिजी प्रशान्त महासागर में एक केन्द्र स्थान है और अमरीका इत्यादि देशोंके जो यात्री उधर होकर निकलते हैं और फिजी प्रवासी हिन्दुस्तानियों को दुर्दशा को देखते हैं, वे यही ख्यालकर लेते हैं कि सम्पूर्ण भारतीय जाति बस इसी प्रकारके आदमियों से बनी हुई है। जहाज में यात्रा करते समय मिस्टर एण्ड्रूज़ से कितने ही यात्रियों ने कहा था "देखो, यही भारतवर्ष है" मिस्टर एण्ड्रूज ने इन लोगों को समझाया कि यह भारतवर्ष नहीं है। इनकी दशा से सम्पूर्ण भारतीय राष्ट्र की दशा का अनुमान करना ठीक नहीं। इस प्रकार दस बीस यात्रियों का भ्रम मि० ऐण्ड्रूज की कृपा से दूर हो गया लेकिन प्रशांत महासागर में यात्रा करने वाले सहस्रों यात्री हर साल इसी भ्रम में पड़ जाते हैं और इससे हमारे राष्ट्रीय सम्मान पर भयङ्कर आघात पहुंचता है। और तो और फिजी के आदिम निवासी

भी, जो बीच पच्चीस वर्ष पहले नर-मांस भक्षी थे और जो अब भी आधे जंगली हैं, हिन्दुस्तानियों का तथा उनकी मातृभूमि का अपमान करते हैं। फिजीके जंगली पं० तोताराम से कहते थे "सचमुच इण्डिया बहुत बुरा देश है जहां की स्त्रियां मजदूरी करने के लिये परदेश में आती हैं और यहां आकर अनेक अत्याचार सहती हैं। जैसे अत्याचार तुम्हारी इण्डियन स्त्रियों पर होते हैं वैसे यदि हमारी स्त्रियों पर किये जावें, तो करने वालों को हम जड़ से मिटा दें। तुम्हारा "इण्डिया" मरघट के समान है और उसके नेता स्वयं सुखभोगी हैं यदि ऐसा नहीं होता तो मक्खियों की तरह भिनभिनाते हुये जहाज़ भरे इण्डियन यहां नहीं आते। हम यहां बैठे २ समझ गये हैं कि तुम्हारा देश कैसा है, हमारे सामने बहुत बढ़ २ कर बातें मत मारना।"

इससे पाठक अनुमान कर सकते हैं कि फिजी को शर्तबंधे मज़दूर भेजे जाने के कारण हमारी मातृभूमि का कितना भारी अपमान हुआ है।

फिजीको कुली भेजा जाना किस प्रकार बंद हुआ।

पाठकों को यह बतलाने की आवश्यकता नहीं है कि मिस्टर मैकनील तथा लाला चिम्मनलाल ने अपनी रिपोर्ट में शर्तबन्दी गुलामी की प्रथाको जारी रखने के लिये किस प्रकार सिफारिश की थी। इन दोनों महानुभावों ने अपनी रिपोर्ट के अन्त में लिखा था कि शर्तबन्दी की प्रथासे लाभ

अधिक है. हानि कम। लेकिन एक बात इस रिपोर्ट के पक्ष में कहनी पड़ेगी वह यह कि यह रिपोर्ट बड़े परिश्रम के साथ लिखी गई थी और इसमें शर्तबंधे कुलियों के आत्मघातके जो अङ्क दिए गये थे वे बड़े परिश्रम के साथ तय्यार किये गये थे। जिस समय इन अङ्कों को मिस्टर ऐण्ड्रूज ने पढा आपका कोमल हृदय द्रवित हो गया। आपने सोचा कि जो भारतीय अपनी मातृभूमि में इतना कम आत्मघात करते हैं वे फिजी पहुंच कर यहां से २० गुना आत्मघात क्यों करने लगे? अवश्यमेव उनकी परिस्थिति बड़ी भयङ्कर होगी। यद्यपि इन अङ्कों को हमारे देश के अन्य नेताओं ने भी पढ़ा था लेकिन उनके लिये ये कोरमकोर अङ्क थे परन्तु मिस्टर ऐण्ड्रूज के मानव जाति प्रेमी हृदय के लिए ये अङ्क शर्तबंधे प्रवासी भारतीयों के दुःखों के जीते जागते प्रमाण थे, उनकी दुर्गति की भयङ्कर मूर्ति थे। इन अङ्कों के पढ़ने के बाद मिस्टर ऐण्ड्रूज़ शीघ्र ही लार्ड हार्डिञ्ज के पास गये और उनसे कहा "मैं फिजी को जाना चाहता हूं और वहां के प्रवासी भारतीयों की दशा स्वयं अपनी आंखों से देखना चाहता हूं।" लार्ड हार्डिञ्ज ने कहा "आप भले ही जाइये, लेकिन मैं अब आपसे वायदा नहीं कर सकता कि मैं शर्तबन्दी की प्रथा को बन्दकर सकूंगा। मैंने सरकारी कमीशन जांच करने के लिये भेजा था लेकिन कमीशन ने आकर यह परिणाम निकाला है कि शर्तबन्दीकी प्रथा जारी रक्खी जावे"

मिस्टर ऐण्ड्रूज ने कहा "कुछ भी क्यों न हो, मैं फिजी अवश्य जाऊंगा"

यह वात ध्यान देने योग्य है कि उन दिनों मिस्टर ऐण्ड्रूज वड़े कमज़ोर थे क्योंकि वे हाल ही में भयङ्कर हैजे की वीमारीसे वचे थे। लेकिन उस कमजोरीकी हालतमें ही आपने अपने मित्र मिस्टर पियर्सन के साथ फिजी के लिये प्रस्थान किया। फिजी में आपने किस प्रकार अनुसन्धान किया और वहां से लौटकर फिजीमें भारतीय नामक कैसी रिपोर्ट लिखी यह वात पाठक जानते ही हैं। लार्ड हार्डिञ्ज की सरकार पर कई ऐङ्गलोइण्डियन पत्रोंने यह अपराध लगाया था कि उन्होंने अपने सरकारी कमीशनकी रिपोर्ट पर विश्वास न करके मिस्टर ऐण्ड्रूज की रिपोर्ट और मिस्टर पियर्सन की रिपोर्ट पर विश्वास किया। यद्यपि यह अपराध अनुचित है क्योंकि खुद मैकनील चिम्मनलाल की रिपोर्ट में कितनी ही वातें ऐसी थीं जिनसे कुली प्रथा का बन्द कर देना विलकुल न्याय-युक्त होता, तथापि इस में सन्देह नहीं कि मिस्टर ऐण्ड्रूज और मि० पियर्सन की रिपोर्ट ने लार्ड हार्डिञ्ज के विचार को दृढ करने में वड़ी भारी मदद दी थी। माननीय पं० मालवी जी के प्रस्ताव पर सरकार ने कुली-प्रथा के वन्द करने का निश्चय कर लिया। कुली-प्रथा वन्द करानेके लिये मिस्टर ऐण्ड्रूज को कितना घोर परिश्रम करना पड़ा; कितनी वार लार्ड हार्डिञ्ज के

पास जाना पड़ा, भारतीय पत्रों में कितना आन्दोलन करना पड़ा इन बातों को हम स्थानाभाव से यहां नहीं लिख सकते। यहां पर हम सिर्फ इतना ही कहते हैं कि इस शर्तबन्दी की गुलामी को बन्द कराके मिस्टर ऐण्ड्रूज ने भारत भूमि को सदा के लिये अपना कृतज्ञ बना लिया है। और जब कभी स्वाधीन भारत का इतिहास लिखा जावेगा मिस्टर ऐण्ड्रूज का नाम उसमें गौरव और सम्मान के साथ लिखा जावेगा।

शर्तबन्दी की गुलामी को बन्द कराके मिस्टर ऐण्ड्रूज निश्चिन्त होकर अपने गुरुदेव श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुरके साथ जापान को चले गये। जापान में पहुंचने पर उन्हें फिजीका एकपत्र मिला कि फिजी सरकार इस बातके लिये प्रयत्नकर रही है कि ५ वर्षतक हिन्दुस्तानसे मज़दूर भर्ती हो होकर आते रहें और इण्डिया आफिस पर इस विषयमें दबाव डाला जा रहा है। यह पढ़कर मिस्टर ऐण्ड्रूज़ को बड़ी चिन्ता हुई, आप फ़ौरन ही जापान से लौट दिये। यहां आकर आप को ज्ञात हुआ कि आप की आशङ्का निराधार नहीं थी। आपने भारतमें पहुंचते ही लार्ड चैम्सफोर्ड के नाम एक पत्र लिखा और सब बातें उस में खुलासा कर के लिख दीं। ३ महीने तक आप ने इस बात की प्रतीक्षा की कि भारत सरकार इस पत्र पर ध्यान देकर अपना कर्त्तव्य पालन करेगी, लेकिन भारत सरकार ने ऐसा नहीं किया। अन्त में आपने बड़ा

ज़वरदस्त आन्दोलन उठाया। भारत के प्रसिद्ध प्रसिद्ध नगरों में आप ने कुलीप्रथा के विरुद्ध वड़े जोशीले व्याख्यान दिये। उन दिनों महायुद्ध का समय था। सरकार घवड़ा गई। उस ने मिस्टर ऐण्ड्रूज़ को किसी एक जगह में वन्द करने का विचार भी किया पर मिस्टर ऐण्ड्रूज़ अपनी वात पर दृढ़ रहे। आप ने भारत सरकार के अधिकारियों से साफ कह दिया "मैं इस वात को कदापि सहन नहीं कर सकता कि हमारी भारतीय स्त्रियां ५ वर्ष तक व्यभिचारपूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिये फिजी इत्यादि उपनिवेशों को भेजी जावें।" मिस्टर ऐण्ड्रूज की प्रार्थना पर महात्मा गान्धी जी ने इस प्रश्न को अपने हाथ में ले लिया। उस समय यह निश्चित हुआ कि महात्मा जी भारत में आन्दोलन को जारी रक्खें और मिस्टर ऐण्ड्रूज फिजी को दूसरी वार जाकर वहां की स्थिति की जांच करें। तदनुसार मिस्टर ऐण्ड्रूज़ दूसरी वार फिजी को गये। उनकी द्वितीय फिजी यात्राकी एक घटना यहां उल्लेख योग्य है। पहले तो फिजी के गवर्नर ने इस वात का प्रयत्न किया कि मिस्टर ऐण्ड्रूज़ को अपने साथ लेकर उन से अपने ढङ्ग के अनुसार काम निकालें लेकिन अब गवर्नर साहव ने देखा कि मिस्टर ऐण्ड्रूज उन की नीति पर काम न करके अपनी इच्छानुसार ही चलाना चाहते हैं तो उन्होने मिस्टर ऐण्ड्रूज़ को धमकी देना शुरू किया। उदाहरणार्थ मिस्टर ऐण्ड्रूज ने हिन्दी की

शिक्षा पर ज़ोर दिया था लेकिन गवर्नर साहब अंग्रेज़ी के पक्षपाती थे।

जब गवर्नर साहब ने देखा कि मिस्टर ऐण्ड्रूज़ उन की नीति पर चलने के लिये तय्यार नहीं तो उन्हों ने मिस्टर ऐण्ड्रूज़ को फिजी से निकाल देने की धमकी दी। यद्यपि देश निकाले का शब्द उन्हों ने प्रयोग नहीं किया लेकिन उन के कहने का अभिप्राय यही था। उन्हों ने कहा था "आप जानते हैं कि हमें इस विषय में बड़े बड़े अधिकार हैं और हम उन का प्रयोग कर सकते हैं।" इस बार मिस्टर ऐण्ड्रूज़ को अपनी फिज़ी यात्रा में पूरी पूरी सफलता प्राप्त हुई। मिस्टर ऐण्ड्रूज में यह बड़ा भारी गुण है कि वे सब मनुष्यों को समान समझते हैं और उन के हृदय में बिल्कुल अभिमान नहीं है। वे फिजी में हिन्दुस्तानियों के साथ रहे और उन के यहां उन्हीं जैसा भोजन किया। फिजी में आप खूब पैदल घूमे और आप ने इस बार की यात्रा में बहुत सी बातों का पता लगाया। मिस्टर ऐण्ड्रूज के विरोधी गोरे भी इस बात को अच्छी तरह समझ गये कि मिस्टर ऐण्ड्रूज़ जिन का उद्धार करना चाहते हैं उन के साथ रहने और मिलने जुलने में अपना अपमान नहीं समझते। लतौका के एक गोरे इंजीनियर ने मिस्टर ऐण्ड्रूज़ से कहा था " मिस्टर ऐण्ड्रूज हम गोरे लोग आप के साथ भलेही सहमत न हों लेकिन एकबात हमें माननी पड़ती है।

हम सब ने इस बात को जान लिया है कि फिजी के हिन्दुस्तानियों के बीच में जितना आप जाकर रहे हैं उतना दूसरा अंग्रेज रहते हुए हमने नहीं देखा। हम यह अच्छी तरह समझ गये हैं कि आप उन के मित्र हैं क्योंकि आप उन के बीच में रह सकते हैं। यह दूसरी बात है कि हम गोरे लोग आप से सहमत न हों।"

फिजी से लौटकर मिस्टर ऐण्ड्रूज ने अपनी द्वितीय रिपोर्ट प्रकाशित की। स्वयं लार्ड चैम्सफोर्ड और मिस्टर मांटेगू से इस विषय में वात चीत की लेकिन साथ ही साथ आपने जनता को भी आन्दोलनके लिये तय्यार किया यह बात स्मरण रखने योग्य है कि महात्मा गान्धी जी ने इसी अवसर पर पहले पहल भारतवर्ष में सत्याग्रह के अस्त्र के प्रयोग करने का निश्चय कर लिया था। आपने सरकार से यह कह दिया था कि अमुक तारीख़ तक यह गुलामी की प्रथा वन्द हो जानी चाहिये, नहीं तो "सत्याग्रह" द्वारा हम इसे वन्द कर देंगे। मई सन् १६१७ को शर्तवन्दी की गुलामी का अन्त हो गया। इस प्रकार फिजी इत्यादि उपनिवेशों को गुलामों का भेजा जाना वन्द हुआ। इस तरह भारतीय जनता की जय हुई। यह बतलाने की आवश्यकता नहीं कि इस विजयके नायक श्रीयुत ऐण्ड्रूज ही थे, यद्यपि वे अपने को नेता या लीडर कदापि नहीं समझते।

अन्तिम शर्तबँधे मज़दूर कैसे मुक्त हुए ?

फिजी इत्यादि उपनिवेशों को कुली जाना तो बन्द होगया लेकिन जो लोग पहलेसे शर्तबन्दीमें गये थे, वे अभी मुक्त नहीं हुये थे। सन् १९१६ के गये हुये आदमियों की शर्तबन्दो सन् १९२१ में समाप्त होने को थी। लेकिन भारतीय जनता इस बात को सहन नहीं कर सक्ती थी कि ये लोग सन् १९२१ तक इस गुलामी में बँधे रहें। अतएव इस के लिये यहां पर आन्दोलन होना प्रारम्भ हुआ। माननीय पं० मालवीय जी ने कौन्सिल में फिर प्रस्ताव किया कि सब उपनिवेशों के शर्तबंधे मज़दूरों को मुक्त कराने के लिये भारत सरकार लिखा पढ़ी करे। भारत सरकार ने इस प्रस्ताव के उत्तरमें कहा "फिजी के विषय में हम इस प्रस्ताव को स्वीकार कर सकते हैं।" प्रस्ताव स्वीकृत होने पर भारत सरकार ने भारत सचिव से इस विषय में पत्र व्यवहार हुआ। अन्तमें २-जनवरी सन् १९२० को फिजी के कई सहस्र शर्तबंधे भारतीयों को इस गुलामी से छुटकारा हुआ। उस समय फिजी में बड़ी २ खुशियां मनाई गईं। चारों ओर तरह २ के समाचार फैल गये, कोई कहता था कि भारत के राजा महाराजाओं ने रुपया भरकर हमें मुक्त करा दिया है. कोई कहता था कि यह सब पादरी साहब मि० ऐण्ड्रूजकी कृपाका फल है और कितनोंको यहभी विश्वास था

कि यह कार्य्य नौसूरी वाले पं० तोताराम सनाढ्य ने ही किया है। अहा ! वह दिन कैसे सौभाग्य का था, शर्तबंधे भारतीय कुली लैनों को छोड़-कर चले आये थे, स्वाधीनता प्राप्त होने की खुशी में उन्होंने अपने मित्रों को निमंत्रण दिये थे, स्वतंत्रतापूर्वक खेती करनेके लिये उन्होंनें बैल खरीद लिये थे और कितने ही आदमी खेती के लिये ज़मीन की तलाश में घूमते थे। उनके निराशामय जीवन में आशा का संचार होगया था। ऐसा प्रतीत होता था कि अब फिजी प्रवासी भारतीयों के अच्छे दिन आने वाले हैं। यद्यपि गोरे प्लाण्टरों ने शर्तबंदी की प्रथा को ३१ मार्च तक ले जाने का भरपूर प्रयत्न किया था और इसकारण बीचमें हिन्दुस्तानियोंको बहुत कुछ ना उम्मेदकर दिया था, तथापि वे अपने प्रयत्नमें सफल नहीं हुये थे और शर्तबंधे गुलामोंको २ जनवरीको स्वाधीनता मिल गई थी, हां यह किसे ज्ञात था कि उनकी इस स्वाधीनता से स्वार्थी गोरे प्लाण्टरों के और निर्बल फिजी सरकार के हृदय को धक्का पहुंचेगा ! यह किसे ज्ञात था कि फिजी प्रवासी भारतीयोंके सर्वनाशका प्रारम्भ शीघ्रही होने वाला है ! यह कौन कह सकता था कि बिचारे अस्त्र शस्त्र हीन फिजी प्रवासी भारतीयों पर "खुल्लम खुल्ला विद्रोह" करने का भयंकर अपराध लगाया जावेगा और उनमें से २०० को जेल की हवा खानी पड़ेगी ! यह किसे मालूम था कि उन पर गोली चलाई जावेगी ! फिजी प्रवासी भारतीयों के ४३ वर्ष

का इतिहास दुराचार, हत्या, फांसी और आत्मघात का इतिहास है, वह गोरे प्लाण्टरों की स्वार्थान्धता का इतिहास है पौंड शिलिङ्ग पैंसकी वेदीपर मनुष्योंकी वलिका इतिहास है, धनाढ्य सी० एस० कम्पनी से दवनेवाली और ग़रीव हिन्दुस्तानियों पर जुल्म करने वाली फिजी सरकार का इतिहास है, और गोरे कालों में भेद करने वाले ब्रिटिश साम्राज्य की अन्यायपूर्ण नीति का इतिहास है।

फिजी प्रवासी भारतीयों के इस ४३ वर्ष के इतिहास में सव से अधिक दुःख मय अध्याय वह है जिसका प्रारम्भ फरवरी सन् १९२० से होता है और जिसका अन्त, परमात्मा जाने कव होगा! आज जव कि हम स्वाधीनता के संग्राम में लगे हुये हैं हमारे लिये इस इतिहास का अध्ययन शिक्षा प्रद होगा। आइये पाठक हम लोग परतंत्र भारत की पराधीन सन्तानों के दुःख मय इतिहास पर एक दृष्टि डालें जिससे हमारा स्वाधीनता प्राप्त करने का निश्चय और भी दृढ़ होजावे।

फिजी में क्या हुआ था ?

दुर्घटना के पूर्व फिजी की परिस्थिति

(१)

ज्योंही फिजी के गोरे प्लाण्टरों को शर्तबन्दी के बन्द होने के समाचार मिले उन के पेट में पानी हो गया। "हाय ! सस्ते मज़दूर कैसे मिलेंगे ? बड़े २ मुनाफे कहां से आवेंगे ? हमारी कोठियों पर गुलामी कौन करेगा ? " ये प्रश्न बार २ उन के दिमाग़ में उठने लगे। जिन लोगों ने कुली प्रथा बन्द कराई थी उन पर ये गोरे प्लाण्टर अत्यन्त क्रुद्ध हो गये। इन प्लाण्टरों की सब से अधिक कृपा मिस्टर सी० एफ० ऐण्ड्रूज़ पर हुई। खूब अच्छी तरह उन पर बाण वर्षा की गई।

मि० ऐण्ड्रूज पर आक्षेप—माननीय मिस्टर मार्क्स ने निम्नलिखित प्रस्ताव फिजी की व्यवस्थापिका सभा में उपस्थित किया—" This council regrets and disagrees with the reports concerning the condition of Indians, being circulated by Rev. C.F. Andrews, which reports this council considers highly coloured, misleading and in part untrue." अर्थात् "रैवरेण्ड सी० एफ० ऐण्ड्रूज़ ने हिन्दुस्तान में फिजी के हिन्दुस्तानियों के बारे में जो बातें

फैलाई हैं, उस पर यह कौंसिल खेद प्रगट करती है और उन से असहमत है । कौंसिल की सम्मति में मि० ऐण्ड्रूज़ की बातें बहुत बढ़ाकर लिखी गई हैं धोखा देने वाली हैं, और उन के कुछ भाग असत्य भी हैं ।" अपनी स्पीच को समाप्त करते हुए मार्क्स साहबने कहा था "मुझे इस बात में बिल्कुल सन्देह नहीं है कि श्रीमान् गवर्नर साहब ने मिस्टर सी० ऐफ०ऐण्ड्रूज़ की दुष्टतापूर्ण और अनावश्यक बातों की ख़बर ठीक ठिकाने पर पहुंचा दी है, लेकिन फिर भी मैं यह ज़रूरी समझता हूं कि इस कौंसिल के सदस्य मि० ऐण्ड्रूज़ की इन रिपोर्टों से अपनी असम्मति प्रगट करें ।"

फिजी की कौंसिल ने यह प्रस्ताव पास कर दिया । लेकिन इतने पर भी फिजी की सरकार को सन्तोष नहीं हुआ । फिजी के नये गवर्नर साहब ने भी मिस्टर ऐण्ड्रूज़ की रिपोर्ट के ख़िलाफ एक आज्ञापत्र निकाला । इस आज्ञा पत्र में लिखा गया था "मैं समझता हूं कि मि० ऐण्ड्रूज़ ने जो रिपोर्ट अपने हिन्दुस्तानी नेताओं के सामने उपस्थित की है उस में केवल मजदूरों के मालिकों तथा फिजी सरकार पर ही अनुचित और अन्याययुक्त आक्षेप नहीं किये गये बल्कि फिजी के यूरोपियन लोगों पर भी दोषारोपण किया गया है । मैंने फिजी के यूरोपियन लोगों का नाम इसलिये लिया है कि फिजी की जनता की सम्मति के बनाने वाले

ये लोग ही हैं। जिस दुर्ददशा का दृश्य मि० सी० पेफ़० पेण्ड्रूज़ ने दिखलाया है उस दुर्दशा को यूरोपियन पवलिक आंखों से देखती हुई सहती रहेगी, यह वात मेरे विचार में वड़ी मुशकिल से आसक्ती है।"

आगे चल कर गवनर साहब ने फर्माया था "मुझे यह कहने में कोई भी संदेह नहीं है कि जो आदमी पिछली ग़लतियों का वहाना करके हिन्दुस्तानियों को भविष्य में फिजी आने से रोके वह भारतवासियों की वड़ी भारी हानि करेगा।"

वस जव फिजी सरकार ने मि० पेण्ड्रूज़के विरुद्ध उपर्युक्त फैसला देदिया फिर क्या था समाचार पत्रोंमें उनकी निन्दा छपने लगी, सी० पेस० कम्पनी उन पर दोष लगाने लगी, और प्लाण्टर लोग पेट भर २ के गालियां देने लगे। सी० पेस० आर० कम्पनी ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट मे लिखा था 'यद्यपि देखने को तो ये कटाक्ष सी०पेस० आर० कम्पनी पर किये गये हैं लेकिन असल में ये कटाक्ष फिजी सरकार पर हैं और हमारा यह विश्वास है कि इन कटाक्षों का कराने वाला हिन्दुस्तान का वह दल है जिसका उद्देश्य भारत में ब्रिटिश राज्य की नींव को कमज़ोर करना है।"यह वतलाने की आवश्यकता नहीं है कि सी०एस०आर०कम्पनी के कथन का अभिप्राय क्या था। मिस्टर ऐड्रूज़को ब्रिटिश सरकार की नींव कमज़ोर करने वाले दल का एजेण्ट वतलाना कितना असत्य और कितना दुष्टतापूर्ण है!

फिजी टाइम्स और हैराल्ड में एक लेख माला निकली थी जो अब पुस्तकाकार छपगई है। इस लेख माला की बातोंका एक नमूना लीजिये "सन् १९१६ में मिस्टर ऐण्ड्रूज़ और मिस्टर पियर्सन फिजी पधारे। ये दोनों महाशय कहते थे कि हम परोपकार और मानव समाज सेवा के भाव से प्रेरित होकर फिजी को आये हैं, लेकिन फिर मिस्टर ऐण्ड्रूज ने इस बात को स्वीकार किया कि हम दोनों की यात्रा का खर्च एक ऐसी ऐसोसियेशन ने दिया है जिसके नेता तिलक और गान्धी हैं। ब्रिटिश राज्यके विरुद्ध भारत में असन्तोष फैलाने वालों में दोनों मुख्य हैं।............... गर्मदल वाले हिन्दुस्तानियों के नेता तिलक और गांधी से और उनके पक्षपाती मि० ऐण्ड्रूज ने कुली प्रथा को बन्द कराने के लिये दूसरी चाल चली।"

एक महाशय ने ३० अप्रैल सन् १९१९ के फिजी टाइम्स और हैराल्ड में लिखा था "जब पिछली बार मि० ऐण्ड्रूज आस्ट्रेलिया और फिजी को आये थे, उन्होंने सी.ऐस. आर कम्पनी के जनरल मेनेजर से मिलनो चाहा; लेकिन मेनेजर ने उन से मिलना अस्वीकृत किया। बस इसी बात पर मि० ऐण्ड्रूज नाराज होगये और इसका बदला लेने के लिये आपने क्षुद्रता पूर्ण काम यह किया कि आप सम्पूर्ण आस्ट्रेलिया में सी.ऐस.आर कम्पनीके विरुद्ध व्याख्यान देते फिरे आप इस समय भारतवर्ष में यही आन्दोलन मचाये हुये हैं,

और भारतीय जनता के ऊपर आपने इतना प्रभाव जमा लिया है कि कालोनियल आफिस भी उसके सामने हिचकिचाता है। गवर्मेण्ट के भेजे हुये प्रतिनिधियों की रिपोर्ट तो ताख में रख दी गई है और एक विशेष दल के, जिसका उद्देश्य ईमानदारी से या बेईमानी से किसी तरह अपना उद्देश्य सफल करना है, पक्षपाती प्रतिनिधि की रिपोर्ट मान ली गई है। इसतरह की चालबाज़ी अंग्रेज़ लोग कभी नहीं चलते यह चालाकियां मि० ऐण्ड्रूज ने हिन्दुस्तानियों से सीखीं हैं।"

मि० ऐण्ड्रूज के विषय में हैराल्ड ने ६ फर्वरी १९१८ के अङ्क में लिखा था "आश्चर्य तो इस बातका है कि आस्ट्रेलियन लोग इस आदमी की गर्दन पकड़कर इसे फिजी से क्यों नहीं निकाल देते। हमें विश्वास है कि फिजी सरकार का विश्वास फिजी के इस निन्दक पर से बिल्कुल उठ गया है और हम चाहते हैं कि फिजी गवर्मेण्ट कार्य्य द्वारा इस बात का कुछ प्रमाण दे।"

फिजी टाइम्स ने लिखा था "मि० ऐण्ड्रूज की रिपोर्ट क्या हैं किसी घनचक्कर के धोखा देने वाले उद्गार हैं। आपकी दुर्भाग्य पूर्ण आदत यह है कि प्रवासी भारतीयों के भलाई करनेके जोशमें अपनी विवेक बुद्धिसे हाथ धो बैठते हैं। ये नाम मात्र के मिशनरी महाशय हिन्दुस्तानियों के सहायक बने फिरते हैं और आप अपने बड़प्पन के नशे में

चूर हैं।"

फिजी के प्लाण्टरों की ऐसोसियेसन ने लिखा था "मि० ऐण्ड्रूज उन आदमियों में से हैं जो मनुष्यों में असन्तोष उत्पन्न करके स्वयं उससे अपनी जिन्दगी बसर करते हैं। ऐसे आदमियोंका उद्देश्य ही यह होता है कि ये आपस में भेद उत्पन्न करते हैं, और वर्तमान कुसंस्कारों और कुभावों की और भी वृद्धि करते हैं।"

प्रवासी भारतीयों के सच्चे शुभचिन्तक न्याय प्रेमी मि० ऐण्ड्रूज पर फिजी के स्वार्थी गोरों ने तथा वहां की सरकार ने जो अनुचित कटाक्ष किये थे उन सबको उद्धृत करने की यहां आवश्यकता नहीं। इन्हीं उदाहरणों से पाठक अनुमान कर सकते हैं कि फिजी के अधिकारी कितने भले मानस हैं। जब मिस्टर ऐण्ड्रूज फिजी के 'वा' ज़िले में जाने वाले थे, एक गोरे प्लाण्टर ने उन्हें धमकी दी थी कि अगर वे उस ज़िले में गये तो गोली से मार दिये जावेंगे! इस धमकी की कुछ भी परवाह न करके मिस्टर ऐण्ड्रूज उस ज़िले में गये थे।

जब फिजी प्रवासी भारतीयों ने देखा कि उनके सच्चे सहायक मिस्टर ऐण्ड्रूज पर ये अन्याय-युक्त आक्षेप किये जा रहे हैं तो उनको बड़ा दुख हुआ, लेकिन वे कर ही क्या सकते थे उनका कोई निजका समाचार-पत्र तो था ही नहीं जिस में वे इन अन्याय-युक्त कटाक्षों के उत्तर छपाते। फिजी

के गोरे जो गालियां मि० ऐण्ड्रूज को देते थे, उन्हें फिजी प्रवासी भारतीय सुनकर हाथ मलकर रह जाते थे।

प्लांएटरों की डींग और धमकी—जब प्लाण्टरों को मज़दूर मिलने की आशा न रही तो पहले तो उन्होंने भारत सरकारको दोष देना प्रारम्भ किया कि उसने मजदूर भेजना बन्द कर दिया। लेकिन भारत सरकार ने हमेशा के लिये यह वायदा तो कर ही नहीं दिया था कि हम अनन्त-काल तक बराबर कुली भेजते रहेंगे। फिर प्लाण्टरों ने कहना शुरू किया "हिन्दुस्तानी लोग कितने कृतघ्न हैं। हिन्दुस्तान के बुरे जलवायु से फिजी की स्वास्थ्यजनक आवहवामें आकर भी ये लोग हमारे कृतज्ञ नहीं। हिन्दुस्तान में लाखों आदमी भूखों मर रहे हैं जो लोग यहां चले आते हैं उन्हें पेट भर खाना मिल जाता है और रहने को मकान मिल जाता है। अगर हिन्दुस्तान हमें मज़दूर देना बन्द करदे और बराबर अपनी ज़िद पर अड़ा रहे तो हम फिजी में रहने वाले हिन्दुस्तानियों को यहां से निकाल बाहर करेंगे और उनकी जगह चीनी या जापानी मज़दूर बुलालेंगे।"

जब इस प्रकार के कटाक्ष बहुत होने लगे तो आख़िर कार फिजी प्रवासी भारतीयों ने इनका उत्तर देना आवश्यक समझा और १५-५-१९को एक लेख "Indians in Figi" "फिजी में भारत वासी" नामक लिखा। यह लेख डाक्टर मणिलाल, बा० रामसिंह और जार्ज सुचित इत्यादि

के नाम से भारतीय पत्रों को भेजा गया था। इस लेख में इन लोगों ने लिखा था "यदि फिजी का जलवायु अच्छा है तो उसके लिये हमें परमात्मा का कृतज्ञ होना चाहिये न कि हिन्दुस्तानी मज़दूरों का खून चूसने वाले गोरे मालिकों का। अगर हम लोग यहां स्वस्थ रहते हैं तो इसका यह मतलब नहीं है कि हमारे लिये फिजी के प्लाण्टरों ने या फ़िजी सरकार ने डाक्टरों का या औषधियों का काफ़ी प्रबन्ध कर दिया है। यहां के यूरोपियन शाशक अथवा हिन्दुस्तानी मज़दूरों के मालिक कोई परोपकारी संस्था तो हैं नहीं जिनका उद्देश्य अनाथ हिन्दुस्तानियों का पालन पोषण करना हो। इन यूरोपियनों का तो केवल एक ही उद्देश्य रहा है, वह यह कि फिजियनों को भूमि और हिन्दुस्तानियों की मज़दूरी के द्वारा अपनी जेब पौण्ड शिलिङ्ग पेंस से भरें। इन यूरोपियन शासकों और प्लाण्टरों के लिये यह शेखी बघारना कि हम लोग दया करके भूखों मरने वाले हिन्दुस्तानियों को भोजन देते हैं, बिलकुल न्याययुक्त नहीं है। रही घर देने की बात, सो हम जानते हैं कि ये घर कैसे होते हैं। रायल कालोनियल संस्था के मिस्टर पी० ए० बार्नेट साहब ने इन घरों को "सुअर खाना" बतलाया था। ये यूरोपियन शाशक और प्लाण्टर यह भी कह सकते हैं कि हमने हिन्दुस्तानियों की शिक्षा के लिये तीन २ विश्वविद्यालय भी खोल रक्खे हैं—सी० एस० आर० कम्पनी, वैंकोवर कम्पनी

और पीनाङ्ग कम्पनी। भारत को जन संख्या के देखे उन आदमियों की संख्या जो फिजी को आते रहे हैं, समुद्र में से एक बूंद निकल जाने के बराबर है। रही ज़बरदस्ती हिन्दुस्तान को वापिस भेजने की बात सो चार वर्ष से हजारों ही आदमी हिन्दुस्तान को जाने के लिये तय्यार बैठे हैं और वे उस दिन का स्वप्न देख रहे हैं जब इन्हें मातृभूमि के लिये प्रस्थान करने का सौभाग्य प्राप्त होगा। इन लोगों के चले जाने से फिजो उपनिवेश की हानि ही होगी लाभ नहीं।

यह बात हम मानते हैं कि एक साथ मज़दूरों का आना बन्द होजाने से कुछ कोठी वालों का नाश होजाने की आशङ्का है और व्यापारमें भी गड़बड़ होजाने का डर है। ऐसे लोगों के साथ भी हमारी सहानुभूति है जो हमारे देशके मज़दूरों के भरोसे मौज उड़ाया करते थे और जो अब अपने जीवन क्रम रहन सहन को बदलनेके लिये बाध्य होंगे। लेकिन यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि इससे कितने ही हिन्दुस्तानी खेती करने वालों तथा व्यापारियों को भी साथ ही साथ हानि सहनी पड़ेगी, परन्तु अपनी आत्मा की भलाई के लिये और अपने सामाजिक राष्ट्रीय तथा साम्राज्य सम्बन्धी हितकी दृष्टि से हम लोगों को यह कड़वी औषधि खानी ही पड़ेगी भारत से मज़दूरों का आना ही बन्द कराना पड़ेगा। हमारा दृढ विश्वस है कि इस परिवर्तन के समय के बाद हिन्दुस्तानी लोग फिजी में सन्तोष जनक रीति से बस

जावेंगे और अपने कर्तव्यों का पालन करते हुये तथा अपनी जिम्मेदारियां को समझते हुए ब्रिटिश साम्राज्य के योग्य नागरिक सिद्ध होंगे। आइये हम फिजी प्रवासी भारतीय कमर कस कर तय्यार होजावें और संसार को यह वतलादें कि हम मातृभूमि भारत जननी की सच्ची सन्तान हैं।"

दुर्घटना के पूर्व फिजी की परिस्थिति

(२)

डाक्टर मणिलाल पर अभियोग।

डाक्टर मणिलाल (ऐम.ए.ऐल.ऐल.बी.वैरिस्टर) ने प्रवासी भारतीयों के लिये जो कार्य्य किया है उसका विस्तृत विवरण लिखने के लिये यहां स्थान नहीं है। श्रीयुत मणिलाल जो पहिले मारीशस में वैरिस्टरी करते थे और आपके ही प्रयत्न से मारीशस को कुली भेजा जाना बंद हुआ था। मारीशस प्रवासी हिन्दुस्तानियों के अधिकारों की रक्षा के लिये आपने जो उद्योग किया था उसके कारण पोर्टलुई के मेयर तक को यह वात कहनी पड़ी थी कि मारीशस उपनिवेश के निवासियों के लिये सव से कठिन परिश्रम यदि किसी ने किया है तो मिस्टर मणिलाल ने ही किया है। रायल कमीशनके सामने जो गवाही श्रीयुत मणिलाल जी ने दी थी वह वड़ी योग्यता पूर्ण थी मारीशस को

जेलों में जो कठोर नियम थे, और जिनके कारण हिन्दुस्तानियों का बड़ा अपमान होता था, उन्हें मणिलाल जी ने ही दूर कराया था। दीन हीन प्रवासी भारतीयों की भलाई करने के कारण गोरे प्लाण्टर आपसे सदा से ही जलते रहे हैं। मारीशस के प्लाण्टरों ने प्रयत्न करके गवर्नर के द्वारा आपको देश निकाले का दण्ड दिलवाया। सौभाग्य वश श्रीमान् सम्राट् सप्तम ऐडवर्ड ने गवर्नर की इस आज्ञा को रद्द कर दिया और इस प्रकार डाक्टर मणिलाल मारीशस में रहने पाये।

जब फिजी प्रवासी भारतीय गोरे बैरिस्टरों की करतूतों से बहुत तंग आगये तो उन्होंने महात्मा गांधी जी को पत्र लिखे कि कृपा कर कोई बैरिस्टर यहां भेज दीजिये। महात्मा जी ने मिस्टर मणिलाल को फिजी भेज दिया। २७ अगस्त सन् १९१२ को आप फिजी में पहुंचे। तब से आप बराबर फिजी प्रवासी भारतीयो की भलाई के लिये कुछ न कुछ उद्योग करते रहे हैं। आपके लेख भारत के प्रसिद्ध २ पत्रों में निकलते रहे हैं। यह बात स्मरण रखने योग्य है कि कुली प्रथा को बन्द कराने के लिये कांग्रेस में सब से प्रथम प्रस्ताव मि० मणिलाल जी ने ही किया था और आपने ही महात्मा गोखले से प्रार्थना की थी कि वे इस प्रथा के विरुद्ध सरकारी कौंसिल में प्रस्ताव करें। अपने पिछले कार्य्यों के कारण तथा प्रवासी मजदूरों के

लिये बराबर काम करने की वजह से मि० मणिलाल को प्रायः गोरे प्लाण्टरों के अन्याय युक्त क्रोध का पात्र बनना पड़ा है। उपनिवेशों के गोरे वैरिस्टर तो आप से खूब ही जलते हैं। इसका एक उदाहरण सुन लीजिये। सन् १६१५ में फिजी के एक गोरे वकील ने जिसका नाम वेसले है मि० मणिलाल से कहा था " मैं तुम्हें किसी "कुली" से बहतर नहीं समझता। सन् १६१६ में इन्हीं हजरत वेसले ने रेवा के डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर से कहा था कि मि० मणिलाल को रिपोर्ट चीफ़ जस्टिस के यहां करदी जावे और उनका नाम वकीलों की लिस्ट में से काट दिया जावे। इस तरह के अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं। सितम्बर सन् १६१६ में मि० मणिलाल पर १० पौंड जुर्माना अथवा एक मास के जेलखाने का दण्ड दिया गया। इस अभियोग के विषय में अपनी सम्मति देने के पूर्व हम फिजी सरकारका पक्ष तथा फ़िजी प्रवासी भारतीयों का पक्ष पाठकों के सामने रख देना उचित समझते हैं। फिजी गवर्नर ने अपने २२ जनवरी सन् १६२० के पत्र में औपनिवेशिक विभाग को लिखा था "सन् १६१८ के प्रारम्भ में मि० मणिलाल ने नौसूरी (रेवा) में एक जगह लेने के लिये प्रार्थनापत्र भेजा। इस जगह पर वे अपना आफिस बनाना चाहते थे। बोर्ड ने इस प्रार्थना पत्र को अस्वीकृत कर दिया। गवर्नर भी बोर्ड की इस बात से सहमत थे। मि० मणिलाल को इस बात की सूचना दे

दी गई कि उनको अर्ज़ी नामञ्जूर की गई है।

मि० मणिलाल को यद्यपि रेवा के डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर ने सूचना दे दी थी लेकिन तो भी उन्होंने फिजी के आदिम निवासी से, जिसकी कि वह भूमि थी, कानून के विरुद्ध वह जमीन ले ली और उस पर एक मकान बनाना शुरू कर दिया। मणिलालको नोटिस दिया गया लेकिन उन्होंने उस पर ख्याल नहीं किया। इस कारण डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर के सामने उनपर मुक़द्दमा चलाया गया और उन्हें १० पौंड जुर्माना अथवा १ महीने की जेल की सजा मिली। जुर्माना दे दिया गया। सूवा की इण्डियन इम्पीरियल ऐसोसियेशन ने जिसके कि सभापति स्वयं मणिलाल ही हैं, इस का विरोध किया और किसीने इसका विरोध नहीं किया। चूंकि मि० मणिलाल स्वयं वकील हैं। और उसने जान बूझकर अफसरों के मना करने पर भी क़ानून को तोड़ा है इसलिये ऐसोसियेशन के इस विरोध पर ख़्याल करने की आवश्यकता नहीं समझी गई" यह तो हुआ फिजी सरकार का पक्ष अब प्रवासी भारतीयों का पक्ष सुन लीजिये। "रातू रुसियाती नामक जंगली की आज्ञा लेकर उसकी ज़मीन में डाक्टर मणिलाल ने अपना आफिस बनवाया था। गवर्मेण्ट इस कार्य्य में बाधा देती थी कारण कि यह जगह रोज़गार के लिये ठीक थी और एक गोरा दुकानदार इस जगहको अपने लिये चाहता था। इन्हीं कारणों से मजिस्ट्रेट

ने डाक्टर मणिलाल को नोटिस दिया कि घर अब आगे मत बनवाओ। इस पर मणिलाल जी ने घर बनवाना बन्दकर दिया। इसके एक सप्ताह बाद मजिस्ट्रेट ने नालिश कर दी और बहुत दिनों तक केस चलने के बाद मणिलाल जी को १० पौण्ड जुर्माना या एक महीने की सजा का दण्ड मिला। मि० मणिलाल ने सन्तोष कर लिया कि जुर्माना न भरकर जेल जावेंगे। जब मजिस्ट्रेट को यह पता लगा तो उसने मि० मणिलाल को जेल न देकर उनके आफिस पर दो पुलिसमैन बिठला दिये और आज्ञा देदी कि मि० मणिलाल का माल नीलाम करके दाम वसूल करलें। २७ सितम्बर को हम लोग नौसूरी गये। वहां पर हम लोगों के पहुंचते ही इन्सपैक्टर ने मि० मणिलाल का एक छोटा "सेफ" नीलाम पर चढ़ा दिया। हम लोगों ने उसके ११ पौंड १२ शिलिंग दाम लगा दिये। तब इन्सपैक्टर ने कहा बस हमें इतना ही रुपया चाहना था और नहीं। बस क्या था ११ पौंड १२ शिलिंग दे दिया गया और मि० मणिलाल की सुई भी ख़रीदने का मौका किसी गोरे को न मिला और उनका सेफ उन्हीं के पास छोड़ दिया गया।"

दोनों पक्षों पर विचार करते हुये यह बात हमें माननी पड़ेगी कि मि० मणिलाल ने क़ानून के विरुद्ध काम किया था, लेकिन इसके साथ ही हमें अन्य बातें भी ध्यान में रखनी चाहिये।

पहिली बात तो यह है कि यद्यपि कितने ही गोरोंने तथा अनेक हिन्दुस्तानियों ने ऐसा काम किया था लेकिन फिजी सरकार ने और किसी पर अभियोग न लगाकर केवल मि० मणिलाल पर ही अभियोग लगाया। दूसरी बात यह है कि फिजी सरकार ने फिजी के उस आदिम निवासी पर जिसने कि मिस्टर मणिलाल को अपनी ज़मीन पर आफिस बनाने की आज्ञा देदी थी कोई भी मुकद्दमा नहीं चलाया। तीसरी बात यह थी कि मिस्टर मणिलाल ने गवर्मेण्ट के नोटिस के अनुसार उस स्थान को छोड़ दिया था तथा उस मकान को उस जमीन के मालिक फिजियन को वेंच दिया था।

इन बातों पर ध्यान देते हुये हमें कहना पड़ता है कि फिजी सरकार ने मि० मणिलाल पर मुकद्दमा चला कर अपनी ज़िद ही पूरी की। मुकद्दमा बिलकुल अनावश्यक था जब कि वे सरकारी नोटिश के अनुसार उस स्थान को छोड़ चुके थे और वह मकान उस फिजियन को, जो उस भूमि का मालिक था और जिसकी आज्ञा लेकर उन्होंने वहां अपना आफ़िस बनाया था, बेच चुके थे। इस दशा में फिजी के प्रवासी भारतीयों ने जब देखा कि उनके नेता को सरकार जानबूझ कर अपनी ज़िद पूरी करने के लिये दण्ड देना चाहती है, तो उन्हें बहुत बुरा लगा। वे लोग कहने लगे "फिजी के कितने ही गोरे प्लाण्टरों ने भूमि के मालिक

जंगलियों को दियासलाई देकर या शराब देकर बहुत सी ज़मीन पहिले लेली थी, लेकिन अब हमारे एक नेता ने जंगली ज़मीदार की राजी से यह ज़मीन ली तो सरकार ने उन्हें १० पौण्ड जुर्माना अथवा एक महीने की क़ैद का दण्ड दिया।"

श्रीयुत मणिलाल जी के मामले पर ख्याल करते हुए दो बातें और भी समझ लेनी चाहिये। एक तो यह कि फ़िजी के गवर्नर साहब ने इंडियन इम्पीरियल ऐसोसियेशन का विरोध अपने खरीते में छाप दिया है लेकिन उसमें इस बात का जवाब नहीं दिया कि जब गवर्मेण्ट के नोटिस के अनुसार मि॰ मणिलाल ने जगह को छोड़ दिया था तो फिर उन पर ज़बरदस्ती अभियोग क्यों चलाया गया। दूसरी बात यह है कि गवर्नर ने अपने खरीते में लिखा है "The fine was paid" यानी "जुर्माना दे दिया गया" या नीलाम करके जबरदस्ती वसूल कर लिया गया?

इसी अवसर पर इंडियन इम्पीरियल ऐसोसियेशन की ओर से एक तार मि॰ ऐण्ड्रूज़ को और एक मि॰ पोलक को दिया गया था। इस तार में डाक्टर मणिलाल जी के अभियोग का वर्णन किया गया था और साथ ही साथ यह भी सूचना दी गई थी कि फिजी से एक डैपूटेशन कुली प्रथा जारी कराने के लिये भारत को जारहा है। और यह डैपूटेशन मिस्टर ऐण्ड्रूज़ की बातोंका खण्डन करेगा।

जब फिजी के गोरों को इस तार का समाचार मालूम हुआ तो वे और भी जल भुनकर ख़ाक हो गये । मि० मणि-लाल पर तो वे पहले से ही क्रुद्ध थे, अब और भी दांतो पीसने लगे ।

दुर्घटना के पूर्व फिजी की परिस्थिति ।

(३)

भारत से कुली पाने के लिए प्लाण्टरों का प्रयत्न ।

यद्यपि भारत सरकार ने कुली प्रथा बन्द कर दी थी लेकिन फिजी के गोरे प्लाण्टरों की आशा अभी नहीं टूटी थी । उन्हें फिर भी उम्मेद लगी हुई थी कि युद्ध के बाद भारत से मज़दूर मिलने लगेंगे । फिजी की व्यवस्थापिका सभा में भारतवासियों के घोर विरोधी मि० हैरिक्स ने एक प्रस्ताव पेश किया था, वह यह है "फिजी सरकार ऐसे उपाय करे जिन से युद्ध के बाद हिन्दुस्तानी लोग फिजी आने के लिये उत्साहित किये जा सकें और उनका मज़दूरी के लिये यहां आना पुनः प्रारम्भ हो जाय" इस प्रस्ताव को फ़िजी सरकार ने स्वीकृत कर लिया था । मि० हैरिक्स ने अपनी वक्तृता में कहा था, "भारतवर्ष में कोई ऐसा आ-दमी होना चाहिये जो फिजी के विषय में अधिकार पूर्वक कह सके । आज कल मिस्टर सी० एफ० एण्ड्रूज़ की तरह

के हमारे मित्र फिजी के बारे में ऊटपटाङ्ग बातें फैला रहे हैं, और बिलकुल झूठे विचार उत्पन्न कर रहे हैं। अगर हिन्दुस्तान में कोई ऐसा आदमी रक्खा जावे जो भारत सरकार को फिजी के ठीक २ हालात बतला सके तो इस से हमारे उपनिवेश को बड़ा भारी लाभ होगा। मि० ऐण्ड्रूज़ ने अपनी रिपोर्ट फिजी में तो गुप्त रीति से ही प्लाण्टरों को दी थी, लेकिन आस्ट्रेलिया में यह खुल्लमखुल्ला प्रकाशित कर दी गई है। मि० ऐण्ड्रूज़ की रिपोर्ट का खण्डन करने के लिये कुछ नहीं किया गया। मैं नहीं समझता कि विचारे फिजी उपनिवेश को ही बदनाम करने के लिये क्यों चुन लिया गया है? दूसरे उपनिवेशों की अपेक्षा फिजी की अवस्था कहीं अच्छी है। आज कल अन्य देशों में फिजी के बारे में ऐसी अफ़वाह फैली हुई है कि यहां की स्थिति बिल्कुल असह्य है। इस बात का खण्डन करना चाहिये और गवर्मेण्ट को ऐसे प्रयत्न करने चाहिये जिस से इस ढङ्ग के बुरे भाव न फैलने पावें। दूसरी बात यह है कि गवर्मेण्ट को कुछ रुपये देने चाहिये जिस से दूसरे मुल्कों में फिजी की दशा वर्णन करने के लिये चलती फिरती तस्वीरें दिखलाई जा सकें। जिस देश से हमें मज़दूर लेना हो उस में फिजी के विषय में हमें खूब विज्ञापन करना चाहिये। इस से फिजी के लिये मज़दूर भिजवाने में जितना लाभ होगा उतना किसी दूसरी बात से कदापि नहीं हो सकता

.........अब तक भारतवर्ष से जो मज़दूर फिजी को आते रहे हैं, वे बिलकुल नीच जाति के थे। जिस तरह सीलोन के लिये गावों में मज़दूर भर्ती किये जाते हैं इसी तरह यदि फिज़ी के लिये भर्ती किये जावें तो इस का नतीजा इस उपनिवेश के लिये सौगुना अच्छा होगा! हिन्दुस्तानमें एक ऐसे सज्जन हैं जो ऐसा काम करने के लिये सर्वथा उपयुक्त हैं।" इस पर कई लोग बीच में से बोल उठे वे "महाशय कौन हैं ?" मिस्टर हैरिक्सन बोले "वे महाशय कप्तान लैम्ब हैं जो जहाजीकोरमें नौकर हैं। उन्हें मैसोपोटामियां में हिन्दुस्तानी मजदूरों से काम पड़ा है। वे कहते हैं कि "फिजी में जो मजदूर आते हैं वे शहरों के छटे हुए रज़ील क़ौम के होते हैं। अगर गांव के आदमी फिजी में जा सकें तो वहां पर बसना उन के लिये बहुत सहज होगा। गांव के आदमी शहर के आदमियों से हजार गुने अच्छे हैं। मेरी समझ में यों ही बैठे रहना ठीक नहीं होगा।"

मि० क्लैपकोट साहब ने मि० हैरिक्स का समर्थन करते हुए कहा "फिजी के विषय में चलती फिरती तस्वीरें हिन्दुस्तान में दिखलाई जानी चाहिये। ये तस्वीरें सर्वोच्चम ढङ्ग से हिन्दुस्तानी आदमियों के सामने पेश की जावें जिस से फिजी की असली हालत जान सकें, और फिजी का एक प्रतिनिधि हिन्दुस्तान में रहना चाहिये। जो वहां झूठी रिपोर्टों का खण्डन किया करें"।

कालोनियल सेक्रेटरी ने कहा "गवर्मेण्ट इस प्रस्ताव को स्वीकृत करती है। इस विषय में स्टेट सेक्रेटरी से पत्र व्यवहार किया जावेगा। रही हिन्दुस्तान को एक आदमी भेजने तथा तसवीर दिखलाने की बात, सो जो आदमी निजी तौर पर ऐसा करना चाहें वे कर सकते हैं गवर्मेण्ट से ऐसी आशा नहीं करनी चाहिये।"

मि० हैंरिकस ने कहा "मैं इस बात से सहमत नहीं। मि० लैम्ब ने मुझे लिखा है कि हिन्दुस्तान में फिजी की इतनी प्रशंसा है कि वे पहली साल तीन हज़ार और इस के बाद प्रति वर्ष पांच हज़ार मज़दूर भेजने की गारण्टी कर सकते हैं। इस के सिवाय यदि हिन्दुस्तान के गांवों के १२ आदमी जो मुखिया हों, फिजी की हालत यहां आकर देख जावें तो और भी अच्छी बात हो, क्योंकि हमारे यहां छिपाने को कोई बात है ही नहीं"।

इस से पाठक अनुमान कर सकते हैं कि फिजी के प्लाण्टर हिन्दुस्तान में किस तरह के आरकाटी भेजना चाहते थे।

दुर्घटना के पूर्व फिजी की परिस्थिति।

(४)

भारत में फिजी का डेपूटेशन।

कुली पाने की आशा में लगे हुए प्लाण्टरों ने और उनकी पक्षपाती फिजी सरकार ने भारत को एक डेपूटेशन भेजा।

इस डेपूटेशन में दो महानुभाव थे एक तो पालीनेशिया के विशप और दूसरे कालोनियल सेक्रेटरी मि० रैनकिन। इन लोगों ने भारत में आकर भारत सरकार द्वारा मनोनीत कमेटी के सामने गवाही दी। इस गवाही में इन दोनों महाशयों ने अनेक वातें ऐसी कहीं थीं जिन्हें फिजी प्रवासी भारतीय बिल्कुल निराधार या असत्य समझते हैं।

इन महाशयों ने कहा था।

(१) अपनी एक तिहाई मज़दूरी फिज़ी में मज़दूरों द्वारा मज़े में बचाई जासकती है।

(२) फिजी की व्यवस्थापिका सभा के दो हिन्दुस्तानी मेम्बर हिन्दुस्तानियों द्वारा ही चुने जाते हैं।

(३) ८१०० पौण्ड शिक्षा के लिये रक्खा गया है।

(४, ज़मीन सुभीते से मिल सकेगी।

(५) रेलवे ट्रेनों में भारतीय और यूरोपियनों के बीच कोई भेद भाव नहीं।

(६) फिजी में इस समय जातीय विद्वेष का अभाव है है और हमें इस बात क आशंका भी नहीं है कि भविष्य में फिजी में जातीय विद्वेष फैलेगा। यद्यपि इस समय हमारे पास उस बातचीत का पूरा पूरा वृतान्त नहीं है जो फिजी के डेपूटेशन तथा भारत सरकार की कमेटी के बीच में हुई थी, लेकिन उपर्युक्त बातें फिजी डेपूटेशन के कथन का सारांश कहा जासकता है। डेपूटेशन की इन बातों का

विस्तृत उत्तर देने की यहां आवश्यकता नहीं है। जिस समय डैपूटेशन यहां भारतमेंही था उस समय मैंने एक लम्बा लेख लीडर में छपाया था और डैपूटेशन के मेम्बरोंसे कितने ही प्रश्न किये थे लेकिन इन महाशयों ने मेरे प्रश्नों का उत्तर देने की कृपा न की। अस्तु जो बातें उन्होंने कहीं थीं उनमें कितनी ही हमैं भी निराधार प्रतीत होती हैं।

(१) यह कहना कि फिजी में मज़दूर अपनी तिहाई मज़दूरी मज़े में बचा सकता हैं, सत्य नहीं है। उस समय की, जब कि डैपूटेशन ने उपर्युक्त बात कही थी, मज़दूरी से खाना ही पूरा नहीं होता था और कपड़े बनवाना असम्भव होजाता था, तिहाई मज़दूरी बचाना तो रहा दूर।

(२) फिजी डैपूटेशन का यह कथन बिल्कुल सफ़ेद झूंठ था। फिजी की व्यवस्थापका सभा में हिन्दुस्तानियों द्वारा २ निर्वाचित मैम्बर कभी भी नहीं थे और न अब ही हैं। अकेले टुयरू टूं बद्री महराज हैं; जिन्हें भारतीय जनता द्वारा निर्वाचित होने का गौरव कदापि प्राप्त नहीं हुआ। ये महाशय सरकार द्वारा मनोनीत "जी हुज़ूर" है।

(३) "८१०० पौंड शिक्षाके लिये रक्खा गया है" यह कथन भी बिल्कुल स्पष्ट नहीं। हमारे एक फिजी प्रवासी संवाद दाता इस विषय में लिखते हैं "मालूम नहीं कि यह रक़म वार्षिक एकत्रित होती रहती है या कि आरम्भ से लेकर आज तक की सारी एकत्रित सम्पत्ति की परिमित संख्या

है । ये ८१००पौण्ड या तो खज़ाने में पड़े होंगे या मिशन स्कूल में अथवा यूरोपियन गर्लस या वाइज़ स्कूल में व्यय होते होंगे । यदि इतनी उदारता सरकार दिखाती तो आज हिन्दुस्तानियों के हृदय को सदा के लिये मोल ही न ले चुकी होती, फिर कुली प्रथा और पराधीनता ही क्यों खलती ? इतनी बड़ी रक़म केवल भारतीयों के शिक्षण में व्यय बताना कोरम कोर गप है, और यदि यह रक़म आस्ट्रेलियनों के लिए है तो केम्ब्रिज कालेज का लेखा फिजी प्रवासी भारतीयों के नाम पर देना धोखेबाजी मात्र है।" हमारी समझ में यह और भी उत्तम होता यदि फिजी डेपूटेशन कह देता "फिजी में तीन चार कालेज भारतीयों की शिक्षा के लिये स्थापित हैं यथा सी. ऐस. आर. कालेज, वेंकोवर कालेज, और पीनाङ्ग, कालेज इत्यादि" क्योंकि इन महाविद्यालयों में भारतीयों को बहुत कुछ शिक्षा मिलती है-ऐसी शिक्षा जिसे वे ज़िन्दगी भर नहीं भूलते ! . .

(४) ज़मीन जैसी कठिनता से फिजी में मिल सकती है उसे यहां बतलाने को आवश्यकता नहीं । जब तक फिजियन लोगों को रिश्वत नहीं दी जाती तब तक वे ज़मीन देना मंजूर ही नहीं करते । यद्यपि अब क़ानून बन गया है कि जङ्गलियों को नज़रें न दी जावें लेकिन जमीन मिलने में अत्यन्त कठिनाई होने के कारण लोगों को छिप २ कर रिश्वत बराबर देनी पड़ती है ।

(५) ट्रेनों पर गोरे काले के भेदभाव के विषय में एक फिजी प्रवासी सज्जन लिखते हैं "ट्रेन ऐक्ट के रद्द होने पर भी सभ्य शिक्षित भारतीय बिना अपमान के यात्रा नहीं कर पाते। यह बात ध्यान में रखने योग्य है कि ये सी. ऐस. आर. कम्पनी की मामूली रेलें हैं जिनके वास्तविक शासक कानूनके बन जाने परभी-आज भी कम्पनीके ही नौकर हैं"

(६) जिस दिन १२ फर्वरी सन् १९२० को दोपहर के समय फिजी का डैपूटेशन दिल्ली में कह रहा था "फिजी में जातीय-विद्वेष का अभाव है और भविष्य में भी इसके फैलने की आशङ्का नहीं है उसी के दूसरे दिन १३ फर्वरी को ही दोपहर के समय ही फिजीमें अमृतसर का नाटक खेला जा रहा था ? गोरे कान्स्टेबल गरीब निःशस्त्र हिन्दुस्तानियों पर गोली चला रहे थे ! इन बातों से फिजी के डैपूटेशन को कार्रवाई का कुछ कुछ पता चल सकता है। माननीय श्रीमान् सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने जब इस डैपूटेशन से कहा "क्या आप ब्रिटिश गायना के डेपूटेशन की तरह समानता के अधिकारों की प्रतिज्ञा कर सकते है ? "

तब डैपूटेशन वाले मेम्बरों ने जवाब दिया कि हम फिजी सरकार से लिखा पढ़ी करे बिना इस विषय में कुछ नहीं कह सकते। फिजी सरकार इस समय समानता के अधिकारों की प्रतिज्ञा करने के लिये राज़ी है। इस प्रतिज्ञा का अर्थ क्या है और इसका मूल्य कितना है यह तो हम

आगे चलकर दिखलावेंगे, इस अवसर पर हम केवल इतना ही कहना चाहते हैं कि फिजी डेपूटेशन ने भारतीय जनता के हृदय में कुछ भी विश्वास उत्पन्न नहीं किया। यदि यह डैपूटेशन फिजी सरकार की तथा प्लाण्टरों की पिछली भूलों को स्वीकार कर लेता और सारे मामले को स्पष्टतया भारतीय जनता के सामने रखता तो हम लोग उस पर विश्वास भी कर लेते। लेकिन डेपूटेशन के मेम्बर लोग सरकारी आदमियों से मिले और सरकारी कमेटी के सामने गवाही देकर फिजी को लौट गये। उन्हीं दिनों इस डैपूटेशन के मेम्बरों ने फिजी की दुर्घटना के विषय में फिजी गवर्नर के तार भी छपाये थे। इन तारों में जितनी चेष्टा सत्य को छिपाने के लिये की गई थी उतनी सत्य को प्रगट करने के लिये नहीं की गई थी। फिजी डेपूटेशन को यह बात समझ लेनी चाहिये थी कि जब तक फिजी प्रवासी भारतीय अपनी सभाओं में निश्चय करके यह नहीं कह देंगेकि भारत से मज़दूर भेजे जावें, तब तक हम लोग यहां से फिजी को मज़दूर हर्गिज़ नहीं भेज सकते। स प्रकार फिजी डेपूटेशन की भारत यात्रा बिल्कुल निरर्थक ही हुई, हां इसका एक परिणाम अवश्य हुआ वह यह कि फिजी प्रवासी हिन्दुस्तानियों के हृदय में वहां की सरकार तथा प्लाण्टरों पर जो रहा बचा विश्वास था वह भी जाता रहा मिस्टर एण्ड्रूज पर अन्याय-युक्त कटाक्ष होते, डाक्टर

मणिलाल के साथ बुरा वर्ताव होने और भारतीयों के विषय अत्यन्त निन्दा-युक्त लेखों के छपने से हिन्दुस्तानी वैसे ही मन ही मन में क्षुब्ध हो रहे थे, इस डैपूटेशन की वेतुकी और निराधार बातों ने रही सही कसर भी पूरी कर दी।

दुर्घटना के कारण

(५)

सन् १९१९ के अन्त में सरकारी गजट में फिजी गवर्मेंण्ट ने यह समाचार छपाया कि ३१ दिसम्बर सन् १९१९ को सब शर्तबंधे मजदूर मुक्त कर दिये जावेंगे। इससे शर्तबंधे भारतीयों के हर्ष का पारावार न रहा। गुलामों के लिये इससे बढ़कर हर्षोत्पादक समाचार और क्या होसकता था कि वे शीघ्र ही मुक्त कर दिये जावेंगे। लेकिन उन्हीं दिनों में कोठी वाले मालिकों ने अपने अपने मज़दूरों से कहा "तुम्हें ३१ मार्च सन् १९२० तक काम करना पड़ेगा।" इस बात से इन बिचारों को बड़ी निराशा हुई। यद्यपि शर्तबंधे मज़दूर २ जनवरी सन् १९२० को ही छोड़ दिये गये लेकिन कोठी वालों की उपर्युक्त बात ने इन मज़दूरोंके हृदय पर बड़ा बुरा प्रभाव डाल दिया। मज़दूर लोग समझ गये कि ये प्लांण्टर हमें बराबर गुलामी में ही रखना चाहते हैं। उन्हीं दिनों में इसी कारण से फिजी के उत्तरी भाग में हड़ताल होने वाली थी लेकिन मिस्टर एन० बी० मित्र के

प्रयत्न से वह रुक गई ।

यह बात ध्यान में रखने योग्य है कि यद्यपि प्लाण्टरों ने शर्तबँधे मज़दूरों को मुक्त कर दिया था तथापि वे अपने मन ही मनमें बड़े कुढ़ते थे। जिस समय जुलाई सन् १९१९ में फिजी की कौंसिल में शर्तबन्दी के काटने का प्रस्ताव उपस्थित हुआ था उस समय कालोनियल सेक्रेटरी ने कहा था "जब तक कि प्लाण्टरों को भविष्यमें मज़दूर मिलने का कुछ आसरा न दीख पड़े तब तक उन का शर्तबन्दी काटने में अनिच्छा प्रगट करना स्वाभाविक ही है ।"

इस का सीधा सादा अर्थ यह है कि प्लाण्टरों को अपने खेतों के लिये लिये मज़दूर चाहिये, उन्हें इस बात की कुछ चिन्ता नहीं कि शर्तबन्दी के कारण भारतीय स्त्रियों और पुरुषों के चरित्रों का नाश किस प्रकार होता है। प्लाण्टरों के असली स्वभाव को प्रगट करने के लिये फिजी के कालोनियल सेक्रेटरी के उपर्युक्त शब्द पर्याप्त हैं। असल में बात यह थी कि भारत में घोर आन्दोलन होने के कारण भारत सरकार ने भारत सचिव पर दबाव डाला था। भारत सचिव ने विलायत के औपनिवेशिक विभाग से लिखा पढ़ी की थी और इस लिखा पढ़ी का नतीजा यह हुआ था कि औपनिवेशिक विभाग ने फिजी सरकार को दबाया था, तब कहीं शर्तबँधे मज़दूर फिजी में गुलामी से छूटे थे। अगर भारत में ज़ोरदार आन्दोलन न होता तो फिजी के

शर्त बंधे भाइयों को सन् १९२१ तक गुलामी करनी पड़ती। माननीय मि० ऐच० ऐम० स्काटने जो बातें कौंसिल में कही थीं, उनसे हमारे कथन की पुष्टि होती है। मि० स्काटने कहा था "I feel sure that some explanation is due as to our change of front. It has been long known that the people here always opposed the policy of granting the 'give' 'give' cry from India. The position now is that unless we agree to voluntarily cancel the indentures worse is in store............We recognise that the Government is the dominant factor in this matter and we may be told by some one higher up that we will get no labour unless we free all our labour. We are forced to do this."

अर्थात् "हम लोगों के मत परिवर्तन का कोई न कोई कारण ज़रूर होना चाहिये। बहुत दिनोंसे इस बातको सब जानते हैं कि हम लोग बराबर इस बात का विरोध करते रहे हैं कि हिन्दुस्तान की 'देदो' 'देदो' की चिल्लाहट के सामने सरकार दब जावे, अब स्थिति यह हो गई है कि अगर हम लोग अपनी राज़ी से शर्तबंधे मज़दूरों को मुक्त नहीं करेंगे तो भविष्य में इस का परिणाम हमारे लिये और भी बुरा होगा। हम इस बात को मानते हैं कि इस मामले का निश्चय गवर्मेण्ट के ही हाथमें है और साथ ही साथ हम यह

भी अनुभव करते हैं कि अगर हम अपने मज़दूरों को शर्तबन्दी से मुक्त नहीं करेंगे तो फिजी सरकार से भी ऊपर के अधिकारी हमें साफ कह देंगे कि अब तुम्हें मज़दूर नहीं मिल सकते। इस प्रकार हमें मजबूरन अपने शर्तबंधे मज़दूरों को मुक्त करना पड़ता है।"

इस प्रकार प्लाण्टरों की इच्छा न होने पर भी उन्हें "मजबूरन" शर्तबंधे गुलाम छोड़ने पड़े। शर्तबन्दी उन्होंने काट तो दी लेकिन उनके दिल में यह बात कांटे की तरह खटकती रही। शर्तबन्दी के सुख पूर्ण दिन भला प्लाण्टरों को किस तरह भूल सकते थे? साढ़े सात पौंड "बोनस" देकर उन्होंने इन्हीं मजदूरोंसे फिर काम लेना चाहा लेकिन बहुत कम आदमी इसके लिये राज़ी हुये। इन मज़दूरों को अब "स्वतन्त्रता" का कुछ २ अनुभव होने लगा था। अब वे फ्री होगये थे।

अब कुली प्रथा के दिनों की यादकर करके वे कहते थे "देखो, इस गुलामी की प्रथाने हमारा कैसा सत्यानाश कर दिया। न दीन के रहे न दुनियां के। धर्म कर्म सब नष्ट हो गया, गुलाम कह लाये और फिर भी भूखे के भूखे ही मरे" जब ये लोग छूटकर आये तो चीजों के भाव के कारण, जो दूना तिगुना होगया था, इन्हें और भी अधिक कष्ट होने लगा। युद्ध के पहिले भी स्वतन्त्र लोगों को दो शिलिङ्ग मिलते थे और अब युद्ध के बाद भी जब चीजों का भाव

दूना तिगुना बढ़ा हुआ था यह तनख्वाह ज्यों की त्यों बनी हुई थी, हां कुछ लोगों को ढाई शिलिङ्ग जरूर मिलने लगे थे। इन मजदूरों ने जाकर इण्डियन इम्पीरियल ऐसोसियेशन के सामने अपना दुःख कह सुनाया। इस ऐसोसियेशन ने फिजी सरकार के पास लिख भेजा कि "गवर्मेण्ट" को नियम बना देना चाहिये कि मज़दूरों का वेतन कमसे कम पांच शिलिङ्ग हो यदि सरकार की आज्ञा हो तो यह सभा अपने इस पक्ष का समर्थन प्रमाण द्वारा कर सकती है" गवर्मेण्ट ने सभा की इस प्रार्थना पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया। इमीग्रेशन आफिस तो पहले से ही अपनी धूर्ततापूर्ण चाल चल रहा था और जो लोग वहां वेतन बढ़वाने के लिये कहते थे उन्हें अच्छी तरह डाट बतलाई जाती थी। इधर "फिजी टाइम्स और हैराल्ड" हिन्दुस्तानियों की एक मात्र सभा इंडियन इम्पीरियल ऐसोसियेशन पर बराबर कटाक्ष कर रही थी। फिजी में पैदा हुए कुछ लड़के भी जो ईसाई होगए थे और जिनका जीवन अपने गोरे पादरियों की कृपा पर निर्भर था, इस ऐसोसियेशन की निन्दा करते फिरते थे। श्रीयुत मणिलाल जी पर मुकद्दमा चलाये जाने के कारण भारतीय जनता वैसे ही नाराज़ थी। ये लोग कहते थे "देखो सरकार डाक्टर मणिलाल पर कितनी जलती है। अनेक यूरोपियनों और हिन्दुस्तानियों ने इसी प्रकार जंगलियों से

ज़मीन लेकर उसपर मकान बनवाये लेकिन उनमें से किसी को भी सरकार ने कुछ नहीं कहा, लेकिन डाक्टर मणिलाल पर दस पोण्ड जुर्माना या एक महिने की क़ैद का हुक्म पास कर दिया”

जिन दिनों फिजी प्रवासी भारतीय जनता के भाव इस प्रकार के थे, इंडियन इम्पीरियल ऐसोसियेशन की ओर से एक नोटिस निकाली गया कि २५ दिसम्बर को सूवा के टाउनहाल में भारतीय जनता की एक कान्फ्रेंस होगी।

टाउन हाल की सभा ।

डाक्टर मणिलाल जी का भाषण ।

२५ दिसम्बर को टाउन हाल में सभा हुई। सभी श्रेणी के लगभग दो सहस्र हिन्दुस्तानी इकट्ठे थे । केवल ६-७ हिन्दुस्तानी ईसाई और उनके पृष्ठ पोषक इस सभा में नहीं आये थे। मि० मणिलाल, हरपाल शर्मा, फज़लअहमद खां भगवतीप्रसाद, रामसिंह, दुलीचन्द, नूर अहमद, नासिर अली तथा टीकाराम ने इस सभा में भाग लियो था । हिन्दू मुसलमानों की जय, महात्मा गांधी जी की जय और महात्मा तिलक की जय मनाई गई। अनेक स्त्रियां भी इस

सभा में सम्मिलत हुई थीं। सभापतिका आसन डा० मणि-लाल ने ग्रहण किया था। डाक्टर मणिलाल जी के व्याख्यान का सारांश यह था*

"फिजी गवर्मेण्ट ने हमारे हिन्दुस्तानी भाइयों की शिक्षा का कोई प्रवन्ध नहीं किया। उनकी औरतों को पाई वगैरः का काम सिखाने का इन्तिज़ाम नहीं किया। करीव ४० वर्ष से हिन्दुस्तानी गिरमिट में आरहे हैं लेकिन आज तक एक लड़के को भी डाक्टरी का काम नहीं सिखाया गया। और न किसी स्त्री को काम सिखाया गया। यह फिजी गवर्मेण्ट की वड़ी भारी भूल है। फिजी में गोरों की संख्या लगभग ३००० है उनके वास्ते एक स्कूल समुद्र के किनारे क़ायम किया गया है। लेकिन ६१००० हिन्दुस्तानियों के लिये एक भी मदर्सा गवर्मेण्ट ने नहीं वनाया। जंगली लोगों के वास्ते तो घर २ तालीम देनेके वास्ते मास्टर रक्खे गये यानी हर एक गांव के लिए स्कूल वनाये गए लेकिन हिन्दुस्तानियों के लिये कुछ भी प्रवन्ध नही किया गया। जंगलियों के लिये यह क़ानून वनाया गया कि ५ वर्ष से ऊपर का लड़का या लड़की यदि पढ़ने न आवेगा तो उसके माता पिता पर जुर्माना किया जावेगा। क्या फिजी गव-र्मेण्ट हमारे वास्ते ऐसा वन्दोवस्त नहीं कर सकती थी?

*यह सारांश हमने हरपाल शर्मा और फ़ज़ल अहमद खां से पूछकर लिखा है।

फिजी गवर्मेण्ट हमें नीची निगाह से देखती है, और हमेशा हम लोगों को गुलामी के दर्जे में रखना चाहती हैं। इसके सिवाय जो क़ानून जंगलियोंके वास्ते बनाये गये उसी माफिक़ कानून फिजी सरकार हम हिन्दुस्तानियों के वास्ते बनाती, उसी तरह हमारे बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध करती और हिन्दुस्तानियों के ग्राम जंगलियों की तरह के बसाये जाते तो हमारे इतने भाई इनलफ़ुऐंज़ा में नहीं मरते। दूर २ घर होने से वहां कोई डाक्टर पहुंच नहीं सके इसलिये क़रीब ६००० हिन्दुस्तानी मर गये। लेकिन ८४ हज़ार जगलियों में थोड़े से जंगली मरे क्योंकि उनके वास्ते बहुत तरह से इन्तज़ाम किया गया था। हमारे वास्ते वैसा बन्दोबस्त नहीं किया गया था जैसा कि गोरों और जंगलियों के लिये किया गया था। यह फिजी गवर्मेण्ट की सरासर भूल है। एक दफ़ा मैंने मिस्टर मकई (इन्सपेक्टर आफ़ स्कूल्स) से कहा था "मेरा लड़का फिजीके स्कूल में भर्ती किया जावे" उस समय मि० मकई ने जवाब दिया था "इसमें गोरों के बराबर हिन्दुस्तानियों के लड़कों को जगह नहीं मिल सकती" तब मैंने कहा "जब मैं इङ्गलेण्ड में था तब वहां पर बड़े २ आदमियोंके साथ पढ़ता था और फिजी में मेरा लड़का हाफकास्टों के लड़कों के साथ भी नहीं पढ़ सकता। इङ्गलैण्ड में जिस वक्त मैं पढ़ता था गोरे हमारे जूते साफ करते थे और टट्टी साफ करते थे। ऐसे नीचे

दर्जे के गोरे का लड़का अगर फिजी में आवे तो वह फिजी के स्कूल में पढ़ सके, पर हमारा लड़का उसमें नहीं पढ़ सकता! यदि लार्डसिंह का पुत्र फिजी को आवे और यहां पढ़ना चाहे तो वह यहां के गोरे लड़कों के स्कूल में भरती नहीं हो सकेगा, परन्तु अगर लार्डसिंह के जूतों पर स्याही करने वाले किसी गोरे का लड़का यहां फिजी में आ जावे तो वह यहां के गोरों के स्कूल में पढ़ सकेगा!

हमारे जो भाई इस जगह पर रहते हैं उनकी गुञ्जायश कम मज़दूरी में नहीं होती। उनके लिये अगर ५ शिलिङ्ग मज़दूरी हो तो ठीक हो।"

डाक्टर मणिलाल की स्पीच का तोड़ा मरोड़ा हुआ और ग़लत सलत वृत्तान्त "फिजी टाइम्स और हैराल्ड" में छापा गया था। उनका व्याख्यान हिन्दी में हुआ था और इस व्याख्यान की रिपोर्ट फिजी के उन ईसाइयों ने लिखी थी, जो हिन्दी ठीक तरह से समझ भी नहीं सकते थे और जो हिन्दुस्तानियों के घोर विरोधी थे। खेद है कि हमारे पास "फिजी टाइम्स और हैराल्ड" की वे प्रतियां नहीं हैं जिनमें उसके रिपोर्टर द्वारा लिखित पूरी स्पीच छपी थी। उसका एक अङ्क हमारे पास है और उसमें मणिलालजी की स्पीच का केवल एक अंश ही है। पाठकों के सुभीते के लिये हम उसी का अनुवाद यहां दिये देते हैं।

(फिजी टाइम्स तथा हैराल्ड से अनुवादित)

भारतीयों की सभा।

मि० मणिलाल द्वारा गवर्मेण्ट पर आक्षेप।

* गवर्मेण्ट की लापर्वाही *

मि० मणिलाल ने कहा "तुम कहते हो कि बादशाह भारतवर्षके सम्राट हैं। लेकिन इससे हमें क्या लाभ हुआ? अगर हमें भी वैसे ही अधिकार मिल जावें जैसे कि गोरों को प्राप्त हैं तब तो बात ठीक भी हो। कितने ही फिजी में पैदा हुये हिन्दुस्तानी युद्ध क्षेत्र में जाना चाहते थे लेकिन फिजी गवर्मेण्ट ने उन्हें कुछ भी सहायता नहीं दी। हिन्दुस्तानियों ने युद्ध के समय में धन से तथा दूसरी तरह से ब्रिटिश सरकार को सहायता दी, लेकिन तब भी उन्हें कुछ अधिकार नहीं मिले। हम से ये लोग हमेशा कहा करते हैं "तुम ब्रिटिश राज्य की प्रजा नहीं हो।" हम सब::लोग यहां मिलकर रहना चाहते हैं। हम जानते हैं कि हमारी आवश्यकतायें क्या २ हैं।

यहां मैं सब आवश्यकताओं की गणना करने का प्रयत्न नहीं करूंगा। हम लोगों को चाहिये कि हम अपना सुधार स्वयं ही करें। हमारे कुछ शिक्षित भाई फिजी सरकार के नौकर हैं और वे हमसे सहमत भी हैं, लेकिन वे हमारी

मदद नहीं कर सकते । हम ब्रिटिश गवर्मेण्टको वहुत धन्यवाद देते हैं कि उसने कुछ थोड़ासा होमरूल हिन्दुस्तानियों को दिया है (करतल ध्वनि) मेरा अनुमान है कि आपने पञ्जाव के भारी झगड़े का वृत्तान्त सुना होगा । हम लोगों का ख्याल था कि पञ्जाव के आदमी वड़े वहादुर होते हैं, लेकिन जो घटनाएं पञ्जाव में हुई थीं वे दूसरी जगह नहीं हो सकतीं । डाक्टरों और वकीलों को जेल करदी गई थी । अव पञ्जाव के मामले की जांच हो रही है । पञ्जाव प्रान्त को वहुत नीचा दिखाया गया है ।

पहले फिजी में मि० मैकनील और चिम्मनलाल आये और फिर मिस्टर ऐण्ड्रूज़ और मिस्टर पियर्सन आये । शर्तवन्दी की प्रथा इतनी वुरी थी कि भारतीय स्त्रियों को, जो पुरुषों के सामने नहीं जातीं हैं, वायसराय के पास डेपूटेशन लेकर उपस्थित होना पड़ा और उन स्त्रियों ने वायसराय से कहा कि जव तक आप शर्तवन्दी की प्रथा को वन्द कर देने की प्रतिज्ञा नहीं करेंगे तव तक हम यहां से नहीं हटेंगीं । अव तक शर्तवंधे मज़दूरों को मुक्त करने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया । वस हमसे वायदे ही वायदे किये गए हैं, ये वायदे उसी तरह के हैं जिस तरह के वायदे किसी शरावी के होते हैं । पहले तो प्लाण्टर लोग कहते थे कि हम उन्हीं कोठियों के शर्तवंधे मजदूरों को मुक्त करेंगे जहां विना व्याहे ओवरसियरों को काम करना पड़ता है,

लेकिन मि० ऐण्ड्रूज ने तथा दूसरे लोगोंने जोर देकर कहा कि सभी शर्तबंधे मज़दूर मुक्त हो जाने चाहिये। अब कहा जाता है कि सब शर्तबंधे मज़दूर मुक्त कर दिये जावेंगे, और इसका कानून बन जावेगा। इसके लिये हम हृदय से कृतज्ञ हैं, लेकिन हम नहीं जानते कि हम किन्हें धन्यवाद दें हमारा कर्तव्य है कि हम मि० पियर्सन तथा मि० ऐण्ड्रूज को धन्यवाद दें और हमें परमात्मा को, जो सब के ऊपर हैं, धन्यवाद देना चाहिये। शर्तबन्दी की प्रथामें हमें बड़ी २ ठोकरें खानी पड़ी हैं। अब कोई यूरोपियन नहीं कहेगा कि शर्तबन्दी की प्रथा अच्छी थी लेकिन पहले वे इसी प्रथा को अच्छी कहते थे। इस कुली प्रथा के दिनों में जो कुली काम करने से इन्कार करते थे उन्हें जेल की हवा खाने पड़ती थी। अब यह नियम बन्दकर दिया गया है। लेकिन मास्टर और सर्वेण्ट का कानून अब भी जारी है। इस कानून की ओट में मालिक नौकर को कमरे में बन्द करके कोड़े लगा सकता है, फिर गवाही न मिलने से नौकर कुछ नहीं कर सकता। ये मास्टर और सर्वेण्ट का कानून रद्द होजाना चाहिये, और इसकी जगह कोई सीधासादा तरीका काम में लाना चाहिये। ऐण्टीस्लेवरी सुसाइटी (दासत्व विरोधी सभा) ने फिजी प्रवासी भारतीयों की कुछ भी सहायता नहीं की। आप सब जानते ही हैं कि मास्टर सर्वेन्ट आर्डिनेन्स कितना कड़ा है क्योंकि आप लोगों

में से कितने ही इसी कानून के अनुसार वारंट द्वारा पकड़े जा चुके है। आप लोगों में से जो मास्टर और सर्वेण्ट आर्डनेन्स के विरोधी हों वे हाथ उठावें (इसपर कुछ हिन्दुस्तानियों ने हाथ उठाये) फिजी में रेवरेण्ड पाइपर साहब के से यूरोपियन भी हैं जो हिन्दुस्तानियों की मदद करते है। आज वेतन दो शिलिङ्ग या ढाई शिलिङ्ग है लेकिन चीज़ों का भाव बहुत महंगा है। हिन्दुस्तानियों को एक पौण्ड चावल के लिये एक शिलिङ्ग देना पड़ता है और एक पौण्ड दाल ६ पैन्स में मिलती है। अब भला हम लोग कैसे अपनी जिन्दगी बसर करें ? गोरे लोग सदा हमसे कहा करते हैं कि तुम हिन्दुस्तान में तो ६ पैस रोज़ पर ही सन्तोष कर लेते थे लेकिन ये गोरे लोग यह नहीं सोचते कि आजकल यहां खाने पीने की चीज़ों का भाव क्या है और इसमें कितना खर्च पड़ता है। हाथ कंगन को आरसी क्या! फिजी प्रवासी भारतीय यह नहीं कह सकते कि हम यहां फिजी में हिन्दुस्तान की अपेक्षा उत्तमतर घरों में रह रहे हैं।

मैं स्वयं यहां जिस घर में रहता हूं वह हिन्दुस्तान की अपेक्षा उत्तमतर नहीं है। अगर हम लोग धनी होते जैसा कि गोरे लोग कहा करते हैं, तो हम अच्छे मकानों में क्यों नहीं रहते ?

खराब मकानों में रहना हमें किसी ने सिखलाया थोड़े ही है, हम लोगों को तो मजबूरन इन खराब मकानों में रहना पड़ता है। जितना रुपया गोरों को मिलता है उतना हमें नहीं मिलता इसी लिये हम लोगों में से बहुतों को चिड़ियों के पिंजड़े की तरह के घरों में रहना पड़ता है। हां थोड़ा बहुत रुपया यहां हिन्दुस्तानियों को मिलता भी है लेकिन वे उसे जुआ खेल कर अथवा मुकद्दमे बाजी में उड़ा देते हैं और जितना वे हिन्दुस्तान में बचा सकते थे उतना यहां नहीं बचा सकते। और फिर फिजी प्रवासी हिन्दुस्तानी रुपये का क्या करें जब उनकी औरतें उन्हें छोड़ छोड़ कर भाग जाती हैं। अगर एक औरत के साथ दो दो तीन तीन आदमी रखाने के लिये राजी हो जावें तो जिस तरह लोग फिजी में रुपया कमाते हैं उसी तरह हिन्दुस्तान में भी कमा सकते हैं?

फिजी में यह एक नियम बन जाना चाहिये कि मज़दूर को कम से कम वेतन कितना मिले। दूसरे मुल्कों में ऐसा कानून है इस लिये फिजी में भी बन जाना चाहिये हम लोगों ने कहा कि खाने पीने का खर्च बहुत बढ़ गया है क्योंकि चीजों का भाव असह्य हो गया है लेकिन किसी ने हमारी बात नहीं सुनी। कुछ गोरे लोग इस बात पर राज़ी थे कि कम से कम दैनिक वेतन ढाई शिलिङ्ग होना चाहिये और कुछ गोरे ५ शिलिङ्ग तक के

लिये राजी थे। यह तो मैं आम लोगों को वतला नहीं सकता कि आप लोग किस प्रकार अपना जीवन व्यतीत करें। हम सव के विचार तथा रहन सहन भिन्न, भिन्न हैं। लेकिन हम लोगों को इतना सुभीता तो होना चाहिये कि हमारी गुजर आराम से हो जावे। हिन्दुस्तानियों को गोरे आदमियों के समान ही वेतन मिलना चाहिये। मैं यह नहीं कहता कि सव को २० शिलिङ्ग रोज वेतन मिलना चाहिये। मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि जो लोग मज़दूरी करते हैं उन्हें अपने मालिकों से कह देना चाहिये कि हम यह मज़दूरी लेंगे। मजदूरों को आगे आकर कहना चाहिये कि हम कम से कम इतना वेतन लेंगे। मज़दूरी के विचार गवर्मेण्ट के सामने पेश होने चाहिये।"

दुलीचन्द ने कहा "मैं पांच शिलिङ्ग रोज पाता हूं मेरे एक लड़की है और मेरी स्त्री है। इन पांच शिलिङ्ग में तीन आदमियों का गुजर वहुत मुश्किल से होता है क्योंकि हर एक चीज मंहगी है इससे कम से कम ६ शिलिङ्ग मजदूरी मिलनी चाहिये। जो लोग मेरे साथ काम करते हैं उनके घरके हाल मैं जानता हूं"

इसके वाद हरिपाल शर्मा ने कहा "मैं तमाम फ़िजी भर घूम चुका हूं और अनेक मनुष्यों के घर रह चुका हूं और गिरमिट लैन भी देख चुका हूं।

डाक्टर मणिलाल ने जो ५ शिलिङ्ग कहा है वह थोड़ा कहा हैं मैं कहता हूं कि ६ शिलिङ्ग रोज से मजदूरी कम न होनी चाहिये। सौदा ज्यादा महंगा हो तो मजदूरी ज्यादः दी जावे। मि० ऐण्ड्रूज एक शिलिङ्ग की जगह एक शिलिङ्ग ३ पैन्स करा गये थे और दूकान वालों ने सौदे की कीमत ड्योढ़ी करदी है। यह तो वही हालत हुई कि कानी कुतिया मारसे सूखो हो जाय अगर सन् १९१२ १९१३ की साल के भाव सोदा मिले तो हमें पुरानी मज़दूरी दी जावे। उस समय जब चीजें सस्ती थीं हमारी गुजर होजाती थी। मगर अब एक शिलिङ्ग ३ पैंस की जगह दो शिलिङ्ग मिलता है उसमें हम लोगों को खाना पूरा नहीं होता। बड़े अफसोस की बात है कि अरांवा की रबर की कोठी के मेनेजर मि० पोल १ शिलिङ्ग ६ पेंस देते हैं और कहते हैं कि जिस दिन दो शिलिङ्ग मज़दूरी होगी उस दिन मैं सिडनी चला जाऊंगा. मगर हिन्दुस्तानियों को दो शिलिङ्ग नहीं दूंगा। लामी कोठी का मेनेजर १ शिलिङ्ग ६ पंस पर पुनर्वार गिरमिट लेता है। इससे ज्यादः वेतन वह नहीं देना चाहता। जिस वक्त इन्फ्लूएंजा की बीमारी आई थी मैं सामवेतो में था। मैंने देखा कि रामस्वरूप नाम का एक आदमी घर से पानी भरने चला और कुआ तक न जासका। रास्ते में गिर पड़ा और बेहोश होगया। उस को जाकर मैंने दूध पिलाया तब वह चैतन्य हुआ। वहां पर दवाई

देने वाला कोई डाक्टर नहीं था। बहुत से आदमी मर गये लेकिन वहां कोई प्रबन्ध डाक्टरी का नहीं था।"

मणिलाल जी जिस वक्त बोल चुके थे उस समय गुरुदीन पाठक के लड़के जानग्राण्ट ने कहा "डा० मणिलाल जी ने विल्कुल झूंठ कहा है" इसका उत्तर फ़ज़ल अहमद खां ने दिया था।

तदनन्तर हरिपाल शर्माने एक भजन गाया जिसका प्रारम्भ यह था "क्यों टिकस भरैं सरकार को हम सभ्य देश के वासी" फिजी में हिन्दुस्तानियों के घरों पर टैक्स लग जाने से विचारे ग़रीब मज़दूरों को बड़ा कष्ट था इसलिये इस Hut tax झोंपड़ी के कर का विरोध करने के लिये ही हरपाल शर्मा ने यह भजन बनाया और गाया था।

डाक्टर मणिलाल के ज़ोरदार व्याख्यान से गोरे लोग जल गये और उनके खून के प्यासे बन गये लेकिन मणिलाल जी ने कोई बात ऐसी नहीं कही थी जो निराधार थी, अथवा जिसके कारण फिजी सरकार उन पर राजद्रोह का अभियोग चला सकती।

डाक्टर मणिलाल को फंसाने का उद्योग।

फिजी सरकार तथा गोरों की नीचता

डाक्टर मणिलाल से गोरे लोग पहले से ही नाराज़ थे, लेकिन अब इस स्पीच ने रही सही कसर पूरी करदी। गोरे

लोग कहने लगे कि इस सारे उपद्रव की जड़ डाक्टर मणिलाल ही हैं। हिन्दुस्तानियों के घोर विरोधी मि० स्काट ने तो हड़तालियों के अभियोग का फैसला करते समय कहा था "मुझे यह देखकर ताज्जुब होता है कि हिन्दुस्तानी लोग जो इतने वर्षों तक इस प्रकार शान्ति पूर्वक रहते रहे हैं उन लोगों ने एक साथ इस तरह से क्यों बलवा किया और साहबों को पीटा" मि० स्काट के कहने का अभिप्राय यह था कि डाक्टर मणिलाल जी ने ही इन सबों को भड़का दिया। एक सुशिक्षित, जो फिजी में बहुत वर्षों तक रह चुके हैं, लिखते हैं "यह कहना कि डाक्टर मणिलाल ने भड़का कर लोगों से यह उपद्रव कराया था बिल्कुल झूंठ है। भारतवर्ष में जो राष्ट्रीय जागृत हो रही है। सम्भवतः उसकी यह प्रतिध्वनि फिजी में सुनाई पड़ी थी हिन्दुस्तान में जो आन्दोलन होते हैं उनका समाचार देशी भाषाओं के पत्रों द्वारा चार पांच महीने बाद फिजी पहुंचता है और वहांके निवासियों में जीवन डालता है। अथवा शायद पंजाब की मार्शलला के दिनों के अत्याचार या जलियान वाला बाग के कतल के समाचारों ने फिजी पहुंच कर अपना प्रभाव डाला हो। कुछ भी क्यों न हो फिजी प्रवासी भारतीयों की सूखी हड्डियों में किसी न किसी तरह जान पड़ गई थी और उनमें से खड़ खड़ाहट की आवाज आने लगी थी। रामसिंह अथवा डा० मणिलाल के प्रस्ताव पर दिसम्बर में

भारतीयों की एक सभा हुई थी। यह सभा अपने ढङ्ग की पहली और आखिरी ही थी। यह बड़ी सफलता पूर्वक हुई। इससे हिन्दुस्तानियों और यूरोपियनों की आंखें खुल गईं। चीजों का भाव बहुत ज्यादः तेज होगया था और इस पर भी घरों पर टैक्स लगा दिया गया था जो बिल्कुल असह्य था। जब टाउनहाल के बाहर हरपाल महाराज ने हिन्दी में भजन गाया "टिकट कहांसे भरें" लोगों ने हर्ष ध्वनिकी और इस हर्षध्वनि से कमजोरों के कान गूंजने लगे हिन्दुस्तानी जनता अपनी शक्ति और अपनी आवश्यकताओं को समझ गई इधर भारतीय जनतामें तो इस प्रकार जागृति हो रही थी उधर रमजान ऐथनी ग्राण्ट तथा इन्हीं की तरह के जीवों ने डाक्टर मणिलाल जी की रिपोर्ट के झूंठे सच्चे हाल गोरों को सुनाने शुरू किये और उनके कान में यह बात भर दी कि डाक्टर मणिलाल लोगों को हड़ताल करने के लिये भड़का रहे हैं।

मणिलाल जी के व्याख्यान होने के दो तीन दिन बाद ही फिजी-टाइम्स और हैराल्ड में डाक्टर मणिलाल तथा इम्पीरियल एसोशियेशन के विरुद्ध लेख निकलने शुरू हुए डाक्टर मणिलाल जी ने इनका उत्तर भेजा और उसमें झूंठी बातों का खण्डन किया लेकिन इसके असभ्यता पूर्ण पत्र सम्पादक ने मणिलाल जी के उत्तरको नहीं छापा और निम्न लिखित टिप्पणी कर दी।

"We have been asked by Mr. Manilal to publish a letter from him, but as the letter contains several statements, which are absolutely contrary to facts, we fell we would be doing an injustice to the Indian community by publishing the letter."

अर्थात् " मिस्टर मणिलाल ने एक पत्र लिखकर हमारे पास भेजा है और उसके छाप देने की प्रार्थना कीहै, लेकिन चूंकि इस पत्र में कितनी बातें ऐसी हैं जो सत्य घटनाओंके बिलकुल विरुद्ध हैं इसलिये हम इस पत्र को नहीं छापते क्योंकि इस पत्र का छापना फिजी प्रवासी भारतीय जनता पर अन्याय करना है" इस बेतुकी बात का भी कुछ ठिकाना है। फिजी प्रवासी भारतीयोंके शुभचिन्तक डा० मणिलालके पत्रको छापना फिजी भारतीयों पर अन्याय करना होता! क्या बढ़िया तर्क है। डाक्टर मणिलाल जी के पत्रोंको फिजी टाइम्स तथा हैराल्डने नहीं छापे। लेकिन उनके विरुद्ध अन्य लेखकों के पत्र खूब अच्छी तरह छापे। एक लेखक महाशय ने इस पत्र में लिखा था " One would imagine, on reading your issue of December 29th last regarding the Indian question that some person or persons are asking plainly to be deported, and should consider themselves lucky if that is the only punishment they get. *Such* wilful and malicious misrepresentationas

appears in telegram sent to India should not be tolerated by the people of Fiji and steps should be taken to bring the author or authors to book atonce. Delay is dangerous."

अर्थात् " आपके २६ दिसम्बर के भारतीय प्रश्न विषयक लेख को पढ़ कर यह कल्पना करना अनुचित न होगा कि कुछ आदमी अपने लिये देश निकाले का दंड चाहते हैं अगर ऐसे आदमियों को केवल देश निकाले काही दंड मिले तो उन्हें अपना बड़ा सौभाग्य समझना चाहिये। हम लोग जो फिजी में रहते हैं इस बात को सहन नहीं कर सकते कि इस तरह पर कुछ लोग जान बूझकर दुष्टतापूर्ण झूठी बातों से परिपूर्ण तार हिन्दुस्तान को भेजते रहते हैं। जिसने या जिन लोगों ने ये तार हिन्दुस्तान को भेजा था उन को शीघ्र ही दण्ड मिलना चाहिये। इसमें देर करना भयंकर होगा"

जिस तार का इस लेखक ने जिक्र किया था वह वही तार था जो इन्डियन इम्पीरियल ऐसोसियेशन ने फिजी से मिस्टर ऐण्ड्रूज को भेजा था।

फिजी टाइम्स और हैरालडने अपने ६ जनवरी के लेखमें इन्डियन इम्पीरियल ऐसोसियेशन पर तरह तरहके अपराध लगाये थे। इस पत्र ने लिखा था कि इन्फ्लूऐन्जाके दिनों में इम्पीरियल ऐसोसियेशन के अधिकारियों को सरकार ने दवाई की बोतलें दी थीं जिन्हें इन लोगोंने अपने बीमार देश

बन्धुओं को वेचकर दाम वसूल किये?गरीव भूखों मरने वाले हिन्दुस्तानियों की जेवों में से इस ऐसोसियेशन ने न जाने कितने दाम ले लिये। जब इस ऐसोसियेशन के नेता अपने वीमार भाइयों को देखने के लिये जाते थे तो वे स्वयं अपनी निजी गाड़ी का किराया उनसे वसूल करते थे।

इन कटाक्षो को पढ़कर ओर सुन कर हिन्दुस्तानी लोग मनही मन क्रुद्ध होते थे लेकिन वे कर क्या सकते थे हिन्दु स्तानियों की ओरसे भेजे हुये जवाव यह पत्र छापता नहीं था

२ जनवरी सन् १९२० के फिजी टाइम्स ओर हैराल्ड में "व्रिटिश इंडिया" के नाम से किसी गोरे का लेख छपा था। भारतीयों की एक मात्र सभा "इंडियन इम्पीरियल ऐसोसियेशन" पर कटाक्ष करते हुये लेखक ने लिखाथा "The time is now ripe when something should be done to suppress anything verging on sedition the like of which we have experienced at the last meeting of the so called "Imperical Association." For one moment we do not suppose one half of the Indian community understands the correct meaning of the word Imperial. It is certainly not a word that should we dragged through the mud by a few "Indian Bolsheviks" who assume the reins of Government on behalf of the Indian people." These seditious agitators do not represent the

true Indian at heart nor do they represent the Indian opinion. Many of the Indians are respectable and peacable citizens, bnt are led astray by these so called "Leaders."

अर्थात् "अब वह समय आपहुंचा है जब राजद्रोहात्मक बातों को एक दम बन्द करदेना चाहिये। नाम मात्र की "इम्पीरियल ऐसोसियेशन" की पिछली बैठक में जैसी राजद्रोहात्मक बातें हुई थी वैसी बातों को बन्द करने के लिये कुछ न कुछ प्रयत्न होना चाहिये। एक पल भर के लिये भी हम यह नहीं मान सकते कि फिजी प्रवासी हिन्दुस्तानियों में आधे आदमी भी "इम्पीरियल" शब्द का ठीक अर्थ समझते होंगे। "इम्पीरियल" शब्द वास्तव में कोई ऐसा शब्द नहीं है जिसे कीचड़ में घसीट कर कुछ हिन्दुस्तानी बोलशेविक उसकी दुर्गति करें। ये "हिन्दुस्तानी बोलशेविक" हिन्दुस्तानी जनता को दबाकर उसके शासक बन बैठे हैं। ये राज विद्रोही आन्दोलन करने वाले हिन्दुस्तानी असली भारतीयों के प्रतिनिधि नहीं हैं और न ये फिजी प्रवासी भारतीय जनता की राय को प्रगट करते हैं। बहुतसे हिन्दुस्तानी भले मानस और शान्ति प्रिय हैं लेकिन ये नाम मात्र के "लीडर" इन हिन्दुस्तानियों को गुमराह कर देते हैं।

यह बतलाने की आवश्यकता नहीं है कि "हिन्दुस्तानी बोलशेविक" का विशेषण डाक्टर मणिलाल तथा उनके साथियों के लिये लिखा गया था।

फिजी सरकार का नीच प्रयत्न—जब डाक्टर मणिलाल तथा उनके साथियों पर और इम्पीरियल ऐसोसियेशन पर इस तरह के कटाक्ष "फिजी टाइम्स तथा हैराल्ड" में निकल रहे थे फिजी सरकार को इस बात की चिन्ता थी कि किसी न किसी तरह डाक्टर मणिलाल को फंसाना चाहिये। फिजी सरकार ने अपने दुभाषियों को टाउन हाल की मीटिंग में इसी लिये भेजा था। इन दुभाषियों ने जो रिपोर्ट डाक्टर मणिलाल के व्याख्यान की दी उससे फिजी सरकार को बड़ी निराशा हुई। फिजी टाइम्स और हैराल्ड में जो कल्पना-युक्त झूठी सच्ची बातें मणिलाल जी के व्याख्यान की निकल रही थीं उनका समर्थन सरकारी दुभाषियों द्वारा ली गई रिपोर्ट से नहीं हुआ। इस कारण उस समय फिजी सरकार हाथ मलकर रह गई। लेकिन वह उसी समय निश्चित कर चुकी थी कि किसी न किसी तरह अपने मार्ग के कण्टक डाक्टर मणिलाल को फिजी से निकालना है।

मणिलाल जी को देश से निकाल देने के बाद हिन्दुस्तानियों की अर्जियों के उत्तर में फिजी सरकार ने लिखा था।

"जो उपद्रव सूवा के आसपास में हुए हैं वह सब को मालूम है। यह उपद्रव अमुक भारतीयों के द्वारा देश भाइयों को बद सलाह देने से हुआ था। इनका प्रधान डी. एम. मणिलाल थो। मणिलाल के काम का नतीजा यह निकला

कि बहुत से हिन्दुस्तानियों को सूवा तथा रेवा में जेल हुआ या कुछ भारतीयों पर मुक़द्दमे होने वाले हैं लेकिन वह खुद अपना चमड़ा बचाने में होशियार था।"

यह अन्तिम वाक्य फिजी सरकारको इसी लिये लिखना पड़ा था कि उसे डाक्टर मणिलाल के विरुद्ध कोई प्रमाण नहीं मिल सका जिससे उन पर खुली अदालत में मुक़द्दमा चल सकता।

जनवरी सन् १९२० के प्रथम तथा द्वितीय सप्ताह में फिजी प्रवासी भारतीयों की मानसिक स्थिति का अनुमान पाठक उपर्युक्त वृत्तान्त से कर सकते हैं। शर्तवन्दी गुलामी से ये लोग मुक्त हो चुके थे। स्वतन्त्र वायुमण्डल में वे सांस लेना ही चाहते थे कि गोरे मालिकों को, जो हमेशा से गुलाम हिन्दुस्तानियों के परिश्रम से बड़े २ मुनाफे उठाते रहे थे, उनसे द्वेष हो गया। गोरा अख़बार भारतीयों के नेताओं पर बराबर कटाक्ष कर रहा था। गोरों के हिमायती कुछ दुष्ट नाम मात्र के ईसाई हिन्दुस्तानी इधर की उधर भिड़ा रहे थे। मिस्टर स्काट इत्यादि गोरे वकील डाक्टर मणिलाल पर पहले से ही जले हुये बैठे थे। मणिलाल जी की टाउन हाल वाली ज़ोरदार लेकिन सत्य बातों से पूर्ण स्पीच ने गोरों के पेट में पानी कर दिया था। स्वार्थी प्लाण्टर लोग दीर्घ निःश्वास लेकर कह रहे थे "हा" अब सस्ते गुलाम हमारे खेतों के लिए कहां से आवेंगे।"

सी.ऐस.आर कम्पनी तथा प्लाण्टरों के दबाव से दबी हुई निर्बल फिजी सरकार मिस्टर स्टाक तथा काम्पटन के हाथ की कठपुतली बनी हुई थी। युद्ध के बाद चीजों का भाव तेज होने से लोग बड़े कष्ट में थे। इस प्रकार चारों ओर का वायु-मण्डल, असन्तोष से परिपूर्ण था। ऐसे अवसर पर १५ जनवरी को भारतीय मज़दूरों की हड़ताल प्रारम्भ हुई। अथवा फिजी सरकार तथा गोरे प्लाण्टरों के शब्दों में यह कहना चाहिये कि भारतीयों का "खुल्लम खुल्ला विद्रोह" शुरू हुआ? आइये पाठक फिजीके इस "खुल्लम खुल्ला ग़दर" का कुछ हाल सुनिये। मुझे विश्वास है कि फिर आप मेरे साथ उन ब्रिटिश साम्राज्यवादियों की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करेंगे जिन्होंने एक साल भर के भीतर ही अमृतसर के नाटक को संक्षेप रूप से फिजी की रङ्ग भूमि पर दुहराकर सभ्य संसार के सामने अपनी आश्चर्य्य जनक सहृदयता और स्वातन्त्र्य प्रेम का अकाट्य प्रमाण उपस्थित कर दिया!

फिजी की दुर्घटना।

(१)

"खुल्लम खुल्ला विद्रोह" की भूमिका।

पञ्जाब के हिन्दुस्तानियों द्वारा किये हुए "Open rebellion." (खुल्लम खुल्ला विद्रोह) और डायर ओडायर

सरकार की करतूतों का वृत्तान्त हम लोग अच्छी तरह जानते थे इस लिये फिजी प्रवासी भारतीयों के वलवे तथा फिजी सरकार की चालाकियों को समझना हमारे लिये कोई मुश्किल बात नहीं थी। इसी कारण से जब हमने ३ मार्च के बम्बई क्रानिकल में निम्न लिखित तार पढ़ा तभी हमारे हृदय में आशंका उत्पन्न हो गई थी कि कुछ दाल में काला है।

London Feb. 27

Auckland- A telegram from Fiji says that the recent strike of Inidans was a political movement. The arrest and deportation of Indian leaders is believed to be imminent.

"औकलेण्ड–फिजी के एक तार से ज्ञात हुआ है कि हिन्दुस्तानियों की पिछली हड़ताल एक राजनैतिक चाल थी। विश्वास किया जाता है कि हिन्दुस्तानी नेता शीघ्र ही पकड़े जाकर देश से निकाल दिये जावेंगे" इधर रायटरने फिजी प्रवासी भारतीयों की "राजनैतिक चाल" का समाचार सम्पूर्ण संसार में भेज दिया; उधर फिजी टाइम्स और हैराल्ड ने हिन्दुस्तानियों के "वलवे" के समाचार चारों फैला दिये। इस पत्र ने लिखा था; "The recent trouble in Fiji was a purely political move on the part of a small section of the Indian Pepulation to obtain control of the country"

अर्थात् "हाल में फिजी में जो दंगा हुआ था, वह वास्तव में हिन्दुस्तानी जनता के एक छोटे से हिस्से की ओर से फिजी द्वीप पर अपना अधिकार जमाने के लिये एक शुद्ध राजनैतिक चाल थी" फिजी के निर्बल और शस्त्र हीन भारतीयों के मस्तिष्क में फिजी सरकार को पलट कर उस पर अपना अधिकार जमाने का विचार किस प्रकार आया, इस बात पर न तो आज तक रायटर ने ही प्रकाश डाला और न फिजी टाइम्स ने ही हमें कुछ बतलाया। फिजी गवर्नर के खरीते को भी हम ने पढ़ा लेकिन उस में हमें ऐसी कोई बातें नहीं मिलीं जिस से यह सिद्ध होता कि डाक्टर मणिलाल ने फिजी की गवर्नरी छीनने के लिये और स्वयं गवर्नर बनने के लिये कौन कौन सी चालें चलीं! बात असल में यह थी कि "खुल्लम खुल्ला विद्रोह" का भूत फिजी सरकार के अधिकारियों और फिजी के गोरों के दिमाग़ में ही पैदा हुआ था और उन्हीं के षड़यन्त्रसे रायटर के ऐजेण्ट द्वारा इस भूत की उत्पत्ति का समाचार सारे संसार में फैलाया गया। वेतन वृद्धि के लिये की हुई हड़ताल को "राजनैतिक आन्दोलन" कहकर उसे दबा देना ही फिजी सरकार का उद्देश्य था। लेकिन क्या फिजी सरकार अपने इस उद्देश्य में सफल हुई? माना कि उसने २०० हिन्दुस्तानी स्त्री पुरुषों को जेल भेजकर डाक्टर मणिलाल इत्यादि को देश निकाले का दण्ड देकर और मार्शल ला

जारी कर के भूखे ग़रीब हिन्दुस्तानियों को दबा दिया लेकिन क्या इस से वे सन्तुष्ट हो गये ?।

फिजी सरकार ने सोचा कि इस हड़ताल को दबाने का सीधा सादा मार्ग यही है कि इसे राजनैतिक रूप देकर आन्दोलन कारियों के सिर मढ़ दिया जाय और आन्दोलन कारियों को देश से निकाल दिया जावे। इस "सरलमार्ग" को ग्रहण कर फिजी सरकार ने फिजी प्रवासी भारतीयों को तो अनन्त दुःख दिये ही लेकिन स्वयं अपने पैर में भी कुल्हाड़ी मार ली।

फिजी का यह झगड़ा डेढ़ साल से चल रहा है और जब तक पूर्वीय देशों से सस्ते मज़दूर पाने और बड़े बड़े मुनाफे उठाने का लोभ फिजी के गोरों के दिल में बना रहेगा तबतक इस झगड़े का सन्तोष जनक निपटारा कदापि नहीं हो सकता।

किस प्रकार फिजी सरकार ने एक "औद्योगिक हड़ताल" को खुल्लम खुला बलवे का नाम दे दिया और फिजी सरकार की इस चाल का कैसा भयंकर परिणाम हुआ इन बातों का पता पाठकों को अगले पृष्ठों से लग जावेगा।

फिजी की दुर्घटना

(२)

प्रथम हड़ताल कैसे हुई ?

क्या डाक्टर मणिलाल इसके ज़िम्मेदार थे ?

फिजी द्वीपमें हिन्दुस्तानियों की संख्या कुल ६० हजार है इस लिये फिजी में किसी बात का फैल जाना बड़ा आसान है। सूवा में जो बात आज होती है दस बारह दिन बाद उसे आप वा या लतौका में सुन सकते हैं। "फिजी टाइम्स और हैराल्ड" में जो द्वेषपूर्ण बातें डाक्टर मणिलाल तथा इम्पीरियल सिटीज़नशिप ऐसोसियेशन के विषय में छप रहीं थीं वे सब फिजी के अशिक्षित हिन्दुस्तानियों तक धीरे धीरे पहुंच रहीं थी। इधर हिन्दुस्तानी लोग इन बातों को सुन कर मन ही मन दुखित होतेथे और उधर गोरे लोग आबाल वृद्ध——इन बातों को पढ़कर आग बबूला हो गये थे; यहां तक कि कुछ बदमाश गोरे इनको रास्ते में घेरकर मारने तक का विचार कर रहे थे। गोरे समाचार पत्र में भी इस बात को धमकी दी गई थी कि गोरों का समूह किसी रोज मि० मणिलाल को देख लेगा। इसके कुछ दिन बाद डाक्टर मणिलाल जी "लैबूका" चले गये और वहां पांच छै रोज रह कर "वा" जा पहुंचे।

वा जिलेमें डाक्टर मणिलाल के प्रति हिन्दुस्तानियों की

इतनी सहानुभूति थी कि वहांकी यूरोपियन जनता उनके विरुद्ध कोई कार्रवाइ नहीं कर सकती थी। 'वा' जिलेके कमिश्नर और मजिस्ट्रेट थियोसोफिस्ट हैं और हिन्दुस्तानियों की आकांक्षाओं से ये सहानुभूति रखते हैं। इस जगह पर हिन्दुस्तानियों की जो सभा हुई उसमें ये केवल उपस्थित ही नहीं हुये बल्कि इन्होंने सभापति का आसन भी ग्रहण किया इस सभा में इन्डियन ऐसोसियेशन की स्थापना हुई और मुख्य मुख्य हिन्दुस्तानी वस्तियों में इसकी शाखाके तौर पर पंचायते क़ायम हुई। इस सभा के सभापति डाकटर मणिलाल जी निर्वाचित किये गये। जिलोंके कमिश्नर मिस्टर पिलिङ्ग ने इस सभा का संरक्षक होना स्वीकार किया *

जिस समय डाक्टर मणिलाल जी वा में थे सूवा से उन्हें वुलावा आया। उस समय उन्हें ज्ञात हुआ कि फिजी के दक्षिणी भाग में हड़ताल होगई है। हड़तालका तात्कालिक

---

* गोरों में मि० पिलिङ्ग ही एक ऐसे सज्जन हैं जिन्होंने फिजी में मि० ऐड्रूज़ के द्वारा स्थापित स्कूलों के वरावर सहायता की है। जव मि० ऐड्रूज ने आस्ट्रेलिया से मिस प्रीस्ट तथा मिस डिक्सन को फिजी प्रवासी भारतीय स्त्रियों में शिक्षा प्रचारार्थ भेजाथा तव अकेले इन्हीं ने ही उनको सहायता की थी। इनकी तरह के दूसरे अंगरेज़ उपनिवेशों में वहुत कम पाये जाते हैं।

कारण यह था कि रोड बोर्ड के मजदूरों से उनके गोरे ओवरसियर ने उतने ही वेतन में ८ के बदले ९ घंटे काम करने के लिये कहा था। इसी कारण मज़दूरो ने काम छोड़ दिया। इनकी देखा देखी पबलिक वर्क्स डिपार्टमेंट और सूवा की म्यूनिसिपेलटी के मजदूरोंने भी काम छोड़ दिया यह खबर जब रेवा नावुआ और लैबूका पहुंची तो वहां पर भी हड़ताल हो गई।

इससे स्पष्ट है कि हड़ताल डाक्टर मणिलाल से पूछ कर नहीं की गई थी। डाक्टर मणिलाल कितने ही दिन से वहां थे भी नहीं। वे दूसरे जिलों में गए हुये थे।

फिजी गवर्मेण्ट की चालाकी—फिजीके गवर्नर ने जो खरीता भारत सरकारको भेजा है उसमें इस बात का कहीं जिक्र भी नहीं किया गया कि रोडबोर्डके गोरे ओवरसियरों ने हिन्दुस्तानी मज़दूरों से उतने ही वेतन में ८ घंटेके बजाय नौ घंटे काम करने के लिये कहा था। न्यूज़ीलैण्ड पार्लामेंट के मज़दूर दल के मेम्बरो ने फिजी में जो स्वतंत्र जांचकी थी उसकी रिपोर्टमें उन्होंने साफतौर पर लिखाथा

"Ashore we were assured by the whites we interviewed that the disturbance was wholly a political upheaval that the Indians were demanding political and social equality with the whites, and that this wa a demand

which wás unthinkable and impossible. On investigation, however we found that the strike had its origin in an endevour by an overseer to increase the hours of labour on the roads from eight to nine. The subsequent demand for a wage 5 Shillings a day grew out of the enormous increase in the cost of living, aud in our opinion fally justified."

अर्थात् जहाज़ से उतरनेके वाद हमैं फिजीके गोरे लोगों ने यह विश्वास दिलाया कि फिजी के उपद्रव के कारण पूर्णतया राजनैतिक थे, और हिन्दुस्तानी आदमी गोरे लोगों की तरह राजनैतिक और सामाजिक अधिकार चाहते हैं और यह वात अचिन्त्य और असम्भव है। लेकिन जांच करने पर हमैं पता लगा कि इस हड़ताल का प्रारम्भिक कारण यह था कि एक ओवरसियर ने सड़कों पर काम करने वाले मज़दूरों को ८ घण्टे के वजाय ९ घण्टे काम करने के लिये कहा था। इसके वाद रोज़ाना पांच शिलिंग मज़दूरी की जो मांग हिन्दुस्तानी मज़दूरों ने पेश की थी, उसकी वजह यह थी कि खाने पीने का खर्च वहुत वढ़ गया था। हमारी सम्मतिमें उनकी यह मांग विल्कुल न्याययुक्त थी।"

सुप्रसिद्ध त्रैमासिक पत्रिका "राउन्डटेविल" के लेखक ने भी सितम्वर सन् १९२० के अङ्क में स्पष्टतया लिखा था।

"The strike began with the workers of the

Road Board who objected to having to work nine hours a day instead of eight" अर्थात् रोडबोर्ड के मज़दूरों ने ८ घण्टे के वजाय ९ घण्टे काम करने से इनकार कर दिया और इस प्रकार हड़ताल शुरू हुई।"

न्यूज़ीलैण्ड पार्लामेण्ट के लेवर मेम्बरों की रिपोर्ट से और राउन्डटेबिल के लेखक के लेखसे यह स्पष्टतया प्रगट होता है कि हड़ताल किस प्रकार प्रारम्भ हुई। लेकिन फिजी के गवर्नर साहब ने अपने खरीते में इस बात को बिल्कुल ही उड़ा दिया है!

यद्यपि यह सत्य है कि डाक्टर मणिलाल जी के टाउन हाल वाले व्याख्यान ने हिन्दुस्तानियों के हृदय में जीवनका संचार कर दिया था, तथापि डा० मणिलाल को हड़ताल कराने वाला वतलाना बिल्कुल प्रमाणहीन बात कहना है। हड़ताल का विस्तृत वृत्तान्त देने के पूर्व हम यहां डाक्टर मणिलाल जी के एक पत्रको उद्धृत करना आवश्यक सम-झते हैं। न्यूज़ीलैण्ड से अपने १३-९-२०-के पत्र में डाक्टर मणिलाल जी ने भारत मित्र सम्पादक को लिखा था "सत्य वार्ता यह थी कि हड़ताल का आरम्भ मुझको पूछकर नहीं हुआ था। मैं उस समय दूसरे ज़िले में था। कई सप्ताह वीत चुके थे, तव भारतवासियों के आग्रह से मैं "फूड क-मीशन" के सम्मुख इनके दुःखों का समर्थन करने में मदद पहुंचाने के लिये सूवा आया था। फिर जब कमीशन की

तारीख बढ़ाई गई तब मैं दूर एक जिले में कोर्ट में हाजिर होने को चला गया था। बात यह थी कि गोरों की मेहरबानगी सम्पादन करके फिजी के जङ्गलियों ने कुछ कबीर पंथियों के खेत में चोरी करके और ऊपर से उन्हें मारपीट कर उल्टा उन्हीं पर पुलिस का मुकद्दमा चला दिया था! इसीलिये मुझे वहां जाना पड़ा था। लौटने के दिन सन्ध्या समय मार्ग में अफवाहें सुनीं कि मिसेज़ मणिलाल पकड़ी गई हैं, बड़ा दङ्गा हुआ है, वगैरः वगैरः। बहुत से हिन्दुस्तानी कहने लगे कि मुझे रात को किसी हिन्दुस्तानी के यहां गुप्त रीति से रहकर प्रातःकाल को सूवा जाना चाहिये मैंने टोंगोनड्रावू नाम के जंगली गांव में रात्रि के लिए स्थान मांगा, परन्तु जंगली मजिस्ट्रेट ने कुछ बहाने निकाले। अन्त में लक्ष्मी महाराज नाम के भारतवासी के रेता पर मध्य रात्रि के समय पहुंचा। रामेश्वर ब्राह्मण, एक फिजियन नौकर और गौहरखां मेरे साथ थे। सवेरा होने पर मालूम हुआ कि मिसेज़ मणिलाल नहीं पकड़ी गईं थीं। बहुत से हिन्दुस्तानियों को इस बात का डर था कि जहां कहीं कोई गोरा मुझे देख लेगा, वहीं पीटा जाऊंगा। तथापि मैं उस दिन तो अपने बंगले तक बे खटके पहुंच गया परन्तु भारतवासियों का अनुमान ग़लत नहीं हुआ क्योंकि उसी रोज़ सन्ध्या समय ५ बजे मुझ पर प्रहार हुआ। अभी तक फिज़ी के गोरे और उनकी सरकार यही कहती थी कि

मणिलाल ही सब उपद्रवों का मूल है और मैंने ही अपने देशबन्धुओं को हड़ताल करने और मारपीट करने के लिये भड़काया। फिजी गवर्मेण्ट कहती थी "मणिलाल अपनी जान बचाने में ऐसा कुशल था कि वह हड़ताल के समय में दूर वा ज़िले में रहा और दंगे के समय में भी सूवा से दूर ताईलेवू में वेईनुंगा की कोट में रहा" फिजी गवर्मेण्ट की यह शङ्का बिल्कुल निराधार थी। हड़ताल मेरे भड़काने से अथवा मेरे आन्दोलन से नहीं हुई। खाने पीने की चीज़ों के मंहगी के कारण वेतन वृद्ध के लिये मज़दूरों ने स्वयं ही हड़ताल की थी न कि बोलशिविकों की तरह फिजी सरकार की सत्ता छीनने के लिये! "डाक्टर मणिलाल जी के इस पत्र से यह बात स्पष्ट तथा प्रगट है कि उन्होंने हिन्दुस्तानियों को भड़काकर हड़ताल नहीं कराई थी लेकिन जब भूखों मरने वाले हिन्दुस्तानियों ने अपने आप ही वेतन वृद्धि के लिये हड़ताल करदी तो डाक्टर मणिलाल जी की सहानुभूति उनके साथ होना स्वाभाविक बात थी।

फिजी की दुर्घटना।

(३)

हड़ताल के दिनों का वृत्तान्त।

१५ जनवरी को पबलिक वर्क्स डिपार्टमेण्ट के मज़दूरों ने हड़ताल कर दी, १६ जनवरी को म्यूनिसपल कौंसिल के

मज़दूर काम छोड़ बैठे और २१ जनवरी को रेवा में हड़ताल प्रारम्भ हो गई। २४ जनवरी तक यह हड़ताल सम्पूर्ण रेवा ज़िले भर में फैल गई और बीरिया तथा वूनिदावा की ओर चढ़ने लगी।

फिजीके उत्तरी भागमें हड़ताल क्यों नहीं हुई?

फिजी के उत्तरी भाग में उस समय हड़ताल न होनेका कारण यही था कि मिस्टर ऐन० बी० मित्र ने मज़दूरों को उस समय हड़ताल न करने का ही उपदेश दिया था। फिजी गवर्मेण्ट ने अपने ख़रीते में लिखा है कि "यद्यपि आन्दोलनकारियों ने फिजी के उत्तरी पश्चिमी भाग में भी मज़दूरों की हडताल कराने का प्रयत्न किया लेकिन वहां वे हड़ताल नहीं करा सके। बात यह है कि सूवा नौसूरी और नावुआ में तथा दक्षिणी किनारे पर जो हिन्दुस्तानी रहते हैं वे उत्तरी पश्चिमी किनारे के हिन्दुस्तानियों से नीचतर जाति के हैं। असन्तोष फैलाने वाले और वदमाश हिन्दुस्तानियों की प्रवृत्ति सदा से यही रही कि वे फिजी के दक्षिणी किनारे की ओर ही खिचकर आ जाते हैं।"

"असन्तोष फैलाने वाले और वदमाश हिन्दुस्तानियों की प्रवृत्ति" कुछ भी क्यों न रही हो लेकिन इतना हम अवश्य कह सकते हैं कि अगर मिस्टर मित्र उत्तरी भाग के मज़दूरों को हड़ताल करने से न रोकते तो उत्तरी भाग में भी हड़ताल ज़रूर हो जाती। मेरे एक संवाददाता ने इसका

एक कारण और भी लिखा था । वह यह है "जब हड़ताल चारों ओर फैलने लगी तो बा और लतौका के प्लाण्टर लोग सोचने लगे कि कहीं हड़ताल का यह रोग हमारी कोठियों पर भी न फैल जावे । बा के मजिस्ट्रेट मिस्टर पिलिङ्ग ने एक रायफल क्लब की सभा बुलाई । कर्नल हाल ने वहां व्याख्यान दिया और सब गोरों को हुक्म मिला कि उन को कवायद सीखने के लिये तैयार रहना होगा और हर एक गोरे को सौ गोली और बारूद दी जावेगी । किसी किसी गोरे ने न मालूम सचमुच या दिल्लगी में बा ज़िले के हिन्दुस्तानियों को धमका कर कहा भी था "अगर तुम लोग सूवा के माफिक हड़ताल करोगे तो दाग़ दिये जाओगे ?"

इस समय की परिस्थित का वर्णन करते हुए सर गवर्नर ने अपने ख़रीते में लिखा है ।

"Up to this point there was no disorder and no reason to anticipate any. There was no evidence of hostility against the Government. Meetings were held among the Indians, but the speakers generally counselled respect for law and order and the observance of constitutional methods. The initial grievances felt were apparently against the merchants, whose high prices were regarded as being the cause of the increased cost of living."

अर्थात् "इस समय तक तो कोई झगड़ा नहीं हुआ था और न किसी झगड़े के होने की आशंका थी। इस बात का कोई प्रमाण नहीं पाया जाता था कि ये लोग गवर्नमेण्ट से द्वेष करते हैं। हिन्दुस्तानी लोग सभाएं कर रहे थे लेकिन इन सभाओंमें प्रायः वक्ता लोग यही उपदेश देते थे कि क़ानून का आदर करो। शान्तिपूर्वक रहो, और वैध रीतिओं से अपना काम करो ऐसा प्रतीत होता कि हिन्दुस्तानी लोग अपने प्रारम्भिक कष्टों का कारण सौदागरों को समझते थे। ये ख़्याल करते थे कि सौदागरों ने चीज़ों का भाव तेज़ कर दिया है इसी कारण खाने पीने का का ख़र्च बढ़ गया है।"

फिजी सरकार के इस कथन से स्पष्ट है कि इस समय तक हिन्दुस्तानियों के हृदय में गवर्मेण्ट के प्रति कोई द्वेष नहीं था और उन्होंने चीजों का भाव बढ़जाने की वजह से हड़ताल की थी। आगे चलकर इन्हीं शान्तिप्रिय और द्वेष रहित आदमियों को फिजी गवर्मेण्ट के उलट देने और फिजी का शासन अपने हाथ में लेने की बात किस तरह सूझी यह बात फिजी सरकार ने अपने ख़रीते में साफ़ २ नहीं लिखी। हमारे एक मित्र ने हड़ताल के दिनों की एक डायरी फिजी में लिखी थी, उससे हड़ताल के दिनों की हालत पर बहुत कुछ प्रकाश पड़ता है अतएव उसकी सहायता से कुछ घटनाओं का यहां वर्णन किया जाता है।

ता० १८ जनवरी को सुवीवातू में सभा हुई, जिसमें दो

हज़ार से अधिक हिन्दुस्तानी शामिल हुये थे सब ने हाथ उठाकर प्रण किया कि "जब तक तलब न बढ़ेगी तब तक काम पर नहीं जावेंगे" सभा के अन्त में "वन्देमातरम्" की ध्वनि हुई।

ता० २२ को सबने काम छोड़ दिया। ता० २३ को मूनीवातू में स्त्रियों की सभा हुई। सब स्त्रियों ने प्रण किया कि हम अपने अपने पतियों को बिना ५ शिलिङ्ग वेतन हुए काम पर नहीं जाने देंगी। इसके लिये जो कष्ट होगा हम लोग आनन्दपूर्वक सहेंगी। फिजी टापू की स्त्रियों में ऐसा उत्साह पहिले कभी नहीं देखा गया था।

ता० २५ को नौसूरी में बड़ी सभा हुई। मज़दूरों ने प्रतिज्ञा की कि काम छोड़ देंगे।

ता० २६ आज सब जगह काम बन्द था। सब लोग शहर में घूमते थे। आज ही ऐन्थनी-ग्राण्ट ने मिस्टर हेनरी मार्क से रिपोर्ट कर दी कि मि० मणिलाल जी तथा रामसिंह काम बिगाड़ते हैं।

ता० २७ को नौसूरी में सी. ऐस. आर कम्पनी के मैनेजर मिस्टर लार्ड के कहने से पुलिस ने सीताराम छंगा आदि कई आदमियों को पकड़ लिया। पुलिस ने कहा "तुम काम पर जाने वाले आदमियों को रोकते थे और मारते थे इसलिये तुम गिरफ़्तार किये गये हो" हल्ला मचने पर कई सौ आदमी इकट्ठे हो गये और इन्सपेक्टर से कहा

कि इनको ज़मानत पर छोड़ दीजिये। इन्सपैक्टर ने नहीं माना और वह उन आदमियों को थाने पर ले गया। पीछे २ सब लोग थाने पर चले गये। नादुरूलूलूकोट में पहुंचकर डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर से ज़मानत के लिये कहा। रामसेवक ज़मानत देकर छुड़ा लाये। इधर सूवा से पल्टन मशीनगन आदि भी नौलूरी भेज दी गई।

नोट:-इस घटना का वर्णन करते हुये गवर्नर साहब अपने खरीते में लिखते हैं "The arrested men were rescued from the police by a crowd, which rapidly increased to the number of 1000 or more and attempted to rush the police station at Nadurulouloua in order to attack the witnesses."

अर्थात् "पुलिस द्वारा पकड़े हुये आदमियों को हिन्दुस्तानियों की एक भीड़ ने पुलिस के हाथ से छुड़ा लिया। यह भीड़ बढ़ते २ एक सहस्र या इससे भी अधिक हो गई और इसने नदूरूलूलू के थाने पर धावा करके गवाहों को पाटने का उद्योग किया"

फिजी सरकार ने अपने खरीते में यह नहीं लिखा कि ये लोग जमानत पर रामसेवक के बौण्ड भरने पर छोड़े गये थे! क्या इन आदमियों को भीड़ ने ज़बरदस्ती पुलिस के हाथ से छीन लिया था! बात असल में यह है कि फिजी

कल्लन खां सरदार को किसी ने दो चार डण्डे लगाये आज नाडुआ में कई आदमियों पर काम पर जाने से रोकने का मुकद्दमा था। कोर्टमें बहुत से आदमी मौजूद थे मजिस्ट्रेट ने मुकद्दमा खारिज कर दिया

तारीख २९ आज एक होटल के मैनेजर ने, जिसका नाम पैटसन था, अपने हिन्दुस्तानी नौकर को इसलिये मारा कि वह नोटिस देकर काम छोड़ना चाहता था। इस मदरासी के पीटे जाने की बात सुनकर बहुत से हिन्दुस्तानी उस होटल की ओर चले। रास्ते में फिजियन जंगलियों और हिन्दुस्तानियों में दो २ हाथ हो गये।

※ गवर्नर के पास डेपूटेशन ※

ता० ३० जनवरी को प्रवासी भारतीयों की ओरसे एक डेपूटेशन फिजी के गवर्नर के पास गया। इस डेपूटेशन में १५ खास २ आदमी और कितनी ही भारतीय स्त्रियां थीं। इस डेपूटेशन की प्रधान डाक्टर मणिलाल जी की धर्मपत्नी श्री सती जैकुमारी देवी थी। इस डेपूटेशन का जिक्र करते

के गवर्नर ने अपने खरीते में कितनी ही आवश्यक बातें साफ़ उड़ा दी हैं। आश्चर्य्य तो यह है कि इस परभी भारत सरकार ने इस खरीते को उतना ही प्रामाणिक मान लिया है जितना हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, वेद, कुरान, और बाइबिल को मानते हैं!

हुए गवर्नर साहब अपने खरीते में लिखते हैं।

"The deputation was headed by a Mrs. Manilal, the wife of D. M. Manilal, a local Indian lawyer who was already under suspicion, and is now regarded beyond all reasonable doubt as being the prime mover in the agitation." अर्थात् "इस डैपूटेशन की मुखिया मिसेज़ मणिलाल नामक कोई एक औरत थी, जो कि स्थानीय भारतीय वकील डी० एम० मणिलाल की स्त्री हैं। मणिलाल पर पहिले से ही सरकार को सन्देह थो लेकिन अब तो निस्सन्देह वही इस आन्दोलन का प्रारम्भ करने वाला समझा जाता है।"

श्रीमती जैकुमारी देवी को, जो ब्रह्मदेश के सुप्रसिद्ध नेता डाक्टर पी० जे० मेहता एम० डी० वैरिस्टर की सुपुत्री हैं और जो दक्षिण अफ्रिकामें महात्मा गान्धी जी के आश्रम में रह कर शिक्षा प्राप्त कर चुकीं हैं तथा जो वहां सत्याग्रह के दिनों में जेल को पवित्र कर चुकीं हैं, "मिसेज़ मणिलाल नामक कोई एक औरत" कह कर फिजी के गवर्नर साहब ने अपनी असभ्यता का अच्छा परिचय दिया है।

डाक्टर मणिलाल के बारे में गवर्नर ने जो कुछ लिखा है उसके विषय में हम यहां केवल इतना ही कहना चाहते हैं कि अगर वे ही इस उपद्रव की जड़ थे तो फिजी गवर्मेण्ट ने उन पर खुली अदालत में मुकद्दमा क्यों नहीं चलाया?

गवर्नर साहब के पास जो डेपूटेशन गया था और उसने जो निवेदन किया था उसकी एक प्रति यहां दी जाती है।

सूवा
फिजी
२६ जनवरी १६२०

सेवा में-

श्रीमान् सर सैसिल हंटर रोडवैल गवर्नर-
और
कमाण्डर इन चीफ़ फ़िजी।

श्रीमान्!

हम हिन्दुस्तानी स्त्री और पुरुष, जो भारतीय स्त्री सभा तथा भारतीय मज़दूरों के प्रतिनिधि हैं, हड़ताल के विषय में आपकी सेवा में यह डैपूटेशन लेकर उपस्थित हुये हैं।

सब से प्रथम हम यह निवेदन करना चाहते हैं कि हम लोगों के खाने पीने की चीजों का भाव पिछली वर्षों में बहुत ज्यादः बढ़ गया है। सन् १६१८ ई० में आवश्यक वस्तुओं का भाव निर्णय करने के लिये जो कमीशन बिठलाया गया था, उसने २२ मार्च सन् १६१८ को ज़रूरी चीजों की ज्यादः से ज्यादः कीमत यह निश्चित की थी।

मज़दूरों का चांवल	३ पैन्स का एक पौण्ड
आटा	७ शिलिङ्ग का २० सेर

दाल	... ...	३½ पैन्सका एक पौंड
घी	... ...	२ शिलिङ्गका एक पौंड
कडुआ तेल	... ...	२ शिलिङ्गकी १ बोतल

यह भाव सरकारी गज़ट में छपा था और तीन महीने के भीतर यानी १४ जून सन् १९१८ को यह बन्द कर दिया गया था।

यहां पर हम सन् १९१४-१९१५ तथा १९१९-१९२० की चीजों के भाव का मुक़ाबला करने के लिये अङ्क देते हैं।

१९१४—१९१५	१९१९—१९२०
चांवल—२ पैन्स का १ पौंड	८ पैंस का एक पौंड
आटा—७½ शिलिंग का २० सेर	७½ शिलिङ्ग
दाल—२½ पैन्स की १ पौंड	६ पैंस की एक पौंड
घी—१½ शिलिंग का १ पौंड	३ शिलिंगका १ पौंड
कडुआ तेल-१ शिलिंग की १ बोतल	३ शिलिंगकी १ बोतल

खाने पीने की चीजों के सिवाय कपड़ों का मूल्य भी बहुत बढ़ गया है। जो कपड़ा पहिले ६ पैन्स का एक गज़ भर मिलता था, वही अब २½ शिलिंग का एक गज मिलता है। धोती जो पहिले २½ शिलिंग को मिलती थी, अब ७½ शिलिंग को मिलती है। पिछली साल गवर्मेण्ट ने रंगून का

चांवल मँगाया था, जो मुख्यतया यूरोपियन सौदागरों को बेंच दिया गया था। इन यूरोपियन सौदागरों ने वह चांवल कुछ दिनों तक गवर्मेण्ट द्वारा निश्चित किये हुये भाव पर बेचा था। आजकल वही चांवल हमको ८ पेंस फी पौंड के हिसाब से मिलता है।

इन अङ्कों से श्रीमान् को पता लग जायेगा कि इन लोगों की खाने पीने की चीजों का तथा कपड़ों का भाव पहले की अपेक्षा तिगुना हो गया है।

अब मज़दूरोंके वेतनका सवाल लीजिये। हमने श्रीमान् की सेवा में यह बात निवेदन कर ही दी है कि हमारी खाने पीने की चीजों का तथा कपड़ों का भाव तिगुना हो गया है आशा है कि आपको हमारे दिये हुये अङ्कों से सन्तोष हो गया होगा। लेकिन जहां चीजों का भाव तीन गुना होगया है वहां हमारा वेतन उतना ही बना हुआ है जितना कि वह युद्ध के पहिले था। जो कुछ हमने पहले लिखा है उससे प्रगट है कि पहिले ४ पेंसमें जितनी चीज़ आती थी, उतनी अब एक शिलिंग में आती है, एक शिलिंग अब चार पेन्स के बराबर रह गया है। इसका परिणाम यह हुआ है कि हिन्दुस्तानी मज़दूर जो खेतों पर मज़दूरी करके अथवा सड़कों पर काम करके अपनी गुजर करते रहे हैं, वे अब अत्यन्त कष्ट पूर्ण दुर्दशामें अपनी जिन्दगी बिता रहे हैं। अगर यह दुर्दशा श्रीमान् को बहुत दिन पहले से नहीं मालूम हो

गई थी, तो इनफ्लूएंज़ा के दिनोंमें तो अवश्य मालूम हो गई होगी जब कि हिन्दुस्तानी बिना भोजन और बिना कपड़ों लत्तों के अत्यन्त दुःखपूर्ण और रोगोत्पादक स्थिति में रहते हुये पाये गये थे।

श्रीमान् फिजी प्रवासी भारतीयों की वर्तमान स्थिति से भली भांति परिचित है। सूवा, रेवा और नावुआ के जिलों में मज़दूर लोग और कितने ही यूरोपियनों के घरों पर काम करने वाले नौकर लोग काम छोड़ बैठे हैं। वे ५ शिलिंग प्रतिदिन के हिसाब से वेतन मांगते हैं। हालत ऐसी हो गई हैं कि उन्हें मज़बूर होकर ५ शिलिंग की मांग पेश करनी पड़ी है। आश्चर्य्य की बात तो हमारे लिये यह है कि इन लोगों ने इससे बहुत पहिले ही हड़ताल क्यों नहीं की। उन की पांच शिलिंग की मांग युक्ति विहीन नहीं है। यह कहा जा सकता है कि इन लोगों को हड़ताल करने के पहिले सरकार के पास अपना मामला ले जाना चाहिये था। हड़ताल करने वालों पर यह अपराध लगाया भी जाता है कि उन्होंने विना गवर्मेण्टके सामने मामला पेश किये, हड़ताल कर दी। पिछले सप्ताह में मज़दूरों के एक प्रतिनिधि ने कालोनियल सेक्रेटरी से जाकर बातचीत की थी। कालोनियल सेक्रेटरी ने उससे कहा कि मज़दूरों से काम पर लौट जाने के लिये कहो। उस प्रतिनिधि ने मजदूरों के पास जाकर कालोनियल सेक्रेटरी का सन्देश ज्यों का त्यों सुना

दिया। मज़दूरों ने जो जवाब उसको दिया वह यह है "हम लोग कामपर वापिस नहीं जा सकते। जबतक कि हमारे कष्ट दूर नहीं होंगे तब तक हमारे हाथ किसी के लिए काम नहीं कर सकते चाहे हमको मरना ही पड़े। बहुत दिन हुये जब हम सब मिलकर एजेण्ट जनरल के पास गए थे और हमने अपना मामला साफ़ २ तौरपर उन्हें समझा दिया था, और उनसे प्रार्थना की थी कि या तो आप हमारे वेतन को बढ़वाने का प्रयत्न कीजिये अथवा हमें हिन्दुस्तान को भिजवा दीजिये। तब से लेकर अब तक गवर्मेण्ट ने हम लोगों के लिये कुछ भी नहीं किया। उन में उनके वायदों में और ब्रिटिश न्यायप्रियता में अब हमारा बिल्कुल विश्वास नहीं रहा है।" श्रीमान् यही उनका उत्तर है। अब हम श्रीमान् के पास यह निवेदन करने के लिये आये हैं कि अगर मज़दूरों के काम पर वापिस गये बिना ही शीघ्र ही इस मामलेका निपटारा होजावेगा, और हम लोग यदि समझौता कराने में सफल हो सकेंगे तो बड़ी भारी आपत्ति से हम सब बच जावेंगे। नम्रतापूर्वक हम लोग आप की सेवा में निवेदन करते हैं कि जिन देशों के निवासी शिक्षित होते हैं वहां भी हड़तालके दिनों में क्या घटनाएं हो जाती हैं, तब फिर भला हम अशिक्षित और निरक्षर फिजी प्रवासी भारतीयों से क्या आशा कर सकते हैं। ये लोग क्या करेंगे इसका अनुमान भी हमारे लिये कठिन है। हम लोग श्रीमान्

को विश्वास दिलाते हैं कि अब तक तो, जहां तक हमसे हो सका है, हमने इन लोगों को वश में रखने का प्रयत्न किया है और हमने इन लोगों को यही सलाह दी है कि यद्यपि इस बात का आप लोगों को पूर्ण अधिकार है कि आप वैध रीति से वेतन वृद्धि के लिये आन्दोलन करें लेकिन कानून अपने हाथ में नहीं लेनी चाहिये। भविष्य में हम अपने प्रयत्न में सफल होंगे या नहीं यह कहना कठिन है।

हमें विश्वास है कि अब श्रीमान् को यह मामला स्पष्ट होगया होगा। श्रीमान् की सेवा में नम्रतापूर्वक हम यह प्रस्ताव भी उपस्थित करना चाहते हैं कि सरकार इस बात की घोषणा करदे कि वह अपने मज़दूरों को ५ शिलिङ्ग देने के लिये तैयार है और जब वे लोग काम पर लौट आवेंगे तब एक कमीशन खाद्य द्रव्यों के भाव को नियंत्रित करने के लिये बैठेगा। जो यूरोपियन हिन्दुस्तानियों से सहानुभूति रखते हैं और जिनकी संख्या कम नहीं है वे भी निस्सन्देह इस बात को मानते हैं कि मज़दूरों के वेतन में वृद्धि होनी चाहिये। श्रीमान् को म्यूनिसिपेलिटी के मेम्बरों से भी कह देना चाहिये कि वे अपने हिन्दुस्तानी नौकरों का वेतन बढ़ा दें। हमें विश्वास है कि फिर मज़दूरों के दूसरे मालिक भी मज़दूरी बढ़ा देंगे।

श्रीमान् ने हम लोगों को बात चीत करने का जो गौरव प्रदान किया है उसके लिये हम आप को हृदय से धन्यवाद

देते हैं और हम विश्वास करते हैं कि आप इस सम्पूर्ण प्रश्न को सहानुभूति की दृष्टि से देखेंगे। इस कृपा के लिये हम श्रीमान् को बहुत बहुत धन्यवाद देंगे।"

आपके अत्यन्त आज्ञाकारी

यह बात ध्यान देने योग्य है कि फिजी सरकार ने अपने खरीते में भारतीयों के डेपूटेशन का यह निवेदन पत्र, जो अंग्रेजी में दिया गया था, शामिल नहीं किया है! शायद फिजी सरकार ने इस अत्यन्त आवश्यक पत्र को गुरुद्दीन पाठक (अर्ल पोटर ग्राण्ट) की उस चिट्ठी की अपेक्षा बिलकुल अनावश्यक समझा है, जो इम्पीरियल सिटीज़न शिप ऐसोशियेशन के विरुद्ध लिखी गई थी और जिसे गवर्नर साहब ने अपने खरीते में आदर पूर्वक स्थान दिया है यदि उपर्युक्त निवेदन पत्र खरीते में छप जाता तो सभ्य संसार को इस बात का पता लगजाता कि हड़ताल क्यों हुई थी। भला फिजी सरकार जो इस वैध हड़ताल को "खुल्लम खुल्ला विद्रोह" सिद्ध करने के प्रयत्न में लगी हुई थी डेपूटेशन के इस पत्र को क्यों छापने लगी!

जिस समय माननीय श्रीमान् श्री निवास शास्त्री ने व्यवस्थापिका सभा में भारत सरकार से इस बात के लिये निवेदन किया था कि सरकार फिजी की दुर्घटना की जांच के लिये एक कमीशन नियुक्त करावे उस समय सरकार की ओर से सरजार्ज वार्नस ने कहा था "फिजी के गवर्नर ने

अपना जो खरीता फिजी के दंगे के विषय में भेजा है वह बहुत काफ़ी विस्तृत है इस लिये गवर्मेण्ट जांच की अवश्यकता नहीं समझती ?" यह तो हम भी मानते हैं कि गवर्नर साहब का खरीता बहुत काफ़ी विस्तृत है लेकिन यह विस्तार वेमतलब की बातों से हुआ है। असली बातें या तो बिल्कुल उलट पुलट कर लिखी गई है या सफा छोड़ दी गई हैं। पं० तोताराम जी सनाढ्य का यह कथन सोलह आना ठीक है कि इस खरीते में बड़ी बड़ी खन्दक और खाई हैं।

एक बात और भी ध्यान देने योग्य है कि भारतीय स्त्री पुरुषों ने ६ जनवरी के इस निवेदन पत्र में फिजी सरकार को स्पष्ट ही बतला दिया था कि अशिक्षित और निरक्षर प्रवासी भारतीयों को काबू में रखना कठिन होगा, इसलिये फिजी सरकार का यह प्रथम कर्त्तव्य था कि वह प्लाण्टरों और मज़दूरों के बीच में न्याय करती और इस प्रकार भारतीय मज़दूरों को सदा के लिये अपना बना लेती, लेकिन फ़िजी सरकार ने यह अमूल्य अवसर अपने हाथ से निकल जाने दिया जिसका नतीजा प्रवासी भारतीयों को और स्वयं फिजी सरकार को भुगतना पड़ा। अब फिजी के गोरे सस्ते मजदूरों के लिये रो रहे हैं! फिजी प्रवासी भारतीयों के साथ बुरे से बुरा बर्ताव करके भी फिजी के ये स्वार्थी गोरे इस बात की आशा कर रहे हैं कि हिन्दुस्तानी मज़दूर फिजी में जाकर उजड़े हुये फिजी उपनिवेश को बसावेंगे! इस धृष्टता की भी कोई हद है!

फिजी की दुर्घटना।

४

सरकारी कमीशन की कार्रवाई।

हिन्दुस्तानी डेपूटेशन के आदमियों से बात चीत करने के बाद गवर्नर साहब ने एक सरकारी कमीशन नियुक्त करना स्वीकार कर लिया। गवर्नर साहब ने यह भी वचन दिया कि हिन्दुस्तानियों को ओर से एक आदमी को कमीशनपर स्थान मिलेगा। हिन्दुस्तानियों ने विचार करके ऐसा निश्चित किया कि मि० मणिलालको कमीशनपर स्थान मिलना चाहिये लेकिन भला फिजी की गवर्मेण्ट और फिजी के गोरे भला इस बात को कब पसंद कर सकते थे। उन्होंने बड़ी चालांकी से हिन्दुस्तानियों को समझा दिया कि कानून विभाग के क्लार्क मिस्टर सन्तासिंह चोला को कमीशन में बैठने दो और डाक्टर मणिलाल को बैरिस्टर रक्खो जिसमें वे तुम्हारी तरफ से गवाही पेश कर सकें। इस कमीशन में बद्री महाराज भी भारतीयोंके प्रतिनिधि के रूप में सरकार ने नियुक्त किये थे। अंग्रेज़ों की ओर से इस कमीशन में कई मेम्बर थे इन महाशयों ने भारतीयों का कैसा चौपट किया इसका वृतान्त हम आगे चलकर सुनावेंगे।

मि० चोला ने जो रिपोर्ट गवर्मेण्ट को दी थी वह बड़ी

योग्यता पूर्ण थी। उसमें उन्होंने हिन्दुस्तानी मज़दूरों का एक सप्ताह का खर्च १२ शिलिङ्ग ४ पेंस निकाला था और सरकार से यह सिफ़ारिश की थी कि हिन्दुस्तानी मज़दूरों का वेतन कम से कम ४ शिलिङ्ग रोज़ होना चाहिये। मि० चोला ने अपनी रिपोर्ट में लिखा था कि ४ शिलिङ्ग रोज के हिसाब से एक सप्ताह का वेतन २४ शिलिङ्ग होगा, इस में १२ शिलिङ्ग ४ पेंस घटा देने पर ११ शिलिंग ८ पेंस की बचत होगी और चीजों का भाव आज कल इतना बढ़ा हुआ है कि इस समय के ११ शिलिङ्ग ८ पेंस युद्ध के पहले के ४ शिलिङ्ग ८ पेंस के बराबर हैं जो बर्तन, कपड़े बिछौने इत्यादि के लिये आवश्यक होंगे। मिस्टर सन्तासिंह चोला ने लिखा था।

"It may be said that there is no industry in Fiji that can afford to pay 4 Shillings or more a day. Whilst I doubt this statement very much, I am prepared to state that such industries should rather perish than prosper on underpaid labour.

अर्थात् यह कहा जा सकता है कि फिजी में कोई रोज़गार या धंधा ऐसा नहीं है जिसके मालिक चार शिलिङ्ग से अधिक वेतन दे सकें। पहिले तो मुझे इस कथनमें बहुत कुछ सन्देह है तथापि यदि यह बात सच भी हो तो मैं यह

कहने के लिये तय्यार हूं कि मज़दूरों से कम वेतन पर काम लेकर रोजगारों की उन्नति करने की अपेक्षा यह कहीं उत्तम तर है कि वे रोज़गार नष्ट हो जावें।" मिस्टर चोला ने फ़िजी सरकार को अच्छी तरह सावधान करते हुये लिखा था "पिछली घटनाओं के कारण अब इस बात की कोई आशा नहीं की जा सकती कि भारतवर्ष फ़िजी वालों की मज़दूरों की मांग पर ध्यान देगा और जो मजदूर यहां इस उपनिवेश में हैं वे ख़्याल करते हैं कि हमारे साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता इसलिये हमें ऐसा प्रतीत होता है कि भविष्य में अधिक मज़दूर आने की अपेक्षा जो हमारे पास यहां हैं उनके भी चले जाने की आशंका है।"

मिस्टर चोला का कथन कितना सत्य था यह इसी बात से प्रगट है कि ३० हजार हिन्दुस्तानी ,फिजी के इमीग्रेशन आफिस में हिन्दुस्तान लौट आने के लिये अपना नाम लिखा चुके हैं। लेकिन फिजी सरकार अब भी इस बात की आशा कर रही है कि उजड़े हुये फिजी उपनिवेश को बसाने के लिये अब भी सस्ते भारतीय मज़दूर Colonisation scheme (कालोनी बसाने की स्कीम) में फिजी को आवेंगे! भारतवर्ष में मज़दूरों की खान खुली हुई है जिसके मन में आवे हजारों बटोर कर ले जावे! पहले शर्तबन्दी की प्रथा में ८० वर्ष तक ले जाते रहे अब कालोनाइजेशन स्कीम में ले जाइये! मज़दूरों बढ़ाने का कोई जरू-

रत नहीं है, क्योंकि वकील बद्री महाराज हिन्दुस्तानी मज़-दूर एक शिलिङ्ग रोज में ही अपनी गुज़र कर सकता है। अस्तु, मिस्टर चोला की प्रशंसनीय रिपोर्ट का किसी ने समर्थन नहीं किया, बद्री महाराज ने गोरों की रिपोर्ट पर अपने हस्ताक्षर कर दिये ? इन गोरों ने और बद्री महाराज ने अपनी रिपोर्ट में लिखा था कि सूवा के मजदूरों का वेतन २$\frac{१}{२}$ शिलिङ्ग की जगह २$\frac{१}{२}$ शिलिङ्ग ही रहना चाहिये उसमें एक भी पैनी बढ़ाने की जरूरत नहीं है ? और बाहर के मजदूरों का वेतन २ शिलिङ्ग से घटा कर १$\frac{३}{४}$ शिलिङ्ग कर देना चाहिये तथा इसके बदले में उन्हें विना मूल्य ४$\frac{१}{२}$ शिलिङ्ग का खाने पीने का सामान देना चाहिये। इसका मतलब यह हुआ कि उन लोगों को तीन शिलिङ्ग का का सामान मुफ्त में मिल जाना चाहिये क्योंकि १$\frac{१}{२}$ शिलिङ्ग तो उनके वेतन में से काटने का निश्चय किया गया था। इस प्रकार २$\frac{१}{२}$ शिलिङ्ग रोज हीं वेतन हुआ। बात असल में यह थो कि फिजी सरकार फिजी के प्लाण्टरों को और सी० ऐस०आर कम्पनी की गुलाम थी और वह मि० स्काट क्राम्पटन, इत्यादि के हाथ में थी। अब भी वही हालत है। २३ जनवरी सन् १९२० को मिस्टर स्काट ने म्यूनिसिपल

कौन्सिल की ओर से विज्ञापन निकाला था जिसमें उन्होंने लिखा था कि वेतन बढ़ाने की कोई ज़रूरत नहीं है। खाने पीने की चीजों का भाव कम कर देनेसे काम चल जायगा। मि० स्काट अपने म्यूनिसिपेलिटी में काम करने वाले मज़दूरों के वेतन के बढ़ाने के विरुद्ध तो थे ही लेकिन साथ ही साथ वे, सी० ऐस० आर कम्पनी के वकील और शुभचिन्तक होने के कारण, अन्य खानों के मज़दूरों के वेतन को भी नहीं बढ़ने देने चाहते थे। मि० स्काट ने लिखा था।

"The Council as the largest employer of casual Indian labour must be careful to avoid looking the position that has arisen from the narrow and perhaps selfish standpoint. We must endeavour to meet the situation by looking at it from the broad view point and be careful not to prejudice others, particularly the planting interests. We all recognise that the planting interests are the backbone of the colony, and a false move although with the best of intentions, might have very far reaching and disastrous consequences to the colony as a whole."

अर्थात् "चूंकि म्यूनिसिपल कौंसिल के आधीन सब से अधिक हिन्दुस्तानी मज़दूर काम करते हैं इसलिये उसे इस प्रश्न पर स्वार्थ पूर्ण अथवा क्षुद्र दृष्टि से विचार नहीं करना

चाहिये। इस पर हमैं उदार दृष्टि से विचार करना चाहिये और ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिये जिससे दूसरों की हानि हो, खास करके हमैं प्लाण्टरों की हानि न करनी चाहिये। हम सब इस बात को मानते हैं कि प्लाण्टर लोग ही इस उपनिवेश के आधार स्तम्भ हैं और अगर हमने अच्छे उद्देश्य से भी कोई भूल की तो उसका परिणाम बड़ी दूर तक पहुंचेगा और उपनिवेश के लिये सत्यानाशकारी सिद्ध होगा"

स्काट साहब के इस कथन का सीधा सादा अर्थ यह था कि म्यूनिसिपल कौंसिल को अपने आधीन हिन्दुस्तानी मज़दूरों का वेतन नहीं बढ़ाना चाहिये क्योंकि अगर म्यूनिसिपैलिटी ने इन मजदूरों की तनख़ाह बढ़ा दी तो फिर शायद प्लाण्टरों को भी बढ़ानी पड़ेगी, इससे प्लाण्टरों की हानि होगी और चूंकि प्लाण्टर लोग ही फ़िजी के कर्ता धर्ता विधाता हैं इसलिये कोई काम ऐसा नहीं करना चाहिये जिससे उनको मज़दूरी बढ़ानी पड़े और इस प्रकार हानि सहनी पड़े।

फिजी गवर्नर साहब ने जो कमीशन नियुक्त किया था उसने स्काट साहब की आज्ञा का अक्षरशः पालन किया और भूखे भारतीय मज़दूर हाथ मलते ही रह गये। इस प्रकार सरकारी कमीशन का यह नाटक समाप्त हुआ।

फिजी की दुर्घटना ।

५

प्रवासी भारतीय स्त्रियों में जागृति ।

फिजी की दुर्घटना के दिनों का वृत्तान्त अत्यन्त दुःख दायक और निराशा जनक है, लेकिन उसका एक भाग ऐसा है जिससे हृदय में आशा का कुछ सञ्चार होता है और वह भाग है फिजी प्रवासी भारतीय स्त्रियों की जागृति का। इन भारतीय स्त्रियों ने हड़तालियों के साथ केवल सहानुभूति ही नहीं दिखलाई बल्कि उनको अपने प्रण पर दृढ़ रहने के लिये भी बहुत उत्साहित किया। यद्यपि ये दीन हीन और अशिक्षित भारतीय मज़दूर मशीनगन और लाशेंला के सामने बहुत दिन तक नहीं ठहर सके तथापि यदि भारतीय स्त्रियों ने उन्हें सहायता न दी होती तो वे इतने दिन तक भी न ठहर सकते।

सब से अधिक प्रशंसनीय कार्य्य श्रीमती जैकुमारी देवी (श्रीयुत मणिलाल जी की धर्मपत्नी) का था। जैसा कि हम पहले लिख चुके हैं श्रीमती जैकुमारी देवी जी गुजरात देश के सुप्रसिद्ध नेता डाक्टर मेहता की सुपुत्री हैं, महात्मा गांधी जी के दक्षिण अफ्रिका के आश्रम में शिक्षा प्राप्त कर चुकी हैं और दक्षिण अफ्रिका की जेल को पवित्र कर चुकी हैं। श्रीमती जैकुमारी देवी जी में देश भक्ति के भाव बहुत

पहले से ही जागृत हो चुके थे और उन्हीं के कारण फिजी प्रवासी भारतीय स्त्रियों में जागृति उत्पन्न हुई थी। उन्होंने कितनी ही हिन्दुस्तानी स्त्रियों को लिखना पढ़ना सिखलाया था और उनकी सामाजिक दशा सुधारने के लिये भी भरपूर प्रयत्न किया था। श्रीमती जी ने भारतीय स्त्रियों को उपदेश दिया था कि सिगरेट पीना छोड़ दो, गहनों का मोह त्याग दो और पतिव्रत धारण करो। इन अशिक्षित स्त्रियों ने श्रीजैकुमारी देवी के उपदेश को इस प्रकार ग्रहण किया कि सब लोगों को महान आश्चर्य हुआ। इन स्त्रियों को बुरे काम छोड़ने और सुधार के लिये तैयार होते हुये देखकर ईसाई पादरियों को भी बड़ा अचम्भा हुआ क्योंकि ये मशनरी लोग बहुत दिनों से इनका सुधार करना चाहते थे लेकिन नहीं कर सके थे। यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि जो डेपूटेशन फिजी के गवर्नर के पास वेतन-वृद्धि की मांग पेश करने के लिये गया था उसकी प्रधान श्रीमती जैकुमारी देवी ही थीं। इन्हीं दिनों में सूवा में भारतीय स्त्रियों की एक सभा भी क़ायम हुई थी और इसकी अध्यक्ष भी वे ही थीं।

यहां पर स्त्रियों की एक सभा का वृत्तान्त दिया जाता है जिससे पाठकों को पता लग जावेगा कि इन स्त्रियों ने कितने उत्साह के साथ अपना कार्य्य आरम्भ किया था। यह सभा ६ फर्वरी सन् १६२० को हुई थी। सब से प्रथम

तीन कन्याओं ने (राजकुमारी, शिवकुमारी, और अङ्कमा ने) देशभक्ति के विषय में एक भजन गाया। तदुपरान्त प्राचीन भारत की स्त्रियों की सभ्यता के विषय में एक व्याख्यान श्रीमती रामकली देवी का हुआ। इसके बाद पांच मेम्बर स्त्रियों का चुनाव हुआ। महाराजी देवी, रामराजी देवी, सरयू देवी, महारानी देवी, और रतनी देवी मेम्बर चुनी गई और अध्यक्ष के स्थान में श्रीमती जैकुमारी देवी का नाम स्मरण करके एक कुर्सी की स्थापना की गई। इसके बाद श्रीमती जानकी देवी का व्याख्यान हुआ। आपने जो प्रश्न किये और स्त्रियों ने उनके जो उत्तर दिये वे यहां लिखे जाते हैं।

प्रश्न—क्या आप सब स्त्रियां, जिनके पति मज़दूरी करते हैं इस बात से प्रसन्न हैं कि आपके पति दो शिलिंग रोजपर काम करें?

उत्तर—हम दो शिलिंग रोज की मज़दूरी पर कदापि सन्तुष्ट नहीं हो सकतीं।

प्रश्न—जब आप दो शिलिंग रोज की मज़दूरी पर सन्तुष्ट नहीं हैं तो आपकी समझ में उन्हें कम से कम कितना वेतन मिलना चाहिये?

उत्तर—उनका वेतन कम से कम ५ शिलिंग रोज होना चा- चाहिये।

प्रश्न—वर्तमान समय में जिस भाव से सौदा बिकती है

क्या उस भाव से हमारी सब बहनें अपना गुज़ारा कर सकती हैं ?

उत्तर—इस भाव से हमारा गुजारा कदापि नहीं होसक्ता ।

प्रश्न-तो किस भावसे आपका गुजारा हो सकता है?

उत्तर—आज से दश वर्ष पूर्व यानी सन् १९१० के भाव से हमारा गुज़ारा हो सकता है ।

प्रश्न—अगर आपके पतियों को, जो मज़दूरी करने वाले हैं, ५ शिलिंग रोज मिलने लगे और सौदा का भाव सन् १९१० के समान हो जावे तो क्या आप लोग सन्तुष्ट होंगी ?

उत्तर—हां ऐसा होजाने पर हम पूर्णतया सन्तुष्ट होंगी ।

प्रश्न—यदि आप के पतियों की तलब बढ़ाने की बाबत और चीजों का भाव १९१० के समान लाने की बाबत किसी स्त्री या पुरुष पर किसी प्रकारकी कोई आफ़त आ पड़े तो उसमें आप भाग लेंगी या नहीं ?

उत्तर—ऐसी आफ़त आजाने पर हम सब आगे बढ़कर भाग लेंगी ।

प्रश्न—यदि हमारे पतियों की तलब बढ़ने और सौदा का भाव सन् १९१० के समान होने के पूर्व शायद जेल जाना पड़े तो आप जेल में जाने के लिये तय्यार हो ?

सबने-एक स्वर से तथा हाथ उठाकर उत्तर दिया "हम प्रसन्नता पूर्वक जेल जाने के लिये तैयार हैं ।"

प्रश्न—यदि आप जेल जाओगी तो अपने पतियों से पहले या पीछे ?

उत्तर—हम अपने पतियों से पहिले ही जेल जावेंगी।

प्रश्न—आपने जो प्रण किये हैं उनके निवाहने के लिये क्या आप कसम खा सकती है।

इस पर सब स्त्रियों ने परमात्मा को साक्षी देकर कसम खाई कि हम अपने दिये हुये वचनों को पालन करेंगी।

इसके बाद श्रीमती जानकी देवी जी ने पूछा "यदि हमारे पति दो शिलिङ्ग रोज के ही वेतन को स्वीकार करलें और वर्तमान सौदा से ही अपनी गुज़र करने के लिये तैयार हो जावे तो ऐसे पुरुषों के विषयमें आप क्या सम्मति देंगी ?"

सबने हाथ उठाकर कहा "ऐसे पुरुषों के विषय में हमारी यह सम्मति है कि इन पुरुषों को स्त्रियों के कपड़े पहना कर घर में बन्द कर दिया जावे और फिर उस घर में ताला लगा दिया जावे"

इसके बाद सभा के लिये धन एकत्र करने की अपील की गई और उसी समय ४ पौण्ड ५ शिलिङ्ग चन्दा होगया। तदनन्तर सभा विसर्जित हुई। इस उत्साह और दृढ़ता के साथ अपना कार्य्य आरम्भ किया। हम यह मानते हैं कि इन स्त्रियों ने कहीं २ कुछ उद्दण्डता भी की, लेकिन उनकी यह उद्दण्डता मनोरंजक थी और उनकी जागृति का एक चिन्ह मात्र थी। एक तो वे स्त्रियां शिक्षित नहीं थीं और फिर जिन स्त्रियों को फिजी में ४० वर्ष तक गुलामी करनी

पड़ी तथा जो स्वार्थी धन लोलुप प्लाण्टरों की दुराचार पूर्ण आर्थिक नीति का शिकार हो चुकी थीं उनसे यदि थोड़ी बहुत उद्दण्डता हो भी गई तो वह क्षम्य थी। ये स्त्रियां कुछ बलवा तो कर ही नहीं सकती थीं। बहुत होता तो पुरुषों की मूछें उखाड़ने या कीचड़ फेंकने की धमकी देतीं थीं। एक दिन ताई वाऊ नामक स्थान की सब स्त्रियां जो कि संख्या में १४ थीं, एक गोरे के मकान पर इसलिये गईं कि उसके यहां काम करने वाले तीन हिन्दुस्तानियों को हड़ताल में शामिल करें। यह स्त्रियां उन आदमियों से यह कहना चाहती थीं कि आप जिस तरह से हो अपने भाइयों में चलकर गुज़ारा कीजिये लेकिन जब तक आप के वेतन का उचित निर्णय न होजाय तब तक गोरे के काम को मत करो। वह गोरा मि० जराट भी अष्टावक्री मुह लिये उन्हीं आदमियों के पास में ही खड़ा था। उसने उन आदमियों को तो अपने बंगले की तरफ़ रवाना किया और उन स्त्रियों से कहा "अगर तुम लोग हमारी ज़मीन में पैर रक्खोगी तो मैं अभी तुम लोगों को बन्दूक से दाग दूंगा।" लेकिन उन स्त्रियों ने जराट साहब की इस धमकी की कुछ परवाह नहीं की और उसकी ज़मीन में घुस कर उन आदमियों की खोज की लेकिन उनका पता नहीं लगा। कहा जाता है कि सामाबूला में कुछ स्त्रियों ने यह प्रस्ताव भी पास कर दिया था कि जो कोई काम पर जावेगा वह जातिसे बाहिर कर दिया

जावेगा। स्त्रियों के कार्य्य का परिणाम भी शीघ्र ही मालूम होने लगा। यूरोपियन लोगों को अपना खाना खुद ही बनाना पड़ा. सूवा के मेयर मि० स्काट को सड़कों पर काम करने वाले मज़दूर ही नहीं मिले,मैला उठाने का काम जैसे तैसे फिजियन जंगलियोंने किया और पवलिक वर्कस डिपार्टमेण्ट का काम बिल्कुल बन्द होगया। फिजी के गवर्नर साहब अपने खरीते में लिखते हैं।

"At this stage considerable activity among Indian women became noticeable, the most prominent among them being Mrs Mánilal, who addressed meetings of Indians, exhorting them not to go back to work and to prevent all their countrymen from doing so. Mrs Manilal accompánied by a crowd of women, attempted to force an Indian employee at one of the motor garages to leave his work, but the police appeared on the scene and the women went home. Bands of women of the lowest class were organised to intimidate workers with obscene language and filthy practices."

अर्थात् "इस अवसर पर हिन्दुस्तानी स्त्रियोंमें विशेष हलचल दीख पड़ने लगी। इन स्त्रियों में मुखिया मिसेज मणिलाल थीं। मिसेज़ मणिलाल ने कितने ही सभाओं में व्याख्यान

दिये और लोगों से कहा "आप काम पर मत जाओ और जो काम पर जाते हैं उन सब को रोको" कितनी ही स्त्रियों को साथ लेकर मिसेज मणिलाल एक मोटर वाले के यहां पहुंचीं और वहां काम करने वाले एक हिन्दुस्तानी से काम छोड़ देने के लिये कहा लेकिन उस मौके पर पुलिस पहुंच गई इसलिये स्त्रियां लौट गई। काम पर जाने वालों को धमकाने उन्हें गाली देने और गन्दी कार्रवाई करने के लिये अत्यन्त नीच जाति की स्त्रियों का संगठन किया गया था।"

हम यह बात मानते हैं कि कहीं २ पर कुछ स्त्रियों ने मज़दूरों को काम पर जाने से रोकने में ज़बरदस्ती भी की थी लेकिन बहुत सी स्त्रियों ने अपना काम शान्ति पूर्वक किया था।

जिन जिन स्त्रियों ने ज़बरदस्ती की उनका पक्ष समर्थन करना हमारा उद्देश्य नहीं है। स्वयं डाक्टर मणिलाल ने उन्हें ऐसा करने से मना किया था। उन्होंने अपने लेख में लिखा है "जब मैं सूवा को आया तो मैंने स्त्रियों और पुरुषों को सभा में और आपस की बात चीत में भी यही उपदेश दिया कि जो आदमी कमज़ोर दिमाग होने के कारण काम पर जाते है उन्हें बल पूर्वक मत रोको, लेकिन कुछ स्त्रियां अपमान और मारपीट नहीं सह सकीं और जो कोई हिन्दुस्तानी ईसाई अथवा यूरोपियन कानस्टेबल उनकी मीटिङ्ग या कार्रवाई में दस्तनदाज़ी करता उससे झगड़ा

करने के लिये वे तय्यार होजाती थीं।"

यह बात ध्यान देने योग्य है कि उन दिनों बहुत से हाफ कास्ट और गोरे वर्दी पहने हुए चारों ओर पहिरा दे रहे थे। यदि फिजी सरकार में कुछ भी अक़ल होती तो वह इन स्त्रियों को दवाने के लिये फौज के गोरे तथा जंगलियों का प्रयोग न करती। लेकिन फिजी सरकार की अक़ल उस वक्त घास चरने चली गई थी इसलिये उसने बिना कुछ सोचे समझे युद्ध से लौटे हुए सिपाहियों मल्लाहों और हाफ कास्टों को यह काम सौंप दिया। इन महाशयों के गुरदानों की राम कहानी अगले अध्याय में लिखी जावेगी।

फिजी में अछूतसर।

१

हम यह अच्छी तरह जानते हैं कि अत्युक्ति करना मानों अपने पक्ष को निर्बल करना है। सत्य घटनाओं को बिना नोन मिर्च मिलाये ज्यों की त्यों लिख देना ही अपने पक्ष को समर्थन करने के लिये सर्वोत्तम मार्ग है। फिजी में हमारे भाई बहनों पर जो अत्याचार हुये हैं और फिजी सरकार ने जिस अन्याय-पूर्ण नीति से कार्य्य लिया है उसके अकाट्य प्रमाण हमारे पास मौजूद हैं और फिजी सरकार के विरुद्ध हमारा पक्ष पूरी तरह से प्रबल है। इस स्थिति में अत्युक्ति

करने से हमारा यह प्रबल पक्ष निर्बल ही होगा। इसी बात को अच्छी तरह ध्यान में रखते हुये हमने यह अध्याय लिखा है। फिजी से जो सहस्रों भारतीय लौटकर आये हैं, उन में सैकड़ों ही आदमियों से बातचीत करने का अवसर हमें प्राप्त हो चुका है। इन आदमियों ने जो भयंकर बातें हमें फिजी के उपद्रव के दिनों की सुनाई हैं उन्हें हमने इस अध्याय में स्थान नहीं दिया। फिजी में उन दिनों एक प्रकार की मार्शल ला जारी थी और आदमी घर के बाहर नहीं निकल सकते थे, ऐसी हालत में कितनी ही अफवाहों का उड़ना बहुत स्वाभाविक था। इन अफवाहों को हम प्रामाणिक नहीं समझते और इसीलिये हमने उन्हें इस अध्याय में स्थान नहीं दिया।

इस अध्याय का नाम "फिजी में अमृतसर" हमने जान बूझकर रक्खा है। इसके कई कारण हैं। पहला कारण तो यह है कि जैसे मदोन्मत्त साम्राज्य-वादियों की कृपा से यहां हमारी मातृभूमि में अमृतसर का हत्याकाण्ड हुआ वैसे ही घमण्डी साम्राज्य-वादियों ने फिजी में यह दुर्घटना कराई। अत्याचार भी लगभग एक से ही दोनों स्थानों में हुए। पञ्जाब और फिजी दोनों ही स्थानों में गोरे लोगों का एक ही उद्देश्य था हिन्दुस्तानियों को नीचा दिखाना। यदि कोई कहे कि पञ्जाब में मरे हुओं और घायलों की संख्या कहीं अधिक थी, तो उससे हम यही कहेंगे कि पञ्जाब की

जन-संख्या भी फिजी के भारतीयों को जन-संख्या से उतनी ही अधिक है। लेकिन सब से अधिक ध्यान देने योग्य बात तो यह है कि जिस पाशविक बलके भरोसे और जिस भाव से पञ्जाब की सरकार ने हमारे पंजाबी भाइयों पर अत्याचार किये थे उसी पाशविक बलके भरोसे और उसी भाव से फिजी की सरकार ने हमारे फिजी प्रवासी भारतीयों पर जुल्म किये। पञ्जाब के ओडायर और फिजी के रौडवेल दोनों की स्प्रिट में कोई अन्तर नहीं था। हां एक बात में फिजी की सरकार पञ्जाब सरकार से बाजी मार ले गई, वह यह है, कि पञ्जाब में भारतीय स्त्रियों को जेल की हवा नहीं खानी पड़ी लेकिन फिजी प्रवासी बहनों को जेल भी जाना पड़ा। १३ जुलाई १९२० को बम्बई में व्याख्यान देते हुये महात्मा गान्धी जी ने कहा था "यदि वे बात जो फिजी से लौटे हुये आदमियों ने सुनाई हैं सच हैं तो फिजी की दुर्घटना को अमृतसर का "द्वितीय संस्करण" कहना अनुचित न होगा" फिजी की दुर्घटना अमृतसर का द्वितीय संस्करण थी या नहीं यह बात पाठक आगामि विवरण से स्वयं ही निश्चित करलें।

ता० ५ फर्वरी को फिजी सरकार ने एक हुक्म निकाला कि सब आदमी काम पर लग जावें और यदि बीस आदमियों से ज्यादः आदमियों की सभा करनी हो तो तीन घंटे पहले पुलिस को सूचना देनी चाहिये। ता० ७ फर्वरी को

सूवा के क्रिकेट ग्राउंड में हिन्दुस्तानियों की एक वृहत् सभा हुई। सभा में किसी प्रकार का विघ्न नहीं हुआ।

हिन्दुस्तानियों ने फिजी के गवर्नर से प्रार्थना की कि आप ८ फर्वरी को नौसूरी में चलकर हिन्दुस्तानियों का एक मान पत्र ग्रहण करें लेकिन गवर्नर साहब ने इस बात को स्वीकार नहीं किया। आप अपने खरीते में फरमाते हैं "मैं पल भर के लिये भी इस बात को नहीं मान सकता था कि गवर्नर साहब इस तरह १४ मील दूर जाकर हड़तालियों के साथ बातचीत करें" इसी बात से गवर्नर साहब के दिमाग़ का पता लग सकता है। मोटरकार में सूवा से नौसूरी १४ मील जाने में आध घण्टे से ज्यादः न लगता लेकिन बात तो असल में यह थी कि गवर्नर साहब हड़तालियों से बातचीत करने और मान पत्र ग्रहण करने में अपने प्रेस्टीज (शान) की हानि समझते थे। जो मान पत्र नौसूरी में श्रीमान् गवर्नर साहब को दिये जाने वाला था उसकी एक कापी उन्हें किसीने देखने के लिये देदी थी। उसके विषयमें आप अपने खरीते में लिखते हैं।

"Later on I was shown the draft of an address which had been prepared to be presented to me at the proposed meeting. It had very little to do with the stated grievances, namely the cost of living and the rates of

wages, and consisted of a long resume of political complaints and aspirations. It was in fact a clear proof that the economic grievances on which the leaders had induced the labourers to strike, had been relegated to the background, and that the movement had been converted into a political agitation."

अर्थात् " पीछे से मुझे उस मानपत्र का मसौदा दिखलाया गया, जो प्रस्तावित सभा में मुझे दिये जाने वाला था। इस मसौदे में खाने पीने के खर्च अथवा वेतन के विषय में कुछ भी नहीं था बल्कि उसके बजाय वह राजनैतिक शिकायतों और आकांक्षाओं से भरा हुआ था। इस मसौदे से यह बात स्पष्ट तथा प्रगट होती थी कि नेताओं ने जिन आर्थिक कष्टों के बहाने मजदूरों को हड़ताल कराने के लिये बाध्य किया था वे आर्थिक कष्ट अब पीछे डाल दिये गये थे और इस हलचल को राजनैतिक आन्दोलन का रूप दे दिया गया था।"

सम्पूर्ण खरीते भर में फिजी के गवर्नर साहब ने केवल यही एक वाक्य ऐसा लिखा है जिसमें उन्होंने इस बात के साबित करने की कोशिश की है कि इस आर्थिक हड़ताल ने राजनैतिक आन्दोलन का रूप धारण कर लिया। लेकिन आश्चर्य की बात तो यह है कि इस मानपत्र की प्रति भी गवर्नर साहब ने अपने खरीते के साथ नहीं छपाई। जब उस मानपत्र का मसौदा गवर्नर साहब के हाथ लग गया

तो उसे खरीते के साथ छपा देने में क्या कठिनता थी ? यदि वह मानपत्र वैसा ही था जैसा कि श्रीमान् गवर्नर साहब उसे बतलाते हैं तो उसके छाप देने से गवर्नर साहब का पक्ष और भी प्रबल हो जाता। जिस मानपत्र को गवर्नर साहब इस बात का स्पष्ट प्रमाण समझते हैं, कि आर्थिक हड़ताल ने राजनैतिक आन्दोलन का रूप धारण कर लिया था, क्या वह उसका छापा जाना उतना भी आवश्यक नहीं था जितना शुरुद्दीन पाठक (पीटर ग्राण्ट) के उस पत्र का जो ३ अक्टूबर सन् १९१९ के फिजी टाइम्स में छपा था ? बात असल में यह थी कि यह मानपत्र बड़ी योग्यता पूर्ण था और इसके छप जाने से फिजी गवर्मेण्ट की पोल खुल जाती। इस मानपत्र में कोई ऐसी भयंकर बात नहीं थी जिसे सरकार राज-विद्रोह कह सकती। परिशिष्ट में हमने इस मानपत्र की कापी दे दी है। पाठक उससे स्वयं ही अनुमान कर लेंगे कि यह मानपत्र कितना युक्तिसङ्गत था।

फिजी में अमृतसर।

२

तुराकी में क्या हुआ था !

११ फर्वरी सन् १९२० को किसी यूरोपियन अथवा हिन्दुस्तानी ईसाई ने सूवा रेवा और नावुआ में यह अफवाह उड़ा दी कि डाक्टर मणिलाल जी की धर्मपत्नी श्रीमती जेकुमारी

देवी जी पकड़ी जाने वाली हैं और उनके साथ अन्य तीन स्त्रियों के नाम भी वारण्ट निकल गया है। यह सुनकर ६०—७० हिन्दुस्तानी सूवा की ओर चल पड़े। ये लोग यह देखने के लिये जा रहे थे कि क्या सचमुच श्रीमती जैकुमारी देवी जी पकड़ी गई हैं। सूवा के निकट ही कर्नल गोल्डिङ्ग ने एक इन्सपेक्टर और कुछ कान्स्टेबलों के साथ इन लोगों को रोक दिया। कर्नल गोल्डिङ्ग ने इन लोगों की लाठी छीन ली और इन से फिर कह दिया कि मिसेज़ मणिलाल के पकड़े जाने की ख़बर झूठी है। लोगों ने इस बात पर विश्वास नहीं किया इसलिये कर्नल गोल्डिङ्ग उनमें से एक आदमी को मोटर में बिठलाकर सूवा को ले गए। जब वह आदमी देख आया कि मिसेज़ मणिलाल घर पर हैं तब उन आदमियों को शांति हुई।

तुराकी की घटना—तुराकी में याकूब के घर पर कुछ हिन्दुस्तानी स्त्रियां बैठी हुई आपस में बातचीत कर रहीं थीं उस समय वहां पर Reay रे नामक स्पेशल कान्स्टेबल पहुंचा। यह बात ध्यान देने योग्य है कि यह प्राइवेट जगह थी और यहां रे को इस प्रकार जाने का कोई अधिकार नहीं था। रे ने रहीमन नामक एक औरत से कुछ सवाल किये। रहीमन ने साफ़ २ इन सवालों का जवाब दे दिया। इस पर वाद विवाद होने लगा। जोश में आकर रे ने रहीमन का हाथ पकड़ लिया। रहीमन के [illegible] साथ

छुड़ाने की कोशिश की। क्रोध में आकर रे ने एक डण्डा रहीमन के सिर पर जमा दिया। यह देखकर पास बैठी हुई स्त्रियों को गुस्सा आ गया वे उठ खड़ीं हुईं और रे से लड़ने लगीं। रे ने अपने साथी फिजियन कान्स्टेबल को बुला लिया। बहुत से हिन्दुस्तानी पुरुष वहां निकट ही थे। अपनी बहनों और माताओं का यह अपमान उनसे देखा न गया इसलिये मजबूर होकर उन्होंने भी पुलिस वालों की अच्छी तरह ख़बर ली। उस समय हाफ कास्ट चाहते थे कि गोली चलाई जावे लेकिन इन्सपैक्टर ने आज्ञा नहीं दी। तीन स्पेशल कान्स्टेबलोंके चोट आई। इनके नाम थे कोल्डवैल, सेवेज, और जेम्स ब्राउन। इसके थोड़ी देर बाद ही मशीन गन और डिफैन्स फोर्स के साथ इन्सपैक्टर जनरल आ पहुंचे। तोप और बन्दूक के सामने बिचारे निःशस्त्र हिन्दुस्तानी कर ही क्या सकते थे? हिन्दुस्तानी पीछे हट गये। इसके बाद जो हुआ वह फिजी के गवर्नर साहब के ही ख़रीते में सुन लीजिये।

"The Indians who had been paticipating in the riot ran into some houses in the neighbourhood. Colonel Golding ordered these houses to be surrounded and caused all found inside to be disarmed and collected in one spot. A party of 175 men and 14 women were marched down to police station under escort."

अर्थात् जो हिन्दुस्तानी इस दंगे में शामिल थे वे आस-पास के कुछ घरों में घुस गये। कर्नल गोल्डिङ्ग ने हुक्म दिया कि इन सब घरों को चारों ओर से घेर लिया जावे। ये घर घेर लिये गए और इनके भीतर जितने आदमी पाये गये सब बाहर निकाल लिये गए। और उनके हथियार ले लिये गये। १७५ पुरुष और १४ स्त्रियां गिरफ़ार करके थाने पर लाई गईं।

हमारे फिजी प्रवासी मित्र अपनी डायरी में लिखते हैं "जङ्गलियों और हाफकास्टों ने कई एक हिन्दुस्तानियों के घर तोड़ डाले और धन बरबाद कर दिया। कितने ही मर्दों और स्त्रियों को पकड़ कर हवालात में बन्द कर दिया। रात तक यह धर पकड़ जारी रही। कितने ही बेकसूरों ने भारी चोट खाई। मशीन गन भी चारों तरफ़ घूमती थी। तीन बार रायफल की आवाज़ सुनी गई। तुराकी के रास्ते पर एक भारतीय बालक खड़ा था उसको एक गोरे पिशाच ने उठाकर ज़मीन पर दे मारा।"

इसी घटना का वर्णन करते हुए श्रीयुत एन० बी० मित्र लिखते हैं।

"Instantly the Police force came with a machine gun. The whole place was surrounded. and the police entered every house indiscriminately and made wholesale arrests-mostly

innocent men. This is the first occasion when the strikers crossed the limit of constitutional lines. I do not think that the Government was made aware of the great provocation given to the Indians on this occasion. If the Police or the authorities had not made a fuss about the matter the disturbances would have never occurred. The authorities took it to be a deliberate chalange to its military and hence unfortunate events followed."

अर्थात् "फ़ौरन ही पुलिस तोप लेकर आपहुंची। उस स्थान को पुलिस ने पूर्णतया घेर लिया। पुलिस वालों ने हर एक घर में घुस २ कर सब आदमियों को गिरफ़्तार कर लिया। इनमें से अधिकांश बिल्कुल निरपराध थे। यह पहिला ही मौक़ा था जब कि हड़ताल करने वालों ने क़ानून की मर्यादा का उल्लंघन किया था, लेकिन फ़िजी सरकार को यह बात उसके अधिकारियों ने नहीं बतलाई थी कि हिन्दुस्तानियों के साथ कैसा बुरा वर्ताव किया गया था जिससे कि वे इतने उत्तेजित होगये। यदि पुलिस तथा अन्य सरकारी कर्मचारी इस मामले को बढ़ाते नहीं तो यह आगे नहीं बढ़ता लेकिन अधिकारियों ने यह समझा कि हिन्दुस्तानियों की यह कार्रवाई उनकी फौजी ताकत के लिये चैलेञ्ज के समान है और अधिकारियों की इस नासमझी के कारण ये दुर्घटनाएं

हुई" इन अक्षरों से पाठकों को पता लग जावेगा कि तुराकी में क्या हुआ था। फिजी गवर्नर ने अपने खरीते में लिखा है "It appears that Special constable Reay, while endeavouring to arrest an Indian woman named Rahiman, was set upon and beaten by Indian men & women."

अर्थात् "ऐसा प्रतीत होता है कि स्पेशल कान्स्टेबल रे को जब कि वह रहीमन नामक एक हिन्दुस्तानी औरत को गिरफ़ार कर रहा था, हिन्दुस्तानी स्त्री और पुरुषों ने पकड़ कर पीटा गवर्नर साहब ने अपने खरीते में यह नहीं लिखा कि यह स्पेशल कान्स्टेबल रे रहीमन को गिरफ़ार करने के लिये क्यों गया था, रहीमन ने क्या जुर्म किया था, क्या रे के पास सरकारी वारंट था; किस हालत में और किस जगह पर उसने रहीमन को पकड़ा। ये तमाम आवश्यक बातें गवर्नर साहब हज़म कर गये हैं। एक प्राइवेट जगह में जाकर पचासों स्त्रियों के बीच में एक स्त्री से जाकर झगड़ा करना और फिर उसे गिरफ़्तार करने के बहाने घसीटना क्या कोई अच्छी बात थी? जब हिन्दुस्तानी लोग भूखों मरने के कारण और अपने नेताओं पर पाबन्दी होते देख कर इतने उत्तेजित थे उस समय सरकार का कर्त्तव्य था कि वह अपने स्पेशल कान्स्टेबलों को आज्ञा देती कि वे अपनी बेहूदगी से हिन्दुस्तानियों को और उत्तेजित न करें

फिजी सरकार ने ऐसा क्यों नहीं किया ? यदि अन्य स्त्रियां अपनी साथिनी की दुर्दशा देखकर उत्तेजित हो उठीं तो इसमें उनका कोई विशेष अपराध न था ? स्त्रियों को पिटते, देखकर हिन्दुस्तानी पुरुषों को जोश आजाना स्वाभाविक ही था। हमारा यह अभिप्राय नहीं है कि काल्डवैल, सेवेज और जेम्सब्राउनको पीटकर उन्होंने कोई अच्छा काम किया वल्कि हम उनके इस कार्य्य की घोर निन्दा करते हैं, लेकिन फिर भी यह वात विचारणीय है कि रे ने तथा फिजियन कान्स्टेविलों की कार्रवाईने इन आदमियों को कितना उत्तेजित कर दिया था। फिजी के गवर्नरने सारा दोष हिन्दुस्तानियों के सिर ही मढ़ दिया है। और फिर क्या कर्नल गोल्डिङ्ग ने यह कार्य्य न्यायोचित किया कि तमाम घर घेर लिये और उनके सब आदमी निकाल कर गिरफ़ार करलिये ? यह वात ध्यान देने योग्य है कि गवर्नर साहव ने स्वयं अपने खरीते में लिखा है "कर्नल गोल्डिङ्ग ने हुक्म दिया कि इन सब घरों को चारों ओर से घेर लिया जावे। ये घर घेर लिये गये और इनके भीतर जितने आदमी पाये गए सब वाहिर निकाल लिये गए। १७५ पुरुष और १४ स्त्रियां गिरफ़ार करके थाने पर लाई गईं" हजरत गवर्नर साहव ने किस खूवी के साथ सम्पूर्ण कथा का वर्णन किया है ! जिन के कुछ भी कल्पना शक्ति है वे अनुमान कर सकते हैं कि असभ्य गोरे कान्स्टेवलों ने और वर्वर जङ्गलियो ने इन सब

घरों को घेरते समय और उनके सब स्त्री पुरुषों को बाहिर निकालते समय कितनी ज्यादती से काम लिया होगा, निस्सन्देह इन १८६ आदमियों और औरतों में कितने ही बिल्कुल निरपराध थे। इनको इस प्रकार फिजियन जङ्गलियों के हाथ से घर से निकाले जाते समय जो कष्ट हुआ होगा उसे वे ही जानते होंगे। गवर्नर साहब के उपर्युक्त संक्षिप्त वाक्यका जिक्र करते हुये बम्बई क्रानीकल ने लिखा था

"In these few lines a whole world of tragedy is summed up. The despatch is silent on the point whether all those who were rounded up in this manner were convicted and sentenced with out exception. Very likely they were at least all the ablebodied of both sexes must have been so punished since any discrimination between actual participators in the demonstration and the peaceful denizens of the houses was impossible."

अर्थात् "इन थोड़ी सी पंक्तियों में सम्पूर्ण दुर्घटना का वर्णन कर दिया गया है। खरीते में यह नहीं बतलाया गया कि जितने आदमी इस तरह घेर लिये गये थे वे सबके सब जेल में ठेल दिये गये अथवा कोई छूटा भी। बहुत सम्भावना इसी बात की है कि सब को जेल कर दी गई हो, कम से कम मज़बूत स्त्री पुरुष तो जरूर ही इस तरह अपराधी

बनाकर जेल में ठेल दिये गये होंगे, क्योंकि उस समय अ-सली दंगा करने वालों और घरों पर शांति पूर्वक रहने वालों में भेद और पहचान करना असम्भव होता।"

"क्रानीकल" का अनुमान बिल्कुल ठीक था। इन १८६ आदमियों में लगभग सभी को जेल का दण्ड दिया गया था। यदि गवर्नर साहब चाहते तो इन अंकों को भी खरीते में लिख देते क्योंकि १३ मार्च के पहले ही—जब कि गव-र्नर ने अपना खरीता लिखा था—अनेक मुकद्दमों का फैसला हो चुका था। लेकिन गवर्नर साहब भला ऐसा क्यों करने लगे? बक़ौल पं० तोताराम उन्होंने तो जान बूझकर अपने खरीते में अनेक खाई खन्दक छोड़ दी हैं।

सम्पूर्ण दुर्घटना पर विचार करते हुये हमें कहना पड़ता है यदि स्पेशल कान्स्टेबल रे ने जबरदस्ती एक प्राइवेट जगह में घुसकर रहीमन से छेड़छाड़ न की होती तो यह झगड़ा न होता। लेकिन गोरे लोग तो उस समय अच्छी तरह मदोन्मत्त थे और अबला भारतीय स्त्रियों के सामने अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने की धुन उन के सिरपर सवार थी।

फिजी से अमृतसर।

२

हिन्दुस्तानियों की एक भारी भूल।

जब सूवा के आसपास के स्थानोंमें यह समाचार पहुंचा कि सरकारी पुलिस ने मशीन गन के ज़ोर से किस प्रकार २०० हिन्दुस्तानी स्त्री पुरुषों को गिरफ़ार कर लिया है तो वे लोग डर गये। ११ फवरी को रात को १०—११ बजे कुछ हिन्दुस्तानियों ने सूवा और रेवाके बीच का पुल तोड़ दिया और टेलीफोन का तार भी काट डाला। बात असल में यह थी कि रेवा की ओर रहने वाले आदमियों ने तरह २ की अफवाहें तुराकी के झगड़े के विषय में सुन रक्खी थीं, और उन्हें इस बात की आशङ्का थी कि कहीं सरकारी फ़ौज उन पर धावा न करे। (अशिक्षित आदमियों ने और इनके अशिक्षित होने की जिम्मेवार ज्यादःतर फिजी सरकार ही है) इस प्रकार की अफवाह का फैल जाना कोई आश्चर्य जनक बात नहीं थी। इसी कारण डर के मारे इन लोगों ने सूवा और रेवा के बीच का पुल तोड़ दिया और तार काट दिया यदि इन लोगों ने बलवा करने का विचार किया होता तो सूवा पर सीधा धावा करते क्योंकि सूवा ही तो राजधानी है, रेवा में क्या रक्खा था जिसके लिए वे तार और पुल

तोडते ? इस घटना का जिक्र करते हुए मि० ऐन०चौ० मित्र अपने पत्र में लिखते हैं ।

"Many Indians were charged for cutting tele phone wires and breaking the bridge. This they did purely for self defence. When there was a rumour at the Rewa side that the military was going there to shoot the people they became terror striken and thought their only safety lay in breaking the bridge connecting suva and Rewa, so that they could not come straight away and also they cut tele phone wires so that they might not communicate. The authorities never inquired this and treated this as a sign of revolt or preparation for fight."

अर्थात् कितने ही हिन्दुस्तानियों पर तार काटने और पुल तोडने का अभियोग लगाया गया । ये काम हिन्दुस्तानियों ने केवल अपनी रक्षा के विचार से किये थे । रेवा में इस बात की अफवाह उड गई थी कि फौज वाले रेवा में आदमियों को मारने के लिये आरहे हैं । इससे ये लोग अत्यन्त भयभीत होगये थे । इस भयके कारण ही इन्होंने रेवा और सूवा के बीच का पुल तोड देना ठीक समझा जिससे ये फौज वाले न आने पावें और इसी उद्देश से उन्होंने तार काट दिये कि जिस से ये फौज वाले बात चीत न कर

सकें। अधिकारियों ने जांच नहीं की, उन्होंने यही समझ लिया कि हिन्दुस्तानियों ने यह ग़दर कर दिया है और ये लडने की तैयारियां कर रहे हैं।"

हम यहां पर यह कह देना उचित समझते हैं कि हम इन लोगों के तार काटने या पुल तोडने के समर्थक नहीं हैं। जिन लोगों ने यह काम किये उन्होंने निस्सन्देह बडी भारी भूल की; क्योंकि उनकी इस कार्रवाई से गवर्मेण्ट को अपने "खुल्लम खुल्ला ग़दर" नामक उपन्यास में एक अध्याय बढ़ाने का अवसर मिल गया।

१२ ता० को जब २०० आदमियों की गिरफ़्तारी का समाचार नारालेवू, वूसी और वाइमवकासी पहुंचा तो वहां के आदमी सूवा की ओर आने लगे और वूनीमानो नामक स्थान में इकट्ठे हो गए। गवर्नर साहब ने अपने खरीते में इन्सपेक्टर ए. पिक्टर. के जिस वर्णन को उद्धृत किया है उसमें लिखा है।

"These people did not know why they had been summoned and a large number dispersed when called upon to do so. I ordered all sticks to be thrown away and this was carried out. अर्थात् "ये आदमी नहीं जानते थे कि इन्हें क्यों बुलाया गया था। जब इनसे वापिस जाने के लिये कहा गया तो बहुत से आदमी वापिस चले गये। मैंने हुक्म दिया कि सब लाठियां फेंक दी जावें। यह हुक्म मान

लिया गया और लकड़ियां फेंक दी गई।" इन्सपैक्टर के कथन से यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि ये लोग कितने शान्ति प्रिय थे? यदि ये लोग सूवा का गढ़ लेकर मणिलाल को गवर्नर बनाना चाहते तो क्या वे इसी तरह शान्ति पूर्वक लौट जाते?

थोड़ी देर बाद दवेई लेवू में कितने ही आदमी सूबाकी ओर आते हुए दीख पड़े। बस फौरनही पुलिस उधर जा धमकी। इन्सपैक्टर साहब लिखते हैं, "मैंने इन लोगों के पास जाकर पूंछा "आप क्या चाहते हैं?" इन्होंने कहा "हम नौसूरी जाना चाहते हैं और किसी के रोके नहीं रुकेंगे। पीपों का पुल नौसूरी की ओरको हटा लिया गया था औरपीछे फिजियन कान्स्टेबल थे इस लिये ये लोग नौसूरी का जा नहीं सके मैंने इन लोगों से कहा कि लाठी तथा दूसरे हथियार फेंकदो। तब इनमें से लगभग आधे आदमियों ने लकड़ी तथा दूसरे हथियार फेंक दिये लेकिन बाकी सूवा की ओर बचकर जाने लगे। इनका पीछा किया गया, और जब ये होटल के सामने पहुंचे तब स्पेशल कान्स्टेबल भी फिजियन लोगों से आमिले। लेकिन हिन्दुस्तानियों की इस भीड़ के पास कहीं से फिर लाठियां और लोहे के डंडे आगये, और इसके सिवाय इनकी संख्या भी बढ़ती जारही थी क्योंकि नाव में बैठ २ कर हिन्दुस्तानी नौसूरी से आरहे थे। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि इस भीड़ का दिमाग़ ठिकाने नहीं है

इस लिये मैंने अपने आदमियों से कहा कि वर्गाकार खड़े होजाओ और फिर नौसूरी को टेलीफून किया कि नौसूरी तथा दावूईलैवू के बीच में आना जाने का मार्ग बन्द करा दो जिससे इन लोगों को कुमुक न मिले। तत्पश्चात् मैंने डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर कप्तान केन को कहला भेजा कि आप चले आइये क्योंकि मुझे इस बात की आशंका है कि Roit Act "बलवे का कानून पढ़ना पड़ेगा।" इस विवरण से पता लग सकता है कि उस समय स्वयं इन्सपेक्टर साहब का दिमाग़ ठिकाने नहीं था। बिचारे हिन्दुस्तानी आदमी अपने २०० भाई बहनों की गिरफ्तारी का हाल सुनकर एक तो पहले ही घबड़ाये हुये थे और फिर जब उनके सामने हथियार बन्द जङ्गली और गोरे दीख पड़े तो वे और भी घबड़ा गए। उनसे कहा गया कि लाठी फेंक दो। इन्सपेक्टर साहब के कथनानुसार आधे आदमियों ने लाठी फेंक दी। "दूसरे हथियार" उन लोगों के पास क्या रक्खे थे? मशीन गन थीं, कि तलवार थीं कि दस्त थे या धनुष बाण थे क्या था? जब उधर गए तो पोपों का पुल बरबाद देखा। इस लिये वे बिचारे और भी घबराये। जब सवा आने लगे तो सामने ही इन्सपेक्टर साहब तोप बन्दूक के साथ "वर्गाकार व्यूह" बनाये खड़े थे और "बलवे का कानून" पढ़कर दनादन दाग देने की तय्यारियां कर रहे थे। इन्सपेक्टर साहब लिखते हैं।

"At the same time I sent for certain Indian leaders I Could more or less trust and try to disperse the crowd by peacable means. This latter move was successful."

अर्थात् "उसी अवसर पर मैंने कुछ हिन्दुस्तानी नेताओंको जिन पर मेरा थोड़ा बहुत विश्वास था बुला भेजा और उन से शांति पूर्वक इस भीड़ को वापिस जाने का उपदेश दिलवाया। यह चाल सफल हुई। इस वाक्य सेदो बातें स्पष्ट हैं एक तो यह कि नेता लोग शांति के पक्षपाती थे और दूसरी यह कि उनका इस भीड़पर प्रभाव था। साथ ही साथ यह स्पष्ट है कि जिन निःशस्त्र आदमियों का मुक़ाबला करने के लिये इन्सपैक्टर साहब ने "वर्गाकार व्यूह" की रचना की थी वे लड़ाई लड़ने के लिये हर्गिज़ नहीं आये थे। अगर हिन्दुस्तानी नेता न आये होते तो इन्सपैक्टर मिस्टर पिक्टर ने तो "बलवे का कानून" पढ़कर सारे निरापराध आदमियों का काम तमाम कर दिया होता! पाठकों को आगे चलकर पता लग जावेगा कि "सामाबूला" में कर्नल गोल्डिङ्ग ने यही किया था। विना सोचे समझे, विना नेताओं को बुलाये विचारे निरापराध आदमियों पर धावा बोलदिया था।

एक बार हिन्दुस्तानियों की भीड़ का मुक़ाबिला फिर पुलिस वालों के साथ होगया। इसका ज़िक्र करते हुए इंसपैक्टर साहब लिखते हैं।

Captain kane now arrived at the bridge, and having spoken to the crowd without effect, read the riot act. The crowd, under the influence of certain of their leaders, who were not inclined to viloence, retired slightly and gradually dispersed without any firing taking place."

अर्थात् "कप्तान केन इस समय पुल पर आपहुंचे। उन्होंने एकत्रित मनुष्यों से बात चीत की लेकिन उसका कुछ असर नहीं हुआ इसलिये उन्होंने "बलवे का कानून" पढ़ा। लेकिन यह भीड़ अपने कुछ नेताओं के प्रभाव से जिनकी प्रवृत्ति मार पीट करने की नहीं थी, धीरे २ पीछे हटी और फिर अलग २ होगई। गोली चलाने की जरूरत नहीं पड़ी।

यह कथन भी नेताओं के शान्ति प्रिय होने तथा जनता पर उनका प्रभाव होने का प्रबल प्रमाण है। इंसपेक्टर साहब स्वयं स्वीकार करते हैं कि इन नेताओं की प्रवृत्ति मार पीट करने की नहीं थी॥

जब पं० भगवती प्रसाद और फज़ल खां ने इंसपेक्टर जनरल गोल्डिङ्ग के पास लाठियों के छीन लिये जाने तथा नौसूरी में सिपाहियों के तैनात किये जाने के विरोध में एक पत्र भेजा था तो उसके उत्तर में ५ फर्वरी को कर्नल गोल्डिङ्ग ने उस पत्रका उत्तर देते हुए लिखा था "The Government fully realise that the leaders of the strike

have advocated to the striker that law and order should prevail." अर्थात् "गवर्मेण्ट इस बात को अच्छी तरह समझती है कि हड़ताल के नेताओं ने हड़तालियों को यही उपदेश दिया है कि वे कानून के भीतर और शान्ति पूर्वक रहें।" गोल्डिङ्ग साहब का कथन इस बात का प्रमाण है कि कम से कम पांच फर्वरी तक तो नेताओं ने यही उपदेश दिया था कि हिन्दुस्तानी लोग कानून के भीतर और शान्ति पूर्वक रहें। इसके वाद ६ ता० से १२ ता० तक जो घटनाएं हुई उनसे भी यही प्रगट होता है कि नेता लोग बरावर शान्ति के पक्ष पाती थे। इंसपेक्टर पिक्टर साहब की रिपोर्ट ही इसका अकाट्य प्रमाण है॥ अब प्रश्न यह होता है कि इस हालत में फिजी सरकार तथा प्लाण्टरों का यह सिद्धान्त कि नेताओं ने इन लोगोंको उत्तेजित करके "खुल्लम खुल्ला ग़दर" करा दिया, कहां तक सत्य अथवा साधार है? इस प्रश्न का उत्तर यही है कि इस ग़दर की उत्पत्ति फिज़ी सरकार के मदोन्मत्त अधिकारियों के दिमाग में हुई थी और कहीं नहीं।

फिजी में अमृतसर।

४

सामाकूला की दुर्घटना।

१२ फर्वरी को सन्ध्या समय दिल्ली में सेक्रेटेरियट में बैठे हुये राइटरेवरेण्ड टरवेल विशप आव पालीनीशिया तथा आनरेबल मिस्टर रैंकिन सी.एम.जी, व्यवस्थापका सभा के कुछ भारतीय मेम्बरों के सामने भारत से फिजी को मज़दूर ले जाने की प्रथा के विषय में बातचीत कर रहे थे। ये दोनों ही महाशय फिजी के डेपूटेशन में आये थे।

जिस समय माननीय श्रीनिवास शास्त्री ने इस डेपूटेशन से कहा।

"If there is perfect political equality, the colony would get more and more into hands of Indians, then don't you think there will be a feeling among the European population to try to get rid of these people."

अर्थात् "अगर फिजी में सब जातियों को समान रूप से राजनैतिक अधिकार प्राप्त हैं तो धीरे २ उपनिवेश का शासन अधिकाधिक हिन्दुस्तानियों के हाथ में आ जावेगा; क्या तब यूरोपियनों के दिल में हिन्दुस्तानियों को निकाल बाहिर करने की इच्छा न होगी?"

फ़िजी के डेपूटेशन ने इस का उत्तर दिया "There is

no racial animosity at present and I see no reason to anticipate it in the future." अर्थात् "फिजी में इस समय जातीय विद्वेष बिल्कुल नहीं है और न हमैं इस बात की आशङ्का है कि भविष्य में वहां जातीय विद्वेष फैलेगा।"

मि० रैनकिन तथा विशप साहब के मुखारविन्द से निकले हुये इस वाक्य को अभी २४ घण्टे भी नहीं हुये थे कि १३ फर्वरी को डायरशाही का द्वितीय संस्करण होरहा था, यूरोपियन और फिजियन कान्स्टेबल हिन्दुस्तानियों पर गोली चला रहे थे! सामाबूला की दुर्घटना के विषय में सब से पहले हम कर्नल गोल्डिङ्गके वृत्तान्तको जिसे फिजी के, गवर्नर ने अपने खरीते में दिया है ज्यों का त्यों उद्धृत करते हैं? गोल्डिङ्ग साहब कहते हैं।

"On Friday the 13th instant at about 3 O'clock I received information that Major knox with some mounted men and his Lewis gun section were holding up at the Samabula Bridge, a crowd of between 200 or 300 Indians who were demanding to be allowed to come into Suva. Permission to do so had been refused and Mr. Pennefather Chief Police magistrate had proceeded to the scene and called upon the Indians to disperse. The Indians refused and remained in the vicinity of the bridge.

I Proceeded to the scene with Inspector Swinbourne, Sub Inspector Lucchinelli and a party of 25 European special constables and Fijian constabulary. I conferred with Mr Pennefather, who told me of the situation, whereupon I told Major knox officer in charge of the Defence Force Party, that I was going to advance on the mob and asked him to follow up my party with his mounted men in case I should require their assistance. I then crossed the bridge with the constabulary and hustled the mob of Indians taking care not to inflict damáge on those who did not resist. The main body of Indians ran up the road a distance about 400 or 500 yards and in the vicinity of an Indian dwelling house a number picked up poles and bludgeons and offered us serious resistance by flinging rocks, stones and sticks at us and striking at us with their weapons. One tall Indian I noticed in particular came for me with a pole, but was prevented reaching me by one of the corporals of Constabulary, who wás himself stunned by a staggering blow. At this moment I heard revolver and pistol shots being fired behind me, but I am unable to say who fired them.

I Saw sub-Inspector Lucchinelli discharge his revolver twice at the Indian who attacked me, but the shots did not take effect, as I saw the Indian *making* off when I had ordered constables to take him in flank. Had not fire been opened on the crowd of Indians, who vastly outnumbered us, I do not hesitate to say that there would have been serious loss of life on our side. I remained on the spot half an hour after the actionand collected the wounded Indians and constables and had them conveyed to suva in the police van for treatment at the hospital. Three Indians were suffering from gunshot wounds (one of whom has since died) and several others from contusions on the head and body."

अर्थात् "शुक्रवार को १२ फर्वरी को ३ बजे के लगभग मुझे सूचना मिली कि मेजर नौक्स कुछ घुड़ सवारों के साथ और तोप बन्दूक विभाग के सङ्ग सामाबूला के पुल पर हिन्दुस्तानियों की एक भीड़ को रोके हुये थे। इन हिन्दुस्तानियों की संख्या २०० या ३०० थी, और ये सूवामें आने की आज्ञा मांग रहे थे। सूवा जाने की आज्ञा इन्हें नहीं दी गई था। चीफ पुलिस मजिस्ट्रेट मि० पैनफादर ने घटना स्थल पर पहुंच कर हिन्दुस्तानियों से कहा था कि आप लोग

यहां से हट जावें लेकिन हिन्दुस्तानियों ने हट जाना अस्वीकार किया और पुल के नज़दीक ही खड़े रहे। इन्सपेक्टर स्विनबोर्न, सब इन्सपैक्टर लूकचीनेली, २५ यूरोपियन कान्स्टेवल तथा फिजियन कान्स्टेवलों को लेकर घटना-स्थल पर पहुंच गये। मि० पेनफादर के साथ मैंने बातचीत की। उन्होंने मुझे सारी स्थिति समझाई। इसके बाद मैंने मेजर नाक्स से, जो डिफेन्स फोर्स के अफसर थे, कहा कि मैं भीड़ पर आक्रमण करता हूं और यदि मुझे आप की सहायता की आवश्यकता हो तो अपने घुड़ सवारों के साथ मेरी मदद के लिये आ जाना। इसके बाद मैंने कान्स्टेबलों के साथ पुल पार किया और भीड़ को तितर वितर करना शुरू किया। साथ ही साथ मैंने इस बात पर भी ध्यान रक्खा कि जो आदमी विरोध नहीं करते थे उनके चोट न पहुंचाई जावे हिन्दुस्तानियों की भीड़ का मुख्य भाग ४०० या ५०० गज दूर पीछे और सड़क की तरफ दौड़ा, और एक हिन्दुस्तानी घरके नज़दीक कुछ आदमियों ने बांस और लाठियां ले लीं और हमारे ऊपर पत्थर कङ्कड़ और लकड़ियां फेंकने लगे तथा अपने हथियारों से हमारे ऊपर चोट करने लगे। मैंने ध्यान पूर्वक देखा तो एक लम्बा ऊँचा हिन्दुस्तानी बांस लेकर मेरे ऊपर झपटा लेकिन एक कान्स्टेबल ने उसे रोक दिया लेकिन वह कान्स्टेबल लकड़ी की चोट से सुन्न हो गया। इसी अवसर पर पीछे से चलने वाले रिवाल्वर और

पिस्तोल की आवाज़ मुझे सुनाई पड़ी लेकिन मैं यह कहने में असमर्थ हूं कि ये रिवाल्वर और पिस्तौल किसने चलाई थी। मैंने सब इन्सपेक्टर कुकोनैली को उस हिन्दुस्तानी पर, जिसने मेरे ऊपर आक्रमण किया था, दो बार अपना रिवालबर चलाते हुये देखा लेकिन ये निशाने ठीक नहीं बैठे जब मैंने उस हिन्दुस्तानी को घेर लेनेके लिए अपने कान्स्टेबलोंको हुक्म दिया तो वह हिन्दुस्तानी दूर भागता हुआ दीख पड़ा। अगर हिन्दुस्तानियों की उस भीड़ पर उस वक्त गोली न चलाई जाती तो निस्संदेह हमारी ओर के कितने ही आदमियों की जानें जातीं क्योंकि हिन्दुस्तानी लोग संख्या में हमसे कहीं ज्यादः थे। इस घटना के बाद आध घण्टे तक मैं घटना-स्थल पर रहा, और घायल हिन्दुस्तानियों और कान्स्टेबलों को पुलिस की गाड़ी में बिठला कर अस्पताल में इलाज करने के लिये उठवा लाया। तीन हिन्दुस्तानियों के बंदूक की गोली के घाव थे (इनमें से एक अब मर गया) और दूसरे कितनों ही के सिर और शरीर पर चोट थी।"

इस पर अपनी टिप्पणी करते हुये गवर्नर साहब लिखते हैं "मरे हुये हिन्दुस्तानी के विषय में मजिस्ट्रेट ने जांच की और यह फैसला किया कि यह नर हत्या न्याययुक्त थी, लेकिन जो गोलियां चलाई गईं और जो इस एक आदमी की मौत हुई इसकी वजह से बहुत से आदमियों की जानें बच गईं। इस बात में कोई शक नहीं है कि आन्दोलनकारियों

ने इन लोगों को विश्वास दिला दिया था कि सरकारी फौज बन्दूक वगैरः का प्रयोग कभी नहीं करेगी। हिन्दुस्तानियों के इस विश्वास की वजह से पुलिस वालों को शांति पूर्वक भीड़ के तितर बितर करने में बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ा। तुराक, तीसरी ओर सामावूला के पुल पर यूरोपियन लोगों ने तथा फिजियन कान्स्टेबलों ने जो आत्म-संयम तथा धैर्य दिखलाया उसकी मैं जितनी प्रशंसा करूँ थोड़ी होगी।"

इस घटना के वर्णन की भूमिका में गवर्नर साहब ने यह बात और लिखी है कि "ये ही आदमी सूवा और रेवा के बीच में पुलों को तोड़ रहे थे और टेलीफोन के तार काट रहे थे"

बस सामावूला की इस डायरशाही का कुल इतना ही वर्णन फिजी के गवर्नर के खरीते में है। गवर्नर साहब के खरीते पर ध्यान देते समय निम्नलिखित बातें हमारे ध्यान में आती हैं।

(१) हिन्दुस्तानी पुल की दूसरी ओर नज़दीक खड़े हुये थे और उनकी संख्या २०० या ३०० थी। इनके पास कोई तोप बन्दूक नहीं थी। इन लोगों के पास शायद दो चार लाठियां थीं, लेकिन ये लाठियां अधिक नहीं होंगी क्योंकि खुद गवर्मेण्ट के खरीते के अनुसार कितने ही आदमियों ने, जब उन पर आक्रमण किया गया था तब, ४००—५००

गज दूर जाकर एक हिन्दुस्तानी घर से बांस तथा लकड़ियां ली थीं।

(२) इन लोगों को पुल पर रोकने के लिये इतनी सेना थी।

(क) मेजर नौक्स।

(ख) कुछ घुड़ सवार।

(ग) लूइस गन सेक्शन (लूइस तोप विभाग)

(घ) मि० पैन फादर चीफ पुलिस मजिस्ट्रेट इन्सपैक्टर स्विनवोर्न सब इंसपैक्टर लुकनैली।

(च) २५ यूरोपियन स्पैशल कान्स्टेबल।

(छ) फिजियन कान्स्टेबल विभाग।

(ज) कर्नल गोल्डिङ्ग।

अब सब से पहला सवाल तो यह होता है कि क्या कर्नल गोल्डिङ्ग इस सेनाके साथ उन निःशस्त्र दो सौ तीन सौ हिन्दुस्तानियों को, यदि वे पुल पार करने के लिये आगे बढ़ते रोक नहीं सकते थे? कर्नल गोल्डिङ्ग की सहायता के लिये जब मेजर नौक्स, स्विनवर्न, लुकीनैली, २५ यूरोपियन स्पैशल कान्स्टेबल, फिजियन कान्स्टेबल विभाग, कुछ घुड़ सवार तथा तोप विभाग था, और ये सब सिपाही लोग हथियार बन्द थे तो क्या दोसौ तीन सौ हिन्दुस्तानियों को पुल पर बढ़ते समय रोकना क्या कठिन था? यह बात ध्यान देने योग्य है कि हिन्दुस्तानी पुल के उस पार बैठे

अथवा खड़े हुये थे उन्होंने पुल पार करने के लिये आक्रमण नहीं किया था और न वे कुछ पत्थर वगैरः ही फेंक रहे थे। ऐसी दशा में सब से प्रथम अन्याय और अत्याचार कर्नल गोल्डिङ्ग ने यह किया कि निःशस्त्र हिन्दुस्तानियों पर "तितर वितर करने" के बहाने धावा बोल दिया! कर्नल साहब लिखते हैं "साथ ही साथ मैंने इस बात पर ध्यान रक्खा कि जो लोग विरोध नहीं करते थे उनके चोट न पहुंचाई जावे" अब एक साथ अपने ऊपर आक्रमण होने देख हिन्दुस्तानी घबड़ाकर इधर उधर भाग रहे होंगे तब कर्नल गोल्डिङ्ग तथा उनकी सेना ने इस बात का ध्यान कि जो विरोध करता है उसी के चोट पहुंचाई जावे, किस तरह रक्खा होगा! उस समय कितने ही ऐसे आदमियों के भी जो विरोध न भी करते होंगे अवश्य चोट लगी होगी।

(३) कर्नल गोल्डिङ्ग के कथन से स्पष्ट है कि उन्होंने मि० पैम फादर और मेजर नाक्स से बातचीत करने के बाद एक साथ ही हिन्दुस्तानियों पर धावा बोल दिया। उस समय उन्होंने किसी हिन्दुस्तानी नेता को बुलाकर इन २०० ३०० आदमियों को समझा बुझाकर लौट जाने की सलाह क्यों नहीं दिलवाई? एक दिन पहिले यानी १२ फर्वरी को इन्सपैक्टर ए. पिक्टर ने ऐसा ही किया था। और हिन्दुस्तानी नेताओं के कहने से लोग शांतिपूर्वक घर लौट गये थे। इसी लिए उन्होंने अपनी रिपोर्ट में लिखा था।

" At the same time I sent for certain Indian leaders I could more or less trust and try to disperse the crowd by peaceful means. This later move was successful."

अर्थात् उसी अवसर पर मैने कुछ हिन्दुस्तानी नेताओं को, जिन पर मेरा थोड़ा बहुत विश्वास था बुला भेजा और उनसे शांति पूर्वक इस भीड़ को वापिस जाने का उपदेश दिलवाया। यह चाल सफल हुई। अब हम पूछते हैं कि कर्नल गोल्डिङ्ग ने भी ऐसा क्यों नहीं किया! यदि वे किसी हिन्दुस्तानी नेता को बुलवाकर इन लोगों को समझवाते तो इतना खून खच्चर क्यों होता? १५ मार्च सन् १९२० को फिजी प्रवासी भारतीयों ने लार्ड मिलनर के पास जो प्रार्थना-पत्र भेजा था उसमें उन्होंने लिखा था।

"In samabula it was quite possible to have the people dispersed by calling upon some popular Indians to give the crowd a piece of wholesome advice and therefore the shooting by the police and military was absolutely unnecessary."

अर्थात् "सामाबूला में यह बात बिल्कुल सम्भव थी कि यदि कुछ हिन्दुस्तानी, जिनको जनता आदर की दृष्टि से देखती थी, बुला लिये जाते, और इन हिन्दुस्तानियों के द्वारा भीड़ को उचित सलाह दिलवाई जाती, तो भीड़

अपने आप वापिस चली जाती। इस बात पर ध्यान देते हुये यही कहना पड़ता है कि पुलिस तथा फौज द्वारा हिन्दुस्तानियों पर गोली चलवाना अत्यन्त अनावश्यक था।" इससे स्पष्ट है कि हिन्दुस्तानियों पर एक साथ धावा बोलने की, जब कि वे कोई उपद्रव नहीं कर रहे थे, कोई आवश्यकता नहीं थी। तो फिर कर्नल गोल्डिङ्ग ने एक साथ आक्रमण कैसे कर दिया? इसका उत्तर यही है कि जैसे डायर ने अमृतसर के जलियान वाला बाग में पहुंचते ही एक साथ गोली छोड़ दी उसी तरह कर्नल गोल्डिङ्ग ने भी एक साथ ही आक्रमण कर दिया! जनरल डायर और कर्नल गोल्डिङ्ग दोनों ने ही एक ही मार्ग का अनुसरण किया, इस लिये "चोर चोर मौसेरे भाई" की कहावत के अनुसार यदि हम कर्नल गोल्डिङ्ग को जनरल डायर का छोटा भाई कहें तो इसमें कोई अत्युक्ति नहीं होगी जलयानवाला और सामागूला दोनों स्थान ही हमारे और हमारे प्रवासी भारतीयों के लिए पवित्र हैं। जब तक ब्रिटिश-साम्राज्य इस संसार में है तब तक ये दोनों स्थान ही उसके ऊपर अमिट कलंक की तरह बने रहेंगे, और इसके बाद जब कभी ब्रिटिश-साम्राज्य के पतन का इतिहास लिखा जावेगा इतिहास लेखक यही लिखेंगे कि इसी प्रकार की दुर्घटनाओं ने ब्रिटिश-साम्राज्य के पतन में सहायता दी।

(कर्नल गोल्डिङ्ग साहबने लिखा है कि "The mainbody

of Indians ran up the road a distance about 400 or 500 yards." अर्थात् "हिन्दुस्तानियों की भीड़ का मुख्य भाग सड़क की ओर ४००-५०० गज भाग गया।" जब ये लोग ४००-५०० गज पीछे भाग गये थे तो फिर कर्नल गोल्डिङ्ग को इन का अधिक दूर तक पीछा करनेकी क्या आवश्यकता थी ? यदि इस तरह लोगोंको मार पीट कर ४००—५०० गज पीछे हटाकर भी कर्नल गोल्डिङ्ग सन्तुष्ट हो जाते और सामाबूला पुल की ओर वापिस चले आते तो भी खून खराबी रुक सकती थी, लेकिन कर्नल साहब तो हिन्दुस्तानियों के खून के प्यासे थे, वे भला क्यों रुकने लगे ? इसी घटना का वर्णन करते हुये मिस्टर ऐन. घी. मित्र ने अपने पत्र में लिखा था।

"When things were developing as above, one day, about 200 Indians from Samabula were coming to suva to see their relatives and others who were arrested and placed in Police custody. They further heard a rumour that Mrs. or Mr Mánilal was arrested. So this made them determined to come to Suva and see them. They were all unarmed and they had no intention to fight with any body. When they came to the Bridge, the Small military guard stationed there, ordered them to return. But they insisted on going to suva. The

magistrate being informed by military guards appeared on the spot and he tried to induce the people to disperse, but they would not go. So the Inspector General of Police was sent for, who came with troops. The order was given to disperse the crowd. The military there upon chased the crowd which fell back and was running away. The militay still continued the chase for a long distance until they came over a hill where there was a small stone. The crowd being thus chased stopped at this place and got hold of a few sticks and started a fight but they were soon overpowered. I understand half a dozen or more were sent to the hospital being severely wounded I am of opinion that the military should not have chased them such a long distance when they were dispersed. If they had not chased them there would have been no fight of any kind. The people turned back and fought when they found that they could not go any where to get rid of them."

अर्थात् "जब ये झगड़े इस प्रकार चल रहे थे उन्हीं दिनों एक बड़ी दुर्घटना हो गई। एक दिन लगभग दो सौ हिन्दुस्तानी सामाबूला से सूवा को आरहे थे। इन लोगों के [illegible]

का उद्देश्य यही था कि अपने रिश्तेदारों को तथा जिन आदमियों को पुलिस ने पकड़ कर हिरासत में बन्द कर रक्खा था उनको जाकर देखें। इन्होंने यह अफवाह सुन रक्खी थी कि डाक्टर मणिलाल तथा उनकी स्त्री पकड़ी गई हैं, इस कारण इनका सूवा आने का विचार और भी दृढ़ होगया था। इनके पास कोई हथियार नहीं था और न ये किसी से लड़ने आये थे। जब ये पुल के निकट पहुंचे तो फौज के आदमियों ने इन्हें लौट जाने का हुक्म दिया, लेकिन ये सूवा जाने के लिये हठ करने लगे। फौज वालों ने इस बातकी सूचना मजिस्ट्रेट साहब को दे दी। मजिस्ट्रेट साहब ने आकर इन आदमियों को वापिस जाने की सलाह दी, लेकिन ये अपनी बात पर डटे रहे, बस फिर क्या था, पुलिस के इन्सपेक्टर जनरल बुलाये गए जो फौज लेकर फौरन ही आ पहुंचे। हुक्म दिया गया कि भीड़ तितर बितर करदी जाय। फौजने आदमियों को दबाना शुरू किया। भीड़ हटी और आदमी तितर बितर होकर पीछे भागने लगे फौज वाले बराबर पीछा करते गये। भीड़ एक टीले के नजदीक पहुंची, जहां पर पत्थर के टुकड़े पड़े हुये थे। यहां आकर ये आदमी ठहर गये और कुछ लाठी लेकर इन्होंने फौज के आदमियों का मुकाबला करना चाहा, लेकिन फौज ने इन्हें फौरन ही दबा दिया। मेरा ख्याल है कि लगभग ६ आदमी या इससे कुछ अधिक सख्त घायल

हुये और वे अस्पताल भेज दिये गए। मेरी समझ में फौज वालों ने यह अनुचित कार्य्य किया। जब आदमी पीछे हट कर भाग रहे थे तो बहुत दूर तक उनका पीछा करने की क्या जरूरत थी ? यदि फौज वाले इतनी दूर तक पीछा न करते तो यह उपद्रव न होता। आदमियों ने भागते २ जब देखा कि अब बचने का कोई उपाय है ही नहीं तब उन्होंने आखिरकार लड़ना ही ठीक समझा।"

मि० ऐन. बी. मित्र के उपर्युक्त कथन से यह बिल्कुल स्पष्ट है कि कर्नल गोलिङ्ग ने व्यर्थ ही यह खून खच्चर किया।

कितने मरे और कितने घायल हुये !

यह दुर्घटना १३ फर्वरी सन् १९२० को हुई थी और गवर्नर साहब ने अपना खरीता इसके महीने भर बाद १२ मार्च को लिखा था, लेकिन गवर्नर साहब ने घायलों की संख्या ठीक २ नहीं लिखी! गवर्नर साहब लिखते हैं "तीन हिन्दुस्तानियों के बन्दूक की गोली के घाव थे (इन में से एक अब मर गया) और दूसरे कितनों ही के सिर और शरीर पर चोट थी।' महीने भर में भी गवर्नर साहब इस बात का पता नहीं लगा सके कि कितने आदमियों के सिर पर और शरीर पर चोट थी! "कितनों ही" के क्या मानी ? दस, बीस, तीस, चालीस, पचास, साठ, सत्तर, कितने ? गवर्नर साहब ने घायलों में कान्स्टेबल भी लिख दिये हैं

और उनकी संख्या भी नहीं लिखी ! बात असल में यह होगी कि दो एक कान्स्टेबल के चोट आई होंगी लेकिन उधर कम से कम ५०-६० हिन्दुस्तानियों के सिर तथा शरीर पर चोट होगी। इसलिए गवर्नर साहब ने सोचा कि अगर ठीक २ संख्या दे देंगे तो पोल खुल जावेगी। इसी कारण सारा मामला गोलमाल करने के लिये आपने संख्या दोनों की ही नहीं बतलाई !

मिस्टर ऐन. बी. मित्र ने अपने लेख में लिखा है।

The military fired killing one on the spot and many more were wounded. One died in the hospital. This is Government report. But people believe that many were killed and the military concealed the fact."

अर्थात् "फौजवालों ने गोली चलाई जिससे एक तो जहां का तहां मर गया और बहुत से घायल हुए। एक अस्पताल में मर गया। यह तो हुई सरकारी रिपोर्ट लेकिन आदमियों का विश्वास है कि कितने ही आदमी मारे गये थे परन्तु फौजवाले इस बात को छिपाते हैं"

जो आदमी जाकर अस्पताल में मर गया उसका नाम था मोदीगिरम (नं० ५४६८५)। सितम्बर सन् १९२० की राउंड टेबिल नामक पत्रिका में लिखा था "There was shooting and an Indian woman was killed".

अर्थात् "गोली चली और एक हिन्दुस्तानी औरत मारी गई"

गज्जू नामक एक दर्ज़ी ने, जो फिजी से लौटकर आया था, मुझसे कहा था कि कारोबाऊ जेल की खन्दक में एक मरी हुई औरत मिली थी। इसके सिवाय एक अन्य विश्वसनीय आदमी ने जिसने यह मरी हुई औरत देखी थी, मिस्टर ऐण्ड्रूज से यही बात कही थी। इससे प्रगट होता है कि गवर्नर का यह कथन कि केवल एक आदमी ही मारा गया सत्य नहीं है।

जहाँगीराबाद जिला इलाहाबाद के अशगर नामक एक मज़दूर ने जो फिजी से लौटकर आया था, और जो सामाबूला की दुर्घटना में घायल हुआ था, श्रीमान् पं० मोतीलाल जी नेहरू के सामने अपना बयान देते हुये कहा था।

"फौज ने गोली चलाई कितने ही आदमी मारे गये। लोग जङ्गल की ओर भागने लगे लेकिन हथियारबन्द फौज ने उनका पीछा किया। मैं भी जङ्गल की ओर भाग रहा था कि इतने में मेरे बांयें पैर के घुटने के ऊपर गोली लगी। उससे मैं गिर पड़ा और बेहोश हो गया। जब मुझे होश आया तो मैंने देखा कि क़रीब १२ मरे हुये आदमी मेरे आस पास पड़े हैं। एक मोटरकार आई और मैं अस्पताल पहुंचाया गया। अस्पताल में मुझे दो महीने रहना पड़ा। जब

अस्पताल से मुझे छुट्टी मिली तब मुझे पता लगा कि बहुत से हिन्दुस्तानी स्त्री पुरुष जेल को भेज दिये गये थे। एक साधू भी, जिसका नाम गोपाल था और जो घायल हुआ था, जेलको भेजा गया। न्याय नहीं किया गया।"

इन बातों से प्रगट होता है कि गवर्नर साहब का खरीता कितना विश्वसनीय है। जब कहीं रेलें लड़ जाती हैं तो रेलवे विभागके अधिकारी मरे हुये और घायलों की संख्या को कम से कम बतलाने की चेष्टा करते हैं। जिस समय फीरोजाबाद में रेलें लड़ीं थीं कई सौ आदमी मारे गए थे लेकिन पहले पहल रेल विभाग वालों ने तार दिया कि कुल १३ या १४ आदमी मरे! पीछे जब जांच हुई तो बढ़ते २ यह संख्या १०० तक पहुंची! लेकिन जो लोग घटना-स्थल पर मौजूद थे उनका अब तक यही विश्वास है कि कम से कम ४००-५०० आदमी मरे। जलयान वाला बाग की दुर्घटना में जो संख्या पहले मरे हुये और घायलों की दी गई थी वह बहुत कम थी। लेकिन फीरोजाबाद की रेल की दुर्घटना तथा जलयान वाला बाग के हत्याकाण्ड के पीछे कोई जांच तो हुई जिससे सिद्ध हो गया कि पहले की संख्या बहुत कम थी, लेकिन फिजी में तो फिजी सरकार ने ही यह अत्याचार और अन्याय किया और फिर खुद ही काजी बनकर इस दुर्घटना के विषय में खरीता लिखा। जिन इन्सपेक्टर जनरल कार्नल गोल्डिङ्गके सेनापतित्व में हिन्दुस्तानियों

पर गोलियां चलाई गई उन्हींके हाथका लिखा हुआ स्मि-रण गवर्नर साहबने अपने खरीतेमें दे दिया है! खुद जांच करने की भी आवश्यकता नहीं समझी! जनरल डायर यदि जलियान वाला बाग़ की दुर्घटना के घायलों और मरे हुओं का वृत्तान्त लिखता तो उसके वृत्तान्त का जो रूप होता वही कर्नल गोल्डिङ्ग के वृत्तान्त का है। भारत सरकार इस खरीते और वृत्तान्त को भले ही बाइबिल समझ ले, लेकिन जनता तो उसे वेद वाक्य नहीं मान सकती।

गोली किस के हुक्म से चली—कर्नल गोल्डिङ्ग ने अपने ख़रीते में लिखा "At this moment I heard revolver and pistol shots being fired behind me but I am unable to say who fired them."

अर्थात् "इसी क्षण पीछे से चलने वाले रिवाल्वर और पिस्तौल की आवाज़ मुझे सुनाई पड़ी लेकिन मैं यह कहने में असमर्थ हूं कि ये रिवाल्वर और पिस्तौल किसने चलाई थीं" तो फिर यह गोली किसके हुक्म से चली! न तो फिजी के गवर्नर साहब ने ही और न कर्नल गोल्डिङ्ग ने ही यह लिखा कि गोली चलाने की आज्ञा किसने दी! कर्नल गोल्डिङ्ग ही इस सेना के अध्यक्ष थे इसलिये उनके हुक्म से ही गोली चल सकती थी, लेकिन वे अपने आपको इस ज़िम्मेदारी से बरी करते हैं किन्तु यह भी नहीं बतलाते कि यह गोली किसने और किस के हुक्म से चलाई! कर्नल

गोल्डिङ्ग की आज्ञा के विना गोली चलाना न्याय-युक्त नहीं था । क्या फिज़ी सरकार ने इस बात का पता लगाया कि गोली चलाने का यह "पुण्य-कार्य्य" किसने किया ? नहीं, फिजी सरकार इस विषय में भी मौन धारण किये हुये है ? कहां तक गिनावें, गवर्नर साहब के खरीते में दो चार स्न न्दक खाई हों तो उनकी गणना भी की जाय, जहां देखो वहीं उसमें पोल दीख पड़ती है । इस पर भी सर जार्ज बार्न्स साहब ने भारत सरकार की ओर से फर्माया था "फिजी के गवर्नर का ख़रीता बहुत विस्तृत है, इस लिये स्वतन्त्र जांच की कोई ज़रूरत नहीं" क्या खूब !

कर्नल गोल्डिंग ने लिखा है "अगर हिन्दुस्तानियों की उस भीड़ पर उस वक्त गोली न चलाई गई होती तो नि· स्सन्देह हमारी ओरके कितने ही आदमियों की जानें जातीं क्योंकि हिन्दुस्तानी लोग संख्या में हमसे कहीं ज्यादः थे" फिजी के गवर्नर साहब इसका समर्थन करते हुए लिखते हैं "लेकिन जो गोलियां चलाई गईं और जो इस एक आदमी की मौत हुई इसकी वजह से बहुत से आदमियों की जानें बच गईं"........तुराक, नौसूरी तथा सामाबूला के पुल पर यूरोपियन लोगों तथा फिजियन कान्स्टेबलों ने जो आत्म संयम तथा धैर्य्य दिखलाया उसकी मैं जितनी प्रशंसा करूं थोड़ी होगी"

श्रीमान् सम्राट् की सरकार ने फिजी सरकार को उप·

द्रय शांत करने के लिये बधाई भी दी? इस प्रकार कर्नल गोल्डिंग ने सामाबूला में डायरशाही का अभिनय किया, फिजी सरकार ने उनकी खूब पीठ ठोंकी, और उनके धैर्य तथा आत्मसंयम की अत्यन्त प्रशंसा की; तत्पश्चात् श्रीमान् सम्राट की सरकार की बारी आई, उसने फिजी सरकार को धन्यवाद दे दिये। बस मामला खतम! भारत सरकार के एक उच्च-पदाधिकारी से मैंने पूछा "क्या फिजी की दुर्घटना की जांच कमीशन कर सकेगा?" उन्होंने बड़ी गम्भीरता पूर्वक उत्तर दिया "इस दुर्घटना की विधिवत् जांच हमारा कमीशन कैसे कर सकता है? श्रीमान् सम्राट् की सरकार फिजी गवर्मेण्ट को उस उपद्रव की शांति करने पर धन्यवाद दे चुकी है"

इस प्रकार फिजी के सामाबूला की रङ्गभूमि में अमृतसर के नाटक का द्वितीय संस्करण हुआ? हम जानते हैं कि हमारे प्रवासी भाइयों को उपदेश दिया जावेगा "Forget and forgive" भाई भूल जाओ और क्षमा करो" लेकिन इस तरह क्या हमारे फिजी प्रवासी भाई इन अत्याचारों की कथा को भूल सकते हैं? यह अपमान फिजी के भाई बहनों का व्यक्तिगत अपमान नहीं है, बल्कि यह हमारी मातृभूमि भारत माता का अपमान है। जिन्होंने हमारी मातृभूमि का इस तरह अपमान किया है उन्हें जब तक उचित दण्ड नहीं मिलेगा, तब तक हमारे

हृदय में भी सामावूला की दुर्घटना कांटे की तरह खटकती रहेगी। अधिक क्या कहें "लीडर" पत्र के साथ हम भी यही कहते हैं।

"Causes must produce their inevitable effects. The disease which manifested itself in Fiji will only be transplanted to India by the return of the despairing and helpless emigrants. Awakened India will draw its own lessons from the Higrat. The British flag will be regarded more and more a symbol of slavery and tyranny by them. One more chapter will be added to the history of the passing of the greatest Empire the world has seen."

"कारण स्वरूप कर्मों का परिणाम अवश्यम् भावी है। जिस रोग के चिन्ह फिजी में प्रगट हुये उसके बीज निराशा और निस्सहाय फिजी प्रवासी लौटे हुये भाइयों द्वारा भारत भूमि में बो दिये जावेंगे। जागृत भारत अपने प्रवासी संतानों की इस हिजरत से शिक्षा ग्रहण करेगा। ब्रिटिश राज्य का झण्डा अधिकाधिक दासत्व व अत्याचार का चिन्ह समझा जावेगा और इस प्रकार संसार के सब से बड़े साम्राज्य के नाश के इतिहास में एक अध्याय और जुड़ जावेगा।"

फिजी में अमृतसर ।

अन्याय अत्याचर और आतङ्क ।

फिजी से लौटे हुये सैकड़ों आदमियों से बातचीत करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हो चुका है । प्रायः मैंने उनसे निवेदन किया है कि फिजी की मार्शल्ला के दिनों का कुछ वृत्तान्त कहो, तब उन्होंने उन दिनों के जो हालात सुनाये हैं उन्हें सुनकर पञ्जाब के मार्शल्ला के दिन याद आ जाते हैं । चारों ओर अन्याय अत्याचार और आतङ्क का साम्राज्य था लोगों का घर से निकलना कठिन था । गोरे, हाफकास्ट, और फिजियन जङ्गली इधर उधर पहरा दे रहे थे ।

डाक्टर मणिलाल जी ने उन दिनों की स्थिति का वर्णन करते हुये लिखा था "Speciäl legislation has been passed which puts in shade all Rowlatt acts and other repressive legislation in India put together. You cannot leave your locality without a permit to move about, not more than six persons can meet at your residence, not more than four can go with you & you can take no sticks with you. The Returned soldiers and sailors with rifles and bayonets and machine guns, and any white man, Fijian or half

caste, can do you anything. Moghul rule in India could not have been worse. Women are beaten and tortured to confess and testify against my wife and me and men and women are exposed to season and mellow their confessions under the scorching rays of the sun, and refused water to drink and kept on little or no food. This German rule of the whites masquerading under the British flag cannot last much longer. Our cup is now full and we earnestly believe that the Gods confound the intelligence of those whom they destroy. A reign of terror exists in Fiji and the free Indian is taught a lesson which he can never forget. Every one is frightened I myself was assaulted at the police Head quarter in Suva Some prominent Indians have remained in doors for fear of being assaulted by white man. When will this end ? Oh God help us."

अर्थात् "ऐसा विशेष क़ानून पास कर दिया गया है जो हिन्दुस्तान के रौलट बिल तथा अन्य सब दमनकारी क़ानूनों के कान काटता है। उस कानून के अनुसार आप अपने मुहल्ले से बाहिर नहीं जा सकते हैं, बिना सरकारी आज्ञा पत्र लिये इधर उधर घूम नहीं सकते, आप के घर पर एक साथ ६ से अधिक आदमी मिलने को नहीं आ सके और

आपके साथ चार से अधिक आदमी बाहिर नहीं आ सकते समर से लौटे हुए सैनिक और नाविक बन्दूक बर्छी और तोप के द्वारा अथवा कोई गोरा, फिजियन या हाफकास्ट आप के साथ चाहे जैसा बर्ताव कर सकते हैं। मुकाबला करने पर यही कहना पड़ेगा कि मुगलों द्वारा शासित भारत इसकी अपेक्षा बुरी अवस्था में नहीं था। मेरी स्त्री तथा मेरे विरुद्ध गवाही देने के लिये स्त्रियां पीटी जाती हैं और उन पर जुल्म किये जाते हैं। स्त्री और पुरुष कड़ी धूप में खड़े किये जाते हैं और इस प्रकार उनके मुख से बात स्वीकार कराई जाती हैं। उन्हें पानी पीने को नहीं दिया जाता और खाने के लिये भी बहुत कम (या कुछ भी नहीं) दिया जाता है। ब्रिटिश छत्र-छाया में गोरे लोगों के ये अत्याचार जो जर्मन अत्याचारों के समान हैं बहुत दिनों तक कायम नहीं रह सकते। हमारे दुखों का प्याला अब लबालब भर गया है और हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि "विनाश काले विपरीत बुद्धि" यह कथन बिलकुल सत्य है। फिजी में भय और आतङ्क का साम्राज्य है और गुलामी से छूटे स्वतंत्र हिन्दुस्तानियों को ऐसा पाठ पढ़ाया जा रहा है जिसे वे कभी नहीं भूलेंगे। प्रत्येक आदमी के दिल में डर समा गया है। सूवा के पुलिस के थाने पर स्वयं मुझ पर चोट की गई। गोरों द्वारा पीटे जाने के डर के कारण कितने ही खास खास हिन्दुस्तानियों को घर के भीतर रहना पड़ता है।

न जाने इस अन्याय और अत्याचारका अन्त कब होगा। ओह परमात्मा हमारी सहायता कर।"

डाक्टर मणिलाल के लेख की आलोचना करते हुए महात्मा गान्धी जी ने ३ जून सन् १९२० के "यंग इंडिया" में लिखा था "The narrative bears on the face of it the stamp of truth. It is not contrary to the experiences of others in other parts of the world."

अर्थात् "वर्णन के मुख पर ही सत्य की छाप प्रतीत होती है। संसार के अन्य भागों में ऐसी परिस्थिति में लोगों को जैसे अनुभव होते हैं डाक्टर मणिलाल के अनुभव भी वैसे ही हैं" बात असल में यह है कि श्रीयुत मणिलाल जी ने जो कुछ लिखा है दुख से भरे हुये हृदय से लिखा है। इसलिये यह संभव है कि उनका वर्णन कुछ अतिरंजित हो लेकिन वह सत्य के आधार पर स्थित है इसमें कोई सन्देह नहीं उनके साथ फिजी के गोरों ने जो नीचता का वर्ताव किया उसका वर्णन तो हम आगे चल कर करेंगे, इस अवसर पर हम केवल इतना ही कहना चाहते है कि जिस उपनिवेश में हमारे प्रवासी भाई बहनों के साथ ऐसा अत्याचार पूर्ण व्यवहार किया गया, क्या उसी उपनिवेश को बसाने के लिये हम यहां से सस्ते भारतीय मजदूर भेजेंगे? नहीं, हर्गिज नहीं। ऐसा करना फिजी प्रवासी भारतीयों के घावों पर नमक छिड़कना होगा।

फिजी का भयंकर कानून—डाक्टर मणिलाल जी ने अपने लेख में जिस कानून का जिक्र किया है उसकी ज्यों की त्यों प्रति यहां दी जाती है और जो आज्ञापत्र वरसे बाहिर निकलने वाले हिन्दुस्तानियों को लेना पड़ता था उसकी प्रति हमने परिशिष्ट में दे दी है।

कौंसिल में आज्ञा।

१२ फर्वरी १९२०

सी. एच. रोडवेल श्रीमान् गवर्नर महोदय।

उपस्थित किया—

कौन्सिल में—

स्थानिक उपद्रव के समय पर सब लोगों के बचाव के लिये कानून १९२० के सेक्शन् २ के द्वारा सब के बचाव के लिये श्रीमान् गवर्नर को अधिकार दिया गया है नियमें बनाने के लिये तदनुसार मैं और मेरा एक्सेक्यूटिव कौंसिल निम्न लिखित नियमें बनाता हूं क्योंकि हमें निश्चय होगया है कि स्थानिक उपद्रव हो रहा है जिससे प्रजा के सलामती (बचाव) के लिये भय होता है।

गलियों में इकट्ठा होना आदि—

(१) पांच मनुष्यों से ज्यादा सुवा शहर के भीतर या बाहिर या दूसरी जगह पर किसी समय दिन हो या रात

हो किसी काम के लिये वगैर इन्सपैक्टर जनरल के लिखा हुआ आज्ञा के वगैर एकत्र नहीं हो सकते यदि इस तरह के पांच मनुष्यों से जादे एकत्र होंगे तो वे कानून के विरोधी समझे जावेंगे और उनको सजा होगी हर एक फिजी पुलिस मान् और हर एक फिजी डिफेन्स फोर्स के मेम्बर को अधिकार दिया जाता है कि ऐसी भीड़ को तितर वितर करें जवरदस्ती के साथ यदि आवश्यकता हो तो ।

रहने वाले घरों में एकत्र होना ।

(२) सात मनुष्यों से जादे कोई रहने वाले घर में दिन या रात में किसी समय किसी काम के लिये शहर के भीतर या वाहर वगैर इन्सपैक्टर जनरल के लिखी हुई आज्ञा के पाये वगैर एकत्र नहीं होवें यदि ऐसे सात मनुष्य से जादे एकत्र होंगे तो वे कानून के विरोधी समझे जावेंगे और उनको सजा होगी हर एक फिजी के पुलिस मान को अधिकार दिया जाता है कि हर एक रहने वाले घर के अन्दर जावें और ऐसी भीड़ को हटावें जवरदस्ती के साथ यदि आवश्यकता हो तो ।

छुटकारा—

उपरोक्त कानून के नियम युरोपियन्, काईलोमा, फिजियन्स, पोलिनेसियन्स, मेलानेसियन्स, चैनीस, और जपनीस, के लिये नहीं है ।

कानून नं० १-१९२० के सेक्शन् दो के द्वारा श्रीमान् गवर्नर ने कौंसिल में बनाया। आज १२ फर्वरी १९२०

ट्रेवर जोन्सन्

क्लार्क के लिए, इक्सेक्यूटिव कौंसिल

दण्ड

यह लोगों को जनाया जाता है कि जो आदमी ऊपर बतलाये नियमों को तोड़ेगा उस पर एक सौ पौण्ड तक फैन या एक वर्ष की कैद या दोनों प्रकार के दण्ड दिये जावेंगे।

यह बात ध्यान देने योग्य है कि यह "कौन्सिल की आज्ञा" केवल भारतीयों पर ही लागू होती थी क्योंकि इसके 'दुष्कारे' में लिखा हुआ था "उपरोक्त कानून के नियम यूरोपियन, काईलोना, फिजियन्स, पोलिनेसियन्स, मेलानेसियन्स, चैनीस, और जापनीस के लिये नहीं है"

इस प्रकार उपर्युक्त सभी जातियों के सामने भारत वर्ष तथा भारतीयों की बेइज्जती की गई थी। जङ्गली लोग जो ३० वर्ष पहले नरमांस भक्षी थे, स्पेशल कान्स्टेबल बने डंडा लिये घूमते थे, दोगले हाफकास्ट मुस्कराते और मनमानी करते थे, गोरों के हृदयमें राक्षसी प्रसन्नता थी और बिचारे भारतीय गर्दन झुकाये हुये ये सब अपमान सह रहे थे।

यदि फिजी सरकार जापानियों के साथ ऐसा बर्ताव करती जैसा उसने भारतीयों के साथ किया तो सूवाके आसपास जापान का जहाजी बेड़ा गोले बरसाता हुआ दीख पड़ता! चीन भी कदापि इस अपमान को चुपचाप न सह लेता। ये बिचारे हिन्दुस्तानी ही हैं जिन्हें मारो पीटो, अपमान करो गोली से मार दो कोई पूछने वाला ही नहीं! दो वर्ष बाद हिन्दुस्तानी कमीशन फिजी जावेगा। किस लिये? फिजी की दुर्दशा की विधिवत् जांच करने के लिये नहीं, बल्कि यह जानने के लिये फिजी में हिन्दुस्तानियों की बस्ती बसाई जा सकती है या नहीं!

भारतीय जनता में आतङ्कः—

फिजी की भारतीय जनता में उस समय किस प्रकार का आतङ्क छाया हुआ था इसका दिग्दर्शन कराने के लिये हम मि० जार्ज सुचित, बाबू रामसिंह पं० भगवती प्रसाद श्रीयुत दुलीचन्द और डाक्टर मणिलाल इत्यादि के अनुभवों का वर्णन करेंगे।

मिस्टर सुचित का अनुभवः—

अपने मुकद्दमे के अवसर पर जार्ज सुचित ने कहा था "ता० १२ फर्वरी को कोई ८ बजे के समय मैं अपने आफिस को जाने के लिये घर से चला आता था। फुट पाथ छोड़ कर मैं सड़क पर चल रहा था। मेकडोनेल्ड होटल के सामने पेटसन लाग़ का गोरा मुझे देखकर हंसा। इसी समय

किसी ने मुझे धक्का दिया और साथ ही मारना भी शुरू किया। मैंने यह सब शान्तिपूर्वक सह लिया, फिर मैं भागा तब ग्रीन वुड ने मुझे खदेड़ कर पकड़ लिया और खूब पीटा। मैं गिर पड़ा तब ग्रीन वुड ने उठाकर कहा "मैंने तुम्हें गिरफ़ार कर लिया" इसके बाद एक सिपाही ने और ग्रीन वुड ने मेरी बाहों को खूब उमेठा। मेरे साथ कुत्ते जैसा व्यवहार किया गया। मुझे बहुत तकलीफ दी गई। ग्रीन वुड ने सिपाही से कहा "इसे कोठरी में बन्द करदो" मैंने ग्रीन वुड को कोई कुवचन नहीं कहा और न उसे मारने के लिये हाथ उठाया।"

'इस मुकद्दमे में इन्सपेक्टर गिलबोर्न ने कहा था "मैंने देखा था कि सुचित का मुंह फूला हुआ था और वह अपना मुंह धोता था। इसने पुलिस की सहायता भी चाही थी।"

क्या पाठक इस मुक़द्दमे के फैसले का अनुमान कर सकते हैं? गोरा ग्रीनवुड निरपराध होकर साफ छूट गया और न्याय के अवतार मजिस्ट्रेट साहब ने उल्टे आर्य सुचितको एक पौण्ड जुर्माना अथवा एक सप्ताह की क़ैद का दण्ड दिया!

रामसिंह का वृत्तान्त—

श्रीयुत रामरूप ने रामसिंह जी के विषय में निम्न-लिखित हाल मुझे सुनाया था।

"जिस दिन जार्ज सुचित पीटा गया उसी दिन गनपत चौधरी ने मेरी दूकान पर आकर कहा "तुम लोग—रामरूप और रामसिंह—जो घर से बाहिर निकले तो पीटे जाओगे इसलिये घर से बाहिर मत निकलना" मैंने उसकी बात पर यक़ीन नहीं किया। अपने घर से दुकान पर आया। लेकिन रामसिंह को भीतर बैठा हुआ छोड़ आया। मैंने देखा कि सचमुच कुछ सोलजर, हाफकास्ट, जङ्गली और गोरे चले जा रहे हैं और हैरी गार्डनर नाम का गोरा उनका मुखिया है। उनको देखकर मैं भीतर चला गया। इसके बाद जान ग्राण्ट और अन्थनी ग्राण्ट दोनों भीतर चले आये उन्होंने हम लोगों से कहा "अगर तुम बाहिर जाओगे तो फौरन पीटे जाओगे। रामरूप तुम्हारे ऊपर तो इतना खतरा नहीं है लेकिन रामसिंह को तो वे खोज रहे हैं"

इसके बाद मैं फिर दूकान पर आया। कुछ देर बाद पादरी स्टेडमैन मेरी दूकान पर पधारे। उनसे मैंने कहा "आप इस वक्त हमारा एक काम कर देंगे तो हम बड़े अहसानमन्द होंगे" पादरी साहब ने पूछा क्या काम है, तब मैंने कहा "मैंने सुना है कि जार्ज सुचित पीटा गया है और गोरे लोग मुझे और रामसिंह को मारने के लिये घूम रहे हैं। मैं चाहता हूं कि आप रामसिंह को इन के घर पहुंचा दें।

पादरी साहब ने कहा "कुछ देर आप ठहरिये अभी तो हम नहीं लेजा सकते, जब लौटकर आवेंगे तब लेजावेंगे"।

इस के बाद पादरी साहब ने पुलिस स्टेशन पर जाकर इंसपेक्टर से पूंछा और उन्होंने आज्ञा दे दी कि ले जाओ तब वे लौटकर आये और हमने रामसिंह को जल्दी से गाड़ी पर बिठला दिया और घर पहुंचवा दिया। इसके बाद पादरी स्टेडमैन से हार्न नामक गोरे ने कहा था "तुमने बड़ा बुरा काम किया जो रामसिंह को बचा दिया" इस प्रकार रामसिंह पिटते २ बचे।

इसके बाद स्टेडमैन रामसिंह को उनके घर से स्काट के पास ले गया। उनसे ऐसोसियेशन के कागज़ पत्र मांगे गए जो उन्होंने दे दिये। रामसिंह भी उन दिनों बहुत डर गए थे क्योंकि लोग उनको मारने की फिक्र में थे।"

रामरूप जी ने अपने विषय में कहा था।

"एक दिन इलाही ने आकर मुझे बतलाया गोरे लोग तुम्हारी दूकान तोड़ना चाहते हैं। वे कहते हैं कि तुम्हारी दूकान पर इम्पीरियल ऐसोसियेशन का कई हजार पौण्ड है सो सब लेना है। अपना धन छुपा दो। हम तुम्हें यह बताने के लिये आये हैं।"

मैंने ये सब बातें मिस्टर स्काट से कहीं। उन्होंने मुझ से कहा "हम कर्नल गोल्डिङ्ग को सब बातें बतला देंगे। तुम पर कोई अत्याचार नहीं किया जायेगा। लेकिन तुम घर से बाहिर न निकलना"

मुझे बहुत डराया और धमकाया भी गया था। मैं

पुलिस स्टेशन पर बुलाया गया और फिर स्काट साहब ने भी प्राइवेट में अपने आफिस पर बुलाकर बहुत से सवाल किये थे। ये गोरे लोग यह चाहते थे कि मैं डाक्टर मणिलाल के विषय में झूंठी बातें कह दूं। वे मेरे मुंह से यह कहलवाना चाहते थे कि मणिलाल ने गोरों को पीटने के लिये और दङ्गा करने के लिये हिन्दुस्तानियों को उभाड़ा। लेकिन मैंने ऐसा झूठ नहीं बोला”

श्रीयुत भगवती प्रसाद जी के अनुभव:—

श्रीयुत भगवती प्रसाद जी ने अपना निम्न-लिखित वृत्तान्त मुझे बतलाया था।

“जब कि मार्शल्ला जारी हो गया तो मैं नौसूरी में गया। मेरी इच्छा सूवा जाने की थी, लेकिन वहां के इन्सपैक्टर ने और वालन्टियर लोगों ने मुझे रोका। कहने लगे “नदी के उस पार जाओगे तो हम गोली से मार देंगे।” मैंने उनकी बातें सुनकर कहा “अगर किसीका घर ही उस पार हो तो क्या उस पार नहीं जाने दोगे?” वालन्टियर लोगों ने कहा “हम नहीं जाने देंगे। सरकार के हुक्म से नाव खेने वालों को मना कर दिया गया है कि किसी को उस पार न उतारें” ऐसा सुनकर मैं मिस्टर ग्राहम सोलिस्टर के आफिस में गया। जब मैं वहां पर जाकर बैठा तो मिस्टर एविल ने हमको बुलाया। आफिस में तीन चार गोरे और भी बैठे थे। उन्होंने हम से कहा “अब तुम्हें

सात आठ वर्ष की जेल होगी, जेल में जाकर वहां कैदियों की तनख्वाह बढ़वाना और वहां सत्याग्रह का उपदेश देना" मैंने कहा "जब यहां की गवर्नमेण्ट जेल दे देगी तो वहां जैसा तुम कहते हो वैसा ही करेंगे।" इस पर चिढ़ कर गार्ड बोला "चुप रहो"। मैं चुप हो गया। विक्टर पविल बोला "तुमने कल आदमियों को बहुत ठीक समझाया, जिसके सबब से नौसूरी में झगड़ा नहीं हुआ। हम चाहते हैं कि तुम मिस्टर काम्पटन के आफिस में जाओ" मैंने कहा "आज तो हम नहीं जा सकते, किसी दूसरे दिन जायेंगे" फिर पूछा "तुम दो तीन घण्टे अब कहां रहोगे?" मैंने कहा ग्राहम के आफिस में बैठूंगा" मैं ग्राहम के आफिस में जाकर बैठा। विक्टर पविल ने काम्पटन के पास टेलीफ़ोन किया। वहां से मोटरकार में दो गोरे बैठकर आये और मुझ से कहा "इसमें बैठो"। वे लोग बन्दूक भरे हुये थे और बर्छी लगाये हुए थे। हम को बीच में बैठाकर ले गए। काम्पटन के आफिस में हम गये वहां पर पीटर ग्राण्ट, जान ग्राण्ट, और भी दो चार उन के साथी बैठे थे। हमको देख कर वे लोग हँसे और कहने लगे "अब तो हिन्दू लोगों से काम पड़ा है" पीटर ग्राण्ट ने हमसे कहा "जो जेल जाने से बचना चाहते हो तो हम जो २ बात कहें वही तुम करो" मैंने कहा, "हमसे अपनी बात कहलाने को तुमने बुलाया है या हमें काम्पटन ने बुलाया है?" पांच मिनट बाद

क्राम्पटनने मुझे बुलाया। क्राम्पटनने कहा "भगवतीप्रसाद! हम नहीं जानते कि गवर्मेण्ट तुम्हारे ऊपर मुक़द्दमा चलावेगी, या नहीं। सब कहते हैं कि तुम मणिलाल के दाहिने हाथ हो। तुम्हारी मि० मणिलाल की बड़ी मित्रता है। क्या यह सच है कि ये सब उपद्रव तुम्हारे दोनों की सलाह से हुये हैं? जो हम पूछें उसका जवाब दो: नहीं तो तुमको बड़ा भारी कष्ट उठाना पड़ेगा।"

फिर वे लोग मुझे पुलिस इंसपेक्टर जनरल कर्नल गोल्डिङ्ग के यहां ले गये। साथ ही ऐन्थनी ग्राण्ट भी था। वहां इलाही रमजान और पीटर ग्राण्ट बैठे थे। सूवा का मेयर स्काट भी बैठा था। ये सब कुर्सियों पर बैठे थे। हम को खड़ा रहना पड़ा। १० मिनट बाद मैंने कहा। "मुझे बैठने के लिये जगह दीजिये। यदि आप जगह न देंगे तो मैं आप की बात का जवाब न दूंगा, फिर तुम्हारी इच्छा हो सो करना" फिर मुझे बैठने के लिये कुर्सी दी गई। स्काट ने मुझ से कहा "तुम ठीक तरह से यह बात जानते हो कि मिस्टर मणिलाल जब फिजी में नहीं आये थे तब फिजी के हिन्दुस्तानी बड़े आनन्द पूर्वक रहते थे। उन को किसी प्रकार का कष्ट नहीं था। सब साहब लोगों का हुक्म मानते थे। जब से मिस्टर मणिलाल आये उन्होंने सब को सिखाया कि सरकार की बात मत मानो सी० एस० आर० कम्पनी के खेतोंमें काम मत करो, सरकार

को टेक्स मत दो, सरकार के नोट मत लो, और भी बहुत सी बातें ऐसी हैं जो तुम जानते होगे क्योंकि तुम उनके मित्र हो। ये सब बात मि० मणिलाल ने गुवा की मीटिङ्ग में कही थीं। तुमने भी तो व्याख्यान दिया था ?" मैंने जवाब दिया "जो बातें आप कहते हैं वे मि० मणिलाल ने आदमियों को नहीं सिखलाईं। दूसरे ने भी ऐसा किसीको नहीं सिखलाया है मि० मणिलाल ने हिन्दीमें व्याख्यान दिया था, तुम्हारे इंटर पीटर कुछ नहीं समझ सकते" स्काट ने कहा "तो स्ट्राइक करने के लिये किसने उपदेश दिया था ?" मैंने कहा "यह बात हिन्दुस्तानी न्यूज़ीलैंड वालों से सीखे हैं" स्काट ने कहा क्या वे लोग सिखाने आये थे ?" मैंने कहा "हिन्दुस्तानी लोग सुना करते थे कि आज न्यूज़ीलेण्ड में मज़दूरों ने हड़ताल करदी, कल इंजीनियरों ने हड़ताल करदी, इसी तरह हिन्दुस्तानी भी सीख गये। दूसरा यह भी कारण है कि खाने पीने की चीज़ों का भाव बहुत तेज़ है उनको कष्ट भी बहुत ज्यादः होता है गवर्नमेंटको लिखा भी था लेकिन गवर्नमेण्ट ने कुछ भी प्रबन्ध नहीं किया" मा० स्पटन ने कहा "आज सुवा के आफ़िस में जो मीटिंग हुई थी उसमें तो वे ही बातें हुईं थीं जो स्काट साहब ने कही है।

उसमें मि० मणिलाल ने कहा था कि जो ५ शिलिङ्ग न मिलें तो हड़ताल करदो और सब गोरों को मारो" मैंने कहा "सब मज़दूर डाक्टर मणिलाल के पास आये थे उनके

अपने कष्ट निवेदन किये थे तव मणिलाल जी ने उनसे कहा कि हमारी सभा कालोनियल सेक्रेटरी के पास अर्ज़ी लिखेगी डा० मणिलाल ने अर्ज़ी लिखी भी थी लेकिन कालोनियल सेक्रेटरी की तरफ से कोई जवाब नहीं आया। अर्जी भिजवाकर वे 'वा' ज़िलेकी ओर अपने कामके लिये चले गये" फिर मुझसे पूछा गया मीनाबातू की मीटिङ्ग में कौन २ आदमी थे ?" मैंने कहा कि मैं नहीं जानता कि कौन २ आदमी थे क्योंकि खुद मैं वहां नहीं गया था" स्काट ने फिर कहा "तुम सब कामों में आगे रहते हो, तुम्हारे पोस पत्र जरूर गया होगा" मैंने कहा "यदि स्ट्राइक इम्पीरियल ऐसोशियेसन ने कराई होती तो हमारे पास पत्र जाता, लेकिन स्ट्राइक डाक्टर मणिलाल ने नहीं कराई, लोगों ने अपने आप ही विना किसी से सलाह लिये स्ट्राइक करदी " स्काट ने कहा "हरपाल ने जो भजन गाया था उसका क्या मतलब था ?" मैंने कहा "उसने जो २ भजन गाये थे वे मैंने नहीं सुने लेकिन एक भजन का अभिप्राय मैंने सुना था। उसका अभिप्राय यही था कि घर का टैक्स नहीं देना चाहिये" स्काट ने कहा "मि० मणिलाल ने क्या कहा था ?" मैंने कहा "मैंने कुछ अधिक नहीं सुना क्यों कि मैं ऊंचा सुनता हूं" क्या डाक्टर मणिलालने तुमको यह उपदेश नही दिया था कि हमारी बातें ग्रामों में फैलाओ ?" मैंने कहा " डाक्टर मणिलाल ने यह बातें नहीं कहीं थीं जो आप बतला रहे हैं"

इस तरह तीन दिन तक हमें वहीं रक्खा और बातें पूछते रहे। उनका मतलब यही था कि हम झूठी बातें उनसे कह दें। फिर अंग्रेज़ी में लिखकर कई पृष्ठ हमारे सामने लाये और कहा "इस पर अपने हस्ताक्षर करो" मैंने कहा "जो मैंने बातें कही हैं यदि वे ही तुमने लिखी हैं तो मैं अपने हस्ताक्षर करता हूं" इसके बाद मैंने हस्ताक्षर कर दिये।

श्रीयुत दुलीचन्द का वृत्तान्तः—

कलकत्ते में दुलीचन्द ने मुझे अपना हाल इस प्रकार सुनाया था "झगड़े के दिनों में मैं बाग़ ओंड़ा में था। मैं अपने घर पर था। ११ बजे के करीब कुबेरसिंह की औरत वहां गई। उसने वहां हमसे कहा कि तुराकी में बहुत सी औरतें इकट्ठी हो गई हैं सो तुम भी वहां पर चलो। मैं वहां पर गया तो देखा कि सरकारी सिपाही पहरा देते थे। उस समय वहां पर कुछ झगड़ा नहीं था, औरतें सभा कर रही थीं मैंने उनसे पूछा कि तुम यहां क्या करती हो? उन्होंने कहा "हम यहां गाती हैं, बजाती हैं" मैंने कहा कोई तरह का उपद्रव मत करना" इतना कह कर मैं अपने मकान को वापिस गया थोड़ी देर में मैंने हल्ला सुना कि डाक्टर मणिलाल जी की स्त्री पकड़ी गई। इसलिये बहुत से आदमी मीनाबाग़ से चला आ रहे थे। इंसपेक्टर जनरल तथा न्यिन बोर्न मोटर में महावीर सरदार को बिठलाकर मणिलाल जी के घर पर लाये और वहां मिसेज मणिलाल को दिखला

दिया जिस से वे समझ गये कि उनके पकड़े जाने की खबर झूठी थी। आदमी इस पर शान्त होगये। फिर चांद-कुंवरि और कुवेरसिंह की औरत मोटर में बैठी हुई हल्ला करती हुईं निकलीं कि तुराको में गोली चल रही है। यह सुनकर बहुत से पुरुष, जिनकी स्त्रियां वहां थीं, भागे गये। ... ...

... मैं डाक्टर मणिलाल के यहां प्रायः जाया करता था। डाक्टर मणिलाल ने मैंने और हरपाल पंडितने काला कपड़ा रंज मनाने के लिये बांध लिया था। सार्जेण्ट इन्द्रसिंह ने जब मुझे काला कपड़ा बांधे हुये देखा तो कहा कि तुमको इन्सपेक्टर जनरल ने बुलाया है। इंसपैक्टर जनरल ने मुझ से कहा "तुम जानते हो कि हम इन्सपैक्टर जनरल हैं ?" मैंने कहा मैं खूब अच्छी तरह जानता हूं" उन्होंने कहा कि यह काला कपड़ा तुमने क्यों बांधा है?" मैंने जवाब दिया "यह कौम का ग़म है" तब इन्सपैक्टर जनरल ने कहा "जो घायल हुए या मर गए वे तुम्हारे खास भाई नहीं हैं इसलिये ये खोल डालो" मैंने कहा "आपही खोल डालें, मैं नहीं खोलूंगा" इन्सपैक्टर जनरल ने खोलो नहीं और कहा अच्छा जाओ अगर कोई वबाल उठेगा तो हम तुमको पकड़ेंगे" दूसरे दिन मैं फिर सूवा गया तो वह काला कपड़ा फिर बंधा था। लुकनियर सार्जेण्ट ने मुझे देखा और बुलाया, मुझमें एक धक्का लगाया और कहा "अभी खोल डालो

लेकिन मैंने खोला नहीं। फिर मैं मणिलाल जी के मकान को चला गया। मैंने मणिलाल जी से यह हाल कहा। उसके कुछ दिनों बाद डाक्टर मणिलाल को नोटिस मिला। उन्होंने मुझसे तथा पंडित भगवती प्रसाद से कहा "तुम घर जाने के लिये जहाज लिखालो नहीं तो तुमको बहुत तकलीफ होगी।" जब डाक्टर मणिलाल नुकलाओ को भेज दिये गये और उसके सवेरे मैं शहर को गया तो मुझे स्यिनबोर्न मिला। वह मुझे थानेपर लेगया और वहां मुझसे बोला "तुम रेवा नाउुओ और सूवामें मत रहो" मैंने कहा "क्यों" वह बोला "तुम बहुत बदमाश है" मैंने कहा "अगर मैं बदमाश हूं तो आप इसके सबूत दीजिये' वह बोला इसका सबूत यही है कि अगर तुम कल नहीं चले जाओगे तो हम बन्द कर देंगे।" मैं वहां से नडोगा चला गया और नडोगा से 'बा' को आया। वहां सन्ता महाराजसे बात चीत करता था कि इतने में मुझे पीटर ग्राण्ट के लड़के जान ने देखा। उसने सार्जेंट को वहां से टेलीफोन किया। वहां सार्जेण्ट आया। जान ने सार्जेण्ट को बतलाया कि दुलीचन्द सूवा का आदमी है और यहां के लीडरों को भड़काता था। जिस समय मैं जमनासिंह के घर पर 'बा' में सोता था, रातके ४ बजे पुलिसने आकर दरयाफ्त किया "क्या दुलीचन्द सरदार यहां पर है?" पहले तो जमनासिंह डर गया। मैंने कहा कि तुम डरो मत, तुम कह दो यहां है। मैं बाहिर

निकलकर आया और पुलिसमैन से बातचीत की। पुलिस न मैंने कहा "तुमको इन्सपैक्टर देखना चाहता है" मैंने कहा "अच्छा मैं चलता हूं" इन्सपैक्टर मुझे पुलिस कोर्ट में ले गया और मजिस्ट्रेट के सामने खड़ा कर दिया। मजिस्ट्रेट ने मुझसे कहा "तुम क्या यहां पर भी हड़ताल कराने के लिये आये हो?" मैंने कहा "मैं हड़ताल करने के लिये किसी से नहीं कहता। मैं तो यही कहता हूं कि स्ट्राइक करना अच्छा नहीं है" तब वह बोला "क्या तुम राराबाई कोठी के आदमियों को काम बन्द कराने के लिये कहते थे?" मैंने कहा "इसका क्या सबूत है? ऐसा कौन कहता है?" मैंने कहा "अच्छा जान को बुलाओ" मजिस्ट्रेट ने कहा "जान आज नहीं आवेगा। तुमको बारह रोज हवालात में रहना होगा" बारह रोज मैं हवालात में रहा। फिर मजिस्ट्रेट ने मुझे बुलाया और कोर्ट में खड़ा करके कहा "तुम बहुत अच्छे आदमी हो। हमने तुम्हारे लिये बहुत कोशिश की। हम नहीं चाहते कि तुम पर मुक़द्दमा चले। तुम अपने घर मीनापातू को वापिस जाओ। स्टीमर से कहीं दूसरी जगह पर मत उतरना। सीधे घर जाना"। मैंने कहा "मुझे गिरफ़्तार क्यों किया गया था?" "उन्होंने कहा "इस वक्त लोगों के कहनेसे तुम्हें गिरफ़्तार कर लिया।"

डाक्टर मणिलाल जी के अनुभवः—

श्रीयुत मणिलाल जी ने 'यङ्गइण्डिया' में लिखा था।

जब उपद्रव करने के लिये लोग उत्तेजित किये जा रहे थे मैं ताईलेवू में था। वहां से लौटकर मैं फिजी के सदर थाने में स्त्रियों से मिलने के लिये गया था, पर मुझे उनसे मिलने की आज्ञा नहीं मिली। वहां मुझे इन्सपेक्टर सिनबोर्न के आफिस के बाहिर ठहरना पड़ा। इन के आफिस में हिन्दुस्तानी ईसाइयों और उनके पृष्ठ पोषकों से राय ली जा रही थी। वे यही राय देते थे कि कौन स्त्री या पुरुष क़ैद किया जाय, कौन आदमी हवालात में रक्खा जाय, किस के घर की तलाशी ली जाय, किस आदमी का घर घेर लिया जाय, राह चलतों घर में सोये हुओं और बोर्डिङ्ग में रहने वाले आदमियों की तलाशी ली जाय।

एक स्पेशल कान्स्टेबल ने, जो था तो गोरा लेकिन हृदय का बड़ा काला था मेरे साथ असभ्य शब्दों का व्यवहार किया। मुझे किसीने यह नहीं कहा था कि इन्सपेक्टर जनरल के आने तक मुझे ठहरना पड़ेगा इसी बीच में मेरे बार २ पूछने पर इन्सपेक्टर सिनबोर्न चिढ़ गये और उन्होंने स्पष्ट शब्दों में मुझ से कहा "तुम मेरे काम में बाधा डालते हो" तब मैं उन के साथ बाहिर जाने को राजी हो गया और वहां से चला। दरवाजे के पास आने पर एक स्पेशल कान्स्टेबल ने मेरे कान पर से चश्मा उतार लिया। पास ही एक और गोरा खड़ा था उसने मेरा कन्धा पकड़ लिया और इन्सपेक्टर सिनबोर्न के मना करने पर भी उसने मुझे

धक्का मारा लेकिन उससे मुझे चोट नहीं आई। '

५ दिसम्बर सन् १६२० के भारत मित्र में श्रीयुत मणिलाल जी ने अपने दूसरे अनुभवों का इस तरह वणन किया था।

"जव मैंने कर्नल गोल्डिङ्ग से कहा कि डर और दहशत के शासन की वजह से सबको वहुत कष्ट हो रहा हैं तो वह वोला "They have brought, it on themselves" अर्थात् "वे अपने किये का फल पा रहे हैं" जब मैंने कहा कि आप हीं ऐसे कानूनों को जारी कराते हैं जिनकी वजह से निम्न श्रेणी के कर्मचारी ऐसे अत्याचार कर सकते हैं तव वह वोला "I am not responsible for what others do" यानी "दूसरों के कामोंका मैं जिम्मेवार नहीं।"

कुछ दिन बाद मुझे कर्नल गोल्डिङ्ग ने आफिस में टेलीफोन से बुलाया। जब मैं गया तो मुझ से शान्ति के साथ बातें कीं। जर्मनी के विषय में आपने कहा "मैं जर्मनी को दोष नहीं देता। उसे हाथ पैर फैलाने के लिये जगह चाहिये थी। जगह के बिना उसका काम कैसे चलता?" फिर मेज पर रक्खे ब्लोटिङ्ग पेपर पर रङ्गीन पैन्सिल से डायग्राम खींचकर मुझे अपनी वातें समझाईं फिर कहा "अव आप क्या करना चाहते हैं?" मैंने कहा "शायद कुछ दिनों में सूवा के गोरों के दिल में मेरी तरफ से वुरे भाव शांत हो जावेंगे, तब तक मैं नाबुआ जाकर रहना चाहता हूं। वहां

के डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर मि० राबर्टस बड़े न्यायी पुरुष हैं और भारतवासियों को वहां उतने कष्ट नहीं झेलने पड़ते जितने सूवा रेवा में।" कर्नल गोल्डिङ्ग ने कहा "कुछ दिनों तक सिर झुकाये क्यों नहीं रहते?" मैंने कहा "बाल बच्चों सहित जाने से यह काम कुछ हो सकता है लेकिन अगर आप कहें कि मैं भारतवासियों के लिये आन्दोलन करना अथवा उन पर लगे हुये या लगाये जाने वाले अभियोगों में उनकी पैरवी करना छोड़ दूं तो ऐसा मैं हर्गिज़ नहीं कर सकता।"

तब कर्नल गोल्डिङ्ग ने मुझे गवर्नर का वह घोषणा पत्र दिखलाया जो उन्होंने ब्रिटिश गायना जाने को उत्सुक भारतवासियों के विषय में था। जब मैं वहां से लौटने लगा तब कर्नल गोल्डिङ्ग ने मुझ से कहा "जब लाबुआ जाना हो तब आप मुझे सूचित कर सकते हैं" मैंने कहा "अच्छा" इस प्रसंग पर मैंने यह भी कहा था कि तीन डिटेक्टिव मेरे घर के बाहिर बैठे या खड़े रहते हैं उनसे क्या लाभ है! उनको मेरे मकान पर भेज देना। मैं कोई गुप्त कार्य्य नहीं करता। पर कर्नल गोल्डिङ्ग ने इन्कार कर दिया। उन्हें यह शङ्का थी कि मैं किसी गुप्त उपाय से रोज रात को अपने बंगले के बाहर निकलता हूं और हिन्दुस्तानियों की बस्ती में जाकर अशांति फैलाता हूं। यह बात मुझ से सिख सार्जेण्ट मोहानसिंह ने कही थी। मोहानसिंह के रोज रिपोर्ट करने पर कि मैं सिर्फ मुक़द्दमों में भारतीय अभियुक्तों की

मदद के लिये जेल में उन से मिलने अथवा कोर्ट में उनकी पैरवी करने का काम छोड़ और किसी काम से दिनको भी बंगले के बाहिर नहीं निकलता, कर्नल गोल्डिङ्ग ने मोहानसिंह पर पूरा विश्वास न होने से दो फिजियन कान्स्टेबलों का पहरा रात दिन जारी रक्खा था।

मार्च महीने के तीसरे सप्ताह में जगन्नाथ साधू को झूठे आरोप से बचाने के लिये मैं नावुआ जाना चाहता था। रात को तीसरे पहर मुझे शहर में होकर लांच पर जाना था इसलिये रास्ते का "पास" लेना पड़ा जो बड़ी मुश्किल से मिला, पर रक्षा के लिये कर्मचारी मांगा तब यह जवाब मिला "We are not in the habit of providing escorts for people" अर्थात् लोगों की रक्षा के लिये कर्मचारी देने का रिवाज हमारे यहां नहीं है"

फिजीके अत्याचारों के विषय में मैंने तार द्वारा लंदन, भारत और सिडनी को खबरें भेजी थीं। यह बात कर्नल गोल्डिङ्ग को मालूम हो गई है। कुछ दिनों बाद मैंने जब टेलीफोन द्वारा उन को कहा "मैं नावुआ जाने की तय्यारी में हूं" उन्हों ने मुझ से कहा "आप को आफिस में आकर मुलाकात करने की फुर्सत हो तो आइये। मैं शीघ्र ही वहां पहुंचा। सिडनी पुलिस की तरफ से मेरे तार की एक प्रतिलिपि मुझे दिखाकर उन्होंने पूछा "Indation" क्या चीज़ है?" मैंने कहा "इन्डेशन"

"इन्डियन इम्पीरियल ऐसोसियेशन का कोट यह है" कर्नल गोल्डिङ्ग ने कहा "तुम सिडनी वालों की आंखों में धूल झोंकना चाहते थे" मैंने कहा "इन्डेयन मेरी सभा का कोड वर्ड है" इस पर अत्यन्त क्रुद्ध होकर कर्नल गोल्डिङ्ग बोले।

If the whites here get to know all this, they will pull your bones to pieces and I wouldn't besorry either. You are a bloody liar. You are a damned rogue. Get out of my office. Gate out. Don't you come here again."

अर्थात् "यदि ये सब बातें यहां के गोरों को मालूम होगईं तो वे तुम्हारी चोटी चोटी काट लेंगे और मुझे इससे कुछ भी दुख न होगा। तुम बड़े झूठे और बदमाश आदमी हो। हमारे दफ्तर से निकल जाओ। निकलो। फिर कभी यहां मत आना" मैंने यह सब हाल गवर्नर को लिख भेजा लेकिन उन्होंने इस पर कुछ ख्याल नहीं किया।

मैं नानुआ न जा सका और वहांके भारतीयों ने मेरे सत्कार के लिये जो प्रबन्ध किया था वह सब विफल हुआ इसी दिन इन्सपेक्टर स्मिथ बोर्न मेरे बंगले पर आया और मुझे तथा मेरी पत्नी को "मनाही का हुक्म" दे गया। जाते समय मुझसे उसने पूछा "आप क्या करना चाहते हैं?" मैंने कहा "मै कुछ नहीं जानता, सोच कर तय किया जायगा। इसके बाद हम लोगों को नजर बन्द कर मुकद्दम

द्वीप में जैसा अत्याचार किया उसका हाल पीछे लिखूंगा

फिजी से लौटे हुए छेदा नामक एक आदमी ने जो सूवा में रहता था और मणिलाल के नजदीक वायनी वकासी में जिसकी ज़मीन थी, मिस्टर एण्ड्रूज़ के सामने शान्तिनिकेतन में निम्न लिखित बात डाक्टर मणिलाल के विषय में कही थी।

"मेरे घर पर किराये पर अमजद अली नाम का एक आदमी रहता था। वह बोतो हाउस होटल में काम करता था वहां सोलजर लोगों ने जो उस मौके पर वालंटियर बना दिये गये थे यह सलाह की कि आज रात के वक्त चल कर डाक्टर मणिलाल को पीटना चाहिये। अमजद अली ने यह बात सुन ली। उसने यह खबर मुझे सुनाई। मैंने यह बात मौलवी शमशुद्दीन साहब को जो मसजिद में हैं, कही। उस वक्त शाम के ६ बजे थे और और किसी को जाने का हुक्म नहीं था लेकिन मौलवी साहब को रात के १२ बजे तक का हुक्म था मौलवी साहब ने यह बात सन्तसिंह चोला से कही। उन्होंने मौलवी साहबके साथ जाकर डा० मणिलाल को खबर दी। मैंने डाक्टर मणिलाल के पास कहला भेजा था कि डाक्टर ब्रफ के यहां या गवर्नर के यहां चले जाना। डाक्टर मणिलाल ने मौलवी साहब के सामने कहा "डाक्टर ब्रफ का लड़का भी तो वालंटियर है, वह भला क्या मुरव्वत करेगा? और जब यह काम

गवर्नरके कहनेसे ही होरहा है तो वह मुझे क्यों बचा लेगा? इसलिये हमारा तो परमेश्वरही मालिक है जो कुछ वह करेगा सो होगा" लेकिन फिर मैंने सुना था कि डाक्टर मणिलाल जी वहां से कहीं हट गये थे इसलिये वे पिटने से बच गये पर उन्हें पिटने की आशङ्का बराबर बनी रहती थी।"

देश निकाले।

२७ मार्च सन् १९२० को डाक्टर मणिलाल, श्रीमती मणिलाल, हरपाल महाराज और फज़ल अहमदजी को "मनाही का हुक्म' (Prohibition order) मिला। यह हुक्म सन् १८७५ के उस कानून के मुताबिक दिया गया था जिसे Peace and Good order Ordinance of 1875 के नाम से पुकारते हैं।

इस आज्ञा का अभिप्राय यही था कि ये लोग "disaffected to the king or otherwise dangerous to the peace and good order of the colony" "राजा के प्रति द्वेष करने वाले हैं अथवा इनसे उपनिवेश की शान्ति भंग होने का खतरा है।" इस आज्ञा पत्र के अनुसार इन्हें वीती लेवू द्वीप, ओवा लाऊ द्वीप और नैकुलाला प्रान्त में रहने की मनाही करदी गई थी। इस आज्ञा पत्रका सीधा सादा अर्थ यही था कि ये लोग फिजी द्वीप समूह के मुख्य स्थानों में न रहने पावें, हां अगर यह चाहें तो फोजियों के

द्वीप में जरूर रह सकते थे! जहां आमदनी का कोई ज़रिया न हो वहां ज़बरदस्ती भेज देना देश निकाले के समान ही था और शायद यही समझ कर भारत सरकार ने भी इस सम्बन्ध में deportation शब्द का व्यवहार अपने फिजी वाले खरीते में लिखा है।

१ अप्रैल को ये लोग नुकलाओ डिपो से लाये गये। वहां से मकलोवा भेज दिये गये। १५ अप्रैल को वहां से चढ़ाये गये और २० अप्रैलको न्यूज़ीलैण्ड पहुंचे। डाक्टर मणिलाल तथा श्रीमती मणिलाल को तो वहां उतरने की आज्ञा मिल गई लेकिन हरपाल महाराज और फज़लअहमदखां को उतरने से मनाकर दिया गया। उन्हें यह हुक्म मिला।

S. S. Atua
20th April 1920
12—5 P. M.

Under the Undesirable Immigrants Exclu hision. Act 1919 you are hereby prohibited from landing in New Zealand within 48 hours from now.

Customs Boarding Inspector.

यह बात ध्यान देने योग्य है कि फिजी सरकार ने खुली अदालत में हरपाल महराज और फज़ल अहमदखां पर कोई अपराध प्रमाणित नहीं किया था तथापि न्यूजीलैन्ड सरकार ने इन लोगों को वहां उतरने की आज्ञा नहीं दी! इसका

अर्थ यही है जो हिन्दुस्तानी ब्रिटिश साम्राज्य के एक भाग से अदालत में अपराधी प्रमाणित हुए बिना भी—निकाला जाये तो ब्रिटिश साम्राज्य के अन्य भागोंका दरवाजा उसके लिये बन्द होजाता है! साम्राज्य की एकता का कैसा अच्छा नमूना है! इस पर भी हमसे कहा जाता है कि हम लोग ब्रिटिश साम्राज्य के नागरिक होने का अभिमान करें। जिस साम्राज्य में हम गुलाम समझे जाते हैं, जहां हमारे साथ अछूत जातियों जैसा वर्ताव किया जाता है जहां नित्य प्रति हमारा और हमारे भाइयों का अपमान होता है उसी ब्रिटिश साम्राज्य के लिये हम अभिमान करें?

डाक्टर मणिलाल जीके मामले पर तो हम अन्यत्र विचार करेंगे, यहां हरपाल महाराज और फज़ल अहमदखां के विषय में दो बात कहना चाहते हैं। इन लोगों को मार्गमें अनेक कष्टोंका सामना करना पड़ा। इनके पास जाड़ेके कोई कपड़े नहीं थे और न इन्हें किसी से कुछ सामान लेने का मौका ही दिया गया था। सिडनी में बड़ा जाड़ा था और इन्हें केवल तीन सूती कम्बल मिले थे। जहाज पर इन्हें खाने पीने की भी बड़ी तकलीफ उठानी पड़ी। कप्तान के नीचे के कर्मचारियों ने इन्हें गालियां सुनाईं। फज़ल अहमदखां के साथ उनकी २० दिन की लड़की और २ लड़के तीन वर्ष और साढ़ेचार वर्ष के थे। जहाज के डेक पर भीगते हुए इन सब को बहुत कष्ट हुआ। इन्होंने जहाज के

गोरों से बहुत कुछ प्रार्थना की कि इन ग़रीब बच्चों पर तो मेहरबानी करके इन्हें पानी में भीगने से बचाओ लेकिन निर्दयी गोरों ने कुछ भी ध्यान नहीं दिया। बड़ी मुसीबत रही। आस्ट्रेलिया और सिंगापुर में भी इन पर पुलिस की निगरानी रक्खी गई। जब ये हिन्दुस्तान को लौटकर आये थे तब इन्होंने अपना सब हाल मुझे सुनाया था।

फिजी सरकार के कारनामे।

धर पकड़ और दण्ड।

अपराध	संख्या
तार काटना	२ आदमी पकड़े गये। एक दौरा सुपुर्द किया गया, एक हवालात में है
पुल तोड़ना	२७ पकड़े गये
इरादतन चोट पहुंचाना	८ आदमी और ३ औरतें पकड़ी गईं
कानून के खिलाफ इकट्ठा होना	८ आदमी पकड़े गए और दंडित हुये
बलवा	१४ आदमी और तीन

	औरतें पकड़ी गईं और दौरा सुपुर्द की गईं।
फौजदारी	१६८ आदमी और १८ औरतें पकड़ी गईं। इनमें से १२८ आदमी और १३ औरतें दण्डित हुईं। बाकी ४० आदमियों और ५ औरतों के मुकद्दमे खारिज कर दिये गये जमानतपर कोई नहीं छोड़ा गया।

इनमें कितने ही आदमियों को कठिन कारावास का दण्ड मिला था। रामजी और मुहम्मद हुसैन को अठारह महीने की सपरिश्रम जेल हुई। गनपत को दस महीने की सख्त सजा मिली। गुसाईं और मुहम्मद को पांच २ वर्ष की सजा हुई। ननकू को दो वर्ष की, रहीमन और फूल कुंवर को १८ महीने की धनपतिया को १२ महीने की और मुकुन्द को ३ वर्ष के कारावास का दण्ड मिला।

दण्ड का ब्यौरा।

पांच मनुष्योंसे अधिक एकत्रित होनेके अपराधमें

गोपाल साधू	१२ महीना
राजाराम	”
सूजीराम	”
जालू	”
सोभैया	”
गोपाल	”
हसनू	”
मानराज	”
दुल्हा	६ महीना

तुराक में उपद्रव।

१०८ आदमी	१ महीना
१६ आदमी	३ सप्ताह
मँगरी, राचल, छुटकी, मानकुमारी, जमुनी, अन्तनी, जानकी, करीमन, लेते, सोनिया,	औरतें १ महीना
अनन्ती	३ सप्ताह
हंसराजी, हरदेई,	२ सप्ताह

नसीनू में पुल तोड़ने के अपराध में—

१७ आदमी	६ महीना
१ आदमी	१२ महीना

४ आदमी	१८ महीना
१ आदमी	२ साल
तुराक में फौजदारी करने के अपराध में—	
३ आदमी	१८ महीना
४ पुरुष और २ औरतें	१२ महीना
१ पुरुष और १ स्त्री	७ महीना
३ आदमी	[illegible]
तुराकमें ३ यूरोपियनों को पीटने के [illegible]	
२ आदमी	[illegible]
१ आदमी	[illegible]
२ औरतें	१८ महीना
१ औरत	१२ महीना
१ आदमी	१ वर्ष
१ आदमी	१० महीना
१ आदमी	१८ महीना

कुल जोड़ १६२

भारत सरकारकी कर्त्तव्य भ्रष्टता।

पिछले वृत्तान्त और अङ्कों से पाठकों को फिजी की दुर्घटना की भयङ्करता का पता लग गया होगा। इस विषय में भारत के पत्रों में जो आन्दोलन हुआ उसे भी पाठक जानते ही हैं। इन सब बातों का पता भारत सरकार

को समय २ पर मिलता रहा था लेकिन फिर भी वह हाथ पर हाथ धरे बैठी रही। माननीय श्रीनिवास शास्त्री जी ने कौंसिल में फिजी की दुर्घटना के विषय में जो प्रश्न किया था, उसका उत्तर देते हुये सर जार्ज वार्न्स साहब ने फरमाया था।

"In view of the very detailed account of the recent riots given in the despatch of the Governor of Fiji dated 12th March last, which was published in the Gazette of India of the 17th july, the Government of India do not think that they would be justified in moving the secretary of State for getting the Colonial office to appoint a Commission to enquire into the origin of the recent riots and the measures taken to quell them"

अर्थात् "चूंकि फिजी के गवर्नर ने अपने १२ मार्च के खरीते में फिजी के उपद्रव का बहुत विस्तृत वृत्तान्त दिया है और यह वृत्तान्त १७ जुलाई के सरकारी गजट में छप भी गया है, इसलिये भारत सरकार भारत सचिव को यह लिखना न्याययुक्त नहीं समझती कि वह कालोनियल आ-फिस से एक कमीशन नियुक्त करने के लिये कहे जो कि पिछले उपद्रव के कारणों की तथा उसको दबाने के लिये जो उपाय काम में लाये गये उनकी जांच करे।"

सर जार्ज बार्नेस साहब के कथन का सीधा सादा मतलब यही था कि किङ्ग गवर्नर का खरीता सोल्ह आना सत्य है और उसमें लिखा हुआ Very detailed account "बहुत विस्तृत वृत्तान्त" वाचन तोले पाव रत्ती ठीक है? जब बम्बई की इम्पीरियल सिटीजनशिप एसोसियेशन ने भारत सरकार से इस विषय में प्रार्थना की थी कि फिजी की दुर्घटना की जांच करने के लिये एक कमीशन भेजा जावे तो उसके उत्तर में भारत सरकार की ओर से मिस्टर सी. ऐ. इनीज साहब ने अपने १७ सितम्बर सन् १९२० के पत्र में लिखा था।

"It would be an extreme and unusual measure for the Government of India to move for a Commission of enquiry into the measures adopted by a Government over whom they have no control in order to deal with what was obviously a very difficult situation. The Government of India have again read the despatches with the utmost care. The position was evidently serious. They are unable to find even primafacie reasons for supposing that it was handled with undue severity." अर्थात् "भारत सरकार के लिये यह एक बेहद बढ़ी हुई और असाधारण बात होगी कि वह एक ऐसी गवर्नमेण्ट के, जिसके कि ऊपर उसका कोई अधिकार नहीं

है, उपायों की जांच कराने के लिये कमीशन नियुक्त कराने के लिये कहे। ये उपाय फिजी सरकार ने उस समय काम में लाये थे जब कि वहां की परिस्थिति बहुत ही कठिन थी। परिस्थिति की यह कठिनता तो साफ २ दीख ही पड़ती है। भारत सरकार ने इन खरीतों को फिर अत्यन्त सावधानी के साथ पढ़ा है। उस समय हालत बड़ी ख़तरनाक थी यह बात स्पष्ट है। भारत सरकार को ऊपर से देखने के लिये भी कोई ऐसे कारण नज़र नहीं आते जिससे वह यह विश्वास करे कि फिजी सरकारने उस हालत में आवश्यकता से अधिक कठोरता से काम लिया था।"

भारत सरकार की इस धृष्टता पर तो ख्याल कीजिये कि उसने जांच के लिये कमीशन भिजवाने की बात तो दूर रही उलटे फिजी सरकार को सार्टीफिकेट भी दे दिया कि फिजी सरकार ने फिजी की दुर्घटना में आवश्यकता से अधिक कठोरता से काम नहीं लिया!

फिजी की दुर्घटना का संक्षेप यह हैं। एक राजकीय उपनिवेश में सैड़कों हिन्दुस्तानी स्त्री पुरुष पकड़े जाते हैं, उनकी बेइज़्ज़ती की जाती हैं, उन्हें जेल की हवा खिलाई जाती है, उनके निहत्थे समुदायों पर गोली चलाई जाती है, उनके नेताओं को देश निकला दिया जाता है, और मार्शल्ला के दिनों में उन पर तरह २ के ज़ुल्म किये जाते हैं, ६ महीने तक तो भारत सरकार बिल्कुल गूंगी बनी बैठी

रहती है और फिर संक्षिप्त जवाब देती है कि स्वतन्त्र जांच की कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि फिजी सरकार के नतीजे में "बहुत विस्तृत वृत्तान्त" है! यही नहीं बल्कि भारत सरकार फिजी गवर्नमेण्ट को बिना किसी स्वतन्त्र जांच के यह सार्टीफिकेट भी दे देती है कि उसने अधिक कठोरता से काम नहीं लिया? यह बात ध्यान देने योग्य है कि जो कमीशन भारत सरकार ने फिजी को जांच करने के लिये अब भेजा है वह फिजी की उक्त दुर्घटना की जांच करने के लिये नहीं भेजा बल्कि यह जांच करने के लिये भेजा है कि फिजी में अब हिन्दुस्तानी कुली बस्ती बनाई [illegible] ने चाहिये या नहीं! सरकार की इस कर्तव्य शून्यता [illegible] भी कोई हद है?

स्वतंत्र जांच की रिपोर्ट ।

और निष्पक्ष सम्मतियां ।

अन्याय कभी छिपाने से नहीं छिपता। अन्त में वह प्रगट हो ही जाता है। यद्यपि विलायत के कालोनियल आफिस ने फिजी की इस दुर्घटना में के वृत्तान्त को छिपाने की बहुत कोशिश की, भारत सरकार ने अपनी कर्तव्य शून्यता से इस अन्याय को ढकने का भरपूर प्रयत्न किया और फिजी गव- र्मेण्ट ने इसकी लीपा पोती करने में कोई कसर नहीं रक्खी

लेकिन ये सब प्रयत्न निष्फल हुए। यह अन्याय छिपाने से नहीं छिप सका। हम यहां पर न्यूज़ीलैन्ड की पार्लामेन्ट के सदस्य मिस्टर एच० ई० हालैण्ड की रिपोर्ट को उद्धृत करते हैं उससे पाठकों को अच्छी तरह ज्ञात हो जावेगा कि फिजी के गवर्नर के ख़रीते की बातें कितनी निराधार और असत्य हैं। यह बात ध्यान देने योग्य है कि जब न्यूज़ीलैण्ड की पार्लामेण्ट ने अपने सिपाही बेचारे फिज़ी प्रवासी भारतीयों को दबाने के लिये भेजे थे, उस समय न्याय प्रिय मिस्टर हालैण्ड ने ही अपनी आवाज़ इस अनुचित कार्य्य के विरुद्ध उठाई थी। इसके सिवाय यह बात भी ख़्याल में रखनी चाहिये कि सर जेम्स ऐलन ने जो न्यूज़ीलैण्ड वाली पार्लामेण्ट की पार्टी के मुखिया थे, मिस्टर हालैण्ड तथा उनके साथियों से कहा था कि वे फिजी के आदिम निवासियों और हिन्दुस्तानियों से किसी प्रकार की बात चीत न करें। मिस्टर हालैण्ड ने इस अनुचित आज्ञा को नहीं माना उन्होंने हिन्दुस्तानियों से बात चीत की और पिछले बल्वे की जांच पड़ताल भी की। इस जांच की रिपोर्ट माओरीलैण्ड वर्कर्स नामक पत्र में छपी थी, जो न्यूज़ीलैण्ड के मज़दूर सँघ तथा मज़दूर दल का मुख पत्र है। इस रिपोर्ट पर मिस्टर हालैण्ड के जो न्यूज़ीलैण्ड पार्लामेण्ट की लेबर पार्टी के प्रधान हैं, हस्ताक्षर हैं।

मिस्टर हालैण्ड की स्वतन्त्र जाँच की रिपोर्ट का-अनुवाद।

"फिजी और भारतवासी"

फिजी में हमें हिन्दुस्तानी मज़दूरों से वहां के पिछले उपद्रवों के कारणों के विषय में पूछताछ करने का अवसर मिला। हमारे फिजी पहुंचने के वाद प्रातःकाल में जब कि हमारा जहाज़ "मोकैया" बन्दरगाह में खड़ा हुआ था, सर जेम्स ऐलन ने हमसे यह शर्त करानी चाही कि हम कुली लोगों से वातचीत न करें। हम लोग यह शर्त करने के लिये तैयार न थे और इसकी सूचना भी हमने सरजेम्सको दे दी। जहाज़ से उतरने के वाद हमें फिजी के गोरे लोगों ने यह विश्वास दिलाया कि फिजी के उपद्रव के कारण पूर्ण-तया राजनैतिक थे। उन लोगों ने कहा कि हिन्दुस्तानी आदमी गोरे लोगों की तरह राजनैतिक और सामाजिक अधिकार चाहते हैं और यह वात अचिन्त्य और असम्भव है। लेकिन जांच करने पर हमें पता लगा कि इस हड़ताल का प्रारम्भिक कारण यह था कि एक ओवरसियर ने सड़कों पर काम करने वाले मज़दूरों के काम के घण्टों का आठ से नौ करने की कोशिश की थी। इसके वाद रोजाना पांच शिलिङ्ग मज़दूरी की जो मांग हिन्दुस्तानी मज़दूरों ने पेश की थी, इसकी वजह यह थी कि खाने पीने का खर्च बहुत बढ़

गया है। हमारी सम्मति में उनकी मांग बिल्कुल न्याययुक्त थी। हिन्दुस्तानियों के रहने के घरों की हालत हमने बहुत कुछ वैसी ही पाई जैसी कि रैवरैण्ड बर्टन और रैवरैण्ड सी० ऐफ० ऐण्ड्रूज ने पहिले वर्णन की थी, यद्यपि इतने दिनों बाद अब सी० ऐस०, आर० कम्पनी इस बुराई को कम करने के लिये प्रयत्न कर रही है। स्वयं हिन्दुस्तानियों से जो वृत्तान्त हमें ज्ञात हुआ और बहुत से गोरे लोगों से भी जो हालात हमें मालूम हुये उनसे हम निस्सन्देह कह सकते हैं कि रैवरैण्ड ऐण्ड्रूज ने कुलियों के मकानों की घोर दुराचार-पूर्ण स्थिति का जो वर्णन किया है वह पक्के प्रमाणों पर निर्भर है। यह बात हम निश्चय पूर्वक कह सकते हैं कि भयंकर बदचलनी अब भी खूब फैली हुई है। जिन लोगों की बात प्रामाणिक समझी जाती है उनके कथन हमारे पास यह सिद्ध करने के लिये मौजूद हैं कि हिन्दुस्तानी अब भी पीटे जाते हैं, वे मनुष्य पद से नीचे समझे जाते हैं और उनके साथ बर्ताव भी वैसा ही किया जाता है मानों वे मनुष्य नहीं। जिन गोरे लोगों के साथ हमारा संसर्ग हुआ उनमें से अधिकांश हिन्दुस्तानियों की अत्यन्त निन्दा करते थे लेकिन जब हमने उन्हें बतलाया कि इस प्रश्न को हल करने का एक मात्र उपाय यह है कि हिन्दुस्तानी अपने मुल्क को वापिस भेज दिये जावें तो फ़ौरन ही हमारे सामने यह ऐतराज़ पेश किया जाता था "लेकिन

फिर हमें सस्ते मज़दूर भी तो चाहिये।"स्वयं हिन्दुस्तानियों ने हमें विश्वास दिलाया कि वे फिजी के आर्थिक और राजनैतिक ज़ुल्मों से बचने के लिये वे खुद सब के सब एक साथ ही फिजी छोड़ जाने के लिये तैयार हैं और जहाज़ों के न मिलने के कारण बहुत से आदमी जानेसे रुके हुये हैं। हिन्दुस्तानियों का कोई भी राजनैतिक स्वत्व नहीं है, न उन्हें वोट देने का अधिकार ही है, और जिन क़ानूनों के आधीन रहने के लिये वे मजबूर किये जाते हैं उन कानूनों के बनाने में उनका कुछ भी हाथ नहीं है। समाज में उनका कुछ भी पद नहीं है। हड़ताल के बाद ये लोग अपने दरवाजे के बाहिर नहीं निकल सकते थे। अगर बिना आज्ञापत्र के निकलते थे तो उनके पकड़े जाने का बराबर ख़तरा रहता था। हड़ताल के दिनों में कोई दो सौ हिन्दुस्तानी पकड़े गए थे और उन को साल भर के कठिन कारावास तक का दण्ड दिया गया। यह मानी हुई बात है कि अगर हिन्दुस्तानी फिजी में रहें तो कुछ वर्षों में ही वे फिजी की मुख्य जाति बन जायेंगे। पिछले तीस चालीस वर्षों में जहां फिजियन लोगों की तादाद में हजारों की कमी होगई है, वहीं हिन्दुस्तानी की संख्या बहुत ज्यादः बढ़ गई है। यदि हिन्दुस्तानी फिजी में रहें तो उन्हें आर्थिक और राजनैतिक समानता के अधिकार मिलने ही चाहिये। उनके मज़दूर होने का पद ही उन्हें यह अकाट्य अधिकार प्रदान करता है

लेकिन हमारी यह जोरदार सम्मति है कि इस विकट प्रश्न को, जो कि फिजी में भयंकर रूप धारण कर रहा है, हल करने का एक ही उपाय है और वह यह कि हिन्दुस्तानी अपने देश को वापिस भेजदिये जांय।

फिजी से वापस आने पर हमैं तार द्वारा यह सूचना मिली है कि फिजी के गवर्नर साहबने मिस्टर डा० ऐम० मणिलाल ऐम० ए० ऐल० ऐल० बी० को (जो फिजी में बैरिस्टरी करते हैं, वहां के हिन्दुस्तानियों के नेता समझे जाते और हम भी जिनसे मिले थे) सूवा से निकल जाने की आज्ञा दे दी हैं। हमें आशंका है कि गवर्नर साहब की इस नीति से फिजी भर के हिन्दुस्तानियों में घोर असन्तोष फैलेगा।"

मिस्टर हालैण्ड तथा न्यूज़ीलैन्ड के श्रम जीवी दल का इस स्वतंत्र जांच तथा निष्पक्ष रिपोर्ट के लिये हम उनके कृतज्ञ हैं। फिजी प्रवासी हिन्दुस्तानियों के घर वापिस भेजे जाने का प्रश्न एक विवाद ग्रस्त प्रश्न है उसपर हम इस पुस्तक के अन्तिम भाग में विचार करेंगे।

न्यूज़ीलैण्ड सरकार की नीचता

न्यूजीलैण्ड सरकार ने फिजी की दुर्घटना के सम्बन्ध में किस नीचता के साथ भाग लिया इसका वर्णन आकलैण्ड

(न्यूज़ीलैण्ड) की Walsh's magazine नामक पत्रिका ने इस प्रकार किया था।

Fiji is not a part of Newzealand, the evil deeds of the sugar growers may not directly affect us or be laid at our door, but it is dragging Newzealand's name in the mud for the Government to send armed forces at Newzealand's expense to help to do the dirty work of the sugar companies. If, as alleged the sugar companies are paying, then it is worse still, to say that a gang of men who were fined heavily for defying the laws of Newzealand, can pay the Newzealand Govern ment to do its dirty work is enough to sicken every Newzealander. If the sugar company can pay for strike breaking, white terrors, and subsidize every anti-labour campaign in Fiji, Australia and Newzealand (it paid £ 50,000 in one lump to fight the Australian Referendum) it can afford to pay its slaves a living wage. The Massey Government may be willing to drag our Dominion's name in

the mire, but the public should object vigorously. Quite recently a press campaign was run in Newzealand to "prepare" the people for this stunt. We had pictures of Indian life in Fiji showing the Indians in Paradise; other people were wondering whether the Indians would not some day massacre the English, and Dr Twitchwell, Bishop of Malanesia, who is heading a "recruiting" expedition for the growers, made a lot of statements proving how nice it was for Indians to slave in Fiji."

अर्थात् "फिजी द्वीप न्यूज़ीलैण्ड का कोई भाग नहीं है, और शक्कर की कम्पनियों के पापों के लिये हम लोग सीधे तौर पर भले ही जिम्मेदार न हों लेकिन न्यूज़ीलैण्ड के खर्च से शक्कर की कम्पनियों का गन्दा काम करने के लिये यहां के सशस्त्र सैनिक भेजना मानों हमारे देश के नाम को कीचड़ में घसीटना है। कहा जाता है कि इन कम्पनियों ने हमारे देश के सिपाहियों का खर्च हमारी सरकार को दिया था, अगर यह बात सच है तो यह और भी अधिक निन्दनीय है। न्यूज़ीलैण्ड के कानून को भङ्ग करने के कारण इन कम्पनियों के आदमियों पर बहुत भारी जुर्माना पहले हो चुका है, अब ये ही कम्पनियां हमारी सरकार को रुपये

देकर अपना गन्दा काम हमारे सिपाहियों से कराती है, इस बात को सुनकर प्रत्येक न्यूज़ीलैण्ड निवासी को बहुत बुरा लगेगा।

अगर हड़ताल तुड़वाने के लिये, गोरों के द्वारा अत्याचार कराने के लिए, मज़दूरों के ख़िलाफ़ प्रचार कार्य्य में मदद देने के लिये सी० ऐस० आर० कम्पनी के पास रुपया है, तो उसके पास अपने गुलामों को खाने पीने की गुजर के लायक वेतन देने के लिये भी रुपया होना चाहिये।

फिजी, आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैण्ड में मज़दूर दल के विरोध के लिये यह कम्पनी लाखों रुपये खर्च करती है आस्ट्रेलिया में इसी काम के लिये इस ने ५० हजार पौण्ड खर्च किये थे। जनाब मैसी साहब, जो हमारे प्रधान मन्त्री है, और उनकी सरकार भले ही हमारे देश के नाम को दल दल में घसीटने के लिये राज़ी हों लेकिन सर्वसाधारण को इस नीति का घोर विरोध करना चाहिये। थोड़े दिन हुये लोगों को इस पतित कार्य्य के लिये तैयार करने के वास्ते न्यूज़ीलैण्ड के पत्रों द्वारा एक आन्दोलन कराया गया था। हम लोगों को फिजी के हिन्दुस्तानियों के जीवन के चित्र दिखलाकर यह बतलाया गया था कि फिजी हिन्दुस्तानियों के लिये स्वर्ग तुल्य है, कितने ही आदमी दिल में आश्चर्य्य कर रहे थे कि कहीं ये हिन्दुस्तानी फिजी के अँग्रेज़ों को मार न डालें, और मेलीनीशिया के बिशप डाक्टर ट्विचैल

"I want to say that any Government which sent an ármed Force to help the Fiji Government responsible for conditions like that is an absolute menace to the working classes of this Dominion. I go further than that. I will say this: that those Indians were fighting for better conditions, that they were helped by their women, that their women stood up right nobly and well to help the men; and I saw nothing in mv whole trip that so inspired me. I heard nothing on my Island trip that was so inspiring as an account given by Mr D. M. Manilal L. L. B. of those women waiting on him to ask that Mrs. Manilal—a high-caste Indián woman—might go and help them. These woman then waited upon her, and brought a motor—car round and begged her to come and help them. They promised thát they would give up their smoking; they promised to try ánd do away with their jewellery, which is their characteristic temptation, if Mrs Manilal would only come back and help

them. They said it was absolutely impossible for them to live on the 2. Shillings a day which was given to their men,'and they had to supplement their earnings by prostitution: and I say that the Newzealand Government sent an armed Force to Eiji to Force the Indians back to their wretched conditions, and to force those Indian woman back to their brothels. I say it is a scandal to this Dominion and I shall not hesitate to raise my voice against the action of the Government in that respect."

अर्थात् "मैं यह बात कहना चाहता हूं कि जो सरकार फिजी गवर्मेण्ट को, जो इस दुर्दशा की जिम्मेवार है सशस्त्र सेना भेजती है वह हमारे इस देश के मज़दूरों के लिये पूर्णतया भयंकर वस्तु है। यही नहीं मैं तो ऐसी सरकार के विषयमें इससे भी अधिक कड़ी बात कहने के लिये तैयार हूं फिजी के ये हिन्दुस्तानी अपनी हालत सुधारने के लिये लड़ रहे थे। उन के इस झगड़े में उन की स्त्रियों ने भी सहायता दी थी। ये स्त्रियां बड़ी वीरता और उदारता के साथ अपने पुरुषों को मदद देने के लिये खड़ी हुई थीं। अपनी फिजी यात्रा में मुझे कोई भी बात इतनी उत्साह-

अलफ नहीं सुनाई पड़ी जैसी कि यह बात थी। डाक्टर मणिलाल ने मुझे इस घटना का जो वृत्तान्त सुनाया था उससे मुझे जितना उत्साह हुआ उतना किसी दूसरी बात से नहीं हुआ। इन हिन्दुस्तानी स्त्रियों ने डाक्टर मणिलाल के पास जाकर प्रार्थना की थी कि आप मिसेज़ मणिलाल को इस कार्य्य में हमारी सहायता करने के लिये भेज दीजिये मिसेज मणिलाल एक उच्च जातीय स्त्री हैं। हिन्दुस्तानी औरतें फिर एक मोटर कार लेकर उनके पास पहुंची और उनसे प्रार्थना की आप हमारी मदद कीजिये।

इन औरतों ने वायदा किया कि हम तमाखू पीना छोड़ देंगी और हम गहने का शौक़ भी छोड़ देंगी अगर मिसेज़ मणिलाल हमारी सहायता करें। यह बात ध्यान देने योग्य है कि इन औरतों को गहनों का बड़ा शौक़ है। इन औरतों ने कहा " २ शिलिङ्ग रोज़ की मज़दूरी पर निर्वाह करना हमारे लिये असम्भव है। हमारे पतियों को २ शिलिङ्ग मिलता है और उससे हमारी गुज़र नहीं होती और इस कारण हमें व्यभिचार करना पड़ता है। मैं कहता हूं कि हमारी न्यूज़ीलैण्ड सरकार ने अपनी हथियार बन्द फौज भेजकर इन हिन्दुस्तानियों को इस बात के लिये मजबूर किया कि वे पहले की दुर्दशा में अपना जीवन व्यतीत करें और हिन्दुस्तानी स्त्रियों को इस बात के लिये बाध्य किया कि वे पहले की भांति व्यभिचार करके अपना जीवन निर्वाह करें। मैं

कहता हूं कि हमारे देश न्यूज़ीलैण्ड के लिये यह बड़े कलङ्क की बात है, और बिना किसी संकोच के मैं अपनी आवाज़ ग्वर्नमेण्ट की इस कार्रवाई के ख़िलाफ़ उठाऊंगा।"

जो लोग ब्रिटिश साम्राज्य के नागरिक होने का अभिमान किया करते हैं वे अपनी आंखें खोलकर देखें कि ब्रिटिश साम्राज्य क्या चीज है। फिजी के जो गोरे हमारे देश से फिर सस्ते मजदूर मंगाना चाहते हैं उनसे हम पूछते हैं कि इस बात की क्या गारण्टी है कि भविष्य में हड़ताल करने वाले हिन्दुस्तानी मजदूरों पर अत्याचार करने के लिये न्यूज़ीलैण्ड से गोरे सिपाही न बुलाये जावेंगे? ब्रिटिश-साम्राज्य की एकता का सीधा साधा अर्थ यही है कि साम्राज्य के गोरे लोग मिलकर काले लोगों पर मनमाने अत्याचार करें। फिजी प्रवासी भारतीयों की हड़ताल के अवसर पर आस्ट्रेलिया ने लड़ाई का जहाज और न्यूज़ीलैण्ड ने सिपाही तथा तोप भेजकर इस बात को अच्छी तरह सिद्ध कर दिया है।

"राउण्डटेबिल" पत्रिका की सम्मति।

पाठकों को यह बतलाने की आवश्यकता नहीं है कि "राउण्डटेबिल" नामक त्रैमासिक पत्रिका की बात, ब्रिटिश

साम्राज्य सम्बन्धी प्रश्नों के विषयमें कितनी प्रमाणिक बात मानी जाती हैं। इस पत्रिका ने फिजी की दुर्घटना का वर्णन करते हुये सितम्बर सन् १९२० के अङ्क में लिखा था।

"The Government took the easy course of ascribing the trouble to "agitators" and ordered the Hindu barrister to leave the affected area. But the matter cannot be cured thus. The Nemesis of an economic policy of cheap Oriental labour and large profits is upon us, and like the Negro problem of America, it will tax the resources of statesmanship to counter the results of its reckless immorality"

अर्थात् "फिजी सरकार ने एक बहुत सरल मार्ग का अनुकरण किया, उसने इन तमाम झगड़ों का दोष आन्दोलन-कारियों के सिर मढ़ दिया और एक हिन्दू बैरिस्टर को उन स्थानों से जहां ये झगड़े हुये थे, निकल जाने का हुक्म दे दिया। लेकिन इस रोग का यह इलाज सफल नहीं हो सकता। हम लोग पूर्वी देशों के सस्ते मजदूरों के द्वारा बड़े २ मुनाफे उठाना चाहते हैं और सस्ती मजदूरी तथा भारी मुनाफे की नीति का भूत हमारे सिर पर सवार है। अमरीका के हवशी लोगों के प्रश्न की तरह :यह प्रश्न भी बड़ा गम्भीर है। सस्ते मज़दूरों द्वारा बडे २ मुनाफे उठाने

की इस नीति के द्वारा जो भयंकर और अन्यायपूर्ण परि णाम होते हैं उन्हें रोकने के लिये हमें अपनी सारी राजः नीतिज्ञता खर्च करनी पड़ेगी।"

यहां जो कुछ राउन्डटेबिल पत्रिका ने कहा है वह बिल्कुल सोलह आना ठीक है। सी० एस० आर० कम्पनी तथा फिजी के प्लाण्टरों के सिर पर सस्ती मज़दूरी द्वारा भारी मुनाफे उठाने का भूत सचमुच सवार है और इसीके कारण फिजी प्रवासी भारतीयों पर उन्होंने इतने अत्याचार किये हैं। जब तक फिजी के गोरों को भारत से अथवा किसी अन्य देश से सस्ते मज़दूर मिलते रहेंगे तब तक उन के सिर का भूत दूर नहीं हो सकता और न फिजी प्रवासी भारतीयों के कष्ट ही दूर हो सकते हैं। आगे चलकर राउण्डटेबिल पत्रिका ने लिखा था।

"The interests which exploited the indentured labour are now arranging to import free Indian labour, since cheap labour they must have and they are indifferent to racial problems. It is true that some planters employ Fijians exclusively but they required higher pay and better treatment than the Indian coolie, a by no means universal solution of the difficulty can be looked for in this direction."

अर्थात् "जो लोग शर्तबंधे मज़दूरों के द्वारा अपना स्वार्थ साधन करते थे वे अब हिन्दुस्तान से स्वतन्त्र मज़दूर मँगानेका प्रबन्ध कर रहे हैं। उन्हें तो सस्ते मज़दूर चाहिये उन्हें इस बात की कुछ चिन्ता नहीं कि इन सस्ते मज़दूरों की वजह से क्या क्या जातीय प्रश्न उठ खड़े होंगे। यह बात सच है कि कुछ प्लाण्टर ऐसे भी हैं जो केवल फिजियन लोगों को ही नौकर रखते हैं लेकिन फिजियन आदमी हिन्दुस्तानी कुलियों की अपेक्षा अधिक वेतन और उत्तमतर वर्ताव चाहते हैं इस कारण यह कठिन प्रश्न फिजियनों को नौकर रखने से हल नहीं हो सकता।"

इस प्रकार यह सम्पूर्ण प्रश्न सस्ती मज़दूरी का है। अपने भाइयों पर किये गये अनेक अत्याचारों का सच्चा २ वृत्तान्त सुनने के बाद भी क्या हम लोग फिजी को सस्ते 'गुलाम' भेजेंगे?।

विलायतके टाइम्सपत्रकी सम्मति

विलायत में फिजी की दुर्घटना किस प्रकार दबादी गई।

विलायत के टाइम्स के व्यापारिक अङ्क में निम्न-लिखित सम्पादकीय टिप्पणी छपी थी।

"The events related have created a most unfortunate impression in India, and taken in conjunction with the grievances of Indians in East Africa and elsewhere, have done a great deal to destroy the possibility of any Colony, which may wish to attract Indian labour, succeeding in its desire. It is not unlikely that the hitch in the negotiations with regard to the proposed visit of an Indian commission to British Guiana to examine the prospects for Indian immigrants, in that colony may be traced to the recent occurrences in Fiji. Apparently half the Indians residents in the Pacific Colony have asked to be repatriated and the sugar planters are now looking to China for labourers, a course which will certainly not be viewed with favour or even tolerance in Australia and Newzealand. At this distance it is difficult to form an absolutely accurate opinion as to the responsibility for these events which culminated in the use of

firearms against the Indian strikers, but we are entitled to resent the veil of official secrecy with which the troubles in Fiji have been almost completely hidden from the people of this country."

अर्थात "जिन घटनाओं का वर्णन यहां किया गया है उनकी वजह से हिन्दुस्तान में एक अत्यन्त दुर्भाग्य पूर्ण भाव उत्पन्न होगया है और फिजी की इन घटनाओं के कारण, तथा पूर्वी अफ्रिका और अन्य स्थानों में हिन्दुस्तानियों को जो कष्ट हैं उनकी वजह से, किसी भी उपनिवेश को, जो हिन्दुस्तान से मजदूर मँगाना चाहें, अपने प्रयत्न में सफलता होने की सम्भावना नहीं है। ब्रिटिश गायना को जो कमीशन भारत से प्रवासी हिन्दुस्तानियों के लिये सुभीतों की जांच करने के वास्ते जाने वाला था उसके मार्ग में जो गड़बड़ हुई है उसका कारण भी फिजी की ये घटनायें ही हैं। ऐसा प्रगट होता है कि फिजी के आधे हिन्दुस्तानी अपने घर को वापिस जाना चाहते हैं, और शक्कर के प्लाण्टर चीन देश से मज़दूरों की आशा लगाये हुए हैं लेकिन आस्ट्रेलिया और चांस के गोरे फिजी में चीनी मज़दूर लाये जानेके प्रस्ताव को पसन्द नहीं करेंगे, पसन्द करना तो दूर रहा वे इसे सहन भी नहीं कर सकते। इतनी दूर बैठे हुये यह बात बिल्कुल ठीक

तरह से बतलाना कठिन है कि जिन घटनाओं के कारण फिजी के हिन्दुस्तानी हड़तालियों पर गोली चलानी पड़ी उसका जिम्मेवार कौन है लेकिन अधिकारी वर्ग ने जिस तरह से फिजी की दुर्घटना को सर्वसाधारण से छुपा कर इस देश में गुप्त रक्खा है और जिस तरह इस दुर्घटना पर पर्दा डाल दिया है उसका हम विरोध करते हैं और ऐसा करने का हमें अधिकार है।" इससे पाठक अनुमान कर सकते हैं कि विलायत के कालोनियल आफिस ने इस दुर्घटना को विलायत में गुप्त रखकर कितनी भारी चालाकी से काम लिया था । फिजी प्रवासी भारतीयों पर इतने अत्याचार हुए गोली चली देश निकाले दिये गये, मार्शल्ला जारी रही लेकिन विलायत में यह समाचार पहुंच ही नहीं पाये; पहुंचते कैसे कालोनियल आफिस ने उनको दबाने की भरपूर चेष्टा की थी । यदि मिस्टर पोलक इस विषय में कुछ भी न लिखते तो विलायत वाले इस बारे में बिल्कुल अन्धकार में रहते ।

पार्लामेन्ट के मेम्बर मिस्टर टी० जे० बेनट साहब

की सम्मति:—

मिस्टर बेनट ने विलायत के टाइम्स पत्र में फिजी की दुर्दशा के विषय में लिखा था।

"In another part of the Empire Indians have had occasion for misgiving. We may well await the arrival of the Fiji Government's report upon recent occurrances there. There may or may not be justification for recent deportations, though the order prohibiting an Indian barrister and four other Indians from residing in certain parts of the Colony during the next two yeras will need explanation. For the presence of Newzealand troops in Fiji and their intervention in labour disputes, no other explanation has been given by the Colonial office than that their assistance is doubt less considered desirable by the Fiji authorities. This, it may be hoped, is not the last word on the subject. Before that last word is

spoken some consideration should be given to the question whether a Crown Colony should not be made capable of keeping its own peace by its own forces. We are not going to develope an Imperial spirit amongst the people of India by exhibiting the unity of the Empire in the unattractive guise of the Dominion bayonets brought in aid for the suppression of civil disturbances in crown colonies. Obviously we have not got upon the right line if that is the best we can do to convince the Indian of the comfortable place that is assured to him as a citizen of the Empire."

अर्थात् "ब्रिटिश साम्राज्य के एक अन्य भागमें जो घटनाएँ हुई हैं उनके कारण हिन्दुस्तानियों को आशंका करने का अवसर मिला है। पिछली घटनाओं के विषय में फिजी सरकार की रिपोर्ट की हमें प्रतीक्षा करनी चाहिये। देश निकाले का जो दण्ड हिन्दुस्तानियों को दिया गया है उसके लिये न्याययुक्त कारण हों अथवा न हों .लेकिन एक हिन्दुस्तानी वैरिस्टर को तथा दूसरे चार आदमियों को फिजी द्वीप के विशेष विशेष भागों में दो वर्ष तक न रहने देने को जो आज्ञा दी गई थी उसके लिये जवाब तलब किया जाना चाहिये। फिजी में न्यूज़ीलैण्ड की फौज क्यों भेजी गई

और मज़दूरों के झगड़ों को तय करने में, न्यूज़ीलैण्ड की इस फौज ने क्यों दख़ल दिया था, इस बात का जवाब कालोनियल आफिस ने सिर्फ यही दिया है कि फिजी के अधिकारी–वर्ग इस सहायता को निस्सन्देह आवश्यक समझते थे। आशा है कि यह उत्तर इस विषय का अन्तिम निश्चय न माना जावेगा। इस मामले के बारे में अन्तिम निश्चय करने के पहले इस प्रश्न पर भी कुछ ख़्याल करना चाहिये कि क्या राजकीय उपनिवेशों को अपनी सेना और शक्ति द्वारा ही अपने यहां शांति क़ायम रखनी चाहिये, या दूसरे उपनिवेशों से भी फौज मंगानी चाहिये। राजकीय उपनिवेशों के झगड़ों को दबाने के लिये ब्रिटिश संस्थाओं से (न्यूज़ीलैण्ड तथा आस्ट्रेलिया से) सैनिक मंगाना और उन सैनिकों की बर्छियों के द्वारा इन झगड़ों को निबटाना, यह कोई बुद्धिमत्ता-पूर्ण काम नहीं है। इस तरह के कामों से हिन्दुस्तानियों के दिल में साम्राज्य की एकता के भावों का विकाश नहीं हो सकता। हिन्दुस्तानियों को यह विश्वास दिलाने के लिये कि वे ब्रिटिश साम्राज्य के नागरिक हैं और ब्रिटिश साम्राज्य में वे आराम के साथ रह सकते हैं; यदि हमारे पास यही उपाय है, तो सचमुच हमें अभी तक कोई ठीक रास्ता नहीं मिला।"

मिस्टर वैनट का कथन बिल्कुल ठीक है। साम्राज्य की एकता का अगर यही अर्थ है कि फिजी के भूखों मरने वाले

अत्याचार पीड़ित हिन्दुस्तानी मज़दूरों को दबाने के लिये और उनकी हड़ताल तोड़ने के लिये आस्ट्रेलिया से लड़ाई के जहाज़ और न्यूज़ीलैण्ड से फौज मगाई जावें, तो इस एकता को हम दूर से ही नमस्कार करते हैं? फिजी की सम्पूर्ण दुर्घटना में सब से अधिक दुःख दायक बात यही है कि फिजी, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड इन तीन शक्तियों ने मिलकर अधमरे भूखे हिन्दुस्तानियों की न्यायपूर्ण हड़ताल को तोड़ा।

फिजी की दुर्घटना से हमें क्या
शिक्षा मिल सकती है।

फिजी की दुर्घटना से हमें अनेक शिक्षायें मिल सकी हैं।

पहिली शिक्षा—जो हमें इससे मिलती है वह यह है कि प्लाण्टरों की मनोमोहक बातों पर विश्वास करके हिन्दुस्तान के सस्ते मजदूर सात समुद्र पार भेज देना अव्वल दर्जे की मूर्खता है। अभी ब्रिटिश गायना वाले हम से कह रहे हैं "हमारे यहां हिन्दुस्तानियों को बिल्कुल समान अधिकार प्राप्त है, हम ब्रिटिश गायना को बिल्कुल भारतीय उपनिवेश बनाना चाहते हैं" फिजी की दुर्घटना हमें डङ्के की चोट सचेत कर रही है कि इस प्रकार की बातों में फँसना बड़ी भारी भूल है।

दूसरी शिक्षा—हमैं यह प्राप्त होती है कि ब्रिटिश पूंजी वालों के प्रभाव से प्रभावित साम्राज्य के अधिकारियों के वायदों पर यक़ीन करना अपने पैरों आप कुल्हाडी मारना है। सन् १८७५ ई० में लार्ड सेलिसवरी ने हमैं विश्वास दिलाया था।

"Above all things we must confidently expect, as an indispensible condition of the proposed arrangements that the colonial laws and their administration will be such that Indian settlers, who have completed the terms of service to which they agreed, as the return for the expense of bringing them to the colonies, will be free men in all respects, with privileges no whit inferior to those of any other class of Her Majesty's subjects resident in the colonies"

अर्थात् "सब बातों की बात तो यह है कि प्रस्तावित प्रवन्ध की इस अटूट शर्त पर हमैं विश्वास पूर्वक आशा करनी चाहिये कि उपनिवेशों के कानून और उनका प्रयोग ऐसा होगा कि जिन प्रवासी भारतीयों के शर्तनामे की अवधि पूरी हो जावेगी वे सब प्रकार से स्वतन्त्र होंगे और उपनिवेशों में रहने वाली महारानी की अन्य देशीय प्रजा के अधिकारों से उनके अधिकार किसी प्रकार कम न होंगे"।

यदि कोई हम से पूछे कि यह "अटूट शर्त" कहां गई तो हम फौरन यही कहेंगे कि उसी लोक को जहां प्रेसीडेण्ट विलसन की १४ शर्तें गईं हैं! यदि यह प्रतिज्ञा पूरी की जाती, यदि आज दिन फिजी प्रवासी हिन्दुस्तानियों को वहां के यूरोपियनों के समान अधिकार होते तो क्या यह सम्भव था कि फिजी के हिन्दुस्तनियों की यह दुर्दशा होती?

तीसरी शिक्षा—हमें फिजी की दुर्घटना से यह मिलती है कि जब तक भारत सरकार उतनी ही निरंकुश (ब्यूरोक्रेट) बनी रहेगी जितनी कि वह आजकल है तब तक प्रवासी भारतीयों पर इसी तरह के जुल्म दिन दहाड़े हुआ करेंगे। आज यदि भारत सरकार सचमुच ही भारतीय सरकार होती तो क्या मजाल थी कि फिजी के गोरे हमारे भाई बहनों पर इस तरह के जुल्म कर सकते? आज यदि फिजी द्वीप किसी दूसरी जाति के अधिकार में होता और वहां पर १६२ अंग्रेजों को जेलखाने की हवा खिलाई गई होती तथा अंग्रेज स्त्रियों के साथ वही व्यवहार किया जाता जो हिन्दुस्तानी स्त्रियों के साथ किया गया है तो आज न जाने प्रशांत महासागर ब्रिटिश जहाजी बेड़े द्वारा कितना अशांत बन गया होता! लेकिन हम लोग हिन्दुस्तानी है—हां भाई हिन्दुस्तानी—जिन्हें चाहे मारो, पीटो, गोली से मार दो, चाहे कुछ करो, न कोई हमारा

धनी धोरी, न कोई बात पूछने वाला! सच बात तो यह है कि जो घर पर ही, अपने देश में ही, विदेशी हैं उनका विदेश में अपमानित होना स्वाभाविक ही है।

चौथी शिक्षा—हमें यह मिलती है कि प्यासे चातक की तरह ब्रिटिश न्याय-रूपी स्वांति बिन्दु की दुहाई देते रहना कोरमकोर मूर्खता है। सौभाग्य से अथवा दुर्भाग्य से ब्रिटिश-जस्टिस आकाश-पुष्प अथवा वन्ध्यापुत्र की तरह की चीज़ हो गई है। परमात्मा को हम असंख्य धन्यवाद देंगे यदि पञ्जाब तथा फिजी की दुर्घटनाओं को जान लेने के बाद इस ब्रिटिश-न्याय की व्यर्थ ध्वनि से हमारे कान सुरक्षित रहें। ब्रिटेन के साम्राज्य-वादियों से न्याय की कुछ भी आशा न करते हुए हमें अपनी शक्ति और परिश्रम से देश में स्वराज्य प्राप्त करने के लिये प्रयत्न करना चाहिये और जब तक हमें स्वराज्य प्राप्त न हो तब तक एक भी मज़दूर किसी प्रथा के द्वारा विदेश को न भेजना चाहिये।

प्रिय पाठक गण! फिजी की प्रथम हड़ताल का, जिसे फिजी के गोरों ने खुल्लमखुल्ला विद्रोह बतलाया था—वर्णन समाप्त हो गया। समय आवेगा जब हम लोग इस वर्णन को पढ़कर कह सकेंगे कि पराधीनता के ज़माने में हमें और हमारे प्रवासी भाइयों को कैसे २ कष्ट उठाने पड़े।

द्वितीय हड़ताल।

फिजी द्वीप के प्रवासी भारतीयों की प्रथम हड़ताल का वृत्तान्त पाठक पढ़ ही चुके हैं अब द्वितीय हड़ताल का संक्षिप्त विवरण यहां दिया जावेगा। यह हड़ताल ता० १२ फर्वरी सन् १६२१ से प्रारम्भ हुई और लगभग ६ महीने तक जारी रही।

मुख्यतया यह हड़ताल बो, लतोका, नादी, नन्द्रोगा, और रा में फैली। कितने ही मजदूर गोरों की कोठियों को छोड़ २ कर अपने किसान भाइयों के पास झोंपड़ों में जा बसे। इस हड़ताल के विषय में निम्न-लिखित बातें ध्यान देने योग्य हैं।

(१) हड़ताल करने वालों की एकता।

(२) हड़तालियों का शांति मय व्यवहार।

(३) सी० एस० आर० कम्पनी की नीचता।

(४) फिजी सरकार का दब्बूपन।

(५) क्या इस हड़ताल का असहयोग आन्दोलन से कोई सम्बन्ध था?

एकता—हड़ताल करने वाले मजदूरों ने जो एकता उस समय दिखाई वह सचमुच ही आश्चर्य-जनक थी। मि० पर्सी. एस. एलिन. (Mr. Percy S. Allen) ने सिडनी मोर्निङ्ग हैराल्ड में लिखा था।

"The solidarity of the Indian people in the struggle was amazing, and the preparations for the seige they maintained was admirable. The recent strike was marked by an absence of any attempt on the part of the Indians to run foul of the laws of the Colony." अर्थात् "इस संग्राम में हिन्दुस्तानियों ने जो एकता दिखलाई वह आश्चर्य्योत्पादक थी, और वह तैयारियां भी प्रशंसनीय थीं जिनके द्वारा वे इतने दिनों तक हड़ताल पर डटे रहे। इस पिछली हड़ताल में यह एक खूबी थी कि इसमें हिन्दुस्तानियों ने फिजी उपनिवेश के किसी भी कानून का उल्लंघन नहीं किया।"

इस अवसर पर किसान भाइयों ने अपने मजदूर हड़ताली भाइयों को जिस उदारता के साथ आश्रय दिया वह वास्तव में अत्यन्त प्रशंसनीय है। इन किसानों ने यहां तक कहा था कि जब तक हमारे पास एक भी रोटी बचेगी तब तक हम आधी अपने इन हड़ताली भाइयों को देंगे। इस प्रतिज्ञा पर ये किसान बराबर दृढ़ रहे और इन्होंने हड़तालियों की सहायतार्थ बहुत कुछ अन्नदान किया।

इसके बाद शान्ति का उपदेश देने का कार्य्य हाथ में लिया गया। जिले २ में हड़तालियों की सभा होना प्रारम्भ हुआ। वाई लाई लाई में कई चार सभायें हुई। लतौका

जिले में साऊनारा ग्राम में नाद्री जिले की नवोदी नदी पर और ताबुआ जिले के मुगेरे ग्राम में भी सभायें हुईं । हड़तालियों ने अपने बारह प्रतिनिधि और दो मन्त्री नियुक्त किये, जिनको सी० एस० आर० कम्पनी के साथ बातचीत कर मामला तय करने का काम सौंपा गया । सी० ऐस० आर० कम्पनी के जनरल मैनेजर ने इस प्रतिनिधि मण्डल का बड़ा अपमान किया, लेकिन हड़ताली लोग फिर भी शान्ति पूर्वक रहे ।

शांतिमय व्यवहार—हड़ताल १२ फर्वरी को हुई थी, इसके लगभग २ महीने बाद फिजी के गवनर साहब ने अपनी ८ अप्रैल की स्पीच में कहा था ।

"The behaviour of the strikers has been so far entirely peacable and I hope it will remain so." अर्थात् "अब तक तो हड़तालियों का व्यवहार पूर्णतया शांतिमय रहा है और मुझे आशा है कि ये लोग भविष्य में भी शांति पूर्ण व्यवहार कायम रक्खेंगे"

१६ अप्रैल सन् १९२१ ई० को भारत सरकार ने जो सूचना पत्र फिजी की इस हडताल के विषयमें निकाला था उसमें उन्होंने लिखा था ।

"The Government of India have received intimation from the Governor of Fiji that the strike of the Indian labourers in the main island announced in the press communique,

dated March 10 still continues. The behaviour of the strikers is reported to be unexceptionable." अर्थात् "भारत सरकार को फिजी के गवर्नर से सूचना मिली है कि मुख्य द्वीप में हिन्दुस्तानियों की वह हड़ताल जिसका ज़िक्र १० मार्च के सूचनापत्र में किया गया था, अब तक जारी है। हड़तालियों के व्यवहार के विषय में कोई भी शिकायत नहीं की जा सकती"।

मिस्टर क्राम्पटन (Mr. Crompton C. B. E.) ने रामप्रसाद के मामले की अपील में कहा था।

"There has been no trouble at Ba and the strikers have behaved admirably, better than ány strikers I have heard of. If the defendant is responsible for the conduct of the strike he is to be more complimented than damned, as it is legal to strike ánd the strike in Ba has been conducted in a most orderly manner."

अर्थात् "बा में किसी प्रकार का उपद्रव नहीं हुआ, और हड़तालियों का व्यवहार प्रशंसनीय रहा है। मैंने किसी भी हड़ताल के आदमियों के ऐसे अच्छे बर्ताव की बात नहीं सुनी। अगर रामप्रसाद के ऊपर हड़ताल के संचालन की ज़िम्मेदारी है तो रामप्रसाद की निन्दा की अपेक्षा उस की प्रशंसा ही अधिक होनी चाहिये क्योंकि हड़ताल करना क़ानून के अनुसार जायज़ है और बा की

हड़ताल का संचालन अत्यन्त शान्तिपूर्वक किया गया है"

१४ जुलाई सन् १९२१ के "पेसिफिक एज" नामक पत्र में निम्नलिखित समाचार छपा था।

"Interviewed to day a prominent Government official, who recently returned from the north side of the island, told our representative that the Indians there, who are at present on strike, are behaving themselves in an exemplary manner and showing perfect civility to Europeans."

अर्थात् "सरकार के उच्च पदाधिकारी अफसर ने जो अभी फिजी के उत्तरी भाग से लौटा है हमारे संवाद दाता से बात चीत करते हुए कहा कि हड़ताल करने वाले हिन्दुस्तानियोंका व्यवहार आदर्श रूप है और वे लोग यूरोपियनों के साथ पूर्ण सभ्यता का वर्ताव करते हैं।"

इन सब सम्मतियों से यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि हड़ताल करने वाले हिन्दुस्तानियों ने बड़ी शान्ति और बड़ी योग्यता से काम लिया था। इन शान्तिमय भारतीयों के साथ सी० एस० आर० कम्पनी ने कैसा व्यवहार किया वह भी सुन लीजिये।

सी० एस० आर० कम्पनी की नीचता—

जब दिसम्बर सन् १९२० में गोरे प्लाण्टरों ने अपनी एक सभामें यह तय किया था कि हिन्दुस्तानी मज़दूरों को

जो ६ पैंस बोनस (अधिक वेतन) दिया जाता है वह ८ सप्ताह के बाद दिये जाने के बजाय प्रत्येक सप्ताह के बाद दिया जाना चाहिये तो सी० एस० आर० कम्पनी के अधिकारियों ने सिडनी से उन्हें पत्र भेजकर लिखा था "जो प्लाण्टर कम्पनी से रुपये पैसे की मदद लिया करते हैं उन्हें यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिये कि अगर वे हिन्दुस्तानियों को ६ पैंस का बोनस सप्ताह के सप्ताह चुका दिया करेंगे तो कम्पनी के उन प्लाण्टरों को कुछ भी आर्थिक सहायता नहीं देगी। जिन प्लाण्टरों को कम्पनीसे आर्थिक सहायता लेनी हो उन्हें अपने मज़दूरों को बोनस ८ सप्ताह बाद चुकाना चाहिये" इस प्रकार सी० एस० आर० कम्पनी ने प्लाण्टरों पर दबाव डालकर उन्हें हिन्दुस्तानियों के प्रति न्याय करने से रोका था।

इस कम्पनी ने हड़ताल के दिनों में कितने ही फिजियनों को काम पर लगाया था और उन्हें ३ शिलिङ्ग रोज वेतन और भोजन देती थी लेकिन यह कम्पनी भूखों मरने वाले हिन्दुस्तानी मज़दूरों को ढाई शिङ्लिग से अधिक एक पैंस भी देने के लिये तय्यार नहीं थी। यह बात ध्यान देने योग्य है कि जितना काम एक हिन्दुस्तानी मज़दूर कर सकता है उतना एक फिजियन मज़दूर बड़ी मुश्किल से कर सकता है और कभी २ तो दो फिजियन मज़दूरों का काम एक हिन्दुस्तानी मज़दूर के बराबर होता है।

कम्पनी की नीचताओं का वर्णन करते हुये मिस्टर Theo. D. Riaz थियो० डी० रियाज़ नामक एक गोरे ने अपने एक लेख में, जो १६ अगस्त सन् १६२१ के पैसीफिक एज में छपा था, लिखा था।

"The only cases of intimidation I have heard of are those where the C. S. R. Company has used threats towards the cane growers; both European and asiatic: No 1 is the case of some planters who were in Sydney at the commencement of the strike; they on their return to Fiji, told other planters that the manajing director had given warning that any planter who ran counter to the company would be dealt with. 2. The Company threatened the Indián cane growers that if their countrymen did not return to work for the company, the company would not accept their cane for crushing. 3. The Company threatened one On Hing, a Chinese cane grower (with some 2500 tons of cane to cut) that if he were to pay 3 shillings per day to Indians the company would not accept his cane for crushing, yet they agreed to him paying Chinamen £ 1 per week and food. 4. The Company have also intimated, through

the Planter's association that those cane growers who support the Company in the present trouble, in the matter of paying wages in accordance with a list submitted to them by the company will probably receive the 10/ bonus for all cane standing over from 1921.

If you can think of more contemptible and cowardly examples of bullying and intimidation—not to mention racial prosecution—then the examples above referred to commend me to them."

अर्थात् "डराने धमकाने की कोई मिसालें मुझे दीख पड़ीं तो वे सी०ऐस० आर०कम्पनी के बर्ताव में दीख पड़ीं। इस कम्पनी ने गन्ने उगाने वाले यूरोपियनों और एशियावासियों को धमकियां दी थीं।

नम्बर १—जब हड़ताल शुरू हुई थी तो कुछ प्लाण्टर लोग सिडनी में थे जब वे फिजी को लौटकर आये तो उन्हों ने दूसरे प्लाण्टरों से कहा कि सी० ऐस० आर०कम्पनी के मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर की यह सूचना है कि जो प्लाण्टर कम्पनी के खिलाफ काम करेगा उसकी अच्छी तरह खबर ली जावेगी।

नम्बर २—कम्पनी ने गन्ने उगाने वाले हिन्दुस्तानियों से कहा अगर तुम्हारे भाई हड़ताली मजदूर कम्पनी के

काम पर वापिस नहीं आवेंगे तो कम्पनी तुम्हारा गन्ना नहीं खरीदेगी"

नम्बर ३—कम्पनी ने गन्ने उगाने वाले एक चीनी आदमी को जिसका नाम ओनहिङ्ग है, और जिसके यहां २५०० टन गन्ना काटने के लिये खड़ा हुआ था, यह धमकी दी कि अगर तुम हिन्दुस्तानी मज़दूरों को ३ शिलिंग वेतन दोगे तो तुम्हारा गन्ना कम्पनी नहीं खरीदेगी। लेकिन कम्पनी इस बात पर राजी हो गई कि वह चीनी आदमी चीनी मजदूरों को भले ही १ पौण्ड प्रति सप्ताह और मुफ्त भोजन पर नौकर रख सकता है। कम्पनी इस चीनी आदमी की सहायता पौण्ड उधार देकर कर रही है।

नम्बर ४—कम्पनी ने प्लांण्टरों की ऐसोसियेशन के द्वारा यह सूचना गन्ने की खेती करने वालों के पास भेजी है कि वे लोग जो इस आपत्ति के समय में कम्पनी के निश्चय के अनुसार अपने हिन्दुस्तानी मज़दूरों को वेतन देंगे उन्हें सम्भवतः कम्पनी से अपने १९२१ के गन्ने के लिये १० शिलिंग का बोनस मिलेगा।

इससे अधिक घृणित और कायरता-पूर्ण धमकी और क्या हो सकती है? और इन धमकियों के द्वारा जाति विशेष पर जो अत्याचार किये गए हैं उनका तो कहना ही क्या है।"

फिजी सरकार का दब्बूपन—पाठकों को यह बतला

देना आवश्यक है कि फिजी सरकार अब तक सी० एस० आर० कम्पनी के हाथ का खिलौना रही है।

फिजी गवर्मेण्ट में इतनी ताक़त नहीं कि वह इस वैभव शाली कम्पनी का विरोध कर सके। इस आर्थिक हड़ताल का मुक़ाबला करने के लिये फिजी सरकार ने ऐसी ऐसी तैयारियां कीं मानों उसे किसी भयङ्कर शत्रु सेनाका मुक़ाबला करना था। फिजी की डिफैन्स फोर्स (रक्षक-सेना) का उन्हीं दिनों का एक नोटिस पढ़ लीजिये।

"The Lautoka Social Hall will be the point of Assembly. Eight consecutive short blasts on the mill whistle will be the alarm, with the exception of Saturdays and Sundays and night times when it will be continuous ringing of Churchbell for I5 minutes. Members will then double to the hall in fighting order water bottles filled and wait for orders

अर्थात् "लतौका का सोशल हाल एकत्र होने का स्थान समझा जावेगा। जब हमें किसी खतरे की सूचना देनी होगी तो लतौका मिल की सीटी थोड़ी थोड़ी देर बाद आठ बार बजाई जावेगी। लेकिन शनीचर और इतवारको तथा रात्रि के समय खतरे की सूचना देने के लिए गिरजाघर का घंटा लगातार १५ मिनट तक बजाया जावेगा। उस समय रक्षक-सेना के मेम्बर युद्ध की चाल से लतौका सोशल हाल पर

पहुंचेंगे। पानी से भरी हुई बोतल ये अपने साथ लेते आवेंगे। और हुक्म सुनने के लिए वहां ठहरेंगे "

अपने पवित्र गिरजाघर के घण्टे का फिजी के गोरों ने कैसा अच्छा उपयोग सोचा था!

ता० २४ मार्च सन् १९२१ को फिजी सरकार ने एक कमीशन नियुक्त किया जिसका उद्देश्य इस हड़ताल के विषय में जांच पड़ताल करने का था, लेकिन फिजी गवर्मेण्ट ने एक बड़ी भारी भूल की वह यह कि इस कमीशन में उन्होंने एक ऐसे यूरोपियन महाशय को नियुक्त किया जो कि हिन्दुस्तानियों के बड़े विरोधी थे। हिन्दुस्तानियों ने इस कारण इस कमीशन के सामने गवाही देने से इन्कार कर दिया, बस फिर क्या था फिजी सरकार ने कहना शुरू किया यह हड़ताल आर्थिक नहीं बल्कि राजनैतिक है। यह नानकोआपरेशन यानी असहयोग आन्दोलन का एक भाग है।

क्या इस हड़ताल का असहयोग आन्दोलन से कोई सम्बन्ध था?

ता० ८ अप्रैल सन् १९२१ को फिजी के गवर्नर साहब ने अपनी स्पीच में कहा था।

"The issues have been confused by the

importation of propaganda which is nothing more or less than what is known in India as Non-Cooperation. The Government of India have stated publicly the weighty reasons which have influenced them in showing tolerance to the movement there. Non-Cooperation in India is one thing but Non-Cooperation in a crown colony like Fiji is another and it must be understood once and for all that the Government donot intend to tolerate it here." अर्थात् "सारा मामला इस बात से गड़बड़ हो गया है कि फिजी के हिन्दुस्तानी हड़तालियों ने फिजी में उस आन्दोलन का प्रवेश कर दिया है जिसे भारतवर्ष में असहयोग के नाम से पुकारते हैं। फिजी का आन्दोलन भी बिल्कुल असहयोग ही है, उससे घट बढ़कर नहीं है। भारत सरकार ने सर्वसाधारण को बतला दिया है कि किन किन गम्भीर कारणों की वजह से असहयोग आन्दोलन के प्रति सहन-शीलता का बर्ताव किया जा रहा है। लेकिन भारत में असहयोग करना एक बात है और फिजी जैसे राजकीय उपनिवेश में असहयोग आन्दोलन को उठाना दूसरी बात है और सब लोगों को यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिये कि फिजी सरकार अपने उपनिवेश में असहयोग आन्दोलन को सहन नहीं कर सकती।"

गवर्नर साहब का उपर्युक्त कथन अक्षरशः असत्य है।

फिजी की आर्थिक हड़ताल को असहयोग आन्दोलन बता देना सरासर अन्याय है। यह बे सिर पैर की बात किस तरह उड़ाई गई यह भी सुन लीजिये। सिडनी हैराल्ड नामक आस्ट्रेलियन पत्र के सम्वाददाता ने सूवा से निम्न-लिखित तार सिडनी को भेजा।

"The presence of a Sadhu whom Gandhi sent from India ten months ago led to a strike of thirty thousand Indians at Viti Levu. The Sadhu threatened the Indians inter alia that the disobedient would be turned into stone. Unless work is resumed, there will be no sugar crushing in Fiji this year"

"एक साधू की वजह से जिसे गांधी ने हिन्दुस्तान से फिजी को दस महीने पहले भेजा था, फिजी में तीस हजार हिन्दुस्तानियों की हड़ताल होगी। इस साधू ने और भी कितनी ही बातों के साथ २ हिन्दुस्तानियों को यह भी धमकी दी थी कि जो लोग मेरी आज्ञा नहीं मानेंगे वे पत्थर बन जावेंगे। अगर हड़ताली लोग काम पर वापिस नही गये तो इस साल फिजी में गन्ना नहीं पेरा जा सकेगा"

यह ख़बर सिडनी से तारद्वारा लन्दनके मार्निङ्गपोस्ट नामक अख़बार को भेजी गई और वहां से रायटर ने यह समाचार सारे जगत में फैला दिया कि गांधी जी के भेजे हुए साधू ने फिजी में हजारों मज़दूरों की हड़ताल करा दी! यह

समाचार बिल्कुल निराधार था, यह बतलाना अनावश्यक ही है। महात्मा गांधी जी ने कभी भी कोई भी साधू फिजी को नहीं भेजा। उन्होंने इस गप्प का खण्डन भी अपने पत्र यङ्गइण्डिया द्वारा किया था।

अब प्रश्न यह होता है कि फिजी की सरकार ने यह निराधार गप्प क्यों उड़ाई थी? इस झूंटे समाचार के फैलाने में उसका उद्देश्य क्या था? इसका उत्तर यही है कि फिजी सरकार इस आर्थिक हड़ताल को तोड़ डालना चाहती थी और इसके लिए वह वहाना तलाश कर रही थी बस उसने सोचा कि चलो यह अच्छा बहाना मिल गया, इस में भारत सरकार भी कुछ विरोध नहीं कर सकेगी? अगर भारत सरकार विरोध करेगी तो उससे फौरन ही कह दिया जावेगा "हमें फिजी में उसी आन्दोलन का सामना करना पड़ रहा है जिसका आप भारत में मुक़ावला कर रहे हैं। जब आप भारतके असहयोग आन्दोलनको दबा रहे हैं तो हमें आप किस मुंहसे कह सकते हैं कि तुम फिजी में असहयोग आन्दोलन को मत दबाओ"

फिजी टाइम्स:और हैराल्ड ने लिखा था।

"The leaders of the Indians in Fiji are paid by disloyal rebels to cause trouble in loyal Fiji. They receive :their orders from outside and have to obey. The men on strike are not being helped by Gandhi and Co. They

are merely being used as simple stupid tools, and the sooner they believe that is so the sooner they will find satisfaction. While this is a strike in name and fact, the forces at the back of it are decidedly political. According to many Indians it is freely said that this had been organised in India for some time past and funds provided to carry it out... Never did Red Bolshevik in Russia persue a more destructive course than did this Bolshevik agent from India, Sadhu Vasishtha muni...... But the Indians must understand that *so* long as they agitate for industrial improvement, they are within the law, but, once they follow the madheaded extremes of Gandhi, they are without the law and must submit to consequences."

अर्थात् "फिजी में हिन्दुस्तानियों के जो नेता हैं उन्हें राजविद्रोही वागियों से राजसक्ति पूर्ण फिजी में उपद्रव उठाने के लिये रुपये मिलते हैं। फिजी के इन नेताओं के पास कहीं वाहिर से आज्ञाएं आती हैं और वे इन आज्ञाओं का पालन करते हैं जिन लोगों ने फिजी में हड़ताल की है उन्हें गान्धी और उन के साथियों से सहायता तो नहीं मिलती वल्कि ये सीधे सादे मूर्ख हड़ताली उन के हाथ के हथकण्डे वने हुए हैं और जितनी जल्दी इन हड़तालियों को

इस बातका पता लग जावेगा उतनी ही जल्दी उन्हें सन्तोष प्राप्त होगा। नाम के लिये और दर असल यह है तो हड़-ताल; लेकिन जो शक्तियां इस की सहायतार्थ इस के पीछे काम कर रही हैं वे वास्तव में राजनैतिक हैं।

बहुत से हिन्दुस्तानी तो साफ़ साफ़ तौर पर यह कहते हैं कि इस हड़ताल का सङ्गठन कुछ दिनों पहले से भारत-वर्ष में किया गया था और इस हड़ताल को ठीक तरह से चलाने के लिये रुपये भी दे दिये गये थे............... रूस में बोलशेविक लोगों ने भी उतनी विघातक नीति से काम नहीं लिया था जितनी विघातक नीति से साधू वशिष्ठ मुनि ने, जो हिन्दुस्तान से बोलशेविकों का एजेन्ट बनकर आया था, फिजी में काम लिया। लेकिन हिन्दुस्तानियों को यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिये कि जब तक वे अपनी औद्योगिक उन्नति के लिये आन्दोलन करते हैं तब तक तो उन का यह आन्दोलन कानून के भीतर माना जावेगा लेकिन ज्योंही उन्हों ने गान्धी के पागलपने से भरी हुई हद दर्जे की कार्रवाइयां कीं त्योंहीं उन का काम बे-कानून मान लिया जावेगा और अपने कामों का नतीजा उन्हें भोगना पड़ेगा।"।

इस का सीधा सादा मतलब यह है कि हिन्दुस्तानियों ने साधू वशिष्ठ मुनि को बहुत सा रुपया देकर फिजी में बोलशेविक मत को फैलाने और हड़ताल कराने के लिये

भेजा था ! इस असत्य की भी कोई सीमा है ? वशिष्ट मुनि को यहां पर न कोई जानता था, न उन्हें किसी ने एक पैसा भी दिया और न किसी ने उन्हें फिजी को भेजा ।

साधू वशिष्ठ मुनि को देश निकाला

२३ मार्च सन् १९२१ को फिजी सरकार ने साधू वशिष्ट मुनि को गिरफ़ार किया और चार दिन तक हवालात में रखकर अटुआ जहाज़ में बिठला कर सिडनी भेज दिया और सिडनी से वे कोलम्बो पहुंचे और वहां से चलकर १९ मई को आप कलकत्ते पहुंच गये ।

वशिष्ठ मुनि को देश निकाला देने समय जो घोषणा पत्र फिजी सरकार ने निकाला था उसकी नक़ल यहां दी जाती है ।

राजाज्ञा-विज्ञापन ।

(नं० ३—१९२१)

सी. एच. रोड्वल गवर्नर ।

श्रीमान् महाराजाधिराज पञ्चमजार्ज के नाम में ।

श्रीमान् सर . सिसिल हन्टर रोड्वल महोदय के. सी. एम. जी फिजी की गवर्नर द्वारा ।

श्रीमान् गवर्नर महोदय ने निश्चय कर लिया है वशिष्ठ मुनि, जिसे फिजी में आये एक वर्ष हुआ, और जिसने वर्तमान हड़ताल के बढ़ाने में सहायता की है तथा फिजी द्वीप में अशांति जारी किया है। इसलिए श्रीमान् गवर्नर महोदय ने कानून के अनुसार फिजी द्वीप से वशिष्ठ मुनि को भारत वापिस भेज दिया।

२—वशिष्ठ मुनि का कोई सम्बन्ध फिजी में नहीं था परन्तु वह मनुष्यों को राजनैतिक के तरफ बहकाता था इस मन्तव्य से कि भारत का असहयोग विधियों को वृद्धि हो। जिसकी अभिप्राय को भारत सरकार ने वृटिश रूलके नाश करने वाली बतला दिया है। उन विधियों से यहां के भारतीयों या किसी दूसरे को लाभ नहीं हो सकता। और इसका सहन भी यहां पर नहीं किया जा सक्ता है।

३—श्रीमान् गवर्नर महोदय जानते हैं कि अधिक भारतीय मज़दूरों का ख़्याल है कि फ़िजीमें उनके कारफरमानों पर असली तकलीफें पेश करना है। जब तक वशिष्ठ मुनि इन मज़दूरों के हालतों पर अपना ध्यान दे रक्खा था और यदि इन मज़दूरों के निमित्त वशिष्ठ मुनि के किये हुए दावों को यथोचित बनाया होता तो इस द्वीप में उनका उपस्थित तथा कामों में सरकार बाधा डालनेके लिये कुछ भी कारण नहीं पाता था।

४—इन कामों को वशिष्ठ मुनि नहीं किया। इन्होंने

तमाम जगहों में गए जहां पर भारतीयों ने अपने कोई तरह के दुःखों का बयान पेश नहीं किया किन्तु वहां वे खुद कहे थे कि वे काम छोड़ना नहीं चाहते। उस्कावा तथा धमकी से वशिष्ठ मुनि ने खुद उन लोगों पर हानि तथा तक्लीफ़ पहुंचने के लिये हड़ताल करवाया है।

५—वशिष्ठ मुनि ने दावे के पंक्तियों को कारफरमानों के पास उपस्थित करने के लिए हिम्मत दिया। जिसे हर एक फिजी के अकलमन्द भारतीय जानते हैं किए हुए दावे गैरवाजिव तथा न मिलने वालीं हैं। और वशिष्ठ मुनि ने भारतीयों को बहकाकर विश्वास कराया था कि वे मिलने वालीं हैं उसने भारतीयों को सलाह दी कि दृढ़ता के साथ ठहरें जब तक उन्हें न मिल जावे। वशिष्ठ मुनिने इस काम को केवल एक ही अभिप्राय से किया है। वह यह कि कारफरमानों से किसी तरह का फैसला बिलकुल न होने पावे।

६—वशिष्ठ मुनि चाहा कि फिजी में भारतीय भूखे मरें बल्कि काम न करें। इसलिए कि वह फिजी के रहने वाले भारतीयों के हालतों को भारत में झूठी बयान करें। और उन पर लिआये हुये तकलीफों के द्वारा राजनैतिक लाभ उठावें।

७-हड़ताल के कारणों को जांच करने के लिये सरकारने एक कमीशन नियत किया है। और सब बाबतों पर रिपोर्ट

मिलने के पहले श्रीमान् गवर्नर महोदय चाहता है, कि हड़-तालिये काम पर लौट जावें । पवलिक में वशिष्ठ मुनि ने कहा कि "सरकार का हुक्म मानो" और एकान्त में कहा कि "सरकार का हुक्म मत मानो" इस काम को इन्होंने किया क्योंकि इन को कुछ परवाह नहीं था कि फिजी में रहने वाले भारतीयों पर वह क्या तकलीफ लावेगा । जब तक उनका अभिप्राय प्राप्त हो जाय । वह यह कि लोगों में असन्तुष्टता तथा अशांति पैदा करैं ।

८—मनुष्यों की भलाई श्रीमान् गवर्नर महोदय के हृदय में हैं । उक्त बातों को जानते हुये भी यदि श्रीमान् महोदय प्रवन्ध न करे तो वह अपने कर्त्तव्य में चूकता है । श्रीमान् उस पुरुष पर निगाह रक्खे बगैर नहीं रह सक्ता । जिसका कोई सम्वन्ध फिजी में नहीं है और इसीलिए कुछ हानि भी होने वाला नहीं है । जो उन लोगों को धोखा देता तथा वहकाता है । जिन्होंने यहां पर अपना घर बनायें हुयें हैं । और जिनकी भलाई फिजी की भलाई के साथ है । श्रीमान् महोदय ने जांच कमीशन नियत करने से फैसला होने का उपाय कर दिया है । और वशिष्ठ मुनि को भारत वापिस भेज देने से फैसला होने का असम्भव रूपी रुकावट को दूर कर दिया है ।

९—इन कामो के विचारने के बाद श्रीमान् गवर्नर कोठियों के मालिकों से जोर देकर कहता है । कि अपने

भारतीय मजदूरों के किये हुये अर्जियों को विना देरी किये विचार करें। यदि वे अर्जियां यथोचित हो तो परन्तु व-शिष्ठ मुन्क्रिके वद सलाह देनेसे भारतीयों तथा कोठी वाले मालिकों के मध्य में एक दिवाल रख दिया है। भारतीयों को दावे का पंक्तियों को पेश करने के लिये उसकाया गया था। जिन्हें वे खुद जानते हैं। कि उन दावों के लिए वादा-नुवाद करनेमें जगह नहीं है। ऐसा उम्मेद न रखना चाहिये कि कारफरमान उन वातों पर ध्यान देंगे जिन पर खुद भारतीय लोग हंसते हैं।

१०—श्रीमान् गवर्नर महोदय फिर उन भारतीयों को जोर देकर कहते हैं! जो हड़ताल किये हुये हैं।कि वे काम पर लौट जावें और अपने २ दावों को फिर से यथोचित वनाकर अपने २ कारफरमानों के पास पेश करें। श्रीमान् महोदय भारतीयों को सलाह देता है कि वे अपने दुःखों को कमीशन में पूरी तौर से वतलावें जहां पर उनको वि-श्वास दिलाया जाता है कि निपंक्षता के साथ सुना जावेगा चीजों का सच्चाई जानने के लिये कमीशन एक विशेष विधि समझा गया है। श्रीमान् महोदय का अभिलाष है कि पूरी तरह से सच्चाई को जानकर मालूम करें। कि वि-गड़े हुये कामों को सुधारने के लिए क्या यत्न करना चा-हिये। अभी कोई कुछ तथा कोई कुछ कहता है। और खुद भारतीयों में भी कई तरह की राय है। उन भारतीय

अगुवाओं से चिट्ठियां मिली हैं जिन के दिलों में अपने देश भाइयों के लिये सच्चा सम्बन्ध हैं। वे वशिष्ठ मुनिके कामों को बुरा बतलाते हैं तथा यह भी दिखलाते है कि वशिष्ठ मुनि के सलाहों को मानने से क्या २ बुरे फल होंगे।

आज तारीख २६ मार्च १६२१ ई० को मेरा हस्ताक्षर तथा फिजी द्वीप का मोहर सूवा में लगाया गया।

ब हुक्म

टी. ई. फेल कालोनियल सेक्रेटरी।

पार्लमेण्ट में जब Major Ormsby Gore ने इस विषयमें सवाल किया था तो उसका उत्तर देते हुए माननीय एडवर्ड वुड ने कहा था

"It has been necessary for the Colonial Government to send additional police into the district to deport Sadhu Bashistha Muni, who was endeavouring to incite Indians against the Fijians."

अर्थात् "फिजी की कालोनियल सरकारको साधू वशिष्ठ मुनि के देश निकाले केलिये उस ज़िले में अधिक पुलिस भेजनी पड़ी है। वशिष्ट मुनि हिन्दुस्तानियों को फिजियनों के विरुद्ध भड़का रहा था"

यह बात ध्यान देने योग्य है कि फिजी गवर्मेंण्ट ने अपने घोषणापत्र में वशिष्ट मुनि पर यह अपराध कहीं पर

भी नहीं लगाया था कि वे हिन्दुस्तानियों को फिजियनों के विरुद्ध भड़का रहे थे। माननीय एडवर्ड बुडने बिना समझे सोचे यह बात अपनी तरफ़ से ही भिड़ा दी थी !

द्वितीय हड़ताल किस तरह टूट गई ?

दूसरी हड़ताल के टूट जाने के कई कारण हुए। पहला कारण तो हड़तालियों की मूर्खतापूर्ण मांगें थीं। दूसरा कारण फिजी सरकार की अन्याय पूर्ण नीति और हिन्दुस्तान को लौटे हुए फिजी प्रवासी आदमियों का फिर फिजी वापिस जाना भी हड़ताल टूटने का एक कारण कहा जाता है।

मूर्खतापूर्ण माँगें—फिजी प्रवासी भारतीयों ने जो भूलें कीं उनको बतलाना हमारा कर्तव्य है और इसी कारण हमने उनकी मांगों को जो उन्होंने पेश की थीं मूर्खतापूर्ण कहा है। हम जानते हैं कि फिजी के कुछ भारतीय इससे बुरा मानेंगे, लेकिन चाहे वे बुरा मानें या भला, हम इस बात को कहे बिना नहीं रह सकते कि जिन हिन्दुस्तानी भाइयों ने ये मांगें बनाई थीं उन्होंने बुद्धिमानी का काम नहीं किया था। इन मांगों को सुन लीजिये।

(१) कम्पनी एक अच्छा मकान प्रत्येक मजदूर को देवे जिसके साथ २ नहाने तथा रसोई बनाने के घर हों और टट्टी घर भी हो। मकान के अन्दर एक शीशा, दो कुर्सी एक टेबिल एक लोहे की चारपाई एक गद्दा मुसहरी तकिया होना चाहिये।

(२) कम्पनी ५ बीघा ज़मीन बिला पोत देवे।

(३) कम्पनी प्रत्येक मज़दूर को चार गाय और दो बैल और एक घोड़ी अपने गेट में रखने का हुक्म देवे। इनकी चराई कम्पनी भरे।

(४) कम्पनी कम से कम बारह शिलिङ्ग रोजाना मजदूरी देवे।

(५) हफ़्ता ५ रोज़का हो, दो दिन मज़दूर अपनाकाम करे।

(६) दिन में सिर्फ ६ घंटे काम लिया जावे।

(७) कम्पनी चार हफ़्ता पहले नोटिस देने का कानून रद्द करे।

(८) डाक्टर मणिलाल के लिये दो वर्ष फिजी के मुख्य मुख्य भागों में न रहने का जो हुक्म दिया गया था वह रद्द किया जावे।

(९) जो हड़ताली सूवा में पकड़े गये और जिन्हें जेल का दण्ड मिला वे छोड़ दिये जावें।

(१०) जिन गुण्डों ने भोले भोले हड़तालियों को जेल में फँसाया उन्हें जेल का दण्ड दिया जावे।

(११) बीमार मज़दूरों के लिये वक्त पड़ने पर जो डाक्टर बुलाया जावे उस का पैसा कम्पनी भरे।

(१२) किसी मज़दूर का हाथ गोड़ टूट जावे तो कम्पनी उस को ऐसी रक़म दे जिस में वह अपना जीवन बिता सके और पेंशन भी देवे।

(१३) बीमार मज़दूर को आधा वेतन दिया जावे।

(१४) कम्पनी कोठियों के नज़दीक स्कूल बनवावे जिस में मज़दूर भाइयों के लड़के पढ़ें और रात को मज़दूर पढ़ें, फीस कम्पनी भरें।

(१५) सौदे का भाव वही हो जो सन् १९१४ में था। इन के सिवाय और भी कई मांगें थीं। ढाई शिलिङ्ग से एक दम १२ शिलिङ्ग पेश करना यदि मूर्खता नहीं तो क्या है? इसमें शक नहीं कि १२ शिलिङ्ग की मांग पेश करके मज़दूरों ने अपने पक्ष को कमज़ोर और अपने को उपहास का पात्र बना लिया।

फिजी सरकार की अन्याय पूर्ण नीति।

प्रारम्भ से लेकर अन्त तक फिजी सरकार ने जिस नीति से काम लिया वह वास्तव में अन्याय पूर्ण थी। ता० २७ अप्रेल को वेङ्कट सामी नामक एक वृद्ध मदरासी, जो सीरू लतोका की एक मज़दूर सभा में सम्मिलित होने आ रहा था, सी० एस० आर० कम्पनी की ड्राना इस्टेट के

ओवरसियर W. G. A. Weir वेयर की गोली का शिकार हुआ और अस्पताल में जाकर मर गया ।

इस ओवरसियर पर मुकद्दमा चलाया गया लेकिन उसने कह दिया कि मैंने कबूतर को मारने के लिये गोली चलाई थी, बस सरकारी मजिस्ट्रेट ने उसे निरपराध कह के छोड़ दिया ! फिजी सरकार का कर्तव्य था कि उस ओवरसियर को अच्छी तरह दण्ड देती लेकिन फिजी गवर्मेण्ट ने कब २ न्याय किया है जो वह इस अवसर पर ही न्याय करती !

कमिश्नर बार्नेट ने 'बा' के रामप्रसाद महाराजको एकसौ पौण्ड जुर्माना और एक साल के कारावास का दण्ड दिया। उन पर यह अपराध लगाया गया कि उन्होंने मज़दूरों को जो काम पर जाना चाहते थे धमकाया । जब सुप्रीम कोर्ट में इसकी अपील हुई तो चीफ़ जस्टिस ने यह दण्ड घटाकर व.र १० पौण्ड जुर्माना और २ महीनेकी सजाका करदिया । इस पर टिप्पणी करते हुए पैसीफिक एज(The pacific age) नामक पत्र ने लिखा था ।

"In the game as played recently at Ba it is good to notice that the loser had money enough to appeal to the supreme ;umpire, but one feels, as an ordinary citizen, somewhat humiliated when one reflects that without

money to help him he must have served 12 months in prison, and paid a fine of £ 100 for an offence which the Chief Gudge in the land would punish by a sixth of the term in gaol and a tenth of the pecuniary penalty. The sentence was certainly a very big error on the part of the magistrate."

अर्थात् "जो खेल 'वा' में खेला गया उसके विषयमें यह बात ध्यान देने योग्य है कि अभियुक्त (रामप्रसाद)के पास इतना पैसा था कि वह अपने मामले को सुप्रीम कोर्ट में ले जा सका ; लेकिन एक मामूली नागरिक की हैसियत से यह बात सोचते हुए हमें नीचा मुह करना पड़ता है कि अगर रामप्रसाद के पास रुपया न होता तो उस बिचारे को १२ महिने की कैद भोगनी पड़ती और १०० पौण्ड जुर्माना के देने पड़ते। यह दण्ड उसे एक ऐसे अपराध के बदले में सहन करना पड़ता जिसके लिये फिजी के सर्वोच्च न्याया-धीश की सम्मत्ति में जेल की अवधि के छठवें भाग का कारावास और जुर्माने की रकम के दसवें भाग का दण्ड ही पर्य्याप्त था। इसमें कोई शक नहीं कि ऐसा फैसला करके मजिस्ट्रेट ने बड़ी भारी भूल की थी।"

ताबुआ के मातादीन को भी एक साल के कारावास का दण्ड दिया गया था। और भी कितने ही आदमी दण्डित हुये थे। इन सब का असली अपराध यही था।

कि इन्होंने हड़तालियों की सहायता अन्न वस्त्र से की थी।

फिजी सरकार ने फिजियन जंगलियों को पुलिस के कान्स्टेबल बना कर जगह जगह पर तैनात कर दिया था। इन जंगलियों ने कहीं २ पर हिन्दुस्तानियों के साथ बहुत बुरा बर्ताव किया। फिजी टापू के आबाद होने के पहले सन् १८७५ में लार्ड सैलिस बरी ने जो प्रतिज्ञा की थी कि गिरमिट पूरी होजाने के बाद स्वतन्त्र भारतीयों के अधिकार अन्य किसी क़ौम के अधिकारों से कम न होंगे, उस प्रतिज्ञा का कैसा अच्छा पालन फिजी सरकारने किया। जो फिजियन बीस वर्ष पहले नरमांस भक्षी थे उनके द्वारा स्वतन्त्र हिन्दुस्तानियों का अपमान कराके फिजी सरकार ने यह सिद्ध कर दिया कि गोरे अधिकारियों की प्रतिज्ञा का क्या मूल्य होता है।

हिन्दुस्तान को लौटे हुए फिजी

प्रवासी भारतीयों का फिर फिजी वापिस जाना

यह भी हड़ताल के टूटने का एक कारण कहा जाता है, और कुछ अंशो में यह बात ठीक भी है। फिजी से लौटे हुए आदमी केवल दो जहाजों से फिजी वापिस गये थे। गँगा जहाज से और चेनाब जहाज से। पहला जहाज यहाँ से मार्च सन् १९२१ में गया था और उस समय हम लोगों

को यह समाचार मालूम भी न था कि फिजीमें इतनी भारी हड़ताल जारी है और दूसरा जहाज सितम्बर सन् १६२१ में गया था, जब कि हड़ताल टूट चुकी थी। इसलिये हड़ताल के टूटने पर यदि कुछ असर पड़ सकता था तो वह पहले जहाज से गये हुये आदमियों के द्वारा ही पड़ा होगा। पहले गंजीज़ जहाज से लगभग ५०० आदमी फिजी को लौट कर गये थे जिनमें १५० तो अपने पास से किराया भरके गये थे बाक़ी ३५० आदमी बिना किराये के गये थे। जो आदमी अपना किराया भरके गये थे वे तो खेतों पर काम कर ही नहीं सकते थे, क्योंकि उन लोगों ने किराया मुख्यतया इसी कारण से भरा था कि हमें वहां पहुंचकर काम न करना पड़े। बाकी ३५० आदमियों में, जो फिजी सरकार के किराये से गये थे, अधिक से अधिक २००-२५० आदमी खेतों पर काम करनेके लिये गये होंगे। इन २००-२५० आदमियों के काम पर जाने से कुछ न कुछ असर जरूर पड़ा होगा लेकिन ८००० मज़दूरों की हडताल में केवल इतने ही आदमियों के काम पर जाने से हड़ताल नहीं टूट सकती थी।

कुछ भी क्यों न हो यदि पहले जहाज के जाने का बुरा परिणाम हुआ तो इस का अपराध तीन आदमियों पर है मि० ऐण्ड्रूज़ पं० तोताराम सनाढ्य और मुझ पर, क्योंकि पहला जहाज इन तीनों की सम्मति से गया था। दूसरा जहाज जून सन् १६२१ में फिजी जाने वाला था उस समय

फ़िजी में हड़ताल जारी थी । इस जहाज के जाने न जाने के विषय में समाचार पत्रों में बहुत कुछ वाद विवाद चला था इसी जहाज को जाने से रोकने के लिये साधू वशिष्ठ मुनि ने कलकत्ते में उपवास किया था । इसमें सन्देह नहीं कि साधूजी के इस उपवास से सर्वधारण का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ लेकिन इससे कई महिने पहलेसे पं० तोता-राम जी ने हिन्दी पत्रों द्वारा इस विषय में आन्दोलन किया था । बड़ी मुश्किल से दूसरे जहाज के ये ६०० आदमी चार महिने तक यानी जून से लेकर सितम्बर तक रोके जा सके । इन आदमियों को रोकने के लिये मुझे जितना परिश्रम करना पड़ा उसे यहां लिखना अनुचित ही होगा कई सप्ताह तक मुझे इसी कारण कलकत्ते में रहना पड़ा और इधरसे उधर भागना पड़ा लेकिन सबसे अधिक मेहनत करनी पड़ी मि० एण्ड्रूजको । यदि वे इस काम को हाथ में न लेते तो इन आदमियों का ४ महीने तक रुकना सम्भव नहीं था । इस झगड़े में कई विवाद ग्रस्त कानूनी सवाल भी उठ खड़े हुये थे । फिजी में पैदा हुए आदमियों को भारत सरकार अपनी जन्मभूमि को जाने से रोक सकती है या नहीं ? यह भी एक कठिन प्रश्न था । मि० एण्ड्रूज ने इस झगड़े को बड़ी होशियारी के साथ सुलझाया । इस काममें उन्हें गवर्मेण्ट का बहुत कुछ विरोध करना पड़ा था भारत सरकार के उच्च पदाधिकारी उनसे बहुत नाराज

भी होगये थे लेकिन उन्होंने इस बात की कुछ भी पर्वाह न की। कई अल्प बुद्धि भारतीयों ने भी मि० ऐण्ड्रूज को भला बुरा कहा था, लेकिन उन्होंने यह भी शान्ति पूर्वक सहन किया। हम लोग जो महीने दो महीने में एक दो रोज प्रवासी भारतीयों को याद कर लिया करतेहैं, मिस्टर ऐण्ड्रूज के चरित्र से कितने ही बातें सीख सकते हैं। महात्मा गांधी जी को छोड़कर और कोई भी भारतवासी हिन्दुस्तान भरमें ऐसा नहीं है जिसने दीन हीन प्रवासी भाइयों के लिये मि० ऐण्ड्रूज के समान तन मन धन से परिश्रम किया हो।

फिजी की द्वितीय हड़ताल से

हमें क्या शिक्षा मिल सकती है ?

अगस्त के द्वितीय या तृतीय सप्ताह में द्वितीय हड़ताल टूट गई और कितने ही आदमियों को अपने काम पर वापिस जाना पड़ा। इस हड़ताल के कारण फिजी प्रवासी भारतीय मज़दूरों को बड़ी आर्थिक हानि उठानी पड़ी। २७ जून सन् १९२१ को फिजी के कालोनियल सेक्रेटरी ने अपने एक विज्ञापन में लिखा था कि हड़ताली लोग अपनी १००० पौण्ड प्रति दिन की हानि कररहे हैं। एक सप्ताह में मज़दूरों को ५$\frac{1}{2}$ दिन काम करना पड़ता था और यह हड़ताल

२४ सप्ताह तक जारी रही, इस लिये हड़तालियों को
१००० × ५$\frac{१}{२}$ × २४पौंड = १३२०००पौंड यानी लगभग२० लाख
रुपये की हानि हुई! इससे पाठक अनुमान कर सकते हैं कि
हमारे हड़ताली भाइयों को कितना अधिक कष्ट हड़ताल के
दिनों में उठाना पड़ा होगा। इस हड़ताल से हमैं कई शि-
क्षाएं मिल सकतीं हैं।

पहिली शिक्षा— हमैं यह मिलती है कि बिना योग्य
नेता के सम्पूर्ण परिश्रम व्यर्थ हो जाता है। यद्यपि स्वामी
वशिष्ठ मुनि ने धान इकट्ठा कर करके हड़ताली भाइयों की
बड़ी भारी सहायता की और ये लोग साधूजी के जन्म भर
ऋणी रहेंगे लेकिन साधूजी में समझौता कराने की शक्ति
नहीं थी। उनमें स्वार्थ त्याग था परिश्रम करने की शक्ति थी
और संगठन करने की शक्ति भी थी लेकिन अपने विरोधियों
की कठिनाइयों को और दृष्टि कोण को समझाने की शक्ति
उनमें बिल्कुल नहीं थी। दुराग्रह की मात्रभी उनमें कम नहीं
थी और अपने विरोधीको बेईमान समझना तो उनके लिये
एक मामूली बात थी। जिस दिन वशिष्ठ मुनि ने कलकत्ते
में स्यालदह स्टेशन पर मि० एण्ड्रूज से कहा था "तुम
हमारे भाइयों को बेचकर अपनी जेब भर रहे हो" उसी दिन
हमने समझ लिया था कि जो आदमी मिस्टर ऐण्ड्रूज
जैसे निस्स्वार्थ महापुरुष पर इस तरह का असभ्य

कटाक्ष कर सकता है वह हड़ताल भले ही करा दे लेकिन समझौता कदापि नहीं करा सकता ।

दूसरी शिक्षा—हमें यह मिल सकती है कि फिजी की सरकार से यह आशा रखना कि वह वैभव-शाली सी० ऐस० आर० कम्पनी का विरोध करके हिन्दुस्तानी मज़दूरों के साथ न्याय करा सकेगी, बड़ी भारी भूल है। जब तक फिजी में सी०ऐस० आर० कम्पनी का ऐसा ही प्रभुत्व बना रहेगा तब तक वहां के मजदूरों की हालत कदापि नहीं सुधर सकती ।

तीसरी शिक्षा—हमें यह मिल सकती है कि अपनी निज की खेती के द्वारा ही फिजी के हिन्दुस्तानी मजदूरों का कल्याण हो सकता हैं। सी० ऐस० आर० कम्पनी अपने मजदूरों का वेतन शक्कर के भाव से निश्चित करना चाहती है और शक्कर का भाव निश्चित नहीं रहता, इसलिये सी० ऐस० आर० कम्पनी अपने मजदूरों को ४–५ शिलिङ्ग भी वेतन देना स्वीकार नहीं करेगी ।

२$\frac{१}{२}$ शिलिङ्ग वेतन से ४ या ५ शिलिङ्ग करना तो दूर रहा वह उसे घटाकर १$\frac{१}{२}$ शिलिङ्ग कर देना चाहती है ! इस कम्पनी को जावा की कम्पनियों का मुक़ाबला करना है और साथ ही साथ उसे करोड़ों रुपये के मुनाफे उठाने की

चार पड़ गई हैं इसलिए हमें तो यह भी आशा नहीं है कि वह कभी ४ शिलिंग भी वेतन कर सके। इस कारण फिजी के प्रवासी भारतीय मज़दूरों के सामने केवल दो मार्ग हैं एक तो यह कि थोड़ी २ भूमि लेकर वहीं बस जावें और दूसरा यह कि भारत को वापिस लौट आवें। पहला मार्ग अच्छा है लेकिन कठिन है और दूसरा ख़तरनाक लेकिन सरल है। इस विषय पर अधिक तो हम आगे चलकर लिखेंगे, लेकिन यहां इतना कह देना हम आवश्यक समझते हैं कि जो लोग भारत को लौटकर आवें वे अपने ही भरोसे पर आवें। यहां की वर्तमान हालत में हम लोगों से सहायता की कुछ भी आशा न रखनी चाहिये।

द्वितीय हड़ताल का वृत्तान्त समाप्त करते हुये हम अपने प्रवासी मज़दूर भाइयों को बधाई देते हैं कि उन्होंने बड़ी शांति पूर्वक इस हड़ताल का सञ्चालन किया। सूवा में जो भूलें पहली हड़ताल में हुई थीं वे इस दूसरी हड़ताल में बिल्कुल नहीं हुईं। हड़तालियों के इस शांतिमय व्यवहार से उनका पक्ष बहुत सबल हो गया और सी० ऐस० आर० कम्पनी का पक्ष बहुत निर्बल। हड़तालियों ने यह बात संसार को प्रगट कर दी कि उनकी हड़ताल शुद्ध आर्थिक हड़ताल थी। लगभग ८००० आदमियों का इस प्रकार शांत रहना कोई छोटी बात नहीं थी। हड़तालियों ने जिस उदारता से काम लिया वह भी आश्चर्य जनक थी।

Mr. Theo. D. Riaz. ने अपने १६ अगस्त के लेख में कई उदाहरण उनकी इस उदारता के दिये थे। जब मि० हैरिस के खेत में आग लग गई तो हड़तालियों ने उदारता पूर्वक गन्ने को काटना स्वीकार कर लिया लेकिन उसके बदले में २$\frac{1}{2}$ शिलिङ्ग वेतन लेना स्वीकार नहीं किया। जब 'बा' के मि० सी० हण्ट के गन्ने के खेत में आग लगी तो उनके खेत पर काम करने वाले हड़ताली मजदूरों ने फौरन ही अपने सरदार के साथ वहां पहुंच कर आग को बुझाया, लेकिन अपने परिश्रम के बदले में कुछ भी लेना मंजूर न किया। जब सी० एस० आर० कम्पनी की Vaqia कोठी पर गन्नों में आग लगी तब भी ओवरसियर के कहने से हिन्दुस्तानी हड़तालियों ने ही आकर गन्ना काटा और उसे लाद भी दिया। इस तरह के उदारतामय कार्यों से हमारे प्रवासी भाइयों ने सी० एस० आर० कम्पनी का मुह सदा के लिये नीचा कर दिया है। यद्यपि हम जानते हैं कि यह निर्लज्ज कम्पनी बराबर यही कहती रहेगी कि हड़ताल राजनैतिक थी, और बेशर्म गोरे प्लाण्टर इस कम्पनीका समर्थन भी करते रहेंगे लेकिन निष्पक्ष संसार इससे सी० एस० आर० कम्पनी की अन्याय पूर्ण-नीति और फिजी सरकार के दब्बूपन को अच्छी तरह समझ जावेगा।

फिजी में क्या हो रहा है ?

फिजी के प्रश्न।

(१)

इस समय भारतीय नेता असहयोग और स्वराज्य के आन्दोलन में लगे हुये हैं और भारतीय जनता भी इन्हीं विषयों पर ध्यान दे रही है, अतएव यह आशा नहीं की जा सकती, कि औपनिवेशिक प्रश्नों की ओर कोई विशेष ध्यान देगा। फिर भी हमारा कर्त्तव्य है, कि प्रवासी भाइयों के प्रश्नों की ओर सर्व साधारण का ध्यान बराबर आकर्षित करते रहें, और इसी उद्देश्य से ये पंक्तियां लिखी जाती हैं। जो लोग यह तर्क करते हैं, कि भारत के स्वराज्य पाने के दिन तक प्रवासी भारतीयों के प्रश्नों को स्थगित कर देना चाहिये, वे बड़ी भारी भूल करते हैं। यह बात हम अवश्य मानते हैं, कि स्वराज्य प्राप्त हुए बिना प्रवासी भारतीयों की स्थिति नहीं सुधर सकती, लेकिन इसका अभिप्राय यह नहीं है, कि तब तकके लिये हम प्रवासी भारतीयों के प्रश्नों को उपेक्षा की दृष्टि से देखें। फिजी में इस समय जो घटनायें हो रही हैं वे इतनी महत्व-पूर्ण हैं, कि उनका प्रवाह फिजीद्वीप तक ही परिमित नहीं रहेगा। ५५ हजार प्रवासी भारतीयों के भविष्य पर तो इन घटनाओं का प्रभाव पड़ेगा ही लेकिन साथ ही साथ यहां के भारतीयों के साथ भी

इन घटनाओं का कुछ सम्बन्ध है। न्यूज़ीलैण्ड से डाक्टर मणिलाल जी लिखते हैं :

"फिजी के गवर्नर ने फिजी की व्यवस्थापिका सभा में जाहिर किया है, कि—

(१) भारत सरकार फिजी वालोंसे सहानुभूति रखती हैं और फिजी लौटने वालों पर जो अंकुश था वह निकल गया।

(२) थोडे महीने में फिजी में भारत सरकार का एक कमीशन आ पहुंचेगा और आशा की जाती है कि भारतके मुकाविले फिजी की दशा अच्छी सिद्ध होगी, जिससे फिर से इमीग्रेशन शुरू होगा।

(३) भारत सरकार एक फिजी इमीग्रेशन एक्ट वना रही है जिसका तारतम्य अभी किसी को ज्ञात नहीं है।

फिजी के कालोनियल सेक्रेटरी मिस्टर फैल आज कल अपनी आंखके दर्दके कारण न्यूज़ीलैण्डमें हैं इन्होंने "न्यूज़ीलैण्ड हैराल्ड" में प्रकाशित करवाया है, कि साधू वशिष्ठ मुनि को देश निकाला दिया गया है, इसकारण भारतीय मज़दूरों की अक्ल ठिकाने आजावेगी, और वे वैध रीतिसे अपनी वेतन वृद्धि की मांग को सरकार के सामने पेश कर सकेंगे।

फिजी की व्यवस्थापिका सभा के अग्रणी मि० स्टाक आन्दोलन कर रहे हैं, कि पश्चिमी प्रशांत महासागर के द्वीप पुञ्जों को—उदाहरणार्थ सामोआ, होङ्गा और फिजी

इत्यादि को—साथ मिलाकर एक संयुक्त राज्य बना दिया जावे जिससे शासन मज़दूरी और व्यापार तीनों दृष्टि से परस्पर लाभ हो और फिजी की राजधानी सूवा इस संगठन का केन्द्र स्थान हो।

फिजी के एक लेख से प्रगट होता है, कि जैमैका ट्रिनीडाड ब्रिटिश गायना आदि सब राजकीय उपनिवेशों में स्वराज्य के लिये बड़ा भारी आन्दोलन जारी है। मेरा राजनीति का ज्ञान अल्पमात्र है परन्तु मुझे शङ्का होती है, कि फिजी में अथवा अन्य उपनिवेशों में जहां स्वराज्य मिला, वहां भारतवासियों पर गोरोंके ज़ुल्म और भी बढ़ जावेंगे। जैसा दक्षिण अफ्रीका के यूनियन में हुआ था। जो लोग फिजी सामोआ और टोंगा का सङ्गठन चाहते हैं वे कहते हैं कि अकेले फ़िजी का बिलायत में कोई प्रभाव नहीं पड़ा, लेकिन सङ्गठन हो जाने पर विलायत पर उपनिवेशिक विभाग पर उसका प्रभाव अवश्य पड़ेगा। मज़दूर मिलने के लिये यह भी एक युक्ति है। फ़िजी के गोरे सोच रहे हैं कि "किसी तरह फ़िजी के नज़दीक के द्वीपों में से काले आदमियों को लाकर उनसे शर्तबन्दी करवावें"

फ़िजी द्वीपके भविष्य से ५५ हज़ार फिजी प्रवासी भारतीयों के भाग्य का घनिष्ट सम्बन्ध है, इसलिये हम लोगों को सचेत हो जाना चाहिये। हम लोगों का कर्त्तव्य है कि शीघ्र ही एक कमीशन भारतीय जनता की ओर से फ़िजी

को भेजें जो वहां पहुंचकर इन प्रश्नों का अध्ययन करें और इनपर अपनी सम्मति प्रगट करें। क्रम से काम भारत हितैषी मि० एण्ड्रूज़का तो फिजी जाना अत्यन्त आवश्यक है हमको ख्याल है कि मि०एण्ड्रूज़ने फिजी जानेका दृढ़ निश्चय कर लिया है और यदि कोई विशेष बाधा नहीं हुई तो १२ सितम्बर को कोलंबो से फिजीके लिये प्रस्थान करेंगे और अक्टूबरमें वहां पहुंचेंगे। उन्हीं दिनोंमें सरकारी कमीशन भी फिजी पहुंचेगा। जो कमीशन भारत सरकार फिजी को भेज रही है उसे यह अधिकार होना चाहिये कि वह गतवर्ष के उपद्रव तथा वर्त्तमान हड़ताल आदिकी जांचकर सके। यदि ऐसा न हो सके तो फिजी को सरकारी कमीशन भेजना ही निरर्थक है। यदि भारत सरकार इस स्थितिमें कमीशन भेजे भी तो फिजी प्रवासी भारतीयों के सामने बड़ी कठिन समस्या उपस्थित होगी। हमें इस बातकी आशङ्का है कि कहीं वे इस सरकारी कमीशन का बायकाट न करदें। यदि ऐसा हुआ तो अत्यन्त दुर्भाग्य की बात होगी। सरकारी कमीशन के मेम्बर बड़े योग्य हैं मिस्टर कारबेट प्रवासी भारतीयों के शुभचिन्तक हैं जिन लोगों ने उनके दक्षिण अफ्रिका तथा पूर्वी अफ्रिका सम्बन्धी ख़रीते पढ़े हैं वे कह सकते हैं कि मिस्टर कारबेट की प्रवासी भारतीयों के साथ कितनी सहानुभूति है। माननीय शास्त्री जी तथा श्रीयुत हृदयनाथ जी कुंजरू के विषय में कुछ भी कहने की आवश्यकता नहीं है, वे भारतीय हैं और

वे यथा शक्ति फिजीके भाइयों की भलाई ही करेंगे । डाक्टर मणिलाल लिखते हैं-

"भारत से जा कमीशन फिजी को भेजा जावे उसमें विश्वास पात्र नेता होने चाहिये । उनको गतवर्ष की और वर्त्तमान हड़ताल आदि की जांच करने का अधिकार होना चाहिये यदि ऐसा न हो तोमैं फिजी निवासी भारतवासियों को यह नम्र सूचना कर देना चाहता हूं कि जिस तरह उन्होंने इस साल गवर्नर के कमीशन को वायकाट कर दिया, उसी तरह उन्हें हिन्दुस्तान से आने वाले सरकारी कमीशन को भी "वायकाट" कर देना चाहिये ।"

यह बात भी हम लोगों के लिये विचारणीय है कि फिजी सामोआ और टोङ्गा इत्यादि के सङ्गठन से अभागे फिजी प्रवासी भारतीयों की हालत कहीं और भी तो खराब नहीं हो जावेगी । हमें इस बात की पूरी २ आशंका है, कि जब डाउनिङ्ग स्ट्रीट (विलायत के कालोनियल आफिस) का अंकुश फिजी सरकार के सिर पर से उठ जावेगा तो फिर वहां के दीन हीन निसहाय हिन्दुस्तानियों को और भी दुर्दशा होगी ।

जिन प्रश्नों का जिक्र श्रीयुत मणिलाल जी ने अपने पत्र में किया है वे कोई मामूली प्रश्न नहीं हैं । उनके समझने और हल करने के लिये बड़ी बुद्धिमत्ता की आवश्यकता है । महात्मा गांधी जी, मि० एण्ड्रूज़, डाक्टर मणिलाल, और

माननीय शास्त्री जी जैसे नेता लोग ही अधिकार पूर्वक इन प्रश्नों पर अपनी राय दे सकते हैं। मेरे जैसे तुच्छ लेखक के लिये इन मामलों में दखल देना कोरमकोर अनधिकार चेष्टा ही है! लेकिन ये प्रश्न इतने आवश्यक हैं, कि शीघ्र ही भारतीय नेताओं का ध्यान इनकी ओर आकर्षित होना चाहिये। आशा है कि इस दृष्टि से मेरी यह अनधिकार चेष्टा क्षन्तव्य समझी जावेगी॥

फिजी में क्या हो रहा है?

वर्त्तमान परिस्थिति।

(२)

फिजी प्रवासी भारतीयों के अज्ञान, गोरे प्लाण्टरों के स्वार्थ और फिजी सरकार की अन्याययुक्त नीति ने फिजी की दशा इतनी बिगाड़ दी है, कि अब उसका सम्हलना अत्यन्त कठिन है। जिन दिनों ब्रिटिश गायना का डेपूटेशन भारत में कुली प्रथा जारी कराने का प्रयत्न कर रहा था उन्हीं दिनों फिजी में गत वर्ष की दुर्घटना हुई थी। ब्रिटिश गायना डेपूटेशन के समाचार हिन्दी पत्रों द्वारा फिजी पहुंचे। फिजी के हिन्दुस्तानियों ने सोचा चलो ब्रिटिश गायना चलें, और सहस्रों आदमियों ने ब्रिटिश गायना जाने के लिये अपने नाम लिखा दिये। यह किसी ने भी नहीं सोचा कि हजारों मील दूर ब्रिटिश गायना को उन्हें कौन ले

जावेगा, जहाज कहां से आवेगा ब्रिटिशगायना की हालत क्या है और वहां किस परिस्थिति में और किन २ शर्तों पर काम करना पड़ेगा। थोड़े बहुत नहीं कम से कम १२ हजार आदमी फिजी छोड़कर ब्रिटिश गायना जाने के लिए तैयार होगये। किसी ने अपना तीन हजार रुपये का घर तीन सौ रुपये में बेचा, किसी ने पांच सौ रुपये का घोड़ा पचास रु० में और किसी ने चालीस रुपये की गाय एक शिलिङ्ग में बेच डाली। जिन्होंने पचासों बीघा जमीन पट्टे पर ले रखी थी उन्होंने अपने पट्टे जहां के तहां छोड़ दिये, और जहाज का रास्ता देखने लगे। इन लोगों ने अपने दिल में यही निश्चय कर लिया कि संसार का कोई भी स्थान "फिजी के नर्क" से अच्छा ही होगा। मिस्टर फ्रांसीस एहर्न (Mr. Francis Ahern) जो फैडरेटेड प्रेसके आस्ट्रेलियन संवाददाता हैं, लिखते हैं प्रशान्त महासागर के दक्षिण में स्थित फिजी द्वीप से हजारों ही हिन्दू ('हिन्दुस्तानी) हिन्दुस्तान को लौट रहे हैं। गन्ने के खेतों पर काम करना उन्होंने छोड़ दिया है और यद्यपि उनके अङ्गरेज मालिकों ने उन्हे रोक रखने के लिये बहुत से प्रलोभन दिये हैं वेतन बढ़ाने के लिये भी कहा है लेकिन फिर भी हिन्दू लोग हजारों की संख्या में फिजी से प्रस्थान कर रहे हैं। ये ब्रिटिश लोगों की बहुत काफ़ी गुलामी कर चुके हैं, अब वे ज्यादः गुलामी नहीं करना चाहते। फिजी में उनकी स्त्रियों को जबरदस्ती

व्यभिचारपूर्ण जीवन व्यतीत करना पड़ा और इस भयंकर अपमान को वे बहुत दिनों तक सह चुके हैं अब वे इस नर्क को अन्तिम नमस्कार कर रहे हैं * फिजीके पत्र, जो फिजी सरकार से मिले हुए हैं, लिखते हैं कि फिजी के आन्दोलन को भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन करने वालों ने उठाया है और वे ही नीचता पूर्वक फिजी वालों को उकसा रहे हैं। इसका नतीजा यह हुआ है कि हजारों आदमी फिजी छोड़कर हिन्दुस्तान चले जा चुके हैं। घर जाने के लिये उन्होंने अपने मकान और माल असबाब को बहुत ही कम कीमत में बेच दिया है और सैकड़ों आदमी जहाज का टिकट पाने के लिये उत्सुक बैठे हुए हैं। बड़ी २ पूंजी वाले अङ्गरेज जी जान से इस बात की कोशिश कर रहे हैं कि किसी तरह से ये लोग रुक जावें। कुछ दिन हुए फिजी गवर्नमेण्ट ने सर्वसाधारण के सामने एक मेमोरियल उपस्थित किया था। गवर्मेण्ट ने कहा कि देखो हिन्दुस्तान गये हुए हिन्दुस्तानियों ने यह प्रार्थना पत्र हमारे पास भेजा है। ये लोग अब तङ्ग आकर फिर फिजी को लौटना चाहते हैं। फिजी सरकार ने

---

* They have had enough of British slavery, they have suffered too deeply in the forced prostitution of their women folk, and they are bidding a long good bye to "Nark"—in other words, to "hell"

सोचा था कि इस चालाकी से बहुत से आदमी रुक जायेंगे। लेकिन हिन्दुस्तानी इस दांव में नहीं आये। उन्होंने कहा "हम इस बात पर कभी विश्वास नहीं कर सकते कि भारतवासी फिर लौटकर इस नर्क की यात्रा करेंगे यह बिल्कुल झूंठ है। सरकार की चालाकी है।" हिन्दुस्तानियों के फिजी छोड़ने से फिजी के कोठो वाले घबड़ा गये हैं और उनके दिमाग़ के नक्शे बिगड़ गये हैं। ये लोग शिकायत कर रहे हैं कि हमारे गन्ने के खेतों के लिये मज़दूर नहीं मिलते। कहीं २ तो आधे से ज्यादा मज़दूर खेतों को छोड़ गये हैं और हजारों एकड़ खेती बरबाद हो रही है। गन्ने के कितने ही खेत जंगल बन गये हैं। विकट समस्या यह अटक गयी है कि मज़दूरों की कमी कहांसे पूरी हो। किसी किसीने प्रस्ताव किया है कि हिन्दुस्तानियों के बजाय चीन या जावा के निवासी मजदूरी करने के लिये मंगाये जावें लेकिन अभी तक कुछ निश्चितनहीं हुआ है।"

मिस्टर एहर्न का वृतान्त बिल्कुल ठीक है। फ़िजी के सुशिक्षित भारतीयों ने जो पत्र हमारे पास भेजे हैं, उनसे भी उपर्युक्त वृतान्त का समर्थन होता है। फिजी के एक योग्य नेताने कुछ महीने हुए मिस्टर ऐण्ड्रूज़ को एक पत्र लिखा था। यह पत्र इतना आवश्यक है कि इसका अनुवाद यहां देना अनुचित न होगा।

प्रियवर मिस्टर एण्ड्रूज; ......इस समय यहां की हालत

बड़ी गड़बड़ है। लगभग ५० फीसदी आदमियों ने अपने नाम हिन्दुस्तान लौटने के लिये लिखा दिये हैं और बहुतों ने अपनी जायदाद माल असबाब मकान वगैरह तिहाई चौथाई मूल्य पर बेच डाले हैं। ऐसे आदमियों की संख्या बहुत ज्यादा है जो सब चीजें बेचकर दस बीस पौण्ड जेब में डाले हुए घूम रहे हैं और हिन्दुस्तान जाने वाले जहाज का रास्ता देख रहे हैं। इनमें से कितनों ही को तो दो तीन वर्ष बाद जहाज मिलेगा क्योंकि फिजी सरकार जो जहाज देती है उनमें जगह ज्यादा नहीं होती। यूरोपियन लोग बहुत खुश हैं वे कहते हैं "जब इन लोगों के पास पैसा नहीं रहेगा जब जहाज का रास्ता देखते २ ये सब कुछ खा डालेंगे, तब इनको पेट के लिये झक मारकर एक शिलिङ्ग रोज पर काम करना पड़ेगा उस वक्त हमें खूब सस्ते मज़दूर मिलें जायेंगे बहुत से हिन्दुस्तानी तो इस समय ही फिजी के मास्टर आर सर्वेण्ट कानून के अनुसार यूरोपियन प्लाण्टरों का कार्य्य करने के लिये मजबूर होगये हैं चारों ओर भयंकर कष्ट है। फिजी द्वीप के भीतरी भागों में कितने ही हिन्दुस्तानी भूखों मर रहे हैं। कितने ही के पास पहिनने के लिये कपड़ा नहीं है और वे बोरे पहिन कर फिरते हैं अगर इन लोगों को फिजी से हिन्दुस्तान ले जाने के लिये काफ़ी जहाजों का शीघ्र ही प्रबन्ध नहीं किया गया तो इन लोगों की दुर्दशा असीम हो जावेगी। यूरोपियन प्लाण्टर कहते हैं।

We will pay 10 shillings to a Japanese to a Chinese labourer or any other labourer, but we will not raise a farthing for the Indians."

अर्थात् "हम जापानी चीनी अथवा किसी अन्य जाति के मज़दूर को भले ही दस शिलिङ्ग देदें लेकिन हिन्दुस्तानियों के वेतन में हम एक भी पैसा नहीं बढ़ावेंगे" यूरोपियन प्लाण्टरों ने यह दृढ़ निश्चय कर लिया है कि हम हिन्दुस्तानी मजदूरों के लिये कुछ भी नहीं करेंगे। ऐसी हालत में सिवा इसके और हो ही क्या सकता है कि हिन्दुस्तानियों को फिजी से वापिस भेज दिया जावे। अब सुनिये हिन्दुस्तानी अपनी चीजें किस प्रकार बेच रहे हैं। एक हिन्दुस्तानी ने अपने तीस पौंड (२५० रु०) की घोड़ी, मय साज सामानके 'वा'के पुलिस इन्सपैक्टरको १५ शिलिङ्ग में देदी। मैंने सुना है कि आदमियों ने ६ गाय एक एक शिलिङ्ग में बेच दी हैं। कितने ही आदमियों ने अपनी गौ जंगल में खदेड़ दी हैं क्योंकि उन्हें इस बात का डर है कि यों हीं छोड़कर चले जाने से ये गौ कसाइयें के हाथमें पड़ जावेंगी इससे आप अनुमान कर सकते हैं कि यहां से हिन्दुस्तानी घर लौट जाने के लिये कितने उत्सुक हैं। हर रोज बीसियों भाई मुझ से कहते हैं 'मेहरबानी करके आप हिन्दुस्तान के नेताओं को लिखिये कि वे हमारे हिन्दुस्तान भिजवाने का प्रबन्ध करदें मेरा विश्वास है कि यदि इन लोगों को घर ले जाने का

इन्तजाम जल्दी नहीं किया गया, तो यहां वालों की तक-लीफ़ बेशुमार होजावेगी। अब मेरी आप से यही प्रार्थना है कि आप इस कष्ट से उबारने का कोई उपाय कीजिये। कांग्रेस और भारत सरकार से कहिये कि वे ही कुछ करें। मुझे तो यहां के गोरे लोगों ने आन्दोलन करने वाला—की उपाधि देदी है। इन यूरोपियनों का कथन है कि मैं असंतोष फैलाता हूं। कितनों ने तो सरकार से मेरे देश निकाले के लिये प्रस्ताव किया है इस स्थिति में कुछ भी नहीं कर सकता बीसियों ही चिट्ठी मैं फ़िजी सरकार को भेज चुका हूं, और कम्पनी वालों को भी मैं कई बार लिख चुका हूं कि हिन्दुस्तानियों के कष्ट दूर करने के ये उपाय हैं। लेकिन मेरी प्रार्थना पर कोई भी ध्यान नहीं देता। समझ में नहीं आता क्या करूं! कृपाकर कुछ सलाह दीजिये।

भवदीय स्नेह पात्र

........................."

इस पत्र को लिखे कई महीने होगये, लेकिन तब से अब तक हालत बिलकुल नहीं सुधरी। सुधरना तो दूर रहा हालत दिन दूनी रात चौगुनी खराब होती गई है। पिछले जहाजों से जो आदमी लौटे हैं उनसे मिलने का सौभाग्य मुझे बराबर प्राप्त हुआ है और उन्होंने जो बातें सुनाई हैं उनसे यही प्रगट होता है कि हालत दिनपर दिन खराब होती जाती है किसी को दस बारह दिन पहले ही सूचना मिलती

है कि तुमको जहाज मिलेगा इसलिये विचारा इन दस बारह दिनों में ही अपनी ज़ायदाद बेचने की कोशिश करता है और तिहाई चौथियाई कीमत में बेच बाच कर जहाज पर सवार हो जाता है। कोई वर्ष भर से बैठा हुआ जहाजको रास्ता देख रहा है लेकिन जहाज नहीं मिलता। इस समय फिजी के हिन्दुस्तानियों के दिमाग में केवल एक बात घूम रही है वह यही है "किसी तरह जहाज मिले !" सारी व्यवस्था गड़बड़ है। इस सङ्कट से परमात्मा ही फिजी प्रवासी भारतीयों की रक्षा कर सकता है। इस समय तो उनके सामने अंधकार ही अंधकार है, हृदयमें अज्ञानान्धकार है सामने स्वार्थी प्लाण्टर हैं, ऊपर अत्याचारी सरकार है, सहायक कोई नहीं, नेताओं का अभाव है–फिजी सरकार की कृपा से नेताओं को देश निकाले का पुरस्कार मिल चुका है–परन्तु अधिक सब से भयंकर बात यह है कि स्वयं प्रवासी भारतीयों के बीचमें सत्यानाशी फूट का अधिकार है। भविष्यमें क्या होगा राम जाने। कहीं वह भी अन्धकार मय न हो !

नेताओं का अभाव

(३)

फिजी प्रवासी भारतवासियों में भयंकर फूट।

जिस समय अकेले पं० तोताराम जी सनाढ्य फिजी प्रवासी भारतीयों में काम कररहे थे उस समय की दशा में

और अब की दशा में बड़ा अन्तर होगया है। पं० तोताराम जी अधिक पढ़े लिखे नहीं, किसी विश्वविद्यालय से उन्होंने शिक्षा नहीं पायी, अंग्रेजी वे बिल्कुल नहीं जानते लेकिन उनमें कई गुण ऐसे हैं जो प्रायः नामधारी सुशिक्षित आदमियों में नहीं पाये जाते। वे स्वयं त्यागी हैं, सच्चरित्र हैं, परिश्रमी हैं और कुशाग्र बुद्धि के हैं। समय पर उन्हें खूब सूझती है और आदमियों को वे तुरन्त ताड़ जाते हैं। फिजी में पण्डित तोताराम जी के कार्य्य की सफलता का एक मुख्य कारण यह भी था कि वे स्वयं ५ वर्ष तक शर्त बन्दी की गुलामी कर चुके थे इस लिये वे फिजी प्रवासी भारतीयों के कष्टों को अच्छी तरह अनुभव कर सकते थे। विशेषतया पं० तोताराम जी के प्रयत्न से डाक्टर मणिलाल जी फिजी को बुलाये गये। डाक्टर मणिलाल ने मारीशस में प्रवासी भारतीयों के लिये प्रशंसनीय उद्योग किया था और महात्मा गांधी जी की आज्ञानुसार ही वे फिजी गये थे। डाक्टर मणिलाल जी तथा उनकी धर्म पत्नी श्रीमती जैकुमारी देवी ने फिजी प्रवासी भारतीयों की जो भलाई की उसका वर्णन करने की यहां आवश्यकता नहीं है। श्रीमती जैकुमारी देवी के कार्य्यं को हम डाक्टर मणिलाल जी के कार्य्य से भी अधिक महत्व देते हैं। श्रीमती जैकुमारी जी डाक्टर पी० जे० महता एम० डी० बैरिस्टर की सुपुत्री हैं। ये दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गांधी जी के आश्रम में रह

चुकी हैं और गरीब भाइयों के लिये उनके हृदय में स्थान है। डाक्टर मणिलाल जी सन् १९१२ में फिजी पहुंचे। तदनन्तर स्वामी राम मनोहरानन्द जी सरस्वती भी पहुंचे। स्वामीजी के पहुंचने के बाद फिजी में दो दल होगये, एक तो आर्य्य समाजियों का और दूसरा डाक्टर मणिलालके अनुयायियों का सन् १९१४ के अप्रैल मास में पं० तोताराम जी भारत को चले आये। स्वामी जी ने अपनी योग्यता और बुद्धि अनुसार प्रवासी भारतीयों की सेवा की और अब भी कर रहे हैं। लेकिन स्वामी जी में एक कमीहै उनमें परिश्रम करने की अधिक शक्ति नहीं और वे सङ्गठन करने में भी निपुण नहीं हैं। कितने ही दिनों से स्कूल के लिये उगाये हुए चन्दे का उपयोग वे अब तक नहीं कर सके।

लेकिन जहां तक हमें ज्ञात है स्वामी जी की त्रुटियों के लिये जितना उनका मस्तिष्क दोषी है उतना उनका हृदय नहीं। गत वर्ष फिजी सरकार ने डाक्टर मणिलाल तथा श्रीमती मणिलाल जी को देश निकाले का दण्ड दे दिया। उस समय से फिजी की अवस्था बिल्कुल बिगड़ गई है। मणिलाल जी के देश निकाले के कुछ सप्ताह पहले वहां स्वामी वशिष्ठ मुनि पहुंच गये थे। स्वामी जी ने अत्याचार पीड़ित फिजी प्रवासी भारतीयों को धैर्य्य बंधाया और बड़े परिश्रम के साथ आप जगह २ घूमे। आप पैदल ही फिजी के उन २ स्थानों में गये जहां साधारण आदमियों के

लिए जाना अत्यन्त कठिन था। हड़ताल के दिनों में अपने हड़तालियों के लिये जो अन्न इत्यादि इकट्ठा किया उसके लिये फिजी प्रवासी भारतीय आपके कृतज्ञ रहेंगे। आपने कई स्कूल भी खोले। आपके साहस की भी प्रशंसा करनी पड़ेगी। इन सब बातों के कहने पर हमें स्वामी जी तथा उनकी कार्य्यशैली के विषय में दो चार बातें कहना आवश्यक प्रतीत होता है। सब से बड़ा दुर्गुण स्वामी जी में यह है कि आप अपने मत के विरोधियों को या तो मूर्ख समझते हैं या बेईमान। आपसे बातचीत करनेका अवसर मुझे कितने ही बार मिल चुका है इसलिये जो कुछ मैं कहता हूं अधिकार पूर्वक कहता हूं। स्वामी जी में दूसरा दुर्गुण यह है कि आप अपने विपक्षी के सदुद्देश्यों में ही शङ्का करते हैं। आप समझते हैं कि दूसरे आदमी या तो काम करना नहीं जानते अथवा बुरे उद्देश्य से काम करते हैं। बस आपने इसी नीति से फिजी में काम करना शुरू किया। अपने २६ ता० के पत्र में एक महानुभाव फिजी से लिखते हैं "लगभग १ वर्ष हुआ यहां भारतवर्ष से एक साधु आये थे। आते ही साधु जी ने हर एक जिला घूम डाला और बड़े २ जिलों में स्कूल भी स्थापित किये। थोड़े समय बाद उन्हों ने मजदूर लोगों में कुछ २ व्याख्यान देने शुरू किये। नतीजा यह निकला कि लोगों ने हड़ताल कर दी फिर देखना क्या था साधु ने यहां वहां दौड़ना शुरू किया और

राकी राकी, ब लतौका, नद्री और नड्रोगा इत्यादि जिलों में सभा करना प्रारम्भ किया इन जिलों में आपने खाने की चीजें भी इकट्ठी की। मैंने तथा मेरे मित्रोंने विचारा कि इसका नतीजा कुछ अच्छा निकलेगा पर हम लोगों की आशा पर ठण्डा पानी पड़ गया। बहुत देर तक साधु से मैंने वार्तालाप किया और अपने विचार भी उनके सामने प्रगट किये. लेकिन साधुने मेरे विचारों पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया। मेरे दोस्त मि० एल. वी. मिश्र ने भी प्रयत्न करके साधु को समझाया था पर साधु ने किसी की बात पर ध्यान नहीं दिया! साधु ने सब लोगों में फूट डाल दी। आर्य्य-समाजियों और क्रिश्चियनों को बुरी २ बात कहकर साधु ने अपने निकट भी नहीं आने दिया इसका नतीजा यह हुआ कि आर्य समाजी और क्रिश्चियन साधु की बुराई करने लगे। जो दो चार आदमी यहांके अगुआ थे उनको साधुजी ने अपने दल से छांट दिया।"

साधु वशिष्ठ मुनि की संगठन शक्ति की प्रशंसा करते हुये हमें कहना पड़ता है कि उन्होंने जिस नीति से फिजी में काम करना प्रारम्भ किया वह वास्तव में अत्यन्त हानिकारक थी। इसमें सन्देह नहीं कि साधु जी ने गोरे प्लाण्टरों की बुद्धि ठिकाने लाकर बड़ा भारी काम किया, लेकिन उनकी कार्यशैली का दुष्परिणाम यह हुआ कि आज फिजी द्वीप में भयङ्कर फूट का साम्राज्य है। सुनिये फिजी में इस समय कितने दल काम कर रहे हैं।

(१) स्वामी वशिष्ठ मुनि के अनुयायी।

(२) स्वामी राममनोहरानन्द जी के साथी।

(३) मिस्टर एन. बी. मिश्र तथा उनके मित्र।

(४) माननीय बद्री महाराज और उन के खुशामदी।

(५) ईसाई बुरुद्दीन पाठक [पीटर ग्राण्ट] और उसका दल।

इन में स्वामी वशिष्ठ मुनि के अनुयायियों की संख्या सब से अधिक है। मज़दूर दल अपना सहायक मानता है स्वामी जी के देश निकाले से इन लोगों के हृदय को बड़ी चोट लगी है और ऐसा होना स्वाभाविक था है क्योंकि स्वामी जी ने अन्न इत्यादि इकट्ठा करके मज़दूरों को बड़ी सहायता की थी लेकिन ये लोग यह ख्याल करते हैं कि स्वामी जी के देश निकाले के कारण आर्य्य-समाजी तथा क्रिश्चियन लोग ही हैं। इसलिये उन्होंने सब आर्य्य-समाजियों और ईसाइयों का बहिष्कार कर दिया है। यह भूल की बात है असली बात तो यह है कि प्लाण्टर लोगों ने ही स्वामी जी को देश निकाले का दण्ड दिलवाया है। हम मानते हैं कि आर्य्य-समाजियों में कई आदमी साधारण प्लाण्टर भी हैं लेकिन इन अल्प-संख्यक स्वार्थी आदमियों के कारण सम्पूर्ण आर्य्यजन समुदाय को अपराधी बतलाना कहां की बुद्धिमानी है? मुख्य दोष तो गोरे प्लाण्टरों का है और फिजी सरकार का है।

स्वामी राममनोहरानन्द जी सरस्वती इस समय बड़े निराश हो गए हैं और उन्हें फिजी प्रवासी भारतीयों पर क्रोध आता है। स्वामी जी के थोड़े बहुत साथी भी हैं। फिजी की वर्तमान परिस्थिति के विषय में आपने भारत हितैषी मि० एण्ड्रूज़ को वृत्तान्त लिखा है, उस से आप के विचारों का पता लग सकता है आप लिखते है।

"उत्तरीय फिजी में 'सिगाटोका' से 'रा' तक भूखे भारतीय श्रमजीवियों का व्यापक हड़ताल है निपटारा अभी तक नहीं हुआ मालिक और मजदूर लोभवश अपनी २ जिद्दों पर अड़े हुये है। श्रमजीवियों की ओर से उपद्रव विल्कुल नहीं हुआ। किन्तु एक व्याख्याता भारत से नवागत वशिष्ठ मुनि (साधुवेश मृगचर्म कमण्डलु काषायम्वरधारी) नामक व्यक्ति को देश निर्वासिन किया गया है और एक वृद्ध वाल वच्चों वाले मद्रासी को जिसका नाम पेंकट सामी था, उइया ओवरसियर ने जो युद्ध से लौटा हुआ सिपाही है, गोली से मार डाला है।

कुछ मुसलमान, कुछ ईसाई कुछ हिन्दू और कुछ आर्यसमाजी भारतीय जनता में इस कारण वदनाम हो रहे हैं कि निर्वासित किये गये लीडरों के वारे में इनका भी हाथ माना जाता है। जिनपर ऐसा सन्देह है उनका जनता वायकाट कर रही है। वदनामी सत्य हैं या निराधार यह परमात्मा ही जाने।

एक ओर तो युद्ध के बाद चीजों का भाव वैसे ही तेज है और दिनो दिन तेज होता जाता है और दूसरी ओर श्रम-जीवियों का यह वर्तमानिक हड़ताल है जिसके कारण लाखों पौण्ड की हानि हो रही है। आजकल फिजी मरघट के सदृश त्रासदायक दीख पड़ती है मजदूर अपनी भूखी दशा में निःसहाय हो गये है और अपनी कुली प्रथा में बीता बातों को स्मरण करके अत्यन्त असन्तुष्ट हैं और यूरोपियन लोग चकित हैं कि ये हिन्दुस्तानी जो बड़े से बड़े दुःखों और अपमानों को सहकर भी कुली प्रथा में कान नहीं हिलाते थे, आज इन्हें क्या हो गया है जो सामने स्पष्ट बेलाग जवाब सवाल कर बैठते हैं ?

कुली लाइनें सारी की सारी मज़दूरों से खाली हैं। इस साल कम्पनियों का और प्लाण्टरों का गन्ना नहीं बोया गया यदि इसी ठलुआपाती की दशा का यथान्याय निपटारा नहीं हुआ तो कुछ समय में फिजी द्वीप भारतीय सन्तानों से रिक्त हो जावेगा।

इस आन्दोलन से मेरे काम धर्म प्रचार व विद्याप्रचार में भी बड़ी विकट बाधा पड़ी थी और पड़ रही है। जो मेरे साथ काम करते थे वे भी तो कुली लाइनों के ही जन्तु थे। ये अपने कुकर्म आदि बदचलनी से पवित्र आदेशों और उप-युक्त नियमों को लात मार कर स्वार्थ मार्ग पर चलना चाहते हैं। सारांश यह है, कि पापों के कारण आज मनुष्य को

घुतले कुमार्ग गामी वनकर नर्क की ओर सरक रहे हैं। इन्हीं अनिवार्य बाधा और बाधकों से पराजित होकर शायद मुझे इसी मास की १४-१५ ता० को स्पेशल सभा में त्याग पत्र देना पड़े। ऐसी अशुद्ध अन्यायियोंके बीच न्याय, प्रेम, पवित्रता, सद्धर्म, और सद्विद्या का प्रचार करना समय मात्र खोना है।"

स्वामी जी की इस निराशा मय स्थिति को पढ़कर हमें खेद होता है आशा है कि फिजी प्रवासी भारतीय जनता स्वामी जी को अकारण दोषी नहीं ठहरावेगी।

मिस्टर एन. बी. मित्र एक बङ्गाली सज्जन हैं। आप फिजी में मि० एण्ड्रूज़ द्वारा स्थापित एक स्कूल के अध्यापक हैं। आपके विचार माडरेट हैं और आपकी नीति भी माडरेटों की सी है लेकिन तबभी फिजी सरकार तथा गोरे प्लान्टरों की आपपर कुदृष्टि रहती है। गत वर्ष 'बा' की सभा में आपने जो व्याख्यान सभापति की हैसियत से दिया था वह बहुत योग्यता पूर्ण था। हमने सुना है कि मि० मित्र कसी के विरोधी नहीं हैं और प्रवासी भारतीयों की भलाई के लिये वे सब के साथ मिलकर काम कर सकते हैं और उन में उदारता है, सहनशीलता है और विवेक बुद्धि है। माननीय बद्री महाराज और इनके पिछलगुओं के विषय में क्या कहें? इन्हें फिजीका सर ओमर हयातखां कहना चाहिये। गत वर्ष आपने फरमाया था कि हिन्दुस्तानी मज़दूर

एक शिलिङ्ग रोज में अपनी गुजर कर सकता है डाक्टर मणिलाल जी के देश निकाले का सुयश कुछ अंशों में आप को भी प्राप्त है। गत वर्ष के सरकारी कमीशन में बैठकर आपने अपने भूखों मरने वाले भाइयों का सत्यानाश कर दिया। फिजी की व्यवस्थापिका सभा में बोलते हुये आपने फर्माया था:—

"मिस्टर एण्ड्रूज़ की फिजी यात्रा से हम लोगों की बड़ी भारी हानि हुई है" श्री बद्रीमहराज जी अपने कर्मों का फल भोग रहे हैं भारतवासियों का विश्वास उन पर से उठ गया है और भारतीय जन समाज में उनके लिये कुछ भी सम्मान नहीं।

फिजी से जो आदमी लौटकर आये हैं वे कहते हैं कि पीटर ग्रान्ट और उसका दल फिजी में सम्पूर्ण अत्याचारों की जड़ है। पिछले साल इन हजरत ने जो कार्रवाइयां की थीं उन्हें यहां दुहराने की आवश्यकता नहीं जब तक पीटर ग्रांट या उसका कुटुम्ब फिजी सरकार का विश्वास पात्र और कृपा पात्र बना रहेगा तब तक फिजी प्रवासी भारतीयों की भलाई होना कठिन ही है।

इस प्रकार फिजीप्रवासी भारतीयजन समुदाय में चारों ओर फूट का साम्राज्य है। प्रवासी भारतीय प्रायः अशिक्षित हैं, उनका कोई नेता नहीं, आपस में भी उनमें मेल नहीं कोई कुछ कहता है, कोई कुछ, सब अपनी २ डफली

अपना २ राग गा रहे हैं जब तक वे आपस का द्वेष भाव दूर नहीं करेंगे तब तक उनका उद्धार होना कठिन ही नहीं असम्भव है फिजी प्रवासी भारतीयों को यह बात अच्छा तरह समझ लेनी चाहिये कि जब तक उनमें आपस में मेल नहीं होगा तब तक स्वार्थी गोरे प्लाण्टर खुशी मनाते रहेंगे और चालांक फिजी सरकार इस फूट से फायदा उठाती रहेगी । छिद्रेषु अनर्था वहुली भवन्ति" यह कहावत प्रवासी भारतीयों की वर्त्तमान स्थिति पर बिल्कुल चरितार्थ होती है फिजी को कुली जाना सन् १८७८ के लगभग प्रारम्भ हुआ था । चालीस वर्ष तक फिजी को शर्त्त बन्धे हिन्दुस्तानी भेजे जाते रहे और दस आदमी पीछे तीन औरतों का व्यभिचार पूर्ण औसत फिजी में चालीस वर्ष तक जारी रहा । दुराचारों की दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि होती रही । अन्त में रैवरैण्ड वर्टन और मिस डडले की कृपा से सभ्य संसार को फिजी प्रवासी भारतीयों की दुर्दशा के समाचार ज्ञात हुए । सन् १९१४ में पं० तोताराम जी सनाढ्य ने फिजी से लौट कर भारतीय जनता को फिजी प्रवासी भारतीयों की दुर्दशा का हृदय बेधक वृतान्त सुनाया। भारत मित्रने भी फिजी प्रवासी भाइयों का पक्ष बड़ी योग्यता पूर्वक लिया। लेकिन सबसे अधिक परिश्रम करना पड़ा भारतहितैषी श्रीयुत सी. एफ एण्ड्रूज़को । पहली जनवरी सन् १९२० को फिजी में कई सहस्र मज़दूर मुक्त हो गये । बस यहीं से फिजी की

वर्तमान रामकहानी शुरू होती है।

फिजी की सम्पूर्ण दुर्घटनाओं पर ध्यान देते हुए दो बातें हमारे ध्यान में आती हैं। पहली बात तो है योग्य नेता का अभाव और दूसरी निराशामय परिस्थिति। फिजी गवर्नमेण्ट की कृपा से भले बुरे जो नेता थे भी, उनको देश निकाले का दण्ड मिल गया।

फिजी प्रवासी भारतीयों ने अपनी आंखों से देखा कि उनके २०० भाई बहनोंको जेलखाने की हवा खिलाई गयी। सिपाहियों के अत्याचार उन्होंने अपनी आंखों से देखे। फिजी की पक्षपात पूर्ण सरकार की निर्बलता और भारत सरकार की नपुंसकता उन्होंने अपने नेत्रों से देखी। फिजी के जङ्गलियों की उद्दण्डता देखने का भी दुर्भाग्य उन्हें प्राप्त हुआ। डा० मणिलाल को एक गोरे द्वारा धक्का खाते हुए और जार्ज सूचित को दूसरे गोरे द्वारा पीटे जाते हुए उन्होंने अपनी आंखों से देखा। जातीय विद्वेष से परिपूर्ण कानून उनकी आंखों के सामने पास हुए।

फिजी प्रवासी भारतीयों ने पचासों ही पत्र हिन्दुस्तान को भेजे लेकिन हम लोगों ने उनकी करुणा जनक प्रार्थना पर ध्यान नहीं दिया। समाचार पत्रों में दस बीस लेख लिखकर हम चुप होगये। प्रयत्न किया गया कि कलकत्ते की स्पेशल कांग्रेसमें फिजी प्रवासी भारतीयों का प्रश्न उठाया जावे लेकिन कांग्रेसके नेताओं ने इसे निरर्थक समझा। नागपुर

कांग्रेस ने तो प्रस्ताव ही पास कर दिया कि देश की वर्त्तमान दासत्व पूर्ण अवस्था में हम प्रवासी भारतीयों की कुछ भी सहायता नहीं कर सकते। विलायत के कालोनियल आफिस को भी फिजी प्रवासी भाइयोंने अपना प्रार्थना पत्र भेजा लेकिन कालोनियल आफिस ने चुप्पी साधली। फिजी सरकारके सामने भी कितनी ही वार रोना रोया लेकिन वह भी सब निर्थक हुआ। शक्तिशाली सी० एस० आर कम्पनी से और पौण्ड शिलिङ्ग पेंस के स्वार्थी प्लाण्टरों से दवी हुई फिजी सरकार भला करही क्या सकती थी? फिजी प्रवासी भारतीयों ने देखा कि गोरे मालिक अत्याचार करने पर तुले हुए हैं, फ़िजी सरकार उनके हाथ का खिलौना है, भारत की नौकरशाही कुछ ध्यान नहीं देती, विलायत का कालोनियल आफ़िस कानमें उँगली दिये हुए बैठा है, नेता सब देश से निकाल दिये गये; चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार है सब करें तो करें क्या? जब हिन्दुस्तानियों का कुछ वश नहीं चला तब उन्होंने यही निश्चय किया कि ऐसे अत्याचार पूर्ण देश में रहने से यही उत्तमतर है कि अपना सब माल असबाब तिहाई चौथाई मूल्य पर बेचकर मातृभूमि को वापिस चलें। अतएव इन लोगोंने फिजी के इमीग्रेशन आफिस में अपने वापिस जाने की सूचना देनी प्रारम्भ की; ६० हजार आदमियोंमें से लगभग ३० हजार ने नाम लिखा दिये। फ़िजी सरकार के पेट में पानी होगया। सर-

कार ने जगह २ इन्सपेक्टर भेज कर लोगों को समझाने को कोशिश की लेकिन सरकार के सब प्रयत्न निष्फल हुए।

पहली हड़ताल फरवरी सन् १९२० में हुई थी, अबकी बार दूसरी हड़ताल सन् १९२१ के फरवरी महीने में हुई। फिजी में कोई नेता नहीं, फिजी के प्लाण्टर बिल्कुल शत्रु हैं, फिजी सरकार सी० एस० आर कँपनी की गुलाम है। भारत सरकार अपने कर्त्तव्य की अपेक्षा करती रही है। विलायत का कालोनियल आफिस कान में उँगली दिये बैठा है। इधर भारतीय जनता अपने घरके झगड़ों में फँसी हुई है। नागपुर कांग्रेस में भारतीय नेताओं ने एक प्रस्ताव पास करके संसार के सामने यह स्पष्ट घोषणा करदी है कि जबतक हम गुलामी में फँसे हुए हैं हम परतन्त्र प्रवासी भारतीयों को सहायता करने में असमर्थ हैं। ऐसी दशा में फिजी के निस्सहायक हिन्दुस्तानी करते तो क्या करते! मातृभूमि को लौटने के सिवाय उन के पास दूसरा उपाय ही कौन था यही कारण है कि फिजी प्रवासी भारतीय बार २ यही लिख रहे हैं "जहाज भेजो जहाज भेजो"। निम्नलिखित पत्र जो फिजी के कुछ आदमियों ने महात्मा गांधी जी के नाम भेजा है, उन लोगों की मानसिक स्थिति को प्रगट करता है।

फिजी प्रवासी भारतीयों का पत्र

महात्मा गांधी जी के नाम।

स्वस्ति श्री सर्वोपमा योग्य श्री महात्मा गांधीजी को हम लोगों का सलाम पहुंचे। आगे दीगर हाल यह है कि हम लोग बड़े तबाह हैं, बड़ी मुसीबत में पड़े हैं और यहां फिजी में हमारी मुसीबत देखने वाला कोई नही है। हम लोगों को इतनी तकलीफ है कि कह नहीं सकते। आप इस बात का भी ख्याल करना कि यहां हमारे आगे पीछे कोई नहीं है। आप और जनाब मौलवी साहब शौकतअली हम ग़रीबों की परवरिश के लिये कोशिश करें जिसमें हमें घर लौटने के लिये जहाज मिल जावें। जब हम इमीग्रेशन आफिस में जाते हैं तो वहां जवाब मिलता है "हिन्दुस्तान में जाकर क्या करोगे? फिजी में रहो।" हम लोग बोलते हैं कि हम अपने मुल्क को जाना चाहते हैं। हमारी कोई नहीं सुनता और कुत्ता के माफिक खदेड़ता है। इमीग्रेशन आफिस पर आने वालों की भीड़ लगी रहती है। हिन्दुस्तान में कुछ आदमी ईसाई गये हुए हैं वे यहां पत्र लिखते हैं कि "हिन्दुस्तान में लोग घास उबाल के खाता है और हिन्दुस्तान में बड़ी तकलीफ है, तुम लोग मत लौटना, फिजी में बड़ा सुख है।" फिजीमें हड़ताल जारी है गोरे लोग कुछ तलब नहीं बढ़ाते हैं और कहते हैं, कि काम करो। हम लोग कहते हैं, कि तलब

बढ़ाओ तो वह लोग कुछ नहीं बोलते। थोड़ा लिखा बहुत समझना। हम लोग आप को खत लिखने का कायदा नहीं जानते हम बहुत कम अक्ल आदमी हैं। हम बिल्कुल थोड़ा पढ़ा हैं जो हम ठीक से पढ़ा होता तो आप लोगों को खत लिखने का कायदा मालूम होता और हाल भी ठीक ठीक लिख सकता। जो कुछ हरफ गलती हो सो माफ करना।

मुहम्मदखां, मुहम्मद नादिरखां अफगानी, शेख गुलाम नदी, फकीर मुहम्मद।

× × × ×

इस पत्र पर टीका टिप्पणी करने की आवश्यकता नहीं है। जिन हिन्दुस्तानियोंके साथ फिजी सरकार कुत्तों कासा व्यवहार करती है, उन्हीं हिन्दुस्तानियों की मातृभूमि से वह भविष्य में मज़दूर पाने की आशा कर रही है! इस मूर्खता की भी कोई हद है?

फिजी में क्या हो रहा है।

(४)

प्लाण्टरों के प्रयत्न।

फिजी के प्लाण्टरों के सामने इस समय केवल एक ही प्रश्न है, "सस्ते मज़दूर कैसे और कहां से मिलें?" दिन रात सोते जागते उन्हें यही चिन्ता लगी रहती है। हिन्दुस्तान से आवें या चीन से आवें, जावा से आवें या सिंगापुर से

आवें, सीलोन से या कहीं और से, सस्ते मज़दूर आने चाहिये। गोरे साहबों और उनकी मेम साहबों को 'शर्तबन्दी गुलामी' के दिनों की रह २ के याद आती है। वे कहते हैं जब "इंडेंश्चर सिस्टम" जारी था हम लोग बड़े मजे में थे। हर साल तोन हजार कुली हमैं मिल जाया करते थे। गवर्मेण्ट ने मिस्टर ऐण्ड्रूज़ के दबाव में आकर शर्तबंधे मज़दूरों को एक साल पहिले ही मुक्त कर दिया इसी से सारा काम बिगड़ गया। सुप्रसिद्ध त्रैमासिक पत्रिका राउण्डटेबिल के एक लेखक ने लिखा था "प्लाण्टरों को तो सस्ते मज़दूर चाहिये, उन्हें इस बात को कुछ भी पर्वाह नहीं कि भिन्न २ जातियों के आने से अनेक प्रश्न उठ खड़े होंगे, जिनका हल करना अत्यन्त कठिन हो जावेगा। फिजी के प्लाण्टर पूर्वीय जातियों के सस्ते मजदूरों की मदद से भारी २ मुनाफे उठाना चाहते हैं। शर्तबंधे मज़दूरों के द्वारा उठाये हुये मुनाफों का उन्हें चसका पड़ गया है। उन्हें तो सस्ते मज़दूर चाहिये, चाहे इसका परिणाम कुछ भी क्यों न हो।" मिस्टर स्काट ने, जो सी० ऐस० आर० कम्पनी के वकील हैं और जो प्लाण्टरों के प्रतिनिधि हैं, फिजी की व्यवस्थापिका सभा में एक स्पीच दी थी। इस स्पीच से प्लाण्टरों के हार्दिक भावों का भली भांति अनुमान हो सकता है। मिस्टर स्काट ने कहा था "हमारे मज़दूर हमैं छोड़ २ कर हिन्दुस्तान को चले जा रहे हैं। हजारों

हिन्दुस्तानी अपने मुल्क को जाना चाहते हैं। फिजी का देश जँगल हुआ जाता है, अब हम क्या करें ? मुझे विश्वास है कि श्रीमान् गवर्नर साहब को हम लोगों के साथ सहानुभूति है।........बड़ा जरूरी सवाल यह है कि हिन्दुस्तान और फिजी के बीच में जहाज का आना जाना कब शुरू होगा। इसमें सम्भवतः बहुत वक्त लगेगा, और फिर हमें यह भी पक्की तरह से नहीं मालूम कि भारत सरकार फिजी से लौटे हुये हिन्दुस्तानियों को फिर फिजी वापिस आने देगी या नहीं। इस बीच में हम लोग क्या करें ? क्या हम गवर्नर साहब की आज्ञा लेकर विलायत को जावें और औपनिवेशिक विभाग के अधिकारियों को फिजी का सच्चा सच्चा हाल सुनावें ? हमें यह विश्वास नहीं होता कि औपनिवेशिक विभाग वाले हमारी कठिनाइयों को समझते हैं। अगर कालोनियल आफिस हमारी परिस्थिति को जानता होता तो वह भारत सरकार पर दबाव डालता और फिर भारत सरकार हमारे साथ वैसी कार्रवाई न करती जैसी कि वह कर रही है। फिजी में पैदा हुये आदमी फिजी को लौटना चाहते लेकिन भारत सरकार उन्हें नहीं लौटने देती भारत के राष्ट्रीय-दल वाले इतने प्रबल हैं कि वे इन लोगों को फिजी आने से रोक रहे हैं। ।मामला अत्यन्त आवश्यक है और अत्यन्त नाजुक है। बहुत कुछ सोच विचार करने के बाद मैं इसी परिणाम पर पहुंचा हूं कि अब भारत सरकार

से अर्जी प्रार्थना करना व्यर्थ है। अब वक्त आ पहुंचा है कि हम सारे मामले को कालोनियल आफिस के सामने रख दें।"

मिस्टर स्काट के मुंह से यह बात सुनकर कि "फिजी जंगल हुआ जाता है। अब हम क्या करें?' हमैं उनपर बड़ी करुणा आती है हड़ताल करने वालों को जेल में ठेलने वाले मिस्टर स्काट ही थे। जिस समय दो सौ हिन्दुस्तानियों को मिस्टर स्काट ने जेल भिजवाया था, उस समय उन्हें यह बात न सूझी थी कि आखिर हिन्दुस्तानी भी आदमी हैं, उनमें भी कुछ आत्म सन्मान के भाव हैं, यदि नाना प्रकार के अपमान सहकर उन्होंने फिजी द्वीप को छोड़ देने का दृढ़ निश्चय कर लिया तो फिजी द्वीप स्मशान भूमि के समान हो जावेगा? जिस वक्त मिस्टर स्काट ने कहा था कि हिन्दुस्तानी मजदूरों के वेतन बढ़ाने की कुछ भी आवश्यकता नहीं उन्हें खाने का सामान थोड़े सस्ते दामों पर मिल जाना ही काफी होगा, उस वक्त मिस्टर स्काट को यह बात नहीं सूझी थी कि भूखों मरने वाले हिन्दुस्तानी मजदूर अगर अपने मुल्क को चल दिये फिजी तो जङ्गल हो जावेगा। डाक्टर मणिलाल को देश निकाला दिलवाते समय जनाब स्काट साहब के ख्याल शरीफ में यह बात नहीं आई थी कि इससे डाक्टर मणिलाल के देश बन्धुओं के हृदय को कितना आघात पहुंचेगा! आज मि० स्काट

का हृदय फिजी में पैदा हुये हिन्दुस्तानियों के लिये, जो भारत में हैं द्रवित होता है। फिजी के कौंसिल में मिस्टर टार्ट ने निम्न लिखित प्रस्ताव उपस्थिति किया था, "इस कौंसिल की यह सम्मति है कि फिजी की कोठियों पर काम करने के लिए चीनी मज़दूर मँगाये जावें" सरकारी मेम्बरों ने इस प्रस्ताव पर वोट नहीं दी और चुने हुये प्रतिनिधियों की वोट से यह पास हो गया। ऐसा करने का अभिप्राय यह था कि जिससे फिजी सरकार की यह राय न समझी जावे कि वह साम्राज्य सरकार की इच्छा के विरुद्ध फिजी में चीनी मजदूर मँगाना चाहती है। मि० टार्ट ने भी अपनी स्पीच में बहुत रोना रोया था। आपने कहा था "सब जगह माल स्टोन नामक भयङ्कर घास उग आई है खेत जङ्गल वन गये हैं। मजदूर नहीं मिलते, काम नहीं चलता, हमारा सत्यानाश हो रहा है। मेरी कोठियों की जो दुर्दशा हुई है उसके बारे में क्या कहूं? दूसरे प्लाण्टरों को अपनी कोठी दिखलाने में भी मुझे शर्म आवेगी। घास और पौधे इतने वढ़ गये हैं, कि उनके बीच में होकर जाना अत्यन्त कठिन है कुछ दिनों में अब यह हालत होने वाली है कि नारियल इकट्ठे करना असम्भव हो जावेगा। माल स्टोन नामक घास को बिना मज़दूरों के उखाड़ना सम्भव नहीं है। सैकड़ा पीछे १० एकड़ भी ऐसे खेत नहीं होंगे जो साफ़ हों और जिनमें यह सत्यानाशी घास न हो मज़दूर

के बिना इस परिस्थिति का मुकाबला करना असम्भव है।"

पाठकों को यह बात भूली न होगी कि गत वर्ष जनवरी मास में फिजी सरकार का एक डैपूटेशन भारत को आया हुआ था। इस डैपूटेशन का उद्देश्य भारत से फिर कुली प्रथा जारी करनेका था। यह भी प्लाण्टरोंका भेजा हुआ था।

यद्यपि मज़दूरों के लिये प्लाण्टर लोग चिल्ला रहे हैं लेकिन वे मज़दूरों का वेतन बिल्कुल नहीं बढ़ाना चाहते। जिले के गन्ने की खेती करने वाले प्लाण्टरों के सेक्रेटरी मि० आर.ए.गेल ने फवरी सन् १६२१ को फिजी सरकारके नाम एक पत्र लिखा था, उसमें आपने फर्माया था "हमें आशा है कि फिजी गवर्मेण्ट इस बातको अच्छी तरह समझ लेगी कि हिन्दुस्तानि की वेतन बढ़ाने की मांग न्याययुक्त नहीं है। अगर इन लोगों का वेतन बढ़ गया तो सारा मामला विगड़ जावेगा। इससे आन्दोलन करने वालों का दिमाग आसमान को चढ़ जावेगा। वे सोचेंगे कि आन्दोलन करने से वेतन बढ़ता हैं, इसलिये और भी आन्दोलन करेंगे इस प्रकार हमारे मार्ग में और भी अधिक बाधा उपस्थित हो जावेंगी यदि दुर्भाग्य से, अथवा हड़तालियों के साथ गवर्मेण्ट की वेजा सहानुभूति से, हिन्दुस्तानियों की यह हड़ताल सफल हो गई तो इसका नतीजा यह होगा कि अशिक्षित उजड़ आदमियों का साहस बढ़ जावेगा, और वे इस उपनिवेश के उद्योग धन्धों का नाश कर देंगे। फिर चाहे

जो कोई आन्दोलन करने वाला फिजी में आकर हड़ताल करा देगा, राजनैतिक उद्देश्यसे यहां वर्ण विद्वेष फैला देगा और फिर वह यहां के झगड़े का लाभ उठाकर अन्य देशों में ब्रिटिश शासन की निन्दा करेगा।

इस से प्लाण्टरों के दिमाग का पता लग सकता है। फिजी टाइम्स और हैराल्ड, जो बराबर प्लाण्टरों का पक्ष लेता है, सस्ते मज़दूर पाने के लिये हायतोबा मचाये हुये है। वह लिखता है "अभी २० हजार चीनी मजदूर मिल सकते हैं, सरकार उन्हें क्यों नहीं मँगाती? मारीशस में चीनी मज़दूर काम करते हैं, सामोआ में वे काम करते हैं, फिर फिजी में ही वे क्यों न बुलाये जांय? चीनी आदमियों के साथ दो वर्ष या तीन वर्षका पट्टा हो जाना चाहिये और उन्हें इस समय के बाद फिर अपने देश को वापिस भेज देना चाहिये। आगे चलकर फिजी टाइम्स लिखता है हमने फिजी हिन्दुस्तानियों के सन्तुष्ट करनेके लिये कोई भी उपाय उठा नहीं रक्खा। जो कुछ हमसे हो सका हमने उन के सन्तोष के लिये किया। हमने हिन्दुस्तानियों को डेपूटेशन भेजा। लेकिन उसका कुछ भी परिणाम नहीं हुआ। मह लोगों की नाकामयाब का कारण यही है कि हिन्दुस्तान में हमारे विरुद्ध एक भयङ्कर षड्-यन्त्र की रचना की गई है। हिन्दुस्तान के विद्रोही आदमी उपनिवेशों को अपने हाथ का हथकड़ा बनाकर अपना मतलब निकालना चाहते हैं।

हमारे पाठकों को यह समाचार सुनकर आश्चर्य होगा कि इस देश में फिजी द्वीप के विरुद्ध एक भारी षड्-यन्त्र की रचना की गई है। षड्-यन्त्र कहां और किसने रचा है, यदि यह भी फिजी टाइम्स हमें बतला देता तो बड़ी मेहर-बानी होती। दर असल बात यह है कि यह षड्-यन्त्र फिजी टाइम्स और हैराल्ड के आफिस में उसके झक्की सम्पादक के फिरे हुये दिमाग में पैदा हुआ है। वहीं इस की रचना हुई है।

तत्पश्चात् सम्पादक महोदय बड़े करुणा-जनक स्वर में लिखते हैं। "हमारी कोठियां, जो हमारे वैभव और उन्नति के लिये उतनी ही आवश्यक हैं, जितनी जीवनके लिये रक्त, नष्ट हो रही हैं। हमारे बढ़िया खेत जिनमें सैकड़ों पौंड व्यय हुये थे, जङ्गल बने जा रहे हैं। बड़ी शीघ्रता के साथ हम नाश के मार्ग की यात्रा कर रहे हैं।" फिजी टाइम्स की इस दशा पर हमें बड़ी दया आती है और हम परमात्मा से यही प्रार्थना करते हैं कि फिजी के प्लाण्टर जिस मार्ग की यात्रा कर रहे हैं, उस मार्ग के अन्त पर वह शीघ्र ही पहुंच जावें! फिजी अपना प्राचीन प्राकृतिक रूप फिर धारण कर ले। परमात्मा की आज्ञाओं के विरुद्ध जो घोर पाप फिजी के प्लाण्टरों ने गत ४० वर्ष से किये हैं, उनका प्राय-श्चित्त केवल यही है।

फिजी में क्या हो रहा है

(५)

फिजी सरकार की करतूत।

फिजी सरकार की करतूतों को जानने के पहले उसकी हालत का जान लेना जरूरी है। फिजी सरकार सी० ऐस० आर० कम्पनी के हाथ का खिलौना है। यह कम्पनी करोड़ों की लागत की है और इसे लाखों पोण्ड प्रति वर्ष का लाभ होता। है फिजीमें रेल इस कँपनी की है, सबसे वडी जायदाद इसी कम्पनी की है और फिजी सरकार को सबसे अधिक टेक्स भी इसी कम्पनी से मिलता है। यह कम्पनी फिजी सरकार को चाहे जैसा नाच नचा सकती है। जिस बात का सी० ऐस० आर० कम्पनी विरोध करे उसका पक्ष लेना फिजी सरकार के लिये असम्भव है। जब भारतवर्ष से फिजी को शर्तबँधे मज़दुर जाना बन्द हुआ तो सी० ऐस० आर० कम्पनी के अधिकारियों को चिन्ता होगई। "एक शिलिङ्ग रोज पर पाँच वर्ष तक दासता करने वाले गुलाम अब कहां मिलेंगे?" बस यही प्रश्न इन अधिकारियों के दिमाग़ में चक्कर काटने लगा। पहले सोचा गया कि जापानी मज़दूर लाये जायँ लेकिन आफत यह थी कि जापानी मज़दूर ४.५ शिलिङ्ग से कौड़ी कम न लेते और फिर विलायत की सरकार भला इस बात को कब सहन कर सकती

थी कि जापानी लोग आस्ट्रेलिया तथा न्यूज़ीलैण्ड से इतने निकट अधिक सँख्या में बस जावें। इसके सिवाय आस्ट्रे-लियन सरकार तो इस बातपर हायतोबा मचा देती, क्योंकि आस्ट्रेलियन के सिरपर तो (यलो) पीतवर्ण लोगोंका भय सवार है। और जापानी मज़दूर कंपनी के अत्याचारों को कब सहन करते। जो अत्याचार गतवर्ष भारत वासियों पर फिजी में हुए यदि वे जापानियों पर ऐसे किये जाते तो आज फिजी का नाम निशान भी न रहता। जापान का ज-हाजी बेड़ा फौरन ही प्रशान्तमहासागर के दक्षिण में चक्कर मारता हुआ देखा जाता और सारे संसार में खलबली मच जाती। उस समय फिजी के गोरे अधिकारियों और स्वा-र्थी प्लाण्टरों को यह पता लग जाता कि किसी स्वतन्त्र व स्वाधीन जाति के मनुष्यों पर अत्याचार करने के क्या क्या परिणाम होते हैं यह तो ग़रीब हिन्दुस्तानी हैं ही जिन्हें एक शिलिङ्ग पर काम करने के लिये मजबूर करलो, जिन पर मनमाने अत्याचार करलो, जेलखाने भेजदो, वेतन वृद्ध के लिये हड़ताल करें तो कहदो कि उन्होंने "खुल्लम खुल्ला गदर कर दिया है, उनकी हड़ताल तोड़ने के लिये न्यूज़ीलैण्ड से फौज मँगालो और आस्ट्रेलिया से लड़ाई के जहाज; उन्हें गोलीसे मार दो, गरज़ यह है कि बिचारे हिन्दुस्तानियों के साथ घरजानी मनमानी करलो, लेकिन कोई पूंछने वाला ही नहीं। भारत सरकार कह देगी "जो कुछ फिजी सरकार ने

विस्तृत खरीते में लिखा है वह ठीक है स्वतन्त्र जांच करने की कोई आवश्यकता ही नहीं" अस्तु जापानी मजदूर मिलने की आशा तो इस तरह टूट गई। अब चीन की ओर दृष्टि डाली गई। यह अब भी लगी हुई है। इसका विशेष हाल तो हम अगले लेख मे लिखेंगे, इस समय केवल इतना ही कहना पर्य्याप्त होगा कि सी० ऐस० आर० कम्पनी और गोरे प्लाण्टर की आज्ञानुसार फिजी सरकार सस्ते मजदूर पाने के लिये जी जान से कोशिश कर रहे हैं।

पहली करतूत—

तो फिजी सरकारने यह की, कि सस्ते हिन्दुस्तानी मज़दूर पाने के लिये सीलोन तथा स्टेट सैटिलमेण्ट की सरकारोंसे सीधा पत्र व्यवहार करना शुरू किया। फिजी के गवर्नर ने सीलोन के गवर्नर को २८ जनवरी सन् १६२१ को तार दिया था, जिसका आशय यह था "मुझे सूचना मिली है कि आपके यहां चाय और रबर के खेतों पर काम करने वाले कितने ही तैमिल मजदूर बेकार बैठे हुए हैं और आपने यह विचार किया है कि वे दक्षिण भारत को वापिस भेज दिये जावें। मिस्टर लोस ने, जो मजदूरों के विभाग के कमिश्नर हैं, मुझे सूचना दी है कि ये आदमी फिजी में बसने के लिये पूर्णतया योग्य हैं। यहां का जलवायु बहुत अच्छा है, मलेरिया का नाम निशान नहीं और ज़मीन बड़ी जरखेज है यहां सैकड़ों ही आदमियों को फौरन ही काम मिल

जायगा वेतन अच्छा मिलेगा। फिजी में बसने और जिन्दगी बसर करने के लिये असंख्य साधन हैं। भारत सचिवने मुझे आज्ञा दी है कि मैं इस विषय में आपसे सीधा पत्र व्यवहार करूं। आपके यहां जो जरूरत से ज्यादः तैमिल मजदूर हैं, उन्हें यहां मंगाने का प्रबन्ध कर सकता हूं। फौरन एजेन्ट भेजूंगा। लाने के लिये जहाज भी इन्तजाम कर दूंगा इस कार्य्य में नम्रता पूर्वक आपका सहयोग चाहता हूं। इससे दोनों उपनिवेशों को ही लाभ होगा। वेतन इत्यादि के बारे में और खुलासा हाल तार द्वारा भेज सकता हूं।"

इसी प्रकार का तार फिजी सरकार ने सिंगापुर को भेजा था। लेकिन दोनों जगह से कोरा जबाब मिल गया। "हमारे यहां जरूरत से ज्यादः मजदूर नहीं" यही सूखा उत्तर दोनों स्थानों से आया। लेकिन फिजी सरकार की इस भलमनसाहत पर तो ख्याल कीजिये कि उसने स्ट्रेट सैटिलमेण्ट तथा सीलोन के हिन्दुस्तानी मजदूरों को उड़ाने की क्या तरकीब निकाली। जब हमारे देश से इन दोनों स्थानों को मजदूर भेजे गये थे तब उन्हें इस बात का स्वप्न में भी ख्याल नहीं था कि उनके उड़ाने के लिये फिजी सरकार यह चालाकी चलेगी। यदि फिजी गवर्मेण्ट न्यायउक्त मार्गसे इन मजदूरों को मँगाने का प्रयत्न करती तो उसका कर्त्तव्य था कि वह भारत सरकार से भी इस विषय में लिखा पढ़ी करती लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। क्यों? इसलिये कि

यदि भारतीय जनता अगर इस बात को सुन पाती तो कदापि इन मज़दूरों के फिजी भेजे जाने की सलाह न देती। जाने की सलाह देना तो दूर रहा वह इस बात का घोर विरोध करती। इस परिणाम को सोचते हुए ही फिज़ी के गवर्नर ने भारतीय जनता के पीठ पीछे ही भारतीयों को सीलोन तथा स्ट्रेटसैटिलमैण्ट से उड़ा ले जाने का प्रयत्न किया, लेकिन उसकी यह करतूत सफल नहीं हुई।

दूसरी करतूत।

फिजी सरकार को यह सूझी कि जो हिन्दुस्तानी फिजी से हिन्दुस्तान जाने के लिए जहाज मांग रहे हैं, उन्हें किसी प्रकार रोकने का प्रयत्न करना चाहिये। फिजी सरकार जानती है कि बिना हिन्दुस्तानियों के फिजी की उर्वरा भूमि शीघ्र ही स्मशान की शोभा प्राप्त कर लेगी, इस लिये उसने "बेईमानी तेरा ही आसरा" कि उक्ति के अनुसार कार्य्य करने का निश्चय कर लिया। भारत हितैषी श्रीयुत सी. एफ एण्ड्रूज़ ने नवम्बर सन् १६२० में बम्बई क्रानीकल के सम्वाददाता से फिजी से लौटे हुए भाइयों के विषय में कुछ बातें कही थीं। आपने भारतीय जनता को इस बात के लिये बड़ी डाट फटकार बतलाई थी कि उसने फिजी से लौटने वाले भारत प्रवासी भारतीयों के साथ अच्छा बर्त्ताव नहीं किया। यह बातचीत किसी प्रकार फिजी सरकार के हाथ

पड़ गयी। फौरन ही उसने इसका हिन्दी में अनुवाद करा के बहुत पत्र छपा डाले, और इन पर्चों को घर २ में बांट दिया। श्रीयुत एण्ड्रूज़ ने फिजी के विषय में कितने ही लेख लिखे हैं और उनमे फिज़ी सरकार को खूब ही आड़े हाथों लिया है; लेकिन फिजी सरकार ने इन लेखों का अनुवाद नहीं कराया। बड़ी चालाकी के साथ उसने श्री एण्ड्रूज़ की बातचीत का वह भाग जो अपने मतलब का था, ले लिया और उसे चारों ओर बटवा दिया। फिजी से जो आदमी लौट कर आये हैं उनमें से बहुतों के पास ये पत्र थे। इनके बांटने का अभिप्राय यही था कि किसी तरह हिन्दुस्तान को लौटने वाले आदमी रुकें।

तीसरी करतूत।

फिजी सरकार ने यह की कि जो आदमी हिन्दुस्तान को लौटकर आये थे, उनको यहां से वापिस बुलाने के लिये प्रयत्न करना शुरू किया। जब तक ये लोग फिजी में रहे, तब तक तो इनके ऊपर नाना प्रकारके अत्याचार किये गये। लेकिन ज्योंहीं लोग हिन्दुस्तान को लौट कर आये त्योंहीं फिजी सरकार के हृदय में इनके लिये करुणा का समुद्र उमड़ आया। जब भारत सरकार ने इन लोगों के फिज़ी जाने के मार्ग में बाधा डाली तब तो फिजी सरकार बड़े क्रोध के साथ कहने लगी "देखो भारत सरकार हमारे साथ कैसा अन्याय कर रही है? जो हिन्दुस्तानी फिजी में पैदा

हुए हैं और अब भारत से लौट कर फिजी को आना चाहते हैं उन्हें अब भारत सरकार रोक रही है। उनकी मातृभूमि फिजी है और वे फिजी की प्रजा हैं। भारत सरकार का यह सरासर अन्याय है कि वह इन बिचारों को अपनी जन्मभूमि को वापिस आने से रोक रही है।” जिस समय फिजी सरकार ने प्रवासी भारतीयों में से २०० को जेल की हवा खिलाई थी उस समय उसे यह बात नहीं सूझी थी कि ये लोग फिजी की प्रजा हैं और फिजी इनकी मातृभूमि है! लेकिन फिजी सरकार के द्रवित होने का कारण कुछ और ही था। बहुत से आदमियों के हड़ताल कर देने से गोरे प्लाण्टरों की हालत खराब थी इसलिये हड़ताल को तोड़ने के उद्देश्य से फिजी सरकार ने इन आदमियों को हिन्दुस्तान से मंगाने का प्रयत्न किया। उसने फिजी के घर २ में विज्ञापन बँटवा दिये। इन विज्ञापनों में लिखा था “फिजी सरकार खुश होगी यदि कोई भारतीय अपने फिजी से लौटे हुए मित्रों या नातेदारों से चिट्ठियां पाये हुए हों जिसमें वे फिजी लौट आने के लिये इच्छा प्रगट किये हैं, वे उनका नाम तथा हिन्दुस्तान का पता (गांव, थाना ज़िला वगैरः) लिखकर एजेण्ट जेनरल आफ इमीग्रेशन के पास जिलों के मजिस्ट्रेटों या छोटे कुली एजेण्ट के पास भेज देवें” ये नाम तार द्वारा हिन्दुस्तान को भेज दिये गये। फिजी सरकार की इस कारंवाई का परिणाम यह हुआ कि सैकड़ों हिन्दुस्तानी मटियाबुर्ज में

इकट्ठे होगये और हिन्दुस्तान छोड़कर फिजी जाने के लिये तैयार होगये। "फिजी सरकार खूब खुश हुआ" इनको रोकने के लिये कितना आन्दोलन करना पड़ा और फिर ये किसी तरह आखिर चले हो गये यह पाठक जानते ही हैं। यहां लिखने की आवश्यकता नहीं।

चौथी करतूत।

जो फिजी सरकार ने की वह यह थी कि भूखों मरने वाले हिन्दुस्तानियों की हड़ताल को "असहयोग आन्दोलन" का एक भाग बतला दिया। भारत सरकार की सहानुभूति प्राप्त करने का यह धूर्त्ततापूर्ण उपाय था।

पांचवीं करतूत।

फिजी सरकार यह कर रही है कि उसने भारत से भेजे हुए समाचार पत्रों पर 'ससरशिप' बिठला दी है। 'पत्रिका' 'ट्रिब्यून' इत्यादि पत्र महीनों तक वहां के डाकखाने में पड़े रहते हैं। फिर क्लार्क भेजकर फिजी सरकार उन्हें छटवाती है। तत्पश्चात् ग्राहकों पर पहुंचते हैं। यही हाल उसने फिजी से भारत को आने वाली चिट्ठियों के विषय में कर रक्खा है यही कारण है कि हमें फिजी प्रवासी भारतीयों के विषय में पूरे २ समाचार मिलना असम्भव होगया है। उधर फिजी प्रवासी भारतीय हमारे विषय में पूरा हाल नहीं जानने पाते, इधर हम लोग उनके विषय में अन्धकार में रहते हैं।

छठवीं करतूत ।

फिजी सरकार यह कर रही है कि वह पढ़े लिखे हिन्दुस्तानियों पर कड़ी जांच रखती है। यदि कोई सरकारी क्लार्क भूल से भी श्री एण्ड्रूज़ का नाम ले ले तो बस उस पर सरकार की कुदृष्टि होजाती है। गोरे लोग श्री एण्ड्रूज़ के नाम पर गाली दिया करते हैं। फिजी सरकार के किसी हिन्दुस्तानी नौकर के लिये डाक्टर मणिलाल से पत्र व्यवहार करना मानों अपनी नौकरी से हाथ धो बैठना है। शिक्षित भारतीयों की नाक में दम है। एक सम्वाददाता ने मुझे लिखा है "अधिक नहीं लिख सकता, मुझ पर सरकार उसी तरह निगाह रखती है। जिस तरह चूहे पर बिल्ली। सरकार मौका ताक रही है कि मुझ से कोई छोटा सा भी अपराध हो तो फिर मुझे भरपूर दण्ड दिया जावे।"

सातवीं करतूत ।

फिजी सरकार की यह है कि वह हिन्दुस्तानियों में फूट फैलाने का खूब यत्न कर रही है। फिजी के व्यवस्थापक सभा के श्री स्काट और मिस्टर क्राम्पटन इस कार्य में बड़े निपुण हैं, और गुरुदीन पाठक (प्लाण्टर ग्राण्ट) का परिवार उनका सहायक है। पाठकों को यह बात भूली न होगी कि फिजी सरकार ने किस तरह से कुछ खुशामदी जी हजूरों के हस्ताक्षर कराके डाक्टर मणिलाल को देश निकाले का दण्ड दिया था।

यद्यपि फिजी सरकार की करतूतें तो बहुत सी हैं किन्तु सब का वर्णन यहाँ स्थानाभाव से नहीं किया जा सकता। पाठक इन्हीं से फिजी गवर्मेण्ट की न्याय प्रियता और नीति का अनुमान कर सकते हैं।

फिजी में क्या होना चाहिये।

इस अन्तिम अध्यायके प्रारम्भ में हम फिजी से सम्बन्ध रखने वाली तीन आवश्यक बातों पर प्रकाश डालना चाहते हैं।

(१) फिजी में सरकारी डेपूटेशन ने क्या कार्य्य किया।

(२) फिजी प्रवासी भारतीय मातृभूमि को लौटें या नहीं।

(३) फिजी में समानाधिकार का प्रश्न क्या रूप धारण कर रहा है।

इनके बाद हम "फिजी की समस्या कैसे हल हो ?" इस प्रश्न पर विचार करेंगे।

फिजीमें सरकारी डेपूटेशनका कार्य

सन् १९२० के प्रारम्भ में फिजी का एक कमीशन भारत में आया हुआ था। इस कमीशन में दो आदमी थे, एक तो पालीनोशिया के लार्ड बिशप और दूसरे फिजी के कालोनियल सेक्रेटरी रैनकिन साहब। इनके आने का उद्देश्य यही था कि भारत से फिर कुली प्रथा जारी की जावे और तीन हजार कुली फिजी को प्रतिवर्ष भेजे जावें। इस कमीशन ने

अपनी स्कीम कौंसिल के कुछ हिन्दुस्तानी मेम्बरों के सामने पेश की। बहुत कुछ वाद विवाद होने के अनन्तर यह निश्चित हुआ कि फिजी को भारत सरकार की ओर से एक कमीशन भेजा जावे, जो वहां की हालत अपनी आंखों से देखकर इस विषय में अपनी रिपोर्ट लिखे कि फिजी को किसी प्रथा द्वारा मज़दूर भेजे जाने चाहिये या नहीं। फिजी और ब्रिटिशगायना दोनों ही स्थानोंके गोरोंने अपनी स्कीमों का नाम "कालोनाइजेशन स्कीम" अर्थात् उपनिवेश बसाने की प्रथा रक्खा था. लेकिन इन प्रथाओं का उद्देश्य वही था; भारत से सस्ते मज़दूर ले जाकर उन से वहां गोरे प्लाण्टरों की गुलामी कराना। भारत सरकार ने दोनों स्थानों को सरकारी डेपूटेशन भेजना स्वीकार कर लिया; लेकिन कुछ दिनों तक यह मामला जहां का तहां पड़ा रहा। इस बीचमें फिजी में बड़ा भारी उपद्रव हो गया। इस उपद्रव के विषय में हम यहां अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं समझते। जब इस दुर्घटना की खबर हिन्दुस्तान में आयी तो समाचार पत्रों ने इस बात पर जोर देकर आन्दोलन करना शुरू किया कि इस उपद्रव की जांच के लिए हिन्दुस्तान से एक कमीशन जाना चाहिये। ६ महीने तक तो भारत सरकार कान में उंगली डाले बैठी रही; एक शब्द भी सरकार ने इस विषय में नहीं कहा। तत्पश्चात् भारतहितैषी मि० ऐण्ड्रूज़ के प्रयत्न से सरकार की कुम्भकर्णी निद्रा भङ्ग हुई, इतने में

फिजी गवर्मेण्टका ख़रीता आ पहुंचा। उसमें खूब ही लीपा पोती की गई थी और सारा दोष हिन्दुस्तानी मज़दूरों के सिर पर मढ़ दिया गया था! यह ख़रीता सरकार के लिए डूबते को तिनके के सहारे की तरह सहायक हुआ। जब माननीय श्रीनिवास शास्त्री जी ने कौंसिल में प्रश्न किया कि फिजी के उपद्रवों की जांच करने के लिये क्या सरकार कोई कमीशन फिजी को भेजेगी तो उसके उत्तरमें सर जार्ज बार्नस साहब ने कहा—"फिजी सरकार का भेजा हुआ ख़रीता बहुत बिस्तृत है और हमारी गवर्मेण्ट इस बिषय में अधिक जांच करने के लिये कमीशन भेजने की कोई आवश्यकता नहीं समझती" सरजार्ज वार्नस ने यह जबाव दे तो दिया लेकिन फिर पीछे भारत सरकार को इस उत्तर के लिये पछताना पड़ा। सरकार इस बात को समझ गयी कि फिजी के उपद्रव की जांच होनी जरूरी है लेकिन अपने गौरव हानि के डर के कारण वह अपनी भूल सर्व साधारण के सामने स्वीकार नहीं कर सकी। यह तो सरकार ने निश्चित कर लिया कि फिजी को एक कमीशन अवश्य जाना चाहिये।

कमीशन की नियुक्ति—सरकार ने इस कमीशन में जाने के लिए दो मेम्बरों को नियुक्त किया। एक तो माननीय श्रीनिवास शास्त्री जी और दूसरे पंडित हृदयनाथ जी कुंजरू। मि० ऐण्ड्रूज़ से भी सरकार ने कहा कि आप भी

हमारे कमीशन के मेम्बर हो जाइये, लेकिन मि० ऐण्ड्रूज़ ने सरकारी मेम्बर बनकर फिजी जाना अनुचित समझा और उन्होंने सरकार को यह लिख दिया कि हम अलग स्वतंत्र रूपसे फिजी जावेंगे, सरकारी आदमी बनकर नहीं। शास्त्री जी को अमरीका जाना पड़ा इसलिए उन्हें फिजी जाने का विचार ही छोड़ देना पड़ा। पं० हृदयनाथ जी ने भी फिजी जाना अस्वीकार करदिया। तब सरकार ने फिजी जाने के लिए निम्नलिखित सज्जनों की नियुक्ति की।

(१) माननीय वेंकटपति राजू एम. एल. ए. प्रधान।

(२) मिस्टर जी. एल. कार्वेट आई. सी. एस.।

(३) पं० गोविन्द सहाय जी शर्मा बैरिस्टर।

(४) लेफ्टिनेण्ट हिसामुद्दीन खां बहादुर चतुर्थ सज्जन को इसलिये फिजी भेजा गया था कि वे वहां जाकर इस बात का पता लगावें कि फिजी में युद्ध से लौटे हुये भारतीय सिपाहियों के लिये बसने योग्य भूमि मिल सकती है या नहीं।

फिजी में कार्य—फिजी में यह डेपूटेशन जनवरी महाने में पहुंचा। सबसे पहिले पं० गोविन्दसहाय जी शर्मा वहां पहुंच गए। फिर मिस्टर कार्वेट तथा श्रीयुत राजू और लेफ्टिनेण्ट हिसामुद्दीन खां पहुंचे। मिस्टर शर्मा ने आस्ट्रेलिया में एक पत्र के सम्वाददाता से कह दिया था कि फिजी में भारतीय मज़दूरों के साथ पहले गुलामों की

तरह बर्ताव किया जाता था । शर्मा जी की यह बात फिजी के पत्रों में पहले ही प्रकाशित हो चुकी थीं और 'फिजी टाइम्स' पत्र ने उनके ख़िलाफ़ बहुत कुछ लिखा भी था । शर्मा जी के पहले पहुंच जाने से एक बड़ा लाभ हुआ । वह यह कि उन्होंने दस बारह रोज में सारे मामले को अच्छी तरह समझ लिया और हिन्दुस्तानियों से मेल जोल भी पैदा कर लिया । लेफ़्टिनेण्ट हिसामुद्दीन साहब ने तो अपना एक नियम बना लिया था, जो कोई सम्वाददाता उन से कुछ पूछता वे यही कहते कि राजनैतिक मामलों में मैं कुछ भी नहीं जानता और न इस बारे में कुछ कह ही सकता हूं मैं तो सिपाही आदमी हूं । इस कारण से फिजी के गोरे उनसे बहुत खुश रहे । साथ ही उनके भारी डीलडौल और सैनिक शरीर का भी गोरे लोगों पर अच्छा असर पड़ा । लेकिन बाकी तीनों मेम्बरों पर फ़िजी के गोरों की कुदृष्टि ही रही । मिस्टर कार्वेट से उन्हें बहुत कुछ आशा थी लेकिन कार्वेट साहब उन अल्प-संख्यक अँग्रेज़ों में से एक हैं जिन्हों ने भारतीय प्रश्नों पर भारतीय दृष्टि से ही विचार करना सीखा है । उनके लिखे हुये दक्षिण अफ्रीका तथा पूर्वी अ-फ्रीका सम्बन्धी ख़रीते इस बातके दृढ़ प्रमाण हैं कि मिस्टर कार्वेट में दूरदर्शिता के साथ ही साथ सहानुभूति भी है । फ़िजी के पत्रों के सम्वाददाताओं से उन्होंने महात्मा गांधी जी की खूब तारीफ़ भी की थी ।

शर्मा जी का प्रशंसनीय उद्योग—सब से अधिक दबंगपन के साथ मिस्टर शर्मा ने अपना काम किया। शर्मा जी गरमदल के आदमी हैं और उनमें भावुकता और स्पष्टवादिता की कमी नहीं है। जो कुछ मनमें आया उसे साफ़ २ कह देना, चाहे उसका नतीजा कुछ भी क्यों न हो शर्मा जी में यह एक अच्छा गुण है।

फिजी में शर्मा जी ने इसी नीति से काम लिया। नादी नामक स्थान में ४ सहस्र फ़िजी प्रवासी भारतीयों के सामने आपने एक बड़ी ज़ोरदार स्पीच दे डाली। आपने उस स्पीच में कहा था "आजकल होली आने वाली है, आप लोग भी सी० ऐस० आर० कम्पनी की होली कर देवें, और जमीन लेकर अपनी खेती करें" शर्मा जी के ठीक २ शब्द तो हमें याद नहीं लेकिन जो कुछ उन्होंने कहा था उसका अभिप्राय यही था शर्मा जी की इस स्पीच से फिजी भर के गोरों में बड़ी खलबली पड़ गया। सी० एस० आर कम्पनी वस्तुतः फ़िजी की शासक है और फिजी गवर्मेण्ट तो उस के हाथ का खिलौना मात्र है। यह कम्पनी फिजी सरकार को चाहे जैसा नाच नचाया करती है। ऐसी प्रभावशाली कम्पनी के विरुद्ध इस तरह की बात कह देना कोई साधारण बात नहीं थी शर्मा जी की इस स्पीच के बाद फिजी के गोरे उनसे बहुत जलने लगे।

सी० एस० आर० कम्पनी की करतूत—

जिन दिनों यह भारतीय कमीशन फिजी में अपनी जांच का काम कर रहा था सी० एस० आर० कम्पनी ने अपने भारतीय मज़दूरों का वेतन २$\frac{1}{2}$ शिलिंग से घटाकर १$\frac{1}{2}$ शिलिङ्ग कर दिया। सरकारी कमीशन ने इस बात के लिये बहुत कोशिश की कि सी० एस० आर० कम्पनी वेतन न घटावे लेकिन कम्पनी ने उसकी बात पर पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया। हमने विश्वस्तसूत्र से सुना है कि कम्पनी के अधिकारियों ने भारत सरकार से इस बात की उलटी शिकायत और की थी कि सरकारी डेपुटेशन ने हमारे पक्ष को ठीक २ तरह से नहीं सुना और कमीशन के मेम्बर पक्षपात से काम ले रहे हैं!

फिजी सरकार का वर्ताव—यद्यपि ऊपर से फिजी सरकार ने भारतीय डेपूटेशन के विरुद्ध कोई कारंवाई नहीं की लेकिन भीतर ही भीतर वह बहुत जलती रही। फिजी सरकार को उम्मेद थी कि डेपूटेशन के मेम्बर उसी कोटि के मनुष्य होंगे जिस कोटि के लाला चिम्मनलाल थे, जो फिजी इत्यादि को पहले गये थे और जिन्हों ने शर्तबन्दी गुलामी का समर्थन किया था। फिजी गवर्मेण्ट के दुर्भाग्यवश भारतीय डेपूटेशन के सदस्य उच्चतर कोटि के सिद्ध हुए और फिजी सरकार की कुछ भी दाल न गली। पहले तो फिजी सर-

कार का वर्ताव कुछ अच्छा था लेकिन पीछे उस में रूखापन आता चला गया और हमने तो यहां तक सुना है कि श्रीयुत पं० गोविन्द सहाय जी शर्मा से और फिजी गवर्नर से कुछ गरमागरम वादविवाद भी हो गया था। ऐसा होना बहुत सम्भव भी था क्योंकि फिजी के वतमान गवनर रौडवैल साहब बड़े घमंडी आदमी हैं और शर्मा जी बड़े स्पष्टवक्ता। गरज़ यह कि फिजी सरकार भारतीय डेपूटेशन के मेम्बरों से सन्तुष्ट नहीं रही, और फिजी के पत्रों ने तो उनकी भरपूर निन्दा की फिजी के अनेक असभ्य गोरों ने वहां के पत्रों में डेपूटेशन के सदस्यों के प्रति अनुचित शब्दो का प्रयोग करते हुए बहुत से लेख भी लिखे।

सरकारी डेपूटेशन की रिपोर्ट—मार्च के अन्तमें इस डेपूटेशन ने अपना काम समाप्त कर लिया। १० महिने हुए लेकिन रिपोर्ट अभी तक नहीं निकली। लेकिन रिपोर्ट कैसी होगी इसका अनुमान हम अवश्य कर सकते हैं। मिस्टर राजू ने फिजी से लौटकर जो वक्तृता मद्रास में दी थी उससे स्पष्टतया प्रकट होता था कि वे फ़िजी प्रवासी भारतीयों की वर्तमान दुर्दशा को अच्छी तरह समझ गये हैं। उन्होंने बतलाया था कि फ़िजी सरकार हिन्दुस्तानी मज़दूरों को भारतको वापिस लौटने के लिये जहाज़ ही नहीं देती, साथ ही उन्होंने मज़दूरों की आर्थिक दशा पर भी बहुत कुछ प्रकाश डाला था। मि० राजू के इस व्याख्यानसे

यह बात साफ़ ज़ाहिर होती थी कि वे फिजी के मामले को बहुत अच्छी तरह समझ गये हैं। पं० गोविन्दसहाय जी शर्मा के विषय में यहां अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं। उन्होंने फिजी में जो कार्य्य किया उसकी जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। यही कारण है कि फिजी के पत्रों ने जितनी अधिक निन्दा मिस्टर शर्मा की की थी उतनी किसी दूसरे की नहीं की। फ़िजी टाइम्स ने तो यहां तक लिख मारा था कि मिस्टर शर्मा एक सर्प के समान हैं जो झूठ रूपी विष चारों ओर फैला रहे हैं।

अब रहे मिस्टर कार्बेट सो उनके विषय में मिस्टर एण्ड्रूज़ की यह सम्मति है कि वे प्रवासी भारतीयों के बड़े शुभचिन्तक हैं और किसी हालत में भी डेपूटेशन के अन्य मेम्बरों से कम विश्वसनीय नहीं। उनके दक्षिण अफ्रिका तथा पूर्वी अफ्रिका सम्बन्धी ख़रीतों की तारीफ़ महात्मा गांधी जी ने भी की थी। इन बातों को ध्यान में रखते हुए हम अनुमान कर सकते हैं कि डेपूटेशन की रिपोर्ट भारतीय दृष्टि से सन्तोषजनक ही होगी। डेपूटेशन के सामने कई प्रश्न थे। पहला और मुख्य प्रश्न तो यह था कि फ़िजी में भारत के मज़दूर बसाये जा सकते हैं या नहीं। इस सवाल का जवाब तो मिल ही चुका। श्रीमान् वाइसराय साहब ने अपनी स्पीच में कह दिया कि फिजी में मज़दूरों की हालत बहुत खराब है इस लिये बहुत से मज़दूरको वापिस लौटना

पड़ेगा और इसके लिये भारत सरकार फिजी गवर्नमेण्ट पर दबाव डाल रही है। जब मज़दूरों के लौटाये जाने का प्रबन्ध हो रहा है तब फिजी के बसाये जाने का सवाल ही नहीं उठ सकता। इस प्रकार कालोनाइज़ेशन स्कीम तो रद्दी के टोकरे में चली गयी और यही उसके लिये उपयुक्त स्थान भी था। अब मुख्य सवाल यह रह जाता है कि कुछ मज़दूरों के लौट आने के बाद फिर भी जो सहस्रों भारतीय फिजी में रहेंगे उनकी हालत कैसे सुधरे। यह प्रश्न बड़ा टेढ़ा है और इसे हल करने में डेपूटेशन के सदस्यों को अपनी सारी अक़्ल खर्च करनी पड़ी होगी। इसे हम कई विभागों में बांट सकते हैं (१) समान अधिकारका प्रश्न (२) मज़दूरों का वेतन (३) न्यायालयों में भारतीयों के साथ न्याय (४) भारत सरकार को लौटने के सुभीता। हमें दृढ़ विश्वास है कि सरकारी कमीशन ने इन प्रश्नों पर अच्छी तरह प्रकाश डाला होगा। कम से कम इस समय तक हमारे पास कोई भी ऐसे समाचार नहीं जिससे हम इस डेपूटेशन के कार्य्य की निन्दा कर सकें।

फिजी प्रवासी भारतीय मातृभूमिको लौटें या नहीं

सन् १९२१ में उपनिवेशों से लौटे हुये भारतीयों के प्रश्न ने जो रूप धारण किया था उसे यहां बतलाने की आवश्यकता नहीं है। किस प्रकार सहस्रों आदमी कलकत्ते के

मटियाबुज में इकट्ठे हो गए, उनको भारतमें बसाने के लिए कैसे २ उद्योग किये गए किस तरह इन लोगों ने भारत में बसना अस्वीकार किया और हम लोगों के लाख प्रयत्न करने पर भी अपना और मातृभूमि का अपमान करने के लिये किस तरह ये लोग उपनिवेशों को लौट ही गए, यह सब बातें समाचारपत्रों में पाठक पढ़ ही चुके हैं ऐसा प्रतीत होता है कि ये प्रश्न जनता के सामने फिर आने वाला है। फिजी प्रवासी भारतीयों की हालत इस समय बड़ी खराब हो रही है उनका वेतन २॥ शिलिङ्ग से घटाकर १॥ शिलिङ्ग कर दिया गया है, हजारों आदमी घर द्वार बेचकर भारत को लौटने की प्रतीक्षा कर रहे हैं, ऐसी दशा में बहुत संभव है कि हजारों आदमी अगले साल भर में फिजी से भारत को वापिस आवें। अब सवाल यह होता है कि इन लौटने वाले आदमियों के प्रति हमारा क्या कर्त्तव्य है, उन्हें हम सलाह दें, और उनके लौटने पर उनके लिये हम क्या प्रबन्ध करें।

महात्मा गांधी जी और भारत हितैषी मिस्टर एण्ड्रूज के आज्ञानुसार मुझे उपनिवेशों से लौटे हुये आदमियों की देख भालका काम बहुत दिनों तक करना पड़ा था, इसलिये मैं अपने अनुभव का आधार पर इस विषय पर अधिकार पूर्वक लिख सकता हूं। बहुत कुछ सोच विचार करने के बाद मैं निम्न-लिखित परिणाम पर पहुंचा हूं।

(१) फिजी से अथवा अन्य उपनिवेशों से लौटने वाले भाइयों से हमें साफ २ कह देना चाहिये कि हज़ारों मील दूर बैठ हुए हम लोग आपको लौटनेके बारेमें कोई निश्चित सलाह नही दे सकते, आपकी इच्छा हो तो लौटो आप की इच्छा न हो न लौटो।

हमारी सहायता के भरोसे पर नहीं, बल्कि अपनी ही जिम्मेदारी पर आप लोग लौटें। भारतीय जनता इस समय अनेक कामों में लगी होने पर भी कुछ न कुछ सेवा आपकी अवश्य करेगी ; लेकिन वह आपको निमंत्रण देकर बुलाने की जिम्मेदारी वर्तमान हालत में हरगिज़ नहीं ले सकती। जो लोग हिन्दुस्तान में आकर उपनिवेशों को वापिस जाने के लिये फिर हाय तोबा मचाते हैं ऐसे आदमियों का तो भारत में न लौटना ही अच्छा है।

(२) उपनिवेशो से लौटने वाले भाइयों का सवाल खास कर दो प्रान्तों से सम्बन्ध रखता है मद्रास और संयुक्त प्रान्त इसलिये इन दोनों ही प्रान्तों में एक एक संस्था प्रवासी भाइयों के लिये स्थापित होनी चाहिये। एक मद्रास में और दूसरी इलहाबाद में।

(३) उपनिवेशों से लौटे हुए आदमियों को उनके ग्रामों में बसाने के लिये पूरा पूरा प्रयत्न होना चाहिये।

(४) यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिये कि हमारे यथा-शक्ति प्रयत्न करने पर भी कम से कम २० फी-

सदों आदमी तो कलकत्ते के मटियाबुर्ज में अथवा मद्रास के गन्दे मुहल्ले में पहुंच ही जायंगे। इन लोगों की उचित देख भाल करना कोई आसान काम नहीं है ।

(५) भारत सरकार का भी इस विषय में कुछ कर्त्तव्य है। ८० वर्ष तक गुलामी की प्रथा चला कर भारत सरकार ने जो पाप किया है उसका प्रायश्चित उसे अब करना चाहिये ऐसे आदमियों को, जो विदेशों से लौटकर आवें और जिनके घरका कोई ठीक ठिकाना न हो, सहायता देकर बसाना भारत सरकार का एक मुख्य कर्त्तव्य है ।

(६) उपनिवेशों से लौटे हुए आदमियों के लिये हमें भारतवर्ष में ही कालोनी बनानी पड़ेगी। यह प्रश्न और दूसरी तरह से हल हो ही नहीं सकता ।

(७) इन सब बातों पर ध्यान देते हुए और वर्त्तमान हालत को ध्यान में रखते हुए मुझे तो इस बात की आशा नहीं होती कि संयुक्त प्रान्त और मद्रास की जनता इस विषय में अपना कर्त्तव्य ठीक तरह से पालन कर सकेगी। अब तक इन प्रश्नों का बोझा केवल दो अंग्रेजों के सिर पर रहा है एक तो मिस्टर एण्ड्रूज़ और दूसरे मिस्टर जेम्स । हमारे लिये यह शर्म की बात है लेकिन फिर भी हमें इस बातकी आशा नहीं है कि कोई भारतीय नेता इस काम को अपने हाथ में लेगा। ऐसी हालत में उपनिवेशों के भाइयों को निमंत्रण देकर बुलाना बड़ी भारी मूर्खता है जो लोग अपनी

जिम्मेवारी पर भारत को लौटना चाहते हैं और साथ ही यहां के कष्टों को सहने को तय्यार हैं उनसे हम कहेंगे कि "शौक से चले आइए हम आप को मना नहीं करते भारत वर्ष आपका घर है।" लेकिन जो आदमी भारतीय जनता के भरोसे लौटना चाहें उनसे हम यही निवेदन करेंगे कि आपका न आना ही अच्छा है।

यह प्रश्न बड़ी जिम्मेदारी का हैं और इस विषय में हमें अपनी मत स्पष्टतया प्रकाशित करना चाहिये यही विचार कर मैंने अपनी राय साफ तौरपर जाहिर करदी है। इसपर ध्यान देना न देना प्रवासी भारतीयों का काम है।

फिजी में समानाधिकार का प्रश्न क्या रूप धारण कर रहा है।

सन् १८७५ में लार्ड सैलिसबरी ने कहा था कि जो लोग शर्तबन्दी में मजदूरी करने के लिये जावेंगे वे उपनिवेशों में ५ वर्ष तक गिरमिट में काम करने के बाद स्वतंत्र कर दिये जावेंगे और उस समय उन के अधिकार उन उपनिवेशों की गोरी प्रजा के अधिकारों से बिलकुल कम न होंगे। लार्ड सैलिसबरी की यह प्रतिज्ञा भी, ब्रिटिश सरकार की अन्य प्रतिज्ञाओं की तरह रद्दी की टोकरी में पड़ी

रही। शर्तबन्दी में गये हुये मज़दूरों के साथ गुलामों की तरह जो वर्ताव किया गया और जो जो कष्ट उन्हें सहने पड़े उन का वर्णन करने की यहां आवश्यकता नहीं है। ८० वर्ष तक दासत्व प्रथा का यह कलङ्क रूपी टीका भारत माताके सिर पर रहा, फिर महात्मा गान्धी जी भारत हितैषी ऐण्ड्रूज़ तथा भारतीय जनता के घोर आन्दोलन करने पर सन् १९१७ में यह प्रथा बन्द कर दी गई सन् १९२० के प्रारम्भ में फिजी के शर्तवन्धे भारतीय मज़दूर मुक्त कर दिये गये। स्वतन्त्र होने पर उन में स्वाधीनता का भाव आना स्वाभाविक ही था। वेतन कम होने के कारण उन्हों ने हड़ताल की। इस हड़ताल को फिजी सरकार ने अपने पाशविक बल द्वारा किस प्रकार तोड़ा, निहत्थे हिन्दुस्तानी मज़दूरों पर किस तरह गोली चलाई गई और उन्हें उसी वेतन पर काम करने के लिये किस प्रकार वाध्य किया गया ये वातें हमारे पाठकों ने पढ ही लीं हैं। इस के बाद फिजी में दूसरी हड़ताल हुई जो लगभग ६ महीने तक जारी रही। गरज़ यह कि १९२० के प्रारम्भ से लेकर अब फिजी प्रवासी भारतीयों की दशा दिन पर दिन ख़राब ही होती आई है। फिजी के गोरों ने इस मौके से खूब ही लाभ उठाया है और उन्होंने फिजियन जङ्गलियों को अपनी तरफ मिलाकर हिन्दुस्तानियों पर मन माने अत्याचार किये हैं। अब इन गोरों ने इस बात के लिये भी घोर आन्दोलन आरम्भ कर

दिया है कि हिन्दुस्तानियों को फिजी में समान अधिकार न दिये जावें। थोड़े दिन हुये फिजी में गोरों की एक सभा हुई थी जिस के प्रधान मिस्टर स्काट थे। इस सभा में मिस्टर लैसली डेविडसन ने प्रस्ताव किया था "यह सभा हिन्दुस्तानियों को फिजी में समान राजनैतिक अधिकार देने का विरोध करती है" इस प्रस्ताव पर बोलते हुये मिस्टर डेविडसन ने कहा "मैं इस बात का विरोधी हूं कि हिन्दुस्तानियों को समान अधिकार दिये जावें और मैं यह बात जानता हूं कि हमारे फिजी उपनिवेश के ९० फी सदी यूरोपियन मुझ से इस बात में सहमत हैं। जब हम हिन्दुस्तानियों को वोट देने वाले थे उस समय उन्होंने विद्रोहका झण्डा खड़ा कर दिया।

ये हिन्दुस्तानी अब चाहते हैं कि उन्हें यूरोपियनों की तरह और उन के बराबर वोट देने का अधिकार दिया जावे अगर ऐसा किया गया तो फिजी में यूरोपियनों के बसाने की जो स्कीम हम तयार कर रहे हैं बिल्कुल निरर्थक हो जावेंगी। फिजी के यूरोपियनों के जीवन का प्रश्न केवल इसी बात पर निभर है कि हिन्दुस्तानियों को वोट देने का अधिकार दिया जावे या न दिया जावे। हम लोग हिन्दुस्तानियों पर विश्वास नहीं कर सकते और इस बात का हमें अनुभव हो चुका है कि वे विश्वसनीय हैं भी नहीं। घर पर तो हिन्दुस्तान में हिन्दुस्तानियों को वोट देने के

अधिकार हैं नहीं यहां फिजी में वे हमारे समान अधिकार मांगते हैं! (हर्ष ध्वनि) हिन्दुस्तानियों की संख्या हमारी अपेक्षा का ह गुनी है। इन में से ३३००० फ़िजी में पैदा हुये हैं और ये लोग शिक्षा पा रहे हैं। २५ वर्ष में इन की संख्या दूनी हो जावेगी। यदि ऐसा हुआ और हम लोगों ने अभी इन को समान राजनैतिक अधिकार दे दिये तो इस का परिणाम यह होगा कि हमारे हाथ से सारी शक्ति निकल जावेगी। इस हालत में फिजी में यूरोपियनों के बसाने की स्कीम को दूर से ही नमस्कार कर देना ठीक होगा। फिजी के हिन्दुस्तानियों का केवल एक ही उद्देश्य है यानी यहां के यूरोपियनों का नीचा दिखाना। हिन्दुस्तानियों पर हम किसी तरह से विश्वास नहीं कर सकते।

......जिन हिन्दुस्तानियों ने अपने इतिहास में कभी भी स्वराज्य नहीं किया उन्हीं को दूसरों पर शासन करने का अधिकार दे देना मानों उद्दण्डता और असन्तोषकी शक्तियों के सामने बड़ी घृणित रीति से अपना सिर झुका देना है। जब हम उन साधनों की जांच करते हैं जिनके द्वारा ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत कई देशों ने अपने उद्देश्य की सिद्धि की है तो हमें दो साधन मुख्य प्रतीत होते हैं एक तो राजद्रोह और दूसरा असन्तोष। भारतवर्ष मिश्र और आयर्लैंण्ड के उदाहरण सामने होते हुए यदि ब्रिटिश साम्राज्य का कोई भाग अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिये अवैध साधनों

का प्रयोग करे तो इस के लिए साम्राज्य सरकार उसे कोई दोप नहीं दे सकती हम ने देखा है कि आयर्लैण्ड को बड़े २ अधिकार दिये गये । ऐसे अवसर पर यदि अलस्टर वाले हथियार उठाकर गदर की तय्यारी न कर देते तो साम्राज्य सरकार उन्हें अपने राजनैतिक शत्रुओं का शिकार बना देती । फिरभी हम देखते हैं कि साम्राज्य सरकार के अधिकारी लोगों ने इतिहास की सभी शिक्षाओं को भुला दिया है और वे इस बात की कल्पना भी नहीं करते कि इस से भविष्य में क्या २ उत्पात खड़े होने की सम्भावना है । सैकड़ों वर्षों से उपनिवेशों को वसाने के कार्य में जो अनुभव हुए हैं उन्हें भी सरकार भूल गई है । सयुक्त राज्य की दक्षिणी रियासतों में, ब्रिटिश कोलम्बिया में और नटाल में बिना किसी रुकावट के बहुत से आदमियों को बसा देने का ही यह नतीजा हुआ है कि आज वहां असन्तोप ही असन्तोप दीख पड़ता है । अब साम्राज्य सरकार इन सब बातों को भूलकर जबरदस्ती फिजी के सिर पर एक तजरुबा करना चाहती है । यह बात उस शर्तनामे के सरासर विरुद्ध है जो स्वराज्य प्राप्त उपनिवेश और भारतवर्ष के बीच में हुआ था । अब हमारे सामने यह कठिन प्रश्न आकर उपस्थित हुआ है कि हम किस प्रकार अपने को सर्वनाश से बचावें और साथ ही सा.. हमें अवैध साधनों का प्रयोग न करना पड़े ।

बड़ी हर्ष ध्वनि के साथ यह प्रस्ताव पास हुआ। इस प्रस्ताव का सीधा सादा अर्थ यही है कि "हम गोरे लोग इस बात को सहन नहीं कर सकते कि हिन्दुस्तानियों को फिजी में समान अधिकार दिये जावें और अगर हमारी बात न मानी गई और ऐसा किया गया तो हम अवैध साधनों से इस का विरोध करेंगे, अल्सटर की तरह हथियार उठाकर अपने उद्देश्य की सिद्धि करेंगे"।

इस से प्रगट है कि फिजी के गोरे भी कैनिया के गोरों की तरह साम्राज्य सरकार को धमकी देने लगे हैं कि अगर तुम हिन्दुस्तानियों को समान अधिकार दोगे तो हम ग़द्दर कर देंगे। फिजी में समानाधिकार का प्रश्न इस प्रकार भयंकर रूप धारण कर रहा है।

फिजी की समस्या कैसे हल हो?

फिजी प्रवासी भारतीय वहां किस प्रकार आत्मसम्मान पूर्वक रहते हुए फिजी की उन्नति तथा भारत की गौरव वृद्धि के कारण बन सकते हैं यही फिजी की समस्या है। यह समस्या तभी हल हो सकती है जब फिजी के हिन्दुस्तानी भाई, हम लोग भारतवासी भारतसरकार और फिजी सरकार इस विषय में अपने कर्त्तव्य पालन करें।

फिजी प्रवासी भाइयों के कर्त्तव्य—

पहला कर्त्तव्य—फिजी प्रवासी भाइयों का सब से प्रथम कर्त्तव्य यह है कि वे अपने यहां शिक्षा का प्रचार करें। भिन्न २ स्थानों पर स्कूल खोल कर अपने अशिक्षित भाइयों को विद्या दान देना उनके लिये अत्यन्त आवश्यक है। अशिक्षित होने के कारण फिजी प्रवासी भाइयों ने पिछली वर्षों में अनेकों भूलें की हैं। यदि उनमें शिक्षा का प्रचार होता तो बारह हज़ार आदमी डाक्टर मणिलाल जी के कथनानुसार ब्रिटिशगायना जानेके लिये नाम न लिखाते और न तिहाई चौथाई दामों पर अपना माल असबाब बेचना शुरू कर देते। प्रवासी भारतीयों के लिये मणिलाल जी ने जो कार्य्य किया है उसकी प्रशंसा करते हुए और उन्होंने जो कष्ट सहे हैं उसके प्रति सहानुभूति प्रगट करते हुए भी हम यहां पर यह कह देना न्याययुक्त समझते हैं कि हज़ारों आदमियों को ब्रिटिशगायना जाने के लिये उत्साहित करके मणिलाल जी ने जबरदस्त भूल की और घोर अपराध किया। उनकी इस भयंकर भूल अथवा घोर अपराध की जितनी हम निन्दा करें थोड़ी है। अगर फिजी प्रवासी भाइयों में कुछ भी शिक्षा होती तो वे इस बात पर विचार करते कि फिजी से ब्रिटिशगायना उन्हें कौन ले जावेगा, वहां पर उन्हें कैसे जलवायु में और किस हालत में रहना पड़ेगा

और वहां उन्हें क्या वेतन मिलेगा। अशिक्षित होनेके कारण हो हमारे फिजी प्रवासी इस धोखे में आगये।

दूसरा कर्त्तव्य—शिक्षा प्रचार के बाद दूसरा कर्त्तव्य फिजी प्रवासी भाइयों का यह है कि वे अपनी राजनैतिक उन्नति के लिये वहां सभायें स्थापितकरें। यद्यपि हम जानते हैं कि फिजी सरकार इन सभाओं पर कड़ी दृष्टि रक्खेगी और वहां के गोरे भी इनसे द्वेष करेंगे लेकिन इनसे न डरते हुए फिजी प्रवासी भाइयों को अपने मार्ग में अग्रसर होना चाहिये। जब तक फिजीमें कुछ ऐसे नवयुवक भारतीय न होंगे जो अपने भाइयों के उद्धार के लिये अपना सर्वस्व त्याग करने के लिये सर्वदा उद्यत रहें तब तक फिजी प्रवासी भाइयों की हालत कदापि नहीं सुधर सकती।

तीसरा कर्त्तव्य—फिजी प्रवासी भाइयों को यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिये कि फिजी के प्रति भी उनका कुछ कर्त्तव्य है। जिस प्रकार फिजी के नवयुवकों को अपनी पितृभूमि भारत वर्ष से प्रेम रखना चाहिये उसी प्रकार उन्हें अपनी जन्मभूमि फिजी की उन्नति के लिये यथाशक्ति उद्योग करना चाहिये। फिजी मुख्यतया तीन जातियों का निवास स्थान है (१) आदिम निवासी फिजियन (२) हिन्दुस्तानी और (३) गोरे। फिजी की भूमि यहां के आदिम निवासियों की है और वेही वहांके असली

मालिक हैं। फिजी प्रवासी भाइयों का कर्त्तव्य है कि वे आदिम निवासियों के साथ अच्छे से अच्छा वर्ताव करें और उनके साथ अपनी मित्रता बराबर बनाये रक्खें। रहे फिजी के गोरे लोग सो उनके विषय में हम क्या कहें ? जब यह गोरे लोग हमारे भाइयों को अत्यन्त तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं और उनके साथ द्वेष करते हैं तो हम किस मुख से अपने भाइयों को यह उपदेश दे सकते हैं कि आप गोरे लोगों से द्वेष मत करो। ऐसा उपदेश देना हमारे लिये बड़ी धृष्टता होगी। अतएव हम अपने भाइयों से यही निवेदन करेंगे कि गोरों के तिरस्कार का जवाब अपनी दृढता और सच्चाई के साथ दें। यद्यपि आज फिजी के अनेक गोरों के दिल में "श्वेत फिजी" की धुन समाई हुई है तथापि वह दिन दूर नहीं है जब उन्हें यह बात अच्छी तरह मालूम होजावेगी कि गोरे लोग उस दशा में फिजी में कदापि नहीं बस सकते जिस दशा में हिन्दुस्तानी बस गये हैं और "श्वेत फिजी" के लिये प्रयत्न करना बालू में से तेल निकालने की कोशिश करना है।

यदि हिन्दुस्तानी लोग अपने आप को शिक्षित बनालें और गोरे लोगोंको अपने चरित्र द्वारा यह बात अच्छी तरह बतलावें कि अपने अधिकारों के लिये हम सब कष्ट सहने के लिये उद्यत है तो गोरे लोग भी उन्हें तिरस्कार की दृष्टि से न देख सकेंगे।

चौथा कर्त्तव्य—फिजी प्रवासी भाइयोंको मातृभूमि से सम्बन्ध बनाए रखने की भरपूर कोशिश करनी चाहिये। मातृभूमि से हिन्दी उर्दू तथा तैमिल इत्यादि देशी भाषाओं के पत्र मँगाकर स्वयं पढ़ने तथा अपने भाइयों को सुनाने चाहिये। फिजी के नवयुवकों को चाहिये कि वे कभी २ पितृभूमि भारतवर्ष की तीर्थ यात्रा किया करें और यहां से नवीन भाव ले जाकर अपनी जन्मभूमि फिजी में उनका प्रचार करें।

भारतबासियों का कर्तव्य—हमें यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिये कि यदि हमने अपने फिजी प्रवासी भाइयों की कोई सुध नहीं ली और उन के सामाजिक तथा धार्मिक उद्धारके लिये कुछ प्रयत्न नहीं किया तो ५० पचास वर्ष के भीतर ही फिजी के हिन्दुस्तानी "जङ्गली" बन जावेंगे। हमारे पूर्वजों ने जावा, सुमात्रा, कम्बोडिया, बाली लम्बक इत्यादि द्वीपों में अपनी सभ्यता का प्रचार करके वहां अपने उपनिवेश स्थापित किये थे और हम लोगों ने समुद्र यात्रा को घोर पाप बतलाकर उपर्युक्त द्वीपों से अपना सम्बन्ध तोड़ दिया और इस प्रकार सारे किये कराये काम पर पानी फेर दिया। इतिहास अपने को दुहराया करता है और यदि हम लोगों ने इस समय अपने प्रवासी भाइयों की सहायता नहीं की तो थोड़े दिनों में ही इन लोगों में भारतीयता का नामो निशान भी न रहेगा।

इस लिये सब से पहली बात हमें यह करनी चाहिये कि फिजी इत्यादि उपनिवेशों को धार्मिक शिक्षक भेज। दूसरी बात यह है कि हम बराबर इस बात के लिये आन्दोलन करते रहें कि जब तक उपनिवेशों में भारतीयों को गोरों के समान अधिकार नहीं मिलते तब तक हम ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर रहने के लिये कदापि राजी नहीं होसकते। हमारे निरंतर आन्दोलन करने का परिणाम यह होगा कि भारत-सरकार इस बारेमें असावधान और अचेत नहीं होने पावेगी। प्रवासी भाइयों के लिये आन्दोलन करने के लिये भारत में एक संस्था का होना अत्यन्त आवश्यक है। जब तक ऐसा नहीं होगा तब तक हम कर्त्तव्यभ्रष्ट ही समझे जावेंगे।

भारतसरकार के कर्त्तव्य— हम किसी पिछले अध्याय में बतला चुके हैं कि फिजी के मामले में भारत-सरकार ने कितनी कर्त्तव्य भ्रष्टता की थी इसलिये अब जब कि भारतसरकार इस विषय में अपना कर्त्तव्य पालन करने के लिये उद्यत है, हमें न्यायपूर्वक यह बात पाठकों को बतला देनी चाहिये। गवर्मेण्ट के अधिकारियों से फिजी के प्रश्न पर बात चीत करने के अवसर मुझे कई बार मिल चुके हैं और मैं यह बात दृढ़ता पूर्वक कह सकता हूं कि इस समय जहां तक प्रवासी भारतीयोंके प्रश्नों का सम्बन्ध है वहां तक गवर्मेण्ट भारतीय जनता के साथ ही है।

पहला कर्त्तव्य— भारतसरकार का यह है कि वह

इस बात पर बराबर ज़ोर देता रहे कि ब्रिटिश साम्राज्य में भारत को बनाये रखने के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि उपनिवेशों के हिन्दुस्तानियों को समानाधिकार मिल । साम्राज्य सरकार के कानों में यह बात बराबर पहुंचनी चाहिये ।

दूसरा कर्त्तव्य—यह है कि जो लोग फिजी से बाहिर आना चाहते हैं उनके लिये भारतसरकार जहाज का प्रबन्ध करे । जो लोग भारत को लौटने का निश्चय कर चुके हैं उनको यहां आने का पूरा पूरा सुभीता होना चाहिये । उनके मार्ग में कोई रुकावट न होनी चाहिये ।

तीसरा कर्त्तव्य—यह है कि भारतसरकार फिजी सरकार से इस बात के लिये लिखा पढ़ी करे कि वहां पर डाक्टर मणिलाल जी की जो जायदाद छूट गई है वह बेच दी जावे और श्रीयुत मणिलालजी को उसका मूल्य दिलवा दिया जावे इस बात से फिजी प्रवासी भाइयों को जितना सन्तोष होगा उतना किसी दूसरी बात से नहीं होसकता ।

चौथा कर्त्तव्य—भारत सरकार का यह है कि वह फिजी सरकार से इस बात के लिये पत्र व्यवहार करे कि फिजी प्रवासी भारतीयों में शिक्षा का प्रचार करने के लिये क्या २ प्रयत्न आवश्यक हैं और कुछ रुपये अपने पास से खर्च करके शिक्षकों को वहां पर भेजे ।

फिजी सरकार के कर्तव्य—फिजी सरकार को यह बात जान लेनी चाहिये कि भारतवासी फिजी द्वीप के एक आवश्यक अङ्ग बन गये हैं और वे वहां से निकाले नहीं जा सकते। ६० हजार भारतीयों में से दस पन्द्रह हजार भारतीय भले ही मातृभूमि को लौट आवें लेकिन कम से कम ४० हजार आदमी तो वहां रहेंगे ही। इन ४० हजार भारतीयों पर अत्याचार करके फिजी सरकार को कुछ भी लाभ नहीं हो सकता। फिजी द्वीप समूह की जो दुर्दशा आज कल हो रही है उस का मुख्य कारण यही है कि फिजी सरकार ने सी० ऐस० आर० कम्पनी के दबाव में आकर भारतीयों के साथ अन्याय किया। उसी का फल आज सरकार अच्छी तरह भुगत रही है। यदि अब भी फिजी सरकार अपनी नीति बदल दे तब भी कुछ हो सकता है। लेकिन क्या फिजी सरकारमें इतनी सामर्थ्य है कि वह अपने को सी० ऐस० आर० कम्पनी के पंजे से निकाल सके? क्या फिजी सरकार यह नियम बना सकती है कि भारतीय मज़दूरों को कम से कम ३$\frac{1}{2}$ शिलिङ्ग दैनिक वेतन मिलना चाहिये? क्या फिजी सरकार प्रवासी भारतीयों की शिक्षा का उचित प्रबन्ध कर सकती है? क्या वह गोरे आदमियों के मन के विरुद्ध भारतीयों को समान अधिकार दे सकती है? मणिलाल जी को न्यूज़ीलैण्ड तक घेर पहुंचाना

और उन के वहां भी वकालत करने में बाधा डालना तो आसान काम है, लेकिन उपरोक्त बातें करना ज़रा कठिन है यदि फिजी सरकार सचमुच यह चाहती है कि फिजी के भारतीय सन्तोषपूर्वक रहें तो उसे सबसे पहिला काम यही करना चाहिये कि वह मणिलाल जी की जायदाद की बिक्री में बाधा न डाले और उसका मूल्य उन्हें मिल जाने दे। साथ ही उसे पीटर ग्राण्ट तथा उस के साथियों पर भी विश्वास न करना चाहिये। जब तक फिजी सरकार ये दोनों बातें नहीं करती तब तक वह हिन्दुस्तानियों की विश्वासपात्र कदापि नहीं बन सकती, और जब तक फिजी की जनसंख्या का एक बड़ा भाग फिजी सरकार पर अविश्वास करता रहेगा तब तक फिजी में शान्ति कदापि स्थापित नहीं हो सकती।

इन बातों से पाठकों को स्पष्ट हो गया होगा कि फिजी की समस्या तभी हल हो सकती है जब फिजी प्रवासी भारतीय हम लोग भारतवासी, भारत सरकार तथा फिजी सरकार इस विषय में अपने २ कर्तव्यों का पालन करें।

फिजी की समस्या कोई मामूली प्रश्न नहीं है। इससे अनेक प्रश्नों का सम्बन्ध है। "राजकीय उपनिवेशों में रहने वाले भारतीयों का भविष्य क्या होगा ?" इस सवाल को हल करते समय हमें फिजी के प्रश्न की सहायता लेनी पड़ेगी "ब्रिटिश साम्राज्य में हमारा क्या स्थान है ?" इस बात का

भी फैसला फिजी के प्रश्न के हल होने पर होजावेगा । यही नहीं "जातीय समानता" के सवाल से भी इसका सम्बन्ध है । "क्या गोरे लोग कृष्ण-वर्ण जातियों को समानाधिकार देने के लिए उद्यत होंगे ?" इस पर भी फिजी के प्रश्न से कुछ प्रकाश पड़ेगा ।

पुस्तक को समाप्त करने से पहिले हम दो बातें और कह देना चाहते हैं । प्रथम बात तो हमें अपने भारतीय पाठकों से कहनी है वह यह है कि वे कृपाकर इस प्रश्न पर क्षुद्र राजनैतिक दृष्टि से विचार न करें । यह प्रश्न नरम गरम दल के झगड़ों का नहीं है और न सहयोगियों तथा असहयोगियों के वाद विवाद का ही है । इस विषय में तो हम सबको मिलकर काम करना चाहिये । लाखों प्रवासी भाई इस समय दुर्दशा ग्रस्त हैं, उनके इस सँकट के अवसर पर भी हम आपस में न मिल सके तो बड़े दुर्भाग्य की बात होगी । यदि भारत सरकार इस प्रश्न पर भारतीय दृष्टि से विचार करे और हमारी सहायता करने के लिये उद्यत हो तो इस विषय में हमें उसकी सहायता भी अस्वीकार न करनी चाहिये । कहने का अभिप्राय यह है कि इस प्रश्न को किसी विशेष पार्टी का प्रश्न नहीं बना देना चाहिये । यह सवाल मनुष्यता का है और मुख्यतया मनुष्यता की दृष्टि से ही इस पर विचार करना चाहिये । दूसरी बात

हमें अपने फिजी प्रवासी भाइयों से कहनी है। प्रायः हमारे पास ऐसे पत्र आया करते हैं जिनमें हमसे यह प्रश्न किया जाता है।"

फिजी प्रवासी भारतीयों का उद्धार कैसे होगा ?

इस सवाल का जवाब देना जरूरी है और वह जवाब यही हो सकता है "आपका उद्धार आपके ही द्वारा होगा। मातृ-भूमि आपकी सहायता करेगी लेकिन वह सहायता एक हद तक ही होगी। अपने उद्धार का असली काम आपको खुद ही करना पड़ेगा।" हमारे प्रवासी भाइयों को अपने दिल में से यह बात हमेशा के लिये निकाल देनी चाहिये कि उनका उद्धार कोई बाहिरी शक्ति कर सकती हैं। यदि हमारे प्रवासी भाई अपने अधिकारों के लिए आत्म-त्याग करने को उद्यत नहीं हैं, यदि उनमें अपनी तथा अपनी मातृ-भूमि की इज़्जत के लिए सर्वस्व निछावर करने की सामर्थ्य नहीं है, अगर वे अन्याय व अत्याचार का विरोध करते हुये मर मिटने के लिये तय्यार नहीं हैं, तो उन्हें समझ लेना चाहिये कि संसार की कोई भी शक्ति पतितावस्था से उनका उद्धार नहीं कर सकती। प्रवासी भाइयों के सच्चे शुभचिन्तक मिस्टर पोलक ने भाई भवानीदयाल जी के द्वारा जो सन्देश दक्षिण अफ्रीका प्रवासी भाइयों को भेजा है वह फिजी प्रवासी भाइयों के लिये भी विचारणीय और स्मरणीय है। उसका तात्पर्य्य यह है।

"मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि अपने अधिकारों के लिये और अपने भविष्य के वास्ते डटकर खड़े हो जाना दक्षिण अफ्रीका प्रवासी भारतीयों को प्रधान कर्तव्य हैं। खासकर उन आदमियों को जो वहीं उत्पन्न हुये हैं अब विना विलम्ब जागृत हो जाना चाहिये। अगर यह अवसर हाथ से निकल गया तो फिर स्थितिको सम्हालना अत्यन्त कठिन हो जावेगा प्रवासी भाइयों को चाहिये कि भविष्य का भरोसा छोड़कर वर्तमान समय में कार्य्य करें तभी उनका उद्धार होगा"

मिस्टर पोलक के शब्दों का समर्थन करते हुये हम भी अपने फिजी प्रवासी भाइयों से यही कहते हैं कि यदि आप पतितावस्था से उठना चाहते हैं तो स्वार्थ-त्याग कीजिये, कष्ट सहन कीजिये, अपने अधिकारों के लिये जेल जाने को तय्यार हो जाइये और मातृभूमि के गौरव के लिये मर मिटने को उद्यत हो जाइये। इसी प्रकार आपका उद्धार हो सकता है। दूसरा कोई उपाय नहीं। नान्यः पन्थः विद्यते।

॥ बन्देमातरम् ॥